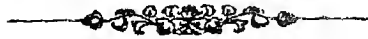


॥ ओ३म ॥

विश्व गुरु भारत

अथ त्

(महान् भारत)



लेखक—

रामा शंकर मिश्र



प्रकाशक—

भारत पुस्तक भण्डार

कटड़ा आहलूवाला

अमृतसर

मूल्य ६)

मूल्य ६)



उपहार

भूमिका

प्रिय पाठक वृन्द ! इस पुस्तक का पहला संस्करण छप कर जब निकला तो भारत के लेखक, पाठक तथा प्रकाशकों ने उसे अमूल्य वस्तु समझ कर मांग की। हाथों हाथ थोड़े समय में बिक गया। युद्ध आरंभ होने के कारण इसका संस्करण छप नहीं सका। लंका (Ceylon) मद्रास, मी पी, बम्बे प्रान्त, राजपूताना, यू.पी., बिहार, उड़ीसा, बंगाल आसाम व पञ्जाब आदि के विद्वानों ने इस पुस्तक पर सम्मतियां दीं जिस में से कुछ सम्मतियां पाठकों की सूचना के लिये नीचे दी जाती हैं।

— आर्यवर्त के सुप्रसिद्ध —

श्री १०८ श्री नारायण स्वामी जी की सम्मति

“महान् भारत” को मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा। किताब वास्तव में लेखक के कठिन परिश्रम का फल है, पुस्तक में भारत सम्बन्धी कोई ऐसा विषय बाकी नहीं रहता जिसका दिग्दर्शन विदेशियों की जवानी सप्रमाण, न कराया गया हो। विशेष कर नव युवकों और युवतियों में इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध श्री महावीर प्रसाद जी द्विवेदी लिखते हैं—

लेखक ने केवल विदेशी विद्वानों और यात्रियों की ही लिखी हुई सैकड़ों पुस्तकों से अवतरण देकर यह दिखाया है कि प्राचीन भारत सभी विषयों में सारे देशों से बड़ा चढ़ा था। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह इस पुस्तक का अवश्य स्वाध्याय करे।

भारत माता के मन्चे मपूत देश भक्त डा० सत्यपाल जी लिखते हैं:—

हम कौन थे ? क्या बन गये, इन दो प्रश्नों को हल करने के लिये ही लेखक ने अतीत का उज्ज्वल चित्र उपस्थित किया है।

गंडरिये की लकड़ी के नीचे और भेड़ों के भुण्ड में पड़े हुए शेर के बच्चे को जब यह पता लग जाय कि वह शेर है भेड़ बकरी नहीं। फिर वह स्वयं बढ़ाड़ उठेगा, वातावरण कांप जायगा लकड़ी और चरवाहे का पता न चलेगा। देश के नौजवान-इसे पढ़ें और देखें कि वह क्या हो गये हैं।

भारत क्या था ? उन लोगों के पूर्वज विद्वानों के मुख से ही पूर्ण दिग्दर्शन कराया है जो आज हमारी हीनता का मुक्त हस्त होकर प्रचार करते हैं। वक्ताओं, लेखकों, विद्यार्थियों को तो यह पुस्तक हर समय उपयोगी होगी तथा प्रत्येक भारतीय के अवश्य ही पढ़ने योग्य है।

साप्ताहिक 'अजुन' देहली

विदेशों में भारत को बदनाम किया जाता है। हमारे सामने हमारे इतिहास को भ्रष्ट कर, हमारे साहित्य को निकम्मा सिद्ध भरमाने की चेष्टा की जाती है। ऐसी दशा में हम महान्-भारत पुस्तक का, जो भारत के महान् अतीत पर सर्वाङ्गीण, खोज, पूर्ण और प्रभावशाली प्रकाश डालती है, सहर्ष स्वागत करते हैं।

पुस्तक में केवल विदेशी विद्वानों के शब्दों द्वारा ही अतीत भारत के गौरव का वर्णन किया गया है जहां तक हम जानते हैं। राष्ट्र भाषा के भण्डार में यह अपने ढंग की अभिनव, अभूत पूर्व और अद्वितीय कृति है।

साप्ताहिक 'विश्वबन्धु' लाहौर

जो व्यक्ति इस पुस्तक का एक बार स्वाध्याय कर लेगा उसके हृदय पर भारत वर्ष की महानता का सिका जमे बगैर नहीं रह सकता ।

साप्ताहिक 'हिन्दू' लाहौर

यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है । इस में प्राचीन भारत सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण बातों का इस ढंग से संकलन किया गया है कि भारतीय संस्कृति का एक सुन्दर चित्र सामने उपस्थित हो जाता है इतिहास के प्रेमियों की इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए ।

मासिक 'सरस्वती' प्रयाग

महान-भारत एक ऐसी पुस्तक है जिस से भारतीय इतिहास का सर ऊँचा हो जाता है । विदेशी सभ्यता से प्रभावित हुए लोगों के लिये यह पुस्तक पथ प्रदर्शक से कम नहीं ।

साप्ताहिक 'इन्डिपैन्डेंट' नागपुर

इस पुस्तक के लेखक ने जिस खोज से इस पुस्तक को लिखा है इसका दूसरा उदाहरण देना शक्ति से बाहिर है । उन्होंने ने ३७३ उन पुस्तकों का हवाला दिया जो सब की सब विदेशियों की लिखी हुई है । इस से पाठक अनुमान लगा सका है कि उन्होंने ने कितने सहस्र पुस्तकें पढ़ कर, कितना समय तथा कष्ट के हवाला दिया उन ३७३ पुस्तकों का हवाला दिया जिन के लेखकों ने भारत को अपना गुरु माना । इस पुस्तक के पहले संस्करण के भूमिका लेखक हैं देशभक्त डा. सत्यापाल जी ।

List of Books Prepared by Devinder Singh M. A.

1. *The Travels of Fa-hien.* (399-414 A. D.), or Record of the Buddhist Kingdoms. Re-translated by Giles H.A. 1923 P. 96 Cambridge at the University Press P. U. L.

2. *Bernier Travels in the Mogul Empire.* Constabler's Oriental Miscellany of original and selected publications. Westminster-Archibald, Constable and company 1901 P. U. L. 2 Cop. 497

3. *Ancient India as described by Megasthenes and Arrian* being a translation of the fragments of the Indika of Megasthenes collected by P. S. Narasimha and of the first part of the Indica of Arrian by M. W. Little J. W.

Calcutta. Chuckervertty, Chatterjee & Co. 15 College Square, 1926 P. 227 P. U. L.

4. *Mandelso's Travels in Western India* (A.D. 1638-9) by Commissariat. M. S. Humphrey Milford. Oxford University Press 1931, P. 115 P. U. L.

5. *Ralph Fitch England's Pioneer to India and Burma.* his companions and contemporaries with his remarkable narrative told in his own words by J. Horten Ryley London, T. Fisher Unwin Paternoster Square 1899 P. 264 P. U. L.

6. *Early Travels in India 1593-1619* Edited by Foster, William Humphrey Milford; Oxford University Press 1921 P. 351 P. U. L.

7. *Travels in India* by Jean Baptiste Tavernier Baron of Aubonne Translated from the original French Edition of 1676 with a Biographical sketch of the author notes, appendices, etc. by V Ball 2V

London Macmillans & Co. 1839 P. 420 P. U. L.

8. *The Travels of Lietra Della Valle in India.* from the old English Translation of 1664 by G. Havers; 2V, Edited with a life of the author, an introduction and notes by Edward Grey London Printed for the Hakluyt Society 4 Lincoln's in Fields, W.C. 1892 P. 192 P. U. L.

9. *The first Englishmen in India,* Letters and narrative of sundry Elizabethans written by themselves and edited with an Introduction and notes by J. Courtenay LOOKE

Published by George Routledge & Sons Ltd, Broadway House,

Carter Lane, London 1930 P. 239 P. U. L.

10 Akbar and the Jesuits

Translated from the 'Histoire' of Father Pierreedn Farric. S.F., with an introduction of G. H. Payne with 8 Plates 1216 net.

(NOT EXAMINED)

11 Travels in Asia & Africa Ibn BATTUTA, 1324-54 Translated, from the Arabio, selected and edited by H.A.R. Gibb with an introduction with 8 Plates 15/- net

Routledge London 1929 P. 398 P. U. L.

12 Jahangir and the Jesuits. Translated from the original of Fernao Guerreiro. S.F. with an introduction by G.H. Payne with 4 Plates 12/6 net

{ NOT EXAMINED } -

12 Jahangir and the Jesuits with an account of the Travels of Benedict Goes and the Mission to Pegu. From the Relations of father Fernao Guerreiro. S. Z. Translated by G. H. Payne Published by George Routledge and Sons Ltd Broadway House, Carter Lane, London 1930 P. 287 P. U. L.

13 Travels in India, Ceylon and Burma by Captain Basil Hall Edited and selected with an Introduction, by Professor H. G. Robinson Routledge & Sons London Broadway House P. 271 P. L. 1931 Broadway Travellers services.

14 The embassy of Sir Thomas Roe to India in 1615-19 as narrated in his Journal and correspondence. Edited by Sir William Foster Oxford University Press, London, Humphry Milford 1926 P. 532 P. U. L.

15 Megasthenes en de Indische Maatschappij Timmer; B C, J. H. J Paris 1930 P. 323 P. U. L.

16 Histoire de La Vie de Hiouen-Tsang et de ses voyages dans L. Inde. Julien, P. S. Paris a L' imprimerie imperiale 1853 P. 472 P. U. L.

17. Ancient India as described in Classical Literature Translated and copiously annotated by McGrindle J W Westminster, Archibald Constable & Co. 1901 P. 226 P. U. L

18 Voyage of Nearchus; from the Indus to the Euphrates by

Vincent William, London 1797 P 530 P. U. L.

9 *Storia Do Mogor or Mogul India 1653-1708* by Manucci Niccolao. Translated with introduction and notes by William Irvine 2V. 1907 P. 471, P. U. L.

20 *The Jesuits and the Great Mogul* by Sir Edward Maclagan London, Burns oates & Washburne 1932, P. 435 P. U. L.

21 *The Commentary of father Manserrate, S.J. on his Journey to the court of Akbar*, Translated from the original Latin by J. S. Heyland 1922

Humphrey Milford Oxford University Press P. 220, P. U. L.

22 *Storia Do Mogor or Mogul India 1653. 1708* by Niccolao Manucci translated with introduction and notes by William Irvine V. And London John Murray, Albemarle Street- Published for the Government of India 1907 P. 509 P. U. L.

23 *Alberuni Ka Bharat By Sant Ram B.A* Indian Press Paryag of 2V. 1ed 1917. Indian Press Allahabad Dr. Edward C. Sachan, Professor in Royal University of Berlin Elliot History of India P. U. L. Page 474.

(Kitab abtur-kan Mohd Iben Ahmed Al-beruni fee Tehqiq Mal-nind Man Maqula Fee-ul-Akal o Mazdula)

24 *Isingh Ki Bharat Yarta. Sant Ram B.A.* The Indian Press Allahabad 1925 P. 349 P. U. L.

1) *Chavannes- Memoire Compose a L'epoque de la grande dynastie J'ang sur les religieux eminents qui allerent chercher la loid-ansles Paysd' accident*, Par. I-tsing. Tradnit en Francais Par. Edward Chavannes Paris. 1894

2) *Method pour dechiffror et transcrire les Noms danscrits qui se neneontrent dans les Livres Chinois*, Par Stanislas Julien Paris. 1861

3) *The Sacred Book of the East*, translated by various Oriental Scholars and edited by F. MAX MULLER Clarendess Press, Oxford.

25 *Hu Insang Ka Bharat Bhraman Huinssaing* by Thakur Parshad Sharma Indian Press Allahabad 1929 P. 768 P. U. L.

26 *Suyena Cvanga* by Jagan Mohan Verma Hindi Pustak Agency. Harrison Road Calcutta 1980 Hindu year P 254 P U.L.

27 Maria Samatraja Ka Itihas. By Satya Kant W. 1985, Himan Yeog, Indian Press Allahabad, P. 717 p. v. L.

28 Chini Yatri. Sung Yun Ka Yatra Uivarni by Jagan Mohan Verma Indian Press Allahabad 1977 H. Y. P. 55 p. v. L.

29 Ancient account of India and China by two Mohammedan Travellers By Renandt- E. London, St. Martins-Lane 1783 P, 260 p. v. L

30 Relation Des Voyages Dans L'Inde et A' La Chine. Renand. M. 2V. Paris 1845 P. 151 p. v. L.

31 Voyages D'Iban Battuta, Publie Par La Society Asiatic, Paris, 1874 V6. P iv. 438 p. v. L.

32 Alberuni's India and account of the religious, Philosophy, Literature, Geography, Chronology, Astronomy, Customs, Laws and Astrology of India by Sachan, E. C. 2V. London 1888 P. 441 p. v. L.

33 Die Reise des Arabers Ibn Batuta durch Indien und China Mzik, H. V. Hamburg 1911 P. 490 p. v. L.

34 Alberuni, Hassan Barni Sayad Dara-ul-Nazar Press Lucknow 1915 P. 150 p. v. L.

35 Burneirs Travel by More and M. Hasan 2V. N. D. P 490 p. v. L.

36 Travels of Ibn Batuta. Urdu Mohommed Hussain Khan Sahib 1895 Rif-i-aham Press Lahore p. v. L. P. 500 2V.

37 European Adventures of Northern India 1785 to 1849 by C. Grey edited by H. L. O. Garrett, Lahore, 1929 P. 361 p. L.

38 Vasco De Gama and his successors 1499-1580 by K G. Jayne Essex Street London 1910 P 325 p. v. L.

39 Journal of the first voyage of Vasoo De Gama 1497-1499 tr & ed by Ravenstein London 1898 P. 250 p. v. L

40 Record of Buddhistic Kingdoms being an account by the Chinese Mink-Fa-Hien translated and annotated by Legge James Oxford. 1830 P. 123 p. v. L.

41 Voyage to the East Indies by Guesse 2V, London 1772 P. 343 p. v. L.

42 New account of East India and Persia, in eight letters by Frayer John, London 1698 P 427 p. v. L.

43 *Memoirs sur les contrées accidentales, traduits du Sanscrit en chinois, en L'An 648 Par Hiouen-Tsang, by Julien, S. Paris 1857. P. 493 p. u. L. V2.*

44 *Buddhist Records of the Western World, translated from the Chinese of Hiuen T'sing by Beal, Sannal V2. vols in the Trubner & Co, London 1884 P. vi 240 p. u. L*

45 *On Yuan Chwang's Travels in India Oriental Trans-lation Fund New Series Vol XIV & XV by 2 vols. watters, Thomas, Royal Asiatic Society London 1904 P. 401, 357 p. u. L.*

46 *Die erste Deutsche Handelsfahrt Nach Indien 1505/106 Von (by) Hammerich, Franz Manchen and Berlin 1922 P. 150 p.u.L.*

47 *Travels in India, During the years 1780, 1781, 1782 and 1783 by Hodges, William, London, 1794, P. 157 p. u. L.*

48 *Travels of Sig Pietro Della Valle a noble Roman into West India and Arabia Deserta. In which the several countries, together with the customes, manners Traffic and ritos both religious and civil, of those Oriental Princes and natives and faithfully described on familiar letters to his friend Signior Mari Schipano, London Printed by T. Maceock, for Honery Herrmgman; 1685, P. 180 p.u.L.*

49 *Tiefenthaler's Beschreibung von Hindustan 3Vols Berlin 1785. P. iv 370 p. u. L.*

50 *Ancient Geography of India, The Buddhist Period including the campaigns of, Alexander and the travels of Himo-Tsang by Joucningham, Alexander, Trubner & Co. London, 1871 P. 589. p. u. L.*

51 *Journals in India by Jean-Baptiste Tavernier Baron of Aubonne by Ball second edition by Crooke William 2 Vols. Oxford University Press 1925 P. iv 335 p. u. L.*

52 *Generals Beschrijvinge van Indien, vut de onde Schrijvers, onde de; huyden daeghsche benaminge, Twist; John, Amsterdam, 1648 P. 94 p. u. L.*

53 *Ond ennicun East-Indien by Valentyn V5 Amsterdam 1726 p. u. L.*

54 *Voyages and Travels to India Ceylon, the Red Sea, Abyssinia, and Egypt, in the years, 1802, 1803, 1804, 1805 and 1806 by Valentia, George, Viseant 4 Vols London, 1811 P. 439 p. u. L.*

55 Travels of Monsieur de Jhevenot into the Levant Turkey. In three parts London. 1637. P. 144 III Part only p. v. l.

56 Six voyages of John Baptista Javernier, London 1678. P. 1 book 15-214 Rub Phillips, J,

57 Journey overland to India. Partly by a route never gone before any European by CAMPBELL, Donald, Cullen and ces, London. 1795. P. 181 p. v. l.

58 Voyage from England to India, in the year 1754.....

Ives Edward and Charles Dilly London, 1773 P. 506 p. v. l.

59 India in the fifteenth century, being a collection of voyages to India

R. H. MAJOR Hakluyt Society London 1852 p. v. l.

60 Voyages of Sir James Lancaster. Kt: to the East Indies, with abstracts of Journals of voyages to the East Indies, during the seventeenth century, preserved in the India Office; and the voyage of Captain John Knight (1606) to seek the North west Passage. Edited by Clements R. Markham London; Hakluyt Society, 1877 P. 314 p. v. l.

61 Voyage to the East Indiaby Fra Poolino Da San Bartolomes translated from the German by William Johnson London; 1800 P. 478 p. v. l.

62 Ancient accounts of India and China by two Mohammedon Travellers, who went to these parts in the 9th century; Translated from the Arabic by Eusebins RENAUDOT. London 1733 P. 260 p. v. l.

63 Voyages and Travels of the Ambassadors where are added the travels of John Albert de Mandelsoo, containing a particulars Description of Indostan, the Mogul's Empire in Book III written originally by Adam Olearives 2nd Ed London. 1669. P. 232

64 General History and collection of voyages and travels, arranged in systematic order:- by Kerr; Robert William Blackwood Edinburgh and T. Caddell, London. 1824, 18 Vol. P. 512. p. v. l.

65 Travels through Arabia and other countries in the East Performed by Niebuhr M. translated into English by Robert Heron Vol. II Dublin; 1792 P. V. I. 368-432 p. w. l;

66 Travels of Peter Murdy; in Europe and Asia 1608-1667 Vol

11. Travels in Asia, 1628-1634-second series, Edited by Temple R. C. Hakluyt Society London; 1914 P. 437 p. u. l.

67 ALBERUNUS India and account of the religious philosophy, Literature, Geography Chronology.. Astronomy Customs, Laws and astrology of India East by Schan A. C. 2 Vols. Kegan Paul French, Trubner & Co. London 1910 1 Vol.P.408. 11 Vol. P. 431 D. S. L.

68 Travels of Mirza Abu Jaleb Khan in Asia Africa and Europe during the years 1759 to 1803 written by himself in the Persian Language. Translated by Charles Stewart V2. and Ed London 1814 P. iv 312. p. u. l.

69 Three voyages of Vasco De Gama and his victoryality translated from the Portuguese with notes and an introduction by Stanley H. C. J. Hakluyt Society London, 1869 P. 430, p. u. l.

70 Travels of Indovico di varthema; A. D. 1503 to 1508, translated from the original Otalian Edition of 1510, with a preface by Jones, J. W. and edited with notes and as introduction by Badger G. P Hakluyt Society London 1863 P 105 to 288

71 Book of Ser Marco Polo, the venetian; concerning the Kingdoms and Marvels of the East tr. by Yule, H. 2V. 2nd Ed. Nev. John Murray London 1875. P. 1 Vol. 444 p. u. l. 1st Ed. 1871.

72 General Collection of the best and most interesting voyages and travels in all parts of the world by John Pinkertan, V. 8 only deals with Indian all in 17 vols. London; 1811 P. 8 V. 776. p. u. l.

73 Mc Grindie's ancient India as described by Ptolemy a facsimile Reprint; edited with an introduction, notes and an additional map by Sm Sastri.

Chukerverty, Chatterjee & Co., Calcutta, 1927. P. 431 D. S. L.

74 Voyage to East India observed by Edward Terry, London 1772 P. 511 D. S. L.

75 Ininerario voyage of the schipvaert Van Jan Huyghen Van Linschoten; near coast of the Portugaels Indien 1579-1592 2 Vols; Linschoten, Vereeniging 1910. 1 Vol.P. 228 p. u. l. Linschoten; J. H. V.

76 Voyage of John Huyghen Van Linschoten to the East Indies from the old English translation of 1598 2 Vols.

1 Vol. Edited by Burnell; A. C.

11 Vol. Edited by Tiele, P.A.

Hakluyt Society London.

1891 I Vol P. 507 p. v. L.

77 Voyage of FRANCIS PYRARD of Laval, to the East
Indies, the Maldives, the Maluccas and Brazil Translated into
English from the first French Edition of 1619 by Grey Albert, and
revised by Bell H. C. P. 2 Vols V2 in 2 parts Hakluyt Society
London 1896 I Vol P. 452 p. v. L.

78 Wonders of the East by Friar Jordanus..... (trans-
lated from the Latin Original..... by Yule. Henry. Hakluyt
Society London 1893 P. 69 p. v. L.

79 Travels and adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali
Rais in India during the years 1584-1586 translated
from the English, with notes by A. Vambery Luzak & Co., London
1899 P. 120 p. v. L.

80 Sir Marco Polo, notes and addendum to Sir Henry Yule's
edition containing the results of recent research and discovery by
Henry Cordier John Muirry etc. Send in 1920 P. 161 p. v. L.

81 Marco Polo and famous Travels of Marco Polo together
with the travels of Nicolo continued from the Elizabethan of John
Frasarby by N. M. Penzer 1920 Argonaut Press London P. 381 p. v. L.

82 Travels of Marco Polo translated into English from the text
Manzette L. F. by Aldo Ricci, with an introduction and Index by
J. H. R. S. Cambridge & Sons London 1931 P. 489 p. v. L.

83 Travels of Marco Polo a venetian, in the thirteenth century
during a description, by that early traveller of remarkable places
and things in the Eastern parts of the world translated from the
Italian, with notes by William Marsden, London 1818 P. 781 p. v. L.

84 Journey overland to India partly by a route never gone
before by any European, by Donald Campbell. 3 parts in 1 Vol.
Callen & Co. London 1795 3rd part P. 681 p. v. L.

85 ARRIANI ANABASIS et Indica, ex optimo codice parisino
emendat et varietatibus ejus Libri Retulit. Fr. Dubner.....
Paris, 1846 in parts p. v. L.

- 86 Arrian with a English Translation by Hff Hobson Book-
I-IV London 1920 P. 419 P. U. L.
- 87 Arrian nicomediensis Scripta Minora..... by Alfradus
F. Lipsiae. 1885 P. 155 P. r. L.
- 88 Megasthenese Ka Bharatvarsh Varnhan translated by
Ran Chand Shakal Historical series No III
Tara Printing Works, Benares 1906 P. 1. P 138
- 89 Suleman Sodagar Ki Yatra Varnhan. Ed. by R. B. Gauri
Shankar Hira Chand Obha and writton by Mahesh Parshad Sadhu.
Allahbad Kashi Nagri Parcharni Sabha 1978 Bikarmi P. 120,
P. 1.
- 90 Chini Yatra TAHIN Ka Yatra Vivarnh by Gagan Mohan
Verma Allahbad, Kanshi Nagri Parcharni Sabha 1976 Bikarmi
P. 123 P. L.
- 91 Doctor Bernier Ki Bharat Yatra by Bahu Ganga Parshad
Gupta, Kashi or Allahbad 2, Vol 1910 P. IV 117 P. L.
- 92 Chini Ka Yatra by Gagan Mohan Verma Allahabad Nagri
Parcharak Sabha 1927 Bikarmi P. 55 P. L.
- 93 Travels of HIUN TSIANG Eik Chini Syah ka safar nama
jo agrezi sai tarjama kia gaya. Punjab Religious Book Society,
Anarkali, Lahore, P. 110 1909 P. L.
- 94 'Aina Armat Hind-Hissa awal, Hindustan ki hadim kaha-
nian; Unani Sayahon ki zabani.) Mayghasthanies aur Arian ka
safar namon ka khulasa us Mulk Roj Sharma, Lahore, 1913 P. L,
P. 120
- 95 Arab aur Hind kai takrigat yani Maulana Sayad Sulaman
Sunib fukri ki takrirain jo 23 March 1929 ko Hindustan aka ai kai
samne kee gayi. Allahabad, Hindustan Qadimi P. 402 P.L.
- 96 Alboaran by Sayad Hassan Barni Muslim. University
Press Aligarh 2nd Ed. 1127 P. 256 P.L.
- 97 Tarikh Hind kai az san Wasti main mashraqi aur iqsa-
kaiat Alama Abdulah Yusaf Ali C. I. E. kee takrirain jo 2, 3 March
1928 ko Hindustani aademi, Allahabad kai samne kee gayi, Indian
Press Allahabad 1928 P. 114 P.L.

98 Ancient Geography of India. The Buddhist Period, including the campaigns of Alexander and the travels of Hsuen - Tshang by CUNNINGHAM Alexander Trubner & Co., London 1871 P. 589. C. 2 Cop.

99 Ancient India as described by Megasthenes and Arrian being a translation of the fragments' of the Indika of Megasthenes collected by Dr. Schwanbeck, and of the first part of the Indika of Arrian by J. W. Meerindale Trubner & Co. 1877: London P. 223 P.L.

100 Ancient India as described in classical Literature, being a collection of Greek and Latin Texts relating to India' extracted from Herodotus, Strabo..... Translated and copiously annotated by Meerindale W.

Archibald Constable & Co., Westminster 1901 P. 226 P.L.

101 Ancient India, As described by Ktesias the Knidian, being a translation of the abridgement of his "Indika" by Phaloeis and of the fragment of that work preserved in other writers by Meerindale, J. W. Trubner & Co., London 1862. P. 104 P. L.

102. The commerce and navigation of the Erythraean Sea, being a translation of the periplus maris Erythraei by an anonymous by Meerindale J. W. Trubner & Co., 1879. London. P. 238. P.L.

103. Ancient India, as described by Ptolemy..... by Meerindale J. W. Trubner & Co., London 1885. P. 373. P. L.

104. Meerindale's Ancient India as Described by Ptolemy, a facsimile Reprint edited by SUNDER NATH Majumdar C, Chatterjee & Co., Calcutta. 1927. P. 431 P. L.

105. Cunningham's Ancient Geography of India, edited with introduction and notes by SUNDER NATH Majumdar, C, Chatterjee & Co. Calcutta. 1924. P. 770. P. L.

106. Imperial Gazetteer of India all in 26 vols. 25th index and 26th maps. New Edition published under the authority of his Majesty's secretary of state for India in Council Clarendon Press Oxford 1909. P. L. Mention is made nearly of all the important travellers that visited India in early days.

107. Gates of India being an historical narrative by Diddich Sir Thomas Macmillan & Co, London 1910. P. 55. P. L.

108. Commentaries of the Great AFONSO DALBOQUERQUE, second viceroy of India translated from the Portuguese Edition of 1774 with notes and introduction by Walter De Gray Birch, Hakluyt Society London, 1875 four volumes, vi. P. 256, iv. Vols. P. L.

109 India in the fifteenth century, being a collection of narratives of voyages to India Edited with an introduction by R. H. Major Hakluyt Society London, 1857 P. L.

110. India and Jambu Island showing changes in Boundaries and river courses of India and Burmah from Ptolemy, Greek, Buddhist, Chinese, and Western Traveller's account by Amar Nath Das, 5th Edition Book Company, Calcutta, 1931 P. 343, P. L.

111. Notes in the ancient Geography of Gandhara. (A commentary in a chapter of Hsuan Tsang.)

A. Foucher translated by H. Hargreaves,

Government of India, Calcutta, 1915, P. 39, P. L.

112. Diary of William Hedges During his agency in Bengal as well as on his voyage out and return overland (1681-1687). Translated by R. Barlow and illustrated by Henry Yule. 3 Vols. Hakluyt Society, London, 1887, P. I Vol. 265 P. L.

113. Travels of Pietro Della Valle in India, from the old English Translation of 1664 by G. Hakluyt 2. Vols. Ed. Edward Grey Hakluyt Society London 1892, iv. P. 192, P. L.

114. Voyage to East India..... Terry Edward, London 1777, P. 511, P. L.

115. Voyage to the East-Indies; begun in 1760.....Gosse J. H. 2 Vols, P. 343, 1766. London, P. L.

116 Record of Buddhist kingdoms, being an account by the Chinese monk FA-Hien of his travels in India and search of the Buddhist Books of disciplines, translated and annotated with a modern recension of the Chinese text, by LEGGE JAMES Charendon Press Oxford 1886, P. 123 P. L.

117. Travels of Fah-Hien and Sung-Yun, Buddhist Pilgrims from China to India (400 A. P. and 518 A. P.) translated from the Chinese by SAMUEL BEAL London, Trubner & Co., 1869, P. 208,

P. L.

115. Pilgrimage of FA-HIAN from the French Edition of the Foo Koncki, Calcutta, 1848. P. 373 p. l.

119. Life of Hinen-Tsiang, by the Shamans Hwai Li and 'Yen' Tsung, with a preface containing an account of the works of I-Tsing, by BEAL, Samuel. Trubner & Co, London, 1898 P. 218. p.l.,

120. Early Travels in India being reprints of rare and curious narratives of old travellers in India, in the sixteenth and seventeenth centuries.

R. Lepage & Co., Calcutta, 1864, P. 228. p. l.,

121. Travels in India in the Seventeenth century, by Dr. John Fryer, Trubner & Co., London 1873, P. 474 p. l.

122. Narrative of the extra ordinary adventures and sufferings by Shipwreck & Imprisonment of DONALD CAMPBELL. London, 1766 P. 276. P. L.

123. Travels in India a hundred years ago, with a visit to the United States,

Twining Thomas Mac Ilvaine & Co., London, 1893. P. 519, p.l.

124. Travels in the Mogul Empire by Francis Bernier, translated from the French by Irving Brock 2 Vols. 1826. London, Williams Pickering. Vol. 1, P. 340. p. l.

125. Voyage in the Indian Ocean & to Bengal, under-taken in the years 1789 and 1790.....2 Vols Translated, from the French of L. DE GRANDPRE London, 1803. P. 278. p. l.

126. Travels in the Mogul Empire A. P. 1656-1668. by Francis Bernier. Translated, in the basis of Irving Brock's version and annotated by Archibald Constable 1891. Seconded revised by Anicent A. Smith. Humphrey Milford Oxford University Press, London, 1914, P. 494. p. l.

127. Memoir of a map of Hindustan, of the Mogul Empire.....by James Rennell, London, 1787. P. 284. p. l. 3rd Ed. 1793, p. l.

128. Travels in India by Jean Baptiste TAVERNIER Baron of Aubonne: translated from the original French Edition of 1676, with a biographical sketch of the Author notes, Appendices, by V.

Bal[second edition edited by William Crooke 2 Vols. 1 Vol. P. 335.
Oxford University Press, P. L.

129. Six travels of John BATTISTA TAVERNIER, Baron of
Aubonne, through Turkey and Persia to the Indies, during the space
of Forty years. [Second part describing India and the Isles Adjacent
made English by F. P. London. 1684 P. 15, 214. P. L.

130. Description Historique et Geographique De L' Inde 3
Vols. by TIEFFENTHALL & P. J. and others, Berlin 1788. P. 1 Vol.
45 P. L.

131. True and exact description of the most celebrated East-
India costs of Malabar and coromandel as also of the isle of Ceylon
... ..by Philip Baldaens Amsterdam. 1672. B. V.
3rd P. 503-901. P. L.

132. Analysis of one hundred voyages to and from India,
China,.. ..by Henry Wise, Norie & Co., London. 1839.
P. 120. P. L.

133. Globe Trotter in India, two hundred years ago, by
Michael Macmillan, Swan Sonnenschein & Co London. 1895. P.
214 P. L.

134. India by Pierre Loti Clifford's inn London 1913. P. 283
P. L.

135. European travellers in India... ..by OATEN,
E. F. Trubner & Co., London. 1909 P. 274. P. L.

136. Periplus of the Erythraen Sea, travel and trade in the
Indian Ocean by a merchant of the first century, translated from
the Greek, and annotated by SCHOFF; W. H. Lougmans, Green &
Co., New York 1912, 223. P. L.

137. Early English Adventures in the East by Arnold
WRIGHT, London. 1917. 331. P. L.

138. Pioneers in India by HARRY JOHNSTON Blackie & Sons,
London N. D. P. 320. P. L.

139. Jahangir's India the Remonstrantie of Francisco
Pelsaert, translated from the Dutch by W. H. Moreland & P. Geyl,
W. Heffer & Sons, Cambridge 1925, P. 88. P. L.



115. Pilgrimage of FA-HIAN from the French Edition of the Foo Koneki, Calcutta, 1848. P. 373 p. l.

119. Life of Hsuen-Tsiang, by the Shamans Hwai Li and Yen' Tsung, with a preface containing an account of the works of H-Tsiang, by BEAL Samuel. Trubner & Co. London. 1898 P. 218 p.l.

120. Early Travels in India being reprints of rare and curious narratives of old travellers in India, in the sixteenth and seventeenth centuries.

R. Lepage & Co., Calcutta. 1964. P. 228. p. l.

121. Travels in India in the Seventeenth century, by Dr. John Fryer, Trubner & Co., London 1873. P. 474 p. l.

122. Narrative of the extra ordinary adventures and sufferings by Shipwreck & Imprisonment of DONALD CAMPBELL. London, 1796 P. 276. P. L.

123. Travels in India a hundred years ago, with a visit to the United states.

Twining Thomas Mac Ilvaine & Co., London, 1893. P. 519. p.l.

124. Travels in the Mogul Empire by Francois Bernier, translated from the French by Irving Brock 2 Vols. 1926. London. Williams Pickering. Vol. I. P. 340. p. l.

125. Voyage in the Indian Ocean & to Bengal, under-taken in the years 1789 and 1790.....2 Vols Translated, from the French of L. DE GRANDPRE London, 1803. P. 273. p. l.

126. Travels in the Mogul Empire A. P. 1656-1668, by Francois Bernier. Translated, in the basis of Irving Brock's version and annotated by Archibald Constable 1891. Seconded revised by Anisont A. Smith. Humphrey Milford Oxford University Press. London. 1914. P. 494. p. l.

127. Memoir of a map of Hindustan, of the Mogul Empire.....by James Rennell. London, 1787. P. 294. p. L. 3rd Ed. 1794. p. l.

128. Travels in India by Jean Baptiste TAVERNIER Baron of Aubonne: translated from the original French Edition of 1676, with a biographical sketch of the Author notes, Appendices, by V.

Ball second edition edited by William Crooke 2 Vols. 1 Vol. P. 335. Oxford University Press, p. L.

129. Six travels of John BAPTISTA TAVERNIER. Baren of Aubonne, through Turkey and Persia to the Indies, during the space of Forty years. Second part describing India and the Isles Adjacent made English by F. P. London, 1684 P. 15, 214, p. L.

130. Description Historique et Geographique De L' Inde 3 Vols. by TIEFFENTHALI R P. J. and others. Berlin 1788. P. 1 Vol. 45 p. L.

131. True and exact description of the most celebrated East-India costs of Malabar and coromandel as also of the isle of Ceylon by Philip Baldaens Amsterdam, 1672. R. V. 3rd P. 503-901, p. L.

132. Analysis of one hundred voyages to and from India, China,... .. by Henry Wise. Norie & Co., London, 1839. P. 120, p. L.

133. Globe Trotter in India, two hundred years ago, by Michael Macmillan, Swan Sonnenschein & Co London, 1895. P. 214 p. L.

134. India by Pierre Loti Clifford's inn London 1913. P. 283 p. L.

135. European travellers in India... .. by OATEN, F. F. Trubner & Co., London, 1909 P. 274, p. L.

136. Periplus of the Erythraean Sea, travel and trade in the Indian Ocean by a merchant of the first century, translated from the Greek, and annotated by SCHOFF; W. H. Longmans, Green & Co., New York 1912. 223, p. L.

137. Early English Adventures in the East by Arnold WRIGHT, London, 1917. 331, p. L.

138. Pioneers in India by HARRY JOHNSTON Blackie & Sons. London N. D. P. 320, p. L.

139. Jahangir's India the Remonstrantie of Francisco Pelsaert, translated from the Dutch by W. H. Moreland & P. Geyl; W. Heffer & Sons, Cambridge 1925, P. 88, p. L.

List of Books Consulted

1. India: A bird's eye view- *Earl of Ronaldshay* F.O.C., C.S.I., A., C.I.B.
2. Bharat Shakti- *Sir John Woodroffe*.
3. India Impressions & Suggestions- *J. Keir Hardie* M. P.
4. Delhi: Its Story & Buildings- *H. Sharp*, C.S.I., C.I.B.
5. Tavernier Travels- *Calarmont J. Daniel*.
6. Travels in the Moghal Empire- *Franquis Bernier* M.D. Translated by *Archibald Constable*.
7. Commentary of Father Monserrate S.J.- Translated by *J. Hopland* M. N.
8. Foot falls of Indian History- *Sister Nivedita* (Margaret Noble).
9. India in Conflict- *P.N.F. Young* M. A. & *Agnes & Ferrers*.
10. Is India Civilized ?- *Sir John Woodroffe*.
11. Alberoni's India- Edited by *Dr. Edward C. Sachau*.
12. India: Its Character- *J. A. Chapman*.
13. India: The New Phase- *Sir Stanley Reed & P.R. Gadell* C.S.I., C.I.B.
14. India Insistents- *Sir Harcourt Butler*.
15. India: Old & New- *F. Washburn Hopkins* M.A., F.H.D.
16. Voyages & Travels of Sir John.
17. Report of a tour through the Bengal Province- *J.D. Beglar* A.A.
18. India under free lances- *H. G. Keene* M. G. C. I. M.
19. A trip Round the world- *W. S. Caine* M.P.
20. Akbar and the Jesuits- Translated by *C. Payne*.
21. Chow-chow- *By the Vis Countess Folk Land*.
22. Letters written during the mintiny- *Field Marshal Fred Roberts*.
23. Taverniers Travels in India.
24. Turpe & Turban- *Lieut Col. H.A. New well* I.A.F., B.C.B.
25. Intercourse between India and the western world- by *H. G. Rawlinson* M.H.I.E.B.
26. The Great Temples- *The Christian Literature Society*.
27. Letters on India- *Maria Graham*.
28. इतिहास की भारत यात्रा- *Sant Ram B.A.*

29. A Civilian's wife in India Vol I.- *Mr. Roberts miss King.*
 30. Ram and Homer- *Arther Litho.*
 31. The other side of the Lantern- *Sir Frederick Maren Bart.*
 32. Scenes and thoughts in foreign Land- *Charles Terry.*
 33. General Gazetteer & Geographic dictionary- *L. Bech, M.D.*
 34. सुत्तमान सोदागर—महेश प्रसाद
 35. The Travels of Marco Polo the Venetian- *Thomas Wright M.A. &c.*
 36. Voyage to the East India Vol I.
 37. Nationalism in Hindu Culture- *Dr. R.K. Mukarji M.A. Ph. D.*
 38. A Bird's eye view of India: past is the foundation for India's future- *Dr. Anni Besant.*
 39. Land of the Veda- *Her peter Percival.*
 40. Aryan Race- *Charls morris.*
 41. Modern India and the Indians- *Moina Villhous D.C.L.*
 42. Scenes & Characters from Indian History.
 43. Indian in Transition.
 44. Rambles & Recollections in India. 45. History of Hindustan.
 46. Original Sanskrit Text- *Jaimuni.* 47. Naked Faqir-
 48. Digest of Jushunni. 49. The People of India their many names.
 50. Modern Review. 51. Indian Review.
 52. नाथी प्रचारिणी पत्रिका । 53. गङ्गा का विज्ञान ।
 54. Chamber's Encyclopaedia. 55. History of India.
 56. History of Hindustan. 57. Murry's History of India.
 58. Elliot's History of India. 59. Encyclopaedia Britannica.
 60. उदयन (वगला मासिक पत्र)
 61. Theogony of the Hindus. 62. India: what can it teach us.
 63. बर्नियर की भारत यात्रा
 64. Reform pamphlet. 65. Bishop Heber's Journal.
 66. The Arya (*Magazine*)
 67. इन्द्र विजय .
 68. Ancient geography of India. 69. Early History of India.
 70. The Bible in India. 71. Tod's Rajasthan.
 72. मनुस्मृति 73. सूर्य सिद्धान्त
 74. The Land of the Vedas. 75. History of the world.

76. Asiatic Journal. 77. Superiority of the Vedic religion,
 78. Thoughts of the past and future of India, 79. Indian Spectator
 80. Historical researches. ... 81. What India wants.
 82. Modern review. 83. Unhappy India.
 84. Sublimity of the Vedas.
 85. Indian pre-historic and proto-historic antiquities.
 86. Prinsep's Essays on Indian Antiquities.
 87. Art of the Creation.
 88. The Principles of Origin of Brahman.
 89. Mythology of the Hindus. 90. History of Sanskrit literature
 91. A History of India. 92. India Old & New.
 93. An English man defends Mother India. 94. Indian Wisdom.
 95. History of the Sikhs. 96. Works of Sri Shankara Charya.
 97. India Insistent. 98. Book of Joshma.
 99. Short Studies on great Subjects.
 100. Journal of the Behar and Orissa research Society:
 101. History of the Fine Arts in India and Ceylon.
 102. Indian Castes. 103. Weber's Indian Literature (*Translation*)
 104. Boston-sences report-1916 A. D.
 105. Annals & antiquities of Rajasthan. 106. Hindu Superiority.
 107. A Vision of India; 108. Hindu Manners. 109. Wake up India.

110. जातिक ग्रन्थ

111. Vedic India. 112. General Gazetteer & geographical Dictionary
 113. Indian People. 114. Indian Antiquary.
 115. India: what can it teaches us? 116. Marcopolo.
 117. The Oodh Gazetteer. 118. Strabo.
 119. Scenes and Characters from Indian History.
 120. Modern India. 121. India past and present.
 122. Indian Rayar. 123. Poverty & unbritish rule in India;
 124. Bombay Champion. 125. Philosophy of History..
 126. Mill's History of India.
 127. People of India: their many merits by May who have known
 them.
 128. Marsh man's History of India.

129. India for Indian and for England.
130. Elphinston's History of India. 131. Indian review.
132. History of Central India. 133. Indian Epic poetry.
134. Report of the Asiatic Society of Bengal.
135. India in Conference. 136. School History of India.
137. Aryan race. 138. Indian inscription.
139. History of antiquity. 140. Survey reports of India
141. Cole-man's mythology of the Hindus. 142. Tibet.
143. Buddhist India. 144. Foster's early travels in India.
145. Village government in British India.
146. Towards Home Rule. 147. Account of Kingdom of Kabul.
148. Report of the Select Committee of the House of Commons.
149. Historical Sketches of the South of India.
150. Theosophist teaching. 151. History of Marathas.
152. Ancient Indian Education.
153. Buddhist records of the western world. 154. Pioneers of progress
155. A bird's eye view of India's past as the foundation of Indian future. 156. Ideal of East. 157. Science of Language
158. History of Burma. 159. Indian Sculpture and painting.
160. Description of Java. 161. Military Science. 162. India in Greece
163. Heern's Asiatic nations. 164. Egyptian Religion.
165. Hang's Essays on the Parsees. 166. History of the Conquest of the Mexico. 167. Celtic literature. 168. Diarist of Justinian.
169. Ancient & mediaeval India. 170. Maxmuller's Rigveda.
171. Religion & Philosophy. 172. India's Past. 173. Art of Creation
174. Roys's Mahabharat. 175. Wilson's theatre of the Hindus.
176. Essay's on Sanskrit Literature. 177. Imperial Gazetteer.
178. Sanitary records 1898. 179. Weber's Indian Literature.
180. History Mathematics. 181. Hindu Chemistry.
182. Essays on Sanskrit Literature. 183. New India.
184. Wireless Telegraphy. 185. Expansion of England.
186. Scenes and thoughts in foreign land.
187. Ancient Architecture of Hindustan. 188. The great Temples.
189. History of Fine Art in India. 190. A trip round the world.
191. Native states of India. 192. Music of the Ancients.
193. Cambridge History of India. 194. Bombay City Gazetteer.
195. Journal of the Royal Asiatic Society.

196. History of Aryan rule in India.
 197. Town planing in Ancient India 198. Prosperous India.
 199. India and the British. 203. A new geography.
 201. The Soil. 202. महाभारत 203. रामायण
 204. अर्थ शास्त्र 205 पृथ्वीराज रासव—कौटिल्य
 206 तारीख हिन्द—ला० लाजपतराय 207. अशोक—जयचन्द्र
 208 जब अंग्रेज नहीं आये थे ! 209. सङ्गीत शास्त्र
 210 सङ्गीत मकरन्द 211. शुक्र नीति 212. सिद्धांत शिरोमणि
 213. उपनिषद् 214. भर्तृहरि शतक 215. पञ्च तन्त्र
 216 हितोपदेश 217. शकुन्तला 218 मृच्छ कैटिक
 219. विक्रमीवशी 220 राम चरित्र 221. मालती माधव
 222. सुदाराक्षम 223 रघुवंश 224. शिशुपाल वध
 225. कुमारसम्भव 226. किराताजुनीय 227. नलोदय
 228. भट्टि काव्य 229 नल दमयन्ती 230 नैषध चरित्र
 231. विशाल भारत (मासिक पत्र) 232. विश्वमित्र (भा०प०)
 233. भारती (बंगला) 234 विश्व-बन्धु ।

इनके अतिरिक्त साथ की दूसरी सूची की भी कुछ पुस्तकों
 मे सहायता ली गई है । पुस्तकों की यह सूची मेरे मित्र सरदार
 देवेन्द्रमिह एम० ए० ने तैयार की थी ।



विश्व-गुरु भारत



गौरव-गीत

ऐ इलाके हिन्द तेरी अजमत में क्या गुमां है ।
 दरियाए फँजे कुदरत तेरे लिए खां है ॥
 तेरी जमीं से नूरे हुस्ने अजल अयां है ।
 अल्लः रे जेबो जीनत क्या औजे इज्जोशां है ॥
 हर सुबह है य खिदमत खुरशीदे पुरजिया की ।
 किरनों से गूंथता है छोटी हिमालिया की ॥
 इस इलाके दिजनशी से चश्मे हुये हैं जारी ।
 चीनो अरब में जिनसे होती थी आबगारो ॥
 सारे जहाँ पे जब था वहशत का अब तारी ।
 चश्मो चिरागे आलम थी सरजमीं हमारी ॥
 शमा अदब न थी जब यूनां की अंजुमन में ।
 तावां था मेहरे वेनिस इस वादिए कुह्न में ॥

गौतम ने आवर दी इस मावदे कुहन को ।

सरमद ने इस जमीं पर सदेके किया वतन को ॥

अकबर ने जाय उलफन वल्शा इस अंजुमन को ।

सैन्हा लहू से अपने राना ने इस चमन को ॥

सब सूर वीर अपने इस खाक में निहां हैं ।

टूटे हुये खंडहर हैं या उनकी हड्डियां हैं ॥

दोघारो दर में अब तक उनका असर अयां है ।

अपनी रंगों में अब तक उनका लहू रवां है ॥

अब तक असर में डूबी नाकूस की फुगां हैं ।

फिरदौमे गोश अब तक कैफियते जमां है ॥

कश्मीर से अयां है जन्नत का रंग अब तक ।

शौकन से बह रहा है दरियाए गंग अब तक ॥

—चकवस्त



स्वर्गभूमि भारत

गायन्ति देवाः किञ्च गीतकानि,
धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे ।
स्वर्गा पकर्गस्य च हेतुभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुर-वात् ॥

—विष्णु पुराण

एक पाश्चात्य पंडित बतलाते हैं कि “भारत को साधारणतः संसार के लोग एक देश समझते हैं।, १ “भारत संसार का संक्षेप है।”२ उत्तर में पर्वतराज हिमालय मस्तक ऊंचा किए खड़ा है। इतिहास एल्फिंस्टन के शब्दों में—इसकी प्राकृतिक छटा एक बार नेत्रों में पੈठकर सदैव के लिये अपना अमिट स्मारक छोड़ जाती है।”३ एफ. आर्स्टिजर नामक जर्मन पर्यटक कहता है:—‘हिमालय के तुषार-मण्डित स्वर्ण शिखर से कल्लोल कर बहने वाली गंगा और यमुना, भारतीयों को अमर-संगीत सुनाती हुई उसकी शस्य-संपन्न भूमि को स्वर्गोपम बना रही है, सीमाओं पर लहराने वाले समुद्र उसके गौरवगीत गा रहे हैं। शरद्, ग्रीष्म और गुलाबी जाड़े के मनोहर रंगीन दिन और कल्पना को जागृत करने वाली रातें संसार में अन्यत्र कहां सुलभ हैं!”४

1. “India is commonly thought and spoken of as a single country. but this is not true, India is rather a collection of countries.”

2. Chamber's encyclopaedia, Page, 337

3. History of India, Page, 181

4. Frenz Ostringer, a German traveller still touring in India

इतिहासकार टामस मोरिस महोदय लिखते हैं—‘एक ही समय दो ऋतुओं के आविर्भाव की विलक्षणता एवं विशालता, वनों का सौरभ, सुस्वादु मनोहारी फल, सुन्दर जलवायु वाली भूमि का विशाल कोष, शिल्प-निर्मित वस्तुओं के विभिन्न नमूने, भारत को अत्यन्त पुरातन काल से ही उपलब्ध हैं । इसकी विलक्षणता के अजूबे और आत्मप्रसन्नता के साधन दाशानिकों की कल्पना को जाग्रत करने वाले विषय हैं ।’^५ इतिहासवेत्ता मरे कहते हैं—‘भारत पाश्चात्य जगत् की कल्पना में सदैव से सुपमा-सम्पन्न, विशाल-ह्रम हीरों की प्रभा से जगमगाता, भीनी-भीनी सुन्दर सुगंधि से सुरभित रहा है। + + + वसुन्धरा के पृष्ठ-तल पर भारत एक अनूठा देश है । इसकी रंग विरंगी प्राकृतिक शोभा की विभूति, भूमि की बहु भूल्य उत्पत्ति, कठिन्ता से किसी दूसरे देश को सुलभ होगी ।’^६

चौदहवीं सदी के इतिहासकार अब्दुल्ला वस्सफ के मुंह से भारत की भव्यता का गीत सुनिए—‘समस्त लेखकों के कथनानुसार भारत पृथ्वी का एक अत्यन्त मनोरम भू भाग का एक रमणीयतम स्थान है । इसके रजकण वायु से विशुद्ध और वायु स्वयं पवित्रता से भी अधिक पुनीत है । इसके चित्ताकर्षक मैदान स्वर्ग-सदन की समता करते हैं ।’^७ बर्लिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वान ग्लिम्फेथ ने (Von Glimpheth) विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को एक पत्र में लिखा था—‘जीवन में एक बार भारत-यात्रा कर, उसके आध्यात्मिक वायुमण्डल में सांस लेने की प्रबल आकांक्षा है । यदि यह सम्भव हो सका तो मेरे जीवन

5. History of Hindustan, Page 8,

6. Maroy's history of India, page, I

7. Elliot's history of India, Vol III page 28 and 29

की सर्वमहान् अभिलाषा पूर्ण होगी। क्योंकि वहां के आदिम एवं विशाल निर्भर में मैं विवेक-तत्त्व का पान करूंगा।” सृत्यु शय्या पर लेटी हुई महीयसी महिला एनी बेमैण्ट ने अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट की थी—‘मैं फिर इसी भारत-भूमि में क्षत्राणी होकर पैदा होऊं।’^८ इ० ब्रिटैनिका के ग्रन्थकार का कहना है—‘भारत अत्यन्त प्राचीन काल से ही पृथ्वी पर प्रतिष्ठित एवं अत्यन्त उपकृत देश रहा है। क्या कला कौशल और क्या प्रकृति प्रदत्त, दोनों ही प्रकार की उत्तमोत्तम उत्पत्ति से यह मालामाल है।’^९ प्रौच विद्वान् क्रोफर के शब्दों में—‘अगर इस भूमण्डल पर ऐसा कोई महान देश है जो मानव जाति के आदिम-स्थान और ज्ञान दाता होने का गौरव रखता है तो वह निस्सन्देह भारतवर्ष है।’

स्वीडिश काण्ट जर्नास्टजनी मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं कि—‘भारत की प्रत्येक वस्तु अद्भुत, महान् और विलक्षण है। दुर्भेद्य कवचधारी शूरमाओं से लेकर काशी-मंदिरों के पुजारी ब्राह्मणों तक, भयंकर मराठों से लेकर हाथियों पर सौर करने वाले नवाबों तक, अमेजन के केहरी सेवित जंगलों से बायाडेर (Bayeder) के उपासना-स्थानों तक, प्रकृति स्वयं इस यशस्वी भूमि में विविध प्रकार के रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित हो कर क्रीड़ायें करती हैं। देखिये, दक्षिणोत्तर सीमा वाले इसके प्रचुर-पुष्प-फल, मानसून के ववण्डर, हिमालय की हिम-मण्डित चोटियां और मरु की शुष्कता, दृष्टिपात कीजिये, हिन्दूस्तान के विस्तीर्ण मैदान और ऊंचे पर्वतों की चोटियों के प्राकृतिक दृश्य की ओर, इन सब से बढ़ कर उसके अनन्त काल के इतिहास

8. उदयन, कार्तिक १३४० वंग।

9. Encyclopaedia Britanica page 446,

एवं अनुस्मृति काव्यों को ।” १० वेदज्ञ मैक्समूलर की सम्मति है ‘अगर मुक्त से प्रकृति-प्रदत्त संपत्ति, शक्ति और सौन्दर्य में सर्वोत्कृष्ट देश या भूमण्डल पर स्वर्ग खोजने के लिए कहा जाय तो मैं भारत की ओर संकेत करूंगा ।” ११ इसी पुस्तक में दूसरे स्थान पर आप कहते हैं—‘यदि कोई मुक्त से यह बात पूछे कि वह देश कौन और कहाँ है, जहाँ पर मनुष्यों ने इतनी मानसिक उन्नति की है वे उत्तमोत्तम गुणों की वृद्धि कर सकते हों, जहाँ मानव सम्बन्धी गूढ़-विषयों पर विचार किया गया हो और जहाँ उनके हल करने वाले पैदा हुए हों, तो मैं यही उत्तर दूंगा कि वह देश भारतवर्ष है ।” आनरेबुल जस्टिस सर जान उडरुफी लिखते हैं कि—प्राचीन भारत अत्यन्त शानदार था । ‘‘ध्यान-शील होने पर भी उसने कर्मवीरों को जन्म दिया जो शूर सैनिक और राजनैतिक विख्यात हुए । भारतीय इतिहास के अनुशीलन से प्रकट होता है कि इसने भान्ति भान्ति के मानव-चरित्रों को उत्पन्न किया है ।” १२ इटली रायल एकाडेमी के वाइस प्रेसी-डेण्ट हिज एक्सलेन्सी कार्लो फार्मोची और रायल एकाडेमी के सदस्य हिज एक्सलेन्सी गुइसपडूसा ने अभी तिब्बत और नेपाल का भ्रमण किया था: आप कहते हैं—“हम नेपाल को देखकर मुग्ध हो गए । यही इस समय भारत में एक ऐसा देश है जिसे देख कर हम उसकी हजारों वर्ष पूर्व की उन्नत सभ्यता का अनुमान लगा सकते हैं ।”

प्रकृति ने इस महान् देश में समृद्धि परिपूर्णता और वैभव के जितने सामान एकत्रित कर दिये हैं वे किसी अन्य देश को

10. Theogeny of the Hindus, Page 446.

11. India, what can it teaches us,

12 Is India civilized ?

कहां नसीब ? प्रसिद्ध अंगरेज यात्री और लेखक जेम्स मिल ने कश्मीर के गौरव स्मृत सुनकर कहा था—‘ऐ कश्मीर ! मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ !’ फ्रांसीसी यात्री बर्नियर इस प्रकृति-क्रीड़ा भूमि को देख कर कहता है—कश्मीर ‘मुझे बहुत पसन्द है । इस सुन्दरता और मनोहरता के विषय में आज तक जो कुछ मैंने अनुमान किया था, उससे भी बढ़कर उसे पाया । यह देश अनुपम है । संसार का कोई देश सुन्दरता में इस की समता नहीं कर सकता ।’ १३ एक्वेटिल लुपेरेन यात्री महाराष्ट्र के सम्बन्ध में लिखता है—‘जब मैंने मरहठों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों स्वर्ण-युग के सरल और आनन्दमय प्रदेश में पहुंच गया हूँ । वहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था ।’ १४ सर जान मालकम नाना फरनबीस के समय महाराष्ट्र को देख कर आश्चर्य प्रकट करते हुए बतलाते हैं—‘मुझे ऐसे देशों को देखने का कभी अवसर नहीं मिला, जहां इतनी अच्छी खेती हो और खाद्य सामग्री तथा व्यापार की वस्तुएं इतनी प्रचुर मात्रा में उत्पन्न की जाती हों ।’ १५ बिशप हीबर ने अवध के सम्बन्ध में भी ऐसा ही लिखा है । १६

विश्व के साधारण यात्री से लेकर सम्राट तक, छोटे से लेखक से लेकर बड़े से बड़े विद्वान् दार्शनिकों तक, सभी इस भव्य भूमि को देख कर कुछ समय के लिये विस्मय-विमग्न बन चुके हैं । लार्ड मेकाले ‘बंगाल’ को पूर्वीय देशों का ‘नन्दन विपिन’

13. *Travels in the Mugal Empire*

और, बर्नियर की भारत यात्रा भाग ४, पृष्ठ ५० ।

14. *Gentle man's Magazine*. 1762 A, D. Page. 376

15. *Reform Pamphlet*.

16. See, Bishop Heber's journal vol. II.

बतलाते हैं, तो डाक्टर लीटनर कहते हैं इसे 'सूर्य का देश'। वावर इसे 'बुद्धिमानों का सम्पन्न देश, कहता है, तो लुटेरा महमूद बतलाता है 'विहिस्त स्वर्ग' ! विख्यात फ्रांसीसी पीयरर लोटी (Pierre Loti) बड़ी श्रद्धा भक्ति से वेदों की इस भूमि को नमस्कार करता है—“उस प्राचीन भारत को, जिसकी मैं सन्तान हूँ, जो ऐश्वर्य कला कौशल और दर्शन में सर्वोच्च था, मैं श्रद्धा के साथ नमस्कार करता हूँ।” १७

कुछ लोग बिना सोचे-विचारे तर्क-वितर्क करने लगते हैं कि भारतवर्ष में ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जातीयता का विकास हुआ, यह बात नितान्त थोथी और निराधार है। भारत अनादि काल से धर्म प्रधान देश रहा है और राजनीति उसकी संस्कृति का एक अंग। यदि हम विशाल भारत में फैले हुए हिन्दू तीर्थों, बौद्ध विहारों, और शङ्कराचार्य के मठों पर विवेकदृष्टि से विचार करें, तो हमें मालूम हो जायगा कि इन के मूल में जातीय संगठन एवं राष्ट्रीय एकता का कितना जबरदस्त सिद्धान्त काम कर रहा है। सर हेनरीमैन के शब्दों में राष्ट्रीय भावों की उत्पत्ति सब से पहले भारतवर्ष ही में पाई जाती है। यहीं से यह भाव पश्चिम की ओर आए।”

धार्मिक एकता ही जातीय एकता है, तीर्थ स्थानों की उत्पत्ति इसी एकता का मूल है। पुराण का श्लोक साक्षी है —

महेन्द्रो मलयः सद्यः, श्रुतिमानृच पर्वतः ।

विन्ध्यश्च पारि पत्रश्च, सप्तैते कुल पर्वतः ॥

प्रातः काल आँख खुलते ही भारतीय अपने विशाल देश को स्मरण कर लेता है। किसी भी जल स्तोत्र में स्नान करने वाला

व्यक्ती भारतीय सगिताओं के सानिध्य की कामना करता है ।। इस से अधिक भारत के धर्मगत ऐक्य का और क्या प्रमान हो सकता है ।॥ डाक्टर राधाकुमुद मुखोपाध्याय भी इसी भावना का समर्थन करते हैं और स्वर्गीय विदुषी महिला डा० वीसेण्ट ने भी भारत की एकता को स्वीकार करते हुए मुखोपाध्याय महोदय का जवर्दस्त शब्दों में अनुमोदन किया है ।'' १८

पुरातन काल में भारत मुख्यता दो भागों में बँटा था ।'' १९
पूर्वीय और पश्चिमीय । सिन्धु नदी इन दोनों की विभाजक रेखा मानी जाती थी । पूर्वीय भारत की पूर्वी सीमा, फार्मुसा देश और रक्तसागर तक पश्चिम सीमा थी ।'' २० आज प्राचीन भारत की भौगोलिक सीमाओं को निश्चित करना एकान्त कठिन है । बृहत्संहिता, इन्द्र-विजय, अर्थ-शास्त्र (कौटिल्य) और शुक्रनीति आदि के आधार पर कहना पड़ता है कि विशाल देशों की सीमाएं भूमण्डल की सीमाएं थीं । आज भी भारतीय अपने धार्मिक संकल्प में जम्बूद्वीप (एशिया) का स्मरण कर लेते हैं । पेकिंग (चीन) विश्वविद्यालय परिषद् के सभापति श्री लियांगचिचाव के शब्दों में 'उस समय भारतवर्ष उन्नति के उच्च शिखर पर विराज-

†अयोध्या मथुरा गया, काशी काञ्ची अवन्तिका ।

पुरी द्वारवति चैव सप्तैता मोक्ष दायिका ॥

*गंगे च यमुने चैव गोदाकरी सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिकुरु ॥

18. Nationalism in Hindu culture, see also, India a bird's eyeview.

19. इन्द्रविजय, पृ० ५०

20. उतत्या सत्य आर्या सरसोरिन्द्र भारतः, चर्ण चित्र रथा वधीः-
ऋग्वेद । इन्द्र-विजय पृ० ५१

मान था। उस युग में इस में उदार आदर्शों, और महापुरुषों के उत्पन्न करने की शक्ति थी।'

महाभारत में भारत का आकार त्रिकोण बतलाया गया है। विद्वान् कनिंघम महोदय ने भी अपने भूगोल में इसी का समर्थन किया है।^{११२} इसका आधुनिक क्षेत्रफल ११६ करोड़ एकड़ है। इस दृष्टि से भारत जर्मनी से सात गुना, जापान से ग्यारह गुना, ग्रेट ब्रिटन से १५ गुना और इंग्लैण्ड से १२ गुना है। आबादी ३५,२६,८७६ है। जन संख्या के हिसाब से भी ब्रिटिस द्वीप के आठ गुने से भी यह बड़ा है।^{११२}

इस बृहत्तर भारत में २३८३३०६१२ हिन्दू, ४३०६४४२ सिक्ख, ५६६१७६४ ईसाई, १२०५२३५ जैन, १०६६ पारसी, २०४८४ यहूदी, ७७७४३६८ मुसलमान और ८७०४८२६ अन्य मतावलम्बी निवास करते हैं। यहां हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या ६६७१५०००, बंगला ५६२८४०००, तैलगू २३६०१०००, मराठी १८७६८०००, तामिल १८७८०००, कानाडी १०३७४०००, राजस्थानी १२६८१०००, पंजाबी १६२३४०००, उड़िया १०१४३००० और गुजराती बोलने वालों की संख्या ६५५२००० है।

इसके अतिरिक्त यहां पर हर प्रकार का जलवायु, बनस्पतियां तथा फल-फूल इत्यादि पाये जाते हैं। इन विभिन्नताओं को सामने रखते हुए भौगोलिक विज्ञान के प्रमाणिक विद्वान् चिशिल्म का विचार है, कि प्राकृतिक बनावट में भारत के टक्कर का संसार में दूसरा देश नहीं।

21. Ancient geography of India

22. माल्थस के अनुसार यदि खान पान की सुविधा हो तो प्रत्येक देश की जन संख्या प्रति पच्चीस वर्ष दूनी हो जाती है। सन् १६९६ में यहां की जनसंख्या ३९ करोड़ थी।

भारत के इन मूल्म विचारों का मनन करने वाला प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विन्सेन्ट स्मिथ बतलाता है कि भारत अपनी भौगोलिक स्थिति द्वारा पूर्ण सुरक्षित और एकता प्राप्त देश है। इसी सत्यता को मर हर्वर्ट रिसले भी व्यक्त करते हैं—“यद्यपि बाह्य प्रकार से भारतवर्ष में धर्म, भाषा, सामाजिक आचार-विचार आदि की अनेकता प्रतीत होती है, तथापि इन सब की आधारभूत एकता को सुगमता से देखा जा सकता है।” रीति रिवाजों, भाषाओं और प्रथाओं के आधार पर जातीयता की एकता पर सन्देह करना अदूरदर्शिता है। भारत की जातीय एकता यूरोप की रेखाओं पर नहीं, अतः उसका मनन भी भारतीय दृष्टिकोण से होना चाहिये। भारत की सभ्यता के मूल में एकता है, संस्कृति में एकता है, धर्मों में एकता है और भावनाओं में भी है ऐक्य। विद्वान् स्मिथ की भी सम्मति सुनिये—

“भारतवर्ष की भौगोलिक सीमा पर समुद्र या पहाड़ है। एशिया के अन्य देशों से वह बिल्कुल अलग है। इन कारणों से वह एक देश है, और समस्त देश के लिए उपयुक्त और आवश्यक नाम है, भारतवर्ष। यहां (भारत में) एक भिन्न प्रकार की सभ्यता है, जिस के कारण यह संसार के सब देशों से अलग है। यह भारतीय सभ्यता भारतवर्ष के अन्तर्गत सब प्रान्तों में प्रायः एक सी पाई जाती है। इस लिए हम समस्त भारतवर्ष को संसार की राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक उन्नति के इतिहास में एक देश कह सकते हैं।” २३

लक्ष्मी की लीला-स्थली, सरस्वती की क्रीड़ा-भूमि और सभ्यता की जननी भारत-भूमि के सामने नतमस्तक होकर सुप्रसिद्ध विद्वान् जैकोलियट कहता है—‘ऐ प्राचीन भारत भूमि, मानवता

का पालना, तुम्हें नमस्कार है ! पूजनीय कार्य-क्षम-धात्री, नमस्कार ! प्रेम, विश्वास और विज्ञान के आचार्य (भारत) ! हम तुम्हारे अतीत समुत्थान को पश्चिम के भविष्य में नमस्कार करते हैं ।’

‘तुम्हारी उत्कृष्ट प्राकृतिक भाषा को समझने के लिए, सान्ध्य समीरण से इसली और बट-बृत्तों के पर्ण समूह की कानाफूँसी को जानने के लिए, मैं तुम्हारे रहस्यपूर्ण जंगलों में रहा हूँ । उन्होंने मेरी आत्मा को तीन जादू भरे शब्द बतलाए हैं—ज्यूस (Zeus) ब्रह्म और जिहोवा (Jehova) ।’

‘संक्षेप में भारत का अध्ययन, सच्चे रूप में मानवता का अध्ययन है । अभाग्यवश बिना इस रहस्य पूर्ण देश में रहे’ इसके रसमोरिवाज से पूर्ण परिचित हुए और सब से अधिक इस की जीवित भाषा संस्कृत का पूर्ण परिज्ञान प्राप्त किये बिना इस के गौरव का अनुमन्थान करना कठिन है । यूरोप में परिमार्जित ज्ञान के सहारे प्राचीन भारतवर्ष में बैठना कठिन है ।’ २४ भारत भू-मण्डल का भाग्य है, विश्व का भूषण है । इतिहासकार ए वासफ के शब्दों में ‘स्वर्ग भी इसकी समता का नहीं ।’ २५

24. The Bible in India—Jacoliat's views.

25. ‘If it is asserted that paradise is in India be not surprised because parvsi itself is not comparable to it.’

प्राचीनता

ऋषिर्हिपूर्वाजा अत्येक ईशान ओजसा—ऋग्वेद

विश्व ब्रह्माण्ड की ओर यदि हम गम्भीर दृष्टि डालें, तत्त्व-वेत्ता की आंखों से उसे देखने का प्रयत्न करें तो पता लगेगा कि भारत ही एक ऐसा सुसम्पन्न देश था जहां नाम मात्र के परिश्रम से लोगों की जीवन आवश्यकताएं बड़ी आसानी से पूरी हो जाती थीं। जलवायु भी अनुकूल था यही कारण है कि संसार के रङ्गमंच पर सब से पहले इसी देश ने ज्ञान-विज्ञान की गुत्थियों को सुलझाया था।

ऊंचे से ऊंचे पहाड़, नीची से नीची भूमि, छै ऋतुएं, प्रकृति की अद्भुतताओं की यह विषमताः शक्ति को उत्तेजित करने का दूसरा साधन है। संसार में भारत के धर्म गुरु बनने का एक यह भी रहस्य है, सर्वप्रथम ज्ञानमार्तण्ड के भारतीय आकाश पर आविर्भूत होने का यह राज है।

जिस समय विश्व का मानचित्र बिल्कुल धुंधला था उस समय भारत भूमि पर सभ्यता का सूर्य अपनी किरणें छिटका रहा था। इसका प्रमाण है सृष्टि रचना का इतिहास। कर्नल जेम्स टाड नत-मस्तक होकर स्वीकार करते हैं कि 'आर्यावर्त' के अतिरिक्त अन्य किसी देश में सृष्टि का हिसाब नहीं पाया जाता, इससे आदि सृष्टि यहीं हुई इसमें सन्देह नहीं।" † वास्तव में उत्पत्ति प्रलय का हिसाब ही सभ्यता की प्राचीनता को बतलाने वाले बड़े मार्क के प्रमाण है। चैलिडयन्स की सभ्यता दुनिया में बहुत पुरानी समझी जाती है इसी के उदर से निकल कर आधु-

† Tod's Rajasthan.

निक पाश्चात्य सभ्यता इधर उधर उछल कूद मचा रही है। उन लोगों के विचार से पृथ्वी की उत्पत्ति २० लाख वर्ष पूर्व हुई थी। चैल्यिन्स के समकक्ष मिथ्री Egyptians) इस विषय में मौन हैं। अस्तु प्राचीन बेबीलोनिया (Babylonia) से पृष्ठ देखना उचित है किन्तु “यथा नामः तथा गुणः” के अनुसार वहां पृथ्वी की आयु केवल ५ लाख वर्ष ही मानी जाती है। ईरानियों ने तो इसे घटा कर १२००० वर्ष ही रखा है। मध्य कालीन योगोपियन विद्वानों की कल्पना ६००० वर्ष तक ही पहुंच कर कुण्ठित होगई! ऐसी अवस्था में इतने लम्बे चौड़े हिसाब का लेखा बूढ़े भारत के सिवाय और कौन दे सकता है। मनुस्मृति^१ के अनुसार सम्वत् १६६० विक्रमी में सृष्टि को हुये १६७२६४६०३४ वर्ष बीते। इसका समर्थन भास्काचार्य के सूर्यसिद्धान्त द्वारा भी होता है सूर्य-सिद्धान्त में इसका व्यौरा इस भान्ति अङ्कित हैं^२ ७१ चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है और एक सतयुग के समान इसके अन्त में सन्धि बतलाई गई है। सन्धि सहित ऐसे ही १४ मन्वन्तर होते हैं और सतयुग की भांति कल्प के अन्त में १५ सन्धियां होती हैं। इस प्रकार सहस्र महायुग तक परमेश्वर सृष्टि को स्थिर रखता है। इसी का नाम ब्रह्मा का दिन या कल्प है। ब्रह्मा की रात्री की भी यही अवधि है।”^३ इस विवेचना से यह बात स्पष्ट हो गई कि ऋषियों ने इसके १४ विभाग मन्वन्तर किये और फिर इन्हें ११ भागों (चतुर्युगियों) में विभाजित किया।

यहां पर युग और सूर्य सिद्धान्त दोनों के अनुसार इसकी गणना की जाती है, किन्तु इस बात को दृष्टिगत रखना आवश्यक-
1. मनु० अ० १ श्लोक ६८ से ८० तक।

२ सूर्य सिद्धान्त, मध्याधिकार, श्लोक १७ से २० तक।

यक है, कि कलियुग से दुगुनी अवधि पर द्वापर की तीगुनी त्रेता की और चौगुनी सतयुग की होती है ।

प्रथम विधि		द्वितीय विधि	
नाम युग	वर्ष	नाम युग	वर्ष
१ सतयुग	१८२८०००	७१ चतुर्गुणी	
		अथवा १ मन्वन्तर ३०६८२००००	
२ त्रेता	१२६६०००	१४ मन्वन्तर	
		(६६४ महायुग) ४२६४०८०००००	
३ द्वापर	८६४०००	सन्धि	२५६२००००
४ कलियुग	४३२०००		
एक चतुर्गुणी		१ कल्प (सहस्र महायुग)	
(महायुग ४३२००००)		अथवा १ ब्रह्मदिन ४३२००००००००	

भारतीय गणना के अनुसार सृष्टि की आयु ४३२०००००००० वर्ष है !” ३ मिस्टर हाल्हेड सरीखे पाश्चात्य पंडित भी भारतीय सृष्टि गणना को देख कर कहते हैं ‘इस प्राचीनता के सामने तो मूसा की सृष्टि अभी कल की मालूम पड़ती है, अमरीकन विदुषी ब्लैवेस्टकी भी सिर झुकाए आर्य गणना के सुस्पष्ट हिसाब को स्वीकार करती हैं ।” ४ पाश्चात्य पंडित वाल्टर रेल ने भी चिर-अनुसन्धान के पश्चात् अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रकट की है” जल प्रलय के अनन्तर भारतवर्ष में ही प्रथम वृक्षलता आदि की उत्पत्ति, और मनुष्यों की बस्ती बसी थी ।” ५ कप्तान

3. x “General period of creation and destruction is 4,320000,000 years,” The land of the vedas.

4. See, Secret Doctrine Vol. II Page. 69.

5. History of the world,

द्राव्यर भी इस बात से इनकार नहीं करते' कि ग्रेटस्टेट्स (Great States) की सभ्यता हमसे कम से कम ३ हजार वर्ष पहले की है, किन्तु उसमें भी आगे रामायण के नायक राम को हम देखते हैं ।' ^६ स्वीडिशकांट जार्नस्टर्जन बतलाते हैं कि आर्य-वर्त केवल हिन्दू धर्म का ही पालन नहीं प्रत्युत संसार की सभ्यता का आदिम भण्डार है ।' ^७

भाषा-तत्त्व-विज्ञान विशारद मि० टी० जे, किनेडी कहते हैं—'जिन की भाषा में इतने पहले ऐसे परिमार्जित विचार प्राप्त होते हैं, उनकी सभ्यता स्पष्ट रूप से उतनी प्राचीन है ।

किसी जाति की सभ्यता का प्रतिबिम्ब, और प्राचीनता की कसौटी है उसका साहित्य ! इसी का अनुशीलन कर विद्वान वी० डी० ब्राउन इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—'निष्पक्ष मस्तिष्क में सतर्क निरिच्छा कर यह मानना पड़ेगा कि भारत साहित्य और परमार्थ विद्या में समस्त विश्व का पिता है ।' ^८ योरोपियन विद्वान विक्टर कजिन (Victore Cousin) के भी उद्गारों का अवलोकन कीजिये—'हम ने ध्यान पूर्वक पूर्व के दार्शनिक एवं काव्य ग्रन्थों का अवलोकन किया है और इन में सब से अधिक भारत का, जिसके विचार योरोप में फैलने आरम्भ हुए थे । उन के अन्दर गम्भीर सत्यता है ।हम उस प्राच्य जगत् को मानवता का पालना और उच्च दर्शन की जननी जन्मभूमि पाते हैं ।' ^९

भारत की यात्रा करने वाले रोम (इटली) के संस्कृत प्रोफेसर

6. Asiatic journal, 1841.

7. Theogony of the Hindus, page. 168

9. Superiority of Vedic Religion.

10 Thoughts on the past and future India.

काउन्ट एन्जेलो डी गुलीअरनेटिस (Count Angelo de Gu-
liernatis) भारत का भ्रमण करते हुए लिखते हैं कि यह देश
अपनी प्राचीनता, सभ्यता और उस से भी अधिक अपनी
संस्थाओं, बुद्धिमान और सुन्दर निवासियों के लिये सुप्रसिद्ध
है।¹¹ प्रोफेसर हीरेन भी भारत की प्राचीनता और महत्ता को
स्वीकार करने हुए कहते हैं—‘भारत ज्ञान का वह उत्पत्ति स्थान
है, जहां से न एशिया के ही शेष भाग ने अर्थात् समस्त पश्चात्य
जगत् ने अपने ज्ञान एवं धर्म को प्राप्त किया है।’¹²

भारत की सभ्यता कितनी पुरानी है, विश्व के बड़े २ विद्वान
गगिनज भी इसकी उत्पत्ति तिथि नहीं निकाल सके ! सुयोग्य
विद्वान पट्टेयटक अलबेरुनी, (१०३० ई०) लिखता है कि जल
प्रलय (Deluge) अर्थात् नृष्टि के नौ सौ वर्ष पश्चात् मिश्र में
एक हिन्दू सम्राट राज्य करता था।¹³

कांट जर्नस्टजना महोदय ने यूनानी राजदूत द्वारा खोजी
हुई पाटलीपुत्र की राज्यवंशावली से पता लगाया है, कि चंद्रगुप्त
तक यहां १५३ राजाओं ने राज्य किया, जिनका शासनकाल ६४५७
वर्ष था। इस गणना से भारतीय सम्राट डायोनेसिस का समय
ईसा से ७००० वर्ष पूर्व होता है।¹⁴ कहने का आशय यह है
कि भारत के प्रथम सम्राट की राज्यरोहण तिथि अथवा इस
तपोभूमि पर बाल-रवि की किरणों का दर्शन आज तक कोई भी
न कर सका और करता भी कैसे ! कारण, मेजर डी० ग्राहमपोल
(D. Grahm Pole) के शब्दों में सुनिये ‘यह भारत’ उस

11. Indian Spectator, Nov. 1371 See also, ‘Travels in India’

12. Historical Researches Vol. II Page 34

13. Alberuni's India Vol. 1 Page 407

14-Thejony of the Hindus page 45-

समय सभ्य और सुशिक्षित था जब हमारे पूर्वज वल्कल (Wood) की—मृष्टि की आदि कालीन—पौशाक में इधर उधर दौड़ रहे थे।^{१५} १२ अप्रैल १६१७ ई० को अमरीकन लंचन क्लब में प्रीमीयर (Premier) ने अपने व्याख्यान को समाप्त करते हुए बतलाया था कि 'मिस्टर लायडजार्ज द्वारा भाषण में बतलाई गई समस्त जातियां और हमारे शासक अग्रेज भी, विश्काउंट पालामस्टन (Palamerston) के शब्दों में जब अर्द्धवर्ष अवस्था में थे, उस समय भारत अपनी सभ्यता के उच्च शिखर पर आमीन था।'^{१७} सुप्रसिद्ध योरोपियन विद्वान काल ब्रुक भी स्वीकार करते हैं कि 'इस देश से ज्ञान और सभ्यता की ज्योति पढ़ने यूनान में गई, और फिर वहां से रोम और समस्त योरोप में फैली' !

भारत के भूतपूर्व वाइसराय मारक्विस् आफ रिपन इसके सम्बन्ध में लिखते हैं—'हम यहां पर जिन प्राचीन पुस्तकों के मध्य में हैं, उनके पास उनकी अपनी सभ्यता, कला और साहित्य है।'^{१८} श्रीकेशवदेव शास्त्री के सम्बन्ध में लिखते हुए एक अमरीकन पत्र इस तपोभूमि भारत की सराहना करता है—'वह (भारत) प्राचीन काल में ज्ञानवान और बुद्धिमान था जबकि योरोप के लोग जंगली थे और अमरीका का तो किसी को ख्याल भी न था।'^{१९}

विश्व के रंगमञ्च पर मिश्र की सभ्यता भी बहुत पुरानी है

15. Modern Review for June, 1934.

16. Modern Review for June 1934.

17. What India wants, page 138.

18. Speeches of Marquis of Ripon in India.

19. Hopkins Enterprise, Nov. 13.

उसी को सामने रख कर विद्वान थार्टन महोदय अपना फैसला देते हैं—'जब नील नदी की घाटी पर तुच्छता का दृष्टिपात करने वाले पिगामिडों की सृष्टि नहीं हुई थी, जब योरोपियन सभ्यता का पालना समझे जाने वाले यूनान और रोम नितान्त असम्भ्य थे, तब भारतवर्ष धन और वैभव का धाम था। वहां चतुर्दिक् व्यवसाय-विशारदों की वस्तियां बसी थीं और भूमि पर उनका परिश्रम अङ्कित था। किसानों की मेहनत को प्रतिवर्ष प्रकृति बहुमूल्य धन-धान्य से पुरस्कृत करती थी। कारीगरों का चमत्कार-पूर्ण भवनों के निर्माण कुशलता की समता आज सहस्रों वर्ष की प्रसारित सभ्यता में भी नहीं की जा सकती...भारतवर्ष की प्राचीन स्थिति अवश्य ही असाधारण रूप से महत्वपूर्ण रही होगी।" २०

भारतीय सभ्यता की प्राचीनता संसार के लिये एक आख फाड़ कर देखने वाली अद्भुत चीज है। मेक्सलर के शब्दों में प्राचीन वंश विनीष्ट हुए, परिवारों में तबाही आई, नये साम्राज्यों की नींव पड़ी, किन्तु इन आक्रमणों और हलचलों से हिन्दुओं के आन्तरिक जीवन में परिवर्तन नहीं हुआ। वर्षों की बौछारे आईं और चली गईं किन्तु वे ओटस-पत्र सदृश्य (Otus) सहिष्णु, शान्त और विश्वास पूर्ण ही रहे।" २१ वास्तव में देखते देखते कितनी ही जातियां दुनिया के स्टेज पर काली घटाओं की भान्ति उमड़ी और न जाने किस गहरे गर्त में गिरकर गायब हो गईं किन्तु डाक्टर इक्वाल के शब्दों में हम कह सकते हैं कि—

कुछ बात है ऐसी कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों से रहा है दुश्मन दारे जमां हमारा ।

20 Unhappy India.

21. Sublimity of the Vadas.

भारतीय प्राचीनता की विलक्षणता ही उसके इस भूंचाल में भी गुरु गम्भीर बनकर खड़े रहने का कारण है। विशाल वसुन्धरा उसकी जन्मपुत्री है, जिस पर आज पचासों मन रेत जम गई है। किमी भी संसार के कोने में पहुंच कर, भूगर्भ की तलाशी लीजिये कोई न कोई युगों की पुरानी अद्भुत बात आप को मालूम हो जायेगी ! मिस्टर आर० बी० फूट ने एक बार इसके अंचल को टटोल कर न जाने किस युग के टूटे फूटे बर्तन प्राप्त किये थे। उनके सम्बन्ध में आप लिखते हैं 'इन में से अधिकांश बहुत अच्छे किस्म के और सुन्दर पालिश किये हुए हैं, ये उच्च श्रेणी के व्यक्तियों के अवश्य होंगे।' २२ इतिहासज्ञ एल्फिन्स्टन कहते हैं कि आज तक संसार में जितने प्राचीन सिक्के प्राप्त हुए हैं वह भारतवासियों के हैं। इतिहास के विद्वान प्रिंसप बतलाते हैं कि हिन्दुओं में विनियम व्यवहार प्रचलित था और धातु के सिक्कों का भी प्रयोग होता था २३

कहने का आशय यह है कि जिस जाति के इतिहास की गणना वर्षों और सदियों में नहीं युग और महायुगों में की जाती थी, फिर उन जातियों की सभ्यता के साथ इनकी तुलना ही कैसी, जो हजार और लाख से आगे गिनना ही नहीं जानतीं। हिन्दुओं की सभ्यता संसार की सबसे आदिम सभ्यता है। स्वीडन काउंट के शब्दों में 'विश्व-मण्डल की कोई भी जाति सभ्यता और धर्म की प्राचीनता में हिन्दुओं से समता नहीं कर सकती।' २४

22. Indian prehistoric and prehistoric antiquities, page 100

23. Princep's e-says on Antiquities, Page 223.

24. Theogony of the Hindus, Page 50.

धर्म

यत्तं संप्रदत्त निःश्रेयस सिद्धिः सद्धर्मा-वैशेषिक दर्शन .

धर्म सभ्यता की उत्तम कसौटी और राष्ट्र की स्थिति का माप दण्ड है। भारतीय धर्म ही सृष्टि का आदिम धर्म है। इंगलैण्ड के प्रसिद्ध दार्शनिक एडवर्ड का पेंटर जो कई बार भारतकी यात्रा कर चुके हैं, लिखते हैं—प्राचीन काल से लेकर शोपनहार और हिट-मेन तक वेद में जो बीज रूप से विचार दिये हैं वे ही विचार प्रत्येक धर्म और दर्शन शास्त्र के प्रेरक सिद्ध हुए हैं।^१ भारतियों के धर्म ग्रन्थों को उलट डालिये, कहीं भी हिन्दू धर्म पद न मिलेगा क्योंकि यह तो सृष्टि आदिज्ञान का परिणाम है। डाक्टर ब्राउन स्वीकार करते हैं कि भारत संसार के साहित्य और परमार्थ ज्ञान का आचार्य है।^२ मिस्टर हावल भी यही वतलाते हैं कि हिन्दू धर्म एक पुराना और अलौकिक धर्म है। इनके ग्रन्थों में ईश्वरीय ज्ञान और मौलिक सिद्धान्तों के नियम एक नैतिक निश्चय तक मिलते हैं।^३

एकेश्वरवाद—

प्राचीन भारतीय धर्म अन्तर्गतात्मा में स्वातन्त्र का प्रकाश कर मानव समाज को ईश्वर के साथ एकात्म स्थापित करने की परम-पुनीत शिक्षा देता है। वह उद्विग्न, अशान्त व्याकुल मानवों के मस्तक पर एक ईश्वर की आराधना का लेप लगा कर सुख शांति

1. Act of Creation, page 7.

2. Superiority of Vedic Religion.

3 The Principle of Origin of Brahman.

का अनुभव कराता है। पादरी वार्ड की भी इस विषय में सम्मति सुन लीजिये—‘वह सत्य है कि हिन्दू परमात्मा के एकत्व पर विश्वास रखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ, अजर अमर है।’ चार्ल्स काल्मैन भी हिन्दू धर्म का अध्ययन कर इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—‘विश्व का सृजनहार, पालनकर्ता, प्रलयकर, अजन्मा और अज्ञेय, ईश्वर है, जिसका वर्णन वेदों और हिन्दूधर्म के ग्रन्थोंमें मिलता है।’^४ कर्नल केनेडी कहते हैं—कि प्रत्येक हिन्दू जिसका अपने धर्म से जग भी परिचय है वह परमात्मा को स्वीकार कर उसके एकत्व में अवश्य विश्वास करता है’ अमरीकन महिला हिलर विलाक्स भी वेदों में वतजाई गई एक ईश्वर की उपासना पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट करती हैं।^५ विद्वान् कालश्रुक की भी यही राय है कि ‘धर्मशास्त्रों पर आश्रित प्राचीन हिन्दू धर्म एक ईश्वरवाद का प्रतिपादक था।’^६

संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित जर्नास्टजर्ना वेदों के कुछ उद्धरण देकर लिखते हैं—‘वस्तुतः इन अत्यन्त उत्कृष्ट भावों में हमें यह विश्वास हुए बिना नहीं रह सकता कि वेदों में एक ईश्वर का प्रतिपादन है जो सर्वशक्तिमान्, स्वयम्भू, जगत का प्रकाशक तथा स्वामी है।’^७ वेदज्ञ मोक्षमूलर का कथन है—‘इम सूक्त’ में एक ईश्वरवाद का भाव इतने स्पष्ट और प्रबल रूप से प्रकट किया गया है कि हमें आयों के नैसर्गिक ईश्वरवाद

4. Mythology of the Vedas.

6. Asiatic Researches Vol VI11. Page385.

7. Theogony of the Hindus Page 58.

8. “हिरण्यगर्भः समवर्तनाग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।” ऋग्वेद

इन्कार करने हुए सङ्कोच करना पड़ेगा ।" ६ अब आधुनिक इति-
 हामन्न एच० एल० ओ० गैरेट आई० ई० एस० की जवान में भी
 सुन लीजिए—प्राचीन आर्य बहुत बड़े धार्मिक थे । धर्म उनके
 जीवन का प्रबलतम अंग था । प्रकृति के समस्त सुन्दर पदार्थ
 —सूर्य, चन्द्र, उषा बड़ी बड़ी सगिताएं और ऊंची पर्वत मालाओं
 के वे प्रशंसक थे । + + + उनका विश्वास था कि सब का
 स्वामी एक ईश्वर ही है ।" आपने इसके प्रमाण में एक वेद मंत्र
 का अनुवाद भी उद्धृत किया ।" १०

देवी देवता—

वैदिक सनातनधर्म का प्रधान तत्त्व एक ईश्वरवाद है । देवी-
 देवताओं की उपासना अवैदिक है । इन के सम्बन्ध में डाक्टर
 एफ० वाशबर्न कहते हैं—'इस विषय में भारत ने बड़ी सुन्दरता
 से वैज्ञानिक अन्वेषण किया है । जब रोम और यूनान मुर्दा देव-
 ताओं के अजायबघर बने हुए थे, तब भारत एक स्वर्गीय जन्तु-
 शाला था, जहां अब भी जीवित देवता मिलते हैं ।" ११ प्रोफेसर
 मिलर इस गुत्थी को इस भाति सुलझाते हैं—'देवता प्रसिद्ध तीन
 भिन्न २ विभागों में विभाजित हैं, इन वर्गों में परस्पर कभी
 सम्मिश्रण नहीं होता । यह तीन वर्ग, पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग
 हैं । प्रत्येक वर्ग में ग्यारह ग्यारह देवता हैं, जो मूक प्रकृति के
 प्रतिनिधि हैं, किन्तु वास्तव में देवताओं की इस कल्पना के अन्त-
 स्तल में एक ब्रह्म की भावना बड़े प्रबल वेग से बह रही है ।

१. History of Sanskrit Literature, Page 268

10. He who has given us life, who is our maker, who knows all
 places, He is one, although he bears the name of many gods

(A History of India, Page 14, 15.)

11 India Old and New, Page. 92.

प्रोफेसर व्हुमीफील्ड कहते हैं कि अन्त में इन देवताओं का लोप होकर एक परमात्मा ही रह जाता है, यह इस धर्म की विशेषता है।^{१२} इन्द्र, मित्र, वरुण, ब्रह्मा, और महेश आदि उस एक ईश्वर के ही सम्बोधन हैं, देवी—देवता नहीं। विद्वान् अर्नेस्ट उड ने इस विषय का अच्छा अध्ययन किया है। आपकी राय में 'हिन्दुओं की दृष्टि में एक ही परमेश्वर है, इस सत्यता को ऋग्वेद में "ऋ नद विप्र बहुधा वदन्ति" इत्यादि मन्त्रों द्वारा प्रकट किया गया है।"^{१३}

मूर्तिपूजा—

प्रतिमा पूजन^{१४} का आविर्भाव किस काल में हुआ, इस सम्बन्ध में निश्चय रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। डॉक्टर स्टीन का अनुमान है कि मीनांडर (१५० वर्ष ई० पू०) काल में इसकी नींव पड़ी होगी। मिस्टर फौचर भी मूर्तिपूजा का दोषी यूनानियों को ठहराता है। प्रोफेसर मोनियर विलियम्स भी इस सम्बन्ध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचे। आपको कहना है कि 'मनुस्मृति-रचना-काल में मूर्तिपूजा का आस्तित्व था, इस में बड़ा सन्देह है।'^{१५} श्री रङ्गम द्वारा प्रकाशित 'निर्गुण मानस पूजा' से मूर्ति खण्डन सिद्ध होता है।

12. Religion of the Vedas.

13. An English man regards towards mother India.

14. Indian Wisdom. Page 266.

15. प्राचीन काल में पञ्च देवों का भी किन्हीं ग्रन्थों में वर्णन मिलता है एक अन्वेषक विद्वान् के मत से ये देवता क्रमशः अग्नि, वायु, आकाश, और पृथ्वी थे। इनके अधीश्वर की संज्ञा थी शिव। अग्नि, देव का मन्दिर, वायु का कान, वाणी का मुख और पृथ्वी का मन्दिर नाक थी। इन चारों

पूगस्यावहनं कुत्र, सर्वाचारस्यचामनम् ।

स्वच्छस्य पादुमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनंकृतः ॥ १६

सारांश, जर्मन दार्शनिक शलगल के शब्दों में सुनिये—'इस से इन्कार नहीं किया जा सकता, कि प्राचीन भारतियों को ईश्वर का सच्चा ज्ञान था । इस विषय में उनके लेख स्पष्ट, प्रेममय और उत्कृष्ट भावों से भरपूर हैं ।' १७

वैज्ञानिक धर्म—

जो धर्म गर्भ से बाहर आने के साथ ही अपने अनुयाइयों के कान में भय का मंत्र फूंक देता है, उस धर्म के समाजिक जीवन का सुसंगठित होना एकांत कठिन है ! विशाल प्राचीन भारतीय धर्म मनुष्य को विकास मार्ग दिखलाकर, आशा और आनन्द का सन्देश सुनाकर, कर्मक्षेत्र में अग्रसर होने में लिये प्रोत्साहित करता है । यही इतनी उथल-पुथल और क्रांतियों में इसके पर्वत की भांति अचल रहने का कारण है । मेजर कनिंघम के शब्दों में —'पूर्व में दर्शन और धर्म का जितना घनिष्ट सम्बन्ध रहा है, उतना सभ्य ग्रीक और आधुनिक योरुप में नहीं ।' १८ भारतीय धर्म की ओर इशारा करते हुए राबर्टरिसले बतलाते हैं—'वही धर्म, जो दर्शन और बुद्धि, दोनों के आधार पर स्थिर है पृथ्वी

देवों के स्वामी अर्थात् महादेव का मन्दिर मस्तिष्क (Brain) है । कपाल ज्ञान का स्थान है । इस लिए, यहां रहने वाले महादेव को कपाली भी कहते हैं । समस्त-संसार का चिन्तन स्थान और शिव या महादेव के निवास स्थान मस्तिष्क को शिवालय भी कहते हैं ।

16. Works of Shiri Shankera Charya Vol, 18.

17. Wisdom of the Ancient Indians.

18. History of the Sikhs, Page 342.

पर अपनी जड़ जमा सकती है ।' १९ श्रीमती ऐनीविसेन्ट ने भी प्राण्ड थियेटर कलकत्ता में व्याख्यान देते हुए बतलाया था, कि भारत धर्म की जननी है । इस में विज्ञान और धर्म का पूर्ण समन्वय है और यही हिन्दू धर्म है । भारत ही पुनः संसार की आध्यात्मिक माता के पद को सुशोभित करेगा !' हिन्दू धर्म कितना वैज्ञानिक एवं न्याय संगत है, आनरेबल जस्टिस उडरूफी की जवानी मुनिये—'प्रत्येक स्थिति में भारत के प्रधान धार्मिक विचार और दार्शनिक भाव अमर हैं ।' आगे चल कर आप कहते हैं कि भारत ने शिक्षा दी है कि विश्व ईश्वर है । + + + नैतिकता मानवता का कानून है ।...यही उस की उच्च सभ्यता का प्रमाण है, जो कि भारत में ही नहीं समस्त संसार में फल लाता है । उस के कर्म भूमि होने का दावा न्याय संगत है । हमें उदारता एवं स्वतंत्रता-पूर्वक देखने पर ज्ञात होगा कि वास्तव में कोई दूसरा धर्म नहीं जिसने न्याय और तर्क से जीवन और आत्मा की व्याख्या की हो ।'

जिन्होंने इसका अध्ययन किया है और इसके आधारभूत सिद्धान्तों तक पहुंचे हैं, जिन में कि परमात्मा और पूर्ण जगत का सादृश्य है । वही इसे जान सकते हैं, दूसरे नहीं ।' २०

जिस धर्म में विचार शीलता और सज्जद का विरोध होता है, बुद्धि और तर्क का सहारा लेना गुनाह समझा जाता है, वह धर्म अधिक काल तक प्रिय नहीं रह सकता । देखिये मि० जे० ए० लांग लेण्ड ईसाई धर्म के विषय में क्या कहते हैं—'दर्शन और धर्म आज एक दूसरे के विरुद्ध हैं, स्वर्गीय आदेशों और हमारे विद्वानों

की शिक्षाओं में वैषम्य हैं ।' २१ पादरी कालिनसो किस निर्भीकता से बतलाने हैं—'मैं प्रतिवाद की परवाह नहीं करता । वर्तमान काल में जीनेसिस पुस्तक में नोचियान (Noachian) की वास्तविकता पर विश्वास न करने वाले ठेगो हैं ।' २२ एक दूसरे अंग्रेज पण्डित की भी शिकायत सुन लीजिये—'धर्म पुस्तक (Gospel) की इतिहास सत्यता पर आधुनिक योरूप को सन्देह है ।' २३

प्राचीन भारतीय धर्म ही संसार के रंगमञ्च पर एक ऐसा धर्म है जहां बुद्धि, दर्शन और विज्ञान का सुन्दर समन्वय मिलता है । भारतीय वैदिक धर्म में भेद-भावना का भी नाम नहीं । दुनिया का छाती से लगा लेना इसकी प्रधान भावना है । भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड इरविन के शब्दों में—'इतिहास में विजेताओं को धीरे २ विजित करने के दृष्टांत मिलते हैं, किन्तु वास्तव में जैसा हिन्दू धर्म में मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं । नई शक्तियों के आगमन के समय उसने अपना अद्भुत पराक्रम दिखलाते हुये, एक ऐसी स्थिति उपस्थित की, जिसने सहज में नये आक्रमणकारियों को अपने रूप में परिणत कर लिया । अपने में मिला लेने की यह महान और अपार शक्ति सचमुच दूसरे धर्मों के लिए एक उदाहरण है ।' संयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर भी इसी लिए भारत-धर्म का लोहा मानते हुये लिखते हैं—'अब भी धर्म भारतियों के जीवन का आदि अन्त—अ (Alpha) और ओ (Omega) है ।' †

21. Religious septicism and unfidelity.

22. Book of Joshua Vol. 11, Preface.

23. Short Studies on great Subjects Vol. I Page 278.

† India Insistent, Page, 21.

प्राचीन भारतीय धर्म ही सर्व श्रेष्ठ धर्म है। यह हमारे दैनिक जीवन का, आचरणों का, व्यवस्थापक है। सम्पन्नता में यह हमारा संरक्षक, विपन्नता में शान्ति दायक, चिन्ताओं के पारावार में सहायक, भय में रक्षक और शोकमें सांत्वना देने वाला मित्र है। संसार के सभी सम्प्रदाय इसी स्रोत का एक २ बिन्दु लेकर विकसित हुए हैं। अभी हाल में नोटविच नामक रूसी यात्री को निम्न के एक मठ में ईसा (Christ) की एक हस्त लिखित जीवनी मिली है। उस से पता चलता है कि ईसा ने भारत में जगन्नाथपुरी, राजगृह तथा काशी आदि स्थानों का भ्रमण करते हुए अध्ययन किया था। ईसाइयों की बाइबिल, ईसा के स्वयं बतलाये हुए प्रसङ्गों, उनके प्रेम पात्र शिष्य सेंट जॉन के 'गास्पेल-इपिस्टल्स' और 'रिवीलेशन' आदि स्पष्ट रूपेण प्रकट होता है कि ईसा ने पैलस्टाइन देश में हमारे अद्वैत सिद्धान्त के प्रचार का पूरा प्रयत्न किया था। किन्तु दुराग्रही द्वैतवादियों ने रुष्ट हो कर तत्कालीन रोमन सरकार द्वारा उन्हें सूली दिलवा दी।

ईसाईधर्म ग्रन्थों के निम्न वाक्यों से भी हमारी इस बात की भली भाँति पुष्टि होती है।

'Ye are Gods.'

['तुम सब ईश्वर हो ।'

'The kingdom of God is within you.'

{ 'समस्त विश्व ही ईश्वर है ।'

मिस्टर जी मालवर्थ सी० आई० ई० ने ईस्ट इण्डियन एसोसियेशन में व्याख्यान देते हुए बतलाया था कि हमारे धार्मिक ग्रन्थों का मूल स्रोत वही (वेद) प्रतीत होते हैं।^{१२४}

विद्वान् जैकोलियट भी मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि 'वर्तमान मानव समुदाय ने उसी एक मूलस्थान से दार्शनिक और धार्मिक प्रकाश प्राप्त किया है ।'^{२५} प्रोफेसर व्लूमीफील्ड भी यही कहते हैं कि हमारा वंश आर्य जाति के उन पूर्वजों के साथ अटूट शृंखला में बंधा है, जिन्होंने सूर्य के उदय और अस्त होते समय, धड़कते हृदय से वेद मंत्रों को सुनता था । . . हम स्वभाव से ही आर्य हैं—इण्डोयूरोपियन हैं, सेमिटिक नहीं । हमारे अध्यात्मिक सजातीय भारतमें मिलते हैं कि मैसोपुटोमिया में ।'^{२६}

यह हुई ईसाई धर्म की वृत्तपत्ति, अब इस इस्लाम धर्म की भी दास्तान सुनिये । विख्यात मुस्लिम इतिहासज्ञ मोहसिन खफी कहता है—'हम भारत में पार्शियन धर्म का सच्चा स्रोत पाते हैं ।'^{२७}

एक इतिहासज्ञ की राय है कि प्राचीन काल में आर्य लोग दक्षिणी समुद्र के किनारे लोहित सागर (Red Sea) होकर पश्चिम देशों में जाते थे । उन्हीं के साथ एक शैव ब्राह्मण ने अरब में जाकर शिवोपासना का प्रचार किया था । देशकाल के अनुसार उसने वहां एक शिवालय की भी स्थापना की थी, जो वर्तमान समय में 'काबा शरीफ' कहलाता है । उसके अन्दर एक ६ इञ्च लम्बी अण्डाकार प्रतिमा भी है । अरबी लोग इसे हजरत इब्राहीम निर्मित बतलाते हैं । अरबी भाषा में शब्द के पहले 'अलिफ' और 'लाम' के प्रयोग करने का नियम है । अस्तु ब्राह्मण का 'अलब्राह्मण' और बिगड़ते २ 'अब्राहम' (abraham) बन गया । कुरान में यह 'इब्राहीम' और बाइबिल में 'अब्राहम' के रूप में उच्चारण किया जाता है ।

22 The Bible in India.

26. Religion of the Vedas.

27- Asiatic Review, Vol. I Page, 292

धर्मविस्तार—

इतिहासमय जर्नालिज्जना वतलाते हैं कि चाल्डियंस (Chaldeans) बेबेलियन और कोल्चिस ने अपना धर्म और सभ्यता भारत में प्रदत्त की है । आगे चलकर आप यह भी सिद्ध करते हैं कि प्राचीन इंग्लैंड के ड्रूइड्स (Druids) बुद्ध धर्मावलम्बी थे । + + × बुद्ध मत नील नदी तक पहुंचा था । मिस्रियों (Egyptians) के धर्म ग्रन्थों में भी बुद्ध का नाम बोद्ध (Bodh) आया है ।^{२८} कर्नल टाड भी समस्त बेबीलोनिया और असीरिया में हिन्दू रस्मों-रिवाज के फैलने का समर्थन करते हैं और उनके स्मारकों पर सूर्य देवता के चिन्हों का पाया जाना वतलाते हैं ।^{२९}

बुद्ध धर्म के सम्बन्ध में स्वीडिश कांट का कहना है, कि यह भारत से इथापिया, मिश्र चीन, कोरिया और तिब्बत की ओर बढ़ा और चाल्डिया (Chaldea) फोइनिशिया (Phoenicia) प्लेस्टाइन, कोल्चिस ग्रीक, रोम गाल (Gaul) और ब्रिटेन तक फैल गया । आप यह भी वतलाते हैं कि 'स्कन्डेनेविया (स्वीडन और नार्वे) की प्राचीन धर्म पुस्तक इड्डा का आधार वेद है ।'^{३०} चीनी यात्री फाहियान भी वतलाता है कि तत्कालीन चीनी तुर्किस्तान में बुद्धमत प्रचलित था । एक अन्य पर्यटक कहता है कि 'बलख (Fo-Ho) में एक नगर 'छोटा राजगृह' के नाम से विख्यात था । जिस में १०० विहार और ३००० बौद्ध हीनयान सिद्धान्त के अनुयायी थे ।'^{३१} इतिहासकार एक स्वर

28. Theogony Of the Hindus.

29. Tod's Rajasthan Vol, 1. Page 602.

20. See, Theogony of the Hindus.

31 Journal of the Behar and Orissa research Society, vol. III, P. 456

ने स्वीकार करते हैं कि पांचवी और दशवीं शताब्दी के मध्य में समस्त संसार में आगे से अधिक संख्या केवल बौद्ध मतावलम्बियों की थी। बौद्ध धर्म भी वैदिक धर्म का एक अंग ही है। मिस्टर बोसन्टस्मिथ की जवानी सुनिये—‘ईसा से ५०० वर्ष पहले फैलने वाले जैन और बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म के फिर्के थे।’^{३२} भारत पधारने वाला अलबरूनी भी बौद्धों को हिन्दूओं का निकट सम्बन्धी बतलाता हुआ लिखता है—‘प्राचीन काल में खुरासन, पर्शिया, ईराक, और सिरिया का सीमाप्रांत बौद्ध मतावलम्बी था।’^{३३}

इस समस्त विवेचन से यह बात विदित होती है कि एक दिन सारा संसार वैदिक धर्म की ध्वजा के नीचे एकत्रित होकर इस तपोभूमि भारत के सामने सिर झुकाया करता था। उसी शुभ कल्याणकारी बेला का स्मरण कर आनन्दबल जस्टिस सर उड़ फी कहते हैं—‘समस्त संस्कृतियों का आधार, समस्त राष्ट्रीयता का निर्माता धर्म है। यह जीवन रूपी महान् वृक्ष की जड़ और तना है जिसकी अनेक शाखाओं में से दर्शन, कला, ज्ञान और सौन्दर्य प्रधान है। ईश्वर करे महान एवं विलक्षण प्राचीन भारतीय जीवन आज पुनः उठ खड़ा हो !’^{३४}

32 History of the Fine Arts in India and Ceylon Page 9.

33. Alberuni's India Vol. I, page 21.

34 Bharat Bhakti.

सामाजिक संगठन



महतायवतु । मह नो भुवक्तु । महवीर्यं कर्त्तावहे ।

तेजस्विना वर्धामस्तु । मा विडिपावहे ।

—वैत्तिरीयोपनिषद्

सामाजिक संगठन की आधार शिला पर जातीय जीवन के भव्य-भवन का निर्माण होता है । राष्ट्र भी इसी व्यवस्था के अनुसार बनते और विगड़ते रहते हैं । अस्तु देश अथवा जाति के अतीत का स्पष्ट चित्र उसकी सामाजिक व्यवस्था के दर्पण में साफ - दृष्टिगोचर होता है ।

विशाल विश्व परिवर्तनशील है । यही नियम राष्ट्र और जाति पर भी लागू है । किसी पाश्चात्य पण्डित के शब्दों में:—‘स्थिर न रहना ही मानव स्वभाव है । उसे उन्नत या अवनत होना ही पड़ेगा । ‘प्राचीन बृहत्तर भारत की ओर मुड़ कर देखने से हम को इस बात पर बहुत कुछ पता लग जाता है कि भारत का अतीत कितना विशाल एवं प्रशंसनीय था ! समस्त राष्ट्र एकता की रस्सी में बंध था । सांप्रदायिकता के भड्कट न थे, और न ही थे जाति पाति के भेदभाव । इतिहासज्ञ वीवर सहोदय इस सम्बन्ध में बतलाते हैं कि ‘यहां जाति रचना के चिन्ह न थे, लोग परस्पर मिल कर रहते थे ।’^१ वेदज्ञ मैक्समूलर भी जाति पाति पर विचार करते हुए प्रमाणों द्वारा सिद्ध करते हैं,—‘जातियां जैसी की आज कल प्रचलित हैं वैदिक कालीन धर्म का अंग हैं या नहीं ? इसका

‘“Man can not remain Stationery, he must either improve or impare.”

1. Weber's Indian Literature (Translation) Page 38.

उत्तर निश्चयात्मक रूप से 'नहीं' ही है ।^२

इतिहास लेखक एच० एल० ओ० गैरट भी मुक्तकठ से स्वीकार करते हैं कि, प्राचीनतम काल में भारत में पुश्तनी जाति पांति न थी ।^३ संयुक्तप्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर बटलर महोदय भी इसी का समर्थन करते हुए लिखते हैं—प्राचीन वेदों में जाति पाति का कोई दृष्टान्त नहीं है ।^४

वर्णव्यवस्था—

आवश्यकता आविष्कार की जननी है । यही सिद्धान्त भारतीय समाज व्यवस्था में काम करता रहा है । भारतीय इतिहास वेत्ता फ्रांसीसी विद्वान मिस्टर एम० सिनर्ट के शब्दों में 'प्राचीन आर्यों को जिन परिस्थितियों के संघर्ष में आना पड़ा और उन्हें अनुकूल बनाने के लिये जो व्यवस्था की गई थी उसी का नाम है वर्णव्यवस्था ।'^५ योगीराज कृष्ण ने भी गीता में यही कहा है ।^६ मिस्टर मुञ्जर भी भारत का हवाला देकर बतलाते हैं—जाति पांति का भेदभाव नहीं था, ब्रह्म की यह सृष्टि सर्व प्रथम ब्राह्मण्य (Brahmanic) थी इसके पश्चात् मनुष्यों के कर्मानुसार ही वर्णव्यवस्था का जन्म हुआ ।^७ 'वर्णव्यवस्था का जन्म कर्मानुसार हुआ था जो बाद में जन्मजात बन गया ।'^८—यह हैं जी० ए० काथेन० एम० ए० आई० ई० एस० के विचार ।

2 Maamuller's chips from a German work shop Vol, II Page 48.

3. A History of India, Page 14.

4. Indian Insistent Page 22.

5 Indian Castes.

6. "चतुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः ।"

7 Sanskrit Texts,

8 A History of India, Page 31.

वामनव में मानव शास्त्र, शरीर शास्त्र और विज्ञान की दृष्टि से ही भारतीय तत्वज्ञानियों ने यह व्यवस्था रची थी। इतिहासज्ञ नेम्फोल्ड का मत है—‘कर्म केवल कर्म की नींव पर भारतीय वर्णों की व्यवस्था हुई।’ लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मरडेन्जिल और सेंसर कमिश्नर इवम्टन महोदय ने इस विषय की विस्तृत योजना करते हुए जाति पांति को मध्यकालीन युग की वृद्धि बतलाई है ६ पाश्चात्य विद्वान हर्वर्ट रिसले ने भारत की जातियां नामक पुस्तक में लिखा है—‘किसी जाति का उच्च या निम्न पद इस बात पर अवलम्बित था कि जाति जो व्यवसाय करती है वह सभ्यता की किस श्रेणी का है!’ ‘कर्म प्रधान विश्व करि राखा’—यही हिन्दू वर्णव्यवस्था का मूल था। कर्नल अल्काट महोदय की जवानी सुन लीजिये—जैसा कि आज लोग कहते हैं कि जातीय दीवारें अपरिवर्तनशील हैं, पहले ऐसा नहीं था। लोगों को सामाजिक क्षेत्र में उत्थान करने या पतन के गर्त में गिरने की स्वतंत्रता थी।’ तत्कालीन जाति बन्धन अत्यन्त उदार थे। व्यास देव महर्षि बने, विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए, और सूतजी ने धर्मोपदेश का उच्चपद प्राप्त किया।

बाथेन (Bathen) महोदय भी इसकी पुष्टीकरण करते हैं—‘पहले एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण होने का दावा नहीं कर सकता था जब तक उसके कर्म उच्चतम न हों। उसके कर्म यदि निम्न हुए तो वह शूद्र माना जाता था।’ यही बात इतिहासज्ञ गैरट की जवानी भी सुनिए—‘यदि तीन उच्च वर्णों में से कोई भी व्यक्ति अपने कर्तव्य पालन में समर्थ न होता तो वह शूद्र श्रेणी में पतित कर दिया जाता था। आरम्भ में शूद्रों की स्थिति सदैव स्थाई न थी, वे सुअवसर का उपयोग कर ऊंचा उठ कर उच्च वर्णों में

प्रवेश करने थे । इस देश के इतिहास में अनेकों प्रमाण ऐसे मिलते हैं, जिनमें गुण कर्मों के अनुसार मनुष्य एक जाति से दूसरी जाति में पहुँचे हैं और फिर उस अवस्था में वे शूद्र नहीं रहे ।^{१०}

१४ सितम्बर सन् १८८१ ई० को वर्लिन (जर्मनी) के अन्तर्जातीय सम्मेलन में पढ़े हुए निबन्ध से पता लगता है कि एतरेय 'ब्राह्मण' मनुस्मृति, और अष्टाध्यायी द्वारा यह मालूम होता है कि एक शू ब्राह्मण और ब्राह्मण अपने कर्मानुसार शूद्र बन सकता है, 'जवाल' जो बाद में सत्यकाम कहलाये थे उन्हें विद्वान् लेखक ने अपने एक प्रमाणरूप में उद्धृत किया था ।^{११} यूनानी राजवृत्त मेगस्थनीज भी इसी मत का प्रतिपादन करता है कि—'किसी भी जाति का हिन्दू ब्राह्मण बन सकता है ।'^{१२}

राजस्थानके प्रख्यात इतिहास लेखक कर्नल जे० टाड महोदय भी राजपूत इतिहास के आधार पर इसी का पुष्टिकरण करते हैं— प्राचीन काल में सूर्य चन्द्र वंशियों में पारिवारिक पुरोहित परम्परागत नहीं होते थे, प्रत्युत यह एक पेशा था ।^{१३} इन विदेशी विद्वानों के जोरदार प्रमाणों से यह बात सिद्ध होती है कि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति उस की सेवा में लगा हुआ था, जिस के कि वह योग्य था ।

विछड़ों को मिलाने और सत्कर्मियों को ऊँचा उठाने की प्रथा तो अब तक भारतवर्ष में प्रचलित थी । लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य इतिहासवेत्ता हरिबिलास शारदा एफ० आर० एम० एल० महोदय लिखते हैं कि ईसा की बारहवीं शताब्दी में

11. 'Paper on sanskrit as living Language.'

१२ शूद्रोपि शील सम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत् ।

ब्राह्मणोपि क्रियाहीनः शूद्रान् प्रत्यवरो भवेत् ॥ महाभारत

12. Annals and antiquities of Rajasthan,

बंगाल के राजा बल्लालसेन ने कैवर्तों के एक समुदाय को ऊंचा उठा कर दमरू को पतित कर दिया था। मत्तरहवीं शताब्दी में राजपूताना के महारावल अमरसिंह (जैसलमीर) ने उन भाटी राजपूतों को जो कि मुसलमान बन गये थे पुनः जाति में सम्मिलित कर लिया था।^{१४}

अस्पृश्यता—

वर्तमान काल में प्रचलित अस्पृश्यता मनुस्मृति काल तक भारत के स्वप्न और कल्पना से बाहर की बात थी। जिस हिन्दू जाति ने कितनी ही बाहर से आने वाली जातियों को अपने में मिला लिया, जिसमें संसार को अपना कुटुम्ब बनाने की अद्भुत क्षमता और एकत्व स्थापित करने की महत् आकांक्ष थी, वह अपने ही अंग को सदा के लिए अछूत ठहरा दे, यह बात बुद्धि अङ्गीकार नहीं करती।^{१५}

अब जरा इसी दास्तान को पादरी एफ० डी० मोरिस के मुंह से सुनिये—कोई भी शूद्र किसी अर्थ में भी परार्थीन नहीं और न कभी रहे हैं। ग्रीक लोग भारतवर्ष में समस्त वर्णों को स्वतंत्र नागरिक रूप में पाकर आश्चर्य चकित रह गये थे।^{१६} सन् १८२८ की प्रकाशित एक पुस्तक से वर्तमान छुआछूत के गढ़ मद्रास की तत्कालीन अवस्था पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। गान्तस एण्ड सन एक कुंए का चित्र दे कर इस प्रकार वर्णन करते हैं—‘जल को ब्राह्मण पवित्र समझते हैं। उनका मत है कि वह किसी के स्पर्श से अशुद्ध नहीं होता। इस लिए वे शूद्रों में

14. Hindu Superiority, Page 31.

15 अथ निजः परो वेति गणना लघु चेत्तमम्,
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

16 The Religion of the world. Page 43

साथ एक ही कुंए में नहाने, कपड़े धोने और उसका जल पीने में आपत्ति नहीं करते ।^{१७} पण्डितक अलवेची बतलाना है—
‘चारों वर्ण वाले इकट्ठे रहते और एक दूसरे के हाथ का खाते पीते थे ।’^{१८}

इन समस्त उदाहरणों से साफ प्रकट है कि अस्पृश्यता का सूत्रपात भारत में कुछ शतब्दियों पूर्व ही हुआ । इतिहास अपने को दोहराता है, यह सिद्धान्त यदि अटल है तो वर्तमान शताब्दी के अन्त के साथ साथ इस बिना सिर पैर के छुआछूत का भी अन्त हो जाना चाहिये । विशाल हिन्दू धर्म ऊंच नीच का भेद भाव नहीं मिखाता, फिर घृणा करके कोई पाप का भागी कैसे बन सकता है । योगीराज कृष्ण के शब्दों में:—

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।^{१९}

प्राचीन वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में मिस्टर सिडनीलो महोदय की सम्मति कितनी विचार पूर्ण है—‘इस में सन्देह नहीं कि शतब्दियों से राजनीतिक धक्कों और प्राकृतिक तूफानों में भी भारतीय समाज के सुसंगठित रहने एवं उस की सारयुक्त दृढ़ता का मूल कारण यही है । + + यह प्रत्येक मनुष्य को अपने स्थान पर उसका कैरियर, Career) पेशा और सामाजिक

17. Indian Microcosm.

18. Alberuni's India Vol, 1, Page 101

19. विद्वान्, ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चरडाल को पण्डित समान दृष्टि में देखने हैं । गोता ! हिन्दू धर्म की विशालता का विवेचन करते हुए सन् १८१२ में भारत-दर्शन करने वाले मोनियर विलियमस् महोदय मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि दूसरों को अपने में मिलाने और हज़म कर जाने के कारण वह धर्म समस्त भारत में फैल गया ।

सहानुभूति की परिधि प्रस्तुत करता है । यह इसे यावज्जीवन सामाजिक इर्पा के घुन और अपूर्णभावनाओं से सुरक्षित रखता है । + + + वर्णव्यवस्था हिन्दुओं के लिए उन का क्लव, व्यापारिक परिपद, उपयोगी संस्था और परोपकारी समाज है ।^{१२०} एवंडुवोइस जैसा परछिद्वान्वैपी मिशनरी भी वर्णव्यवस्था की सुक्त कंठ से प्रशंसा करता है ।^{१२१} रंवरण्ड पीटर पर्सिवल का कथन है—‘हिन्दू जाति की बहुत बड़ी विशेषता है उस की वर्णव्यवस्था ।’^{१२२} इतिहासवेत्ता गैरट स्वीकार करते हैं कि ‘इम के द्वारा समाज की बहुत बड़ी सेवा हुई है ।’^{१२३} सर हैनरीकाटेन का भी विचार है कि इसके द्वारा अतीत में अत्यावश्यक सेवायें हुईं और अब तक भी हिन्दू समाज शान्ति दृढ़ता और नियन्त्रणा को संभाले है ।^{१२४} यह बात निर्विवाद है कि यदि आज नियमित राजसत्ता का प्राचीन वर्णव्यवस्था के साथ मेल हो जाय तो राम-राज्य की आदर्श व्यवस्था को उत्पन्न होते विलम्ब न लगे ।

आश्रम व्यवस्था

प्राचीन हिन्दुओं के सामाजिक संगठन की दूसरी खूबी थी आश्रमव्यवस्था । इसमें मानव शरीर और स्वाभावकी आवश्यकताओं का पूरा २ विचार था, साथ ही इस में जीवन के आदर्शों और अन्तिम उद्देश्यों को, चोली दामन की भांति जकड़ दिय गया था । प्राचीन आश्रम व्यवस्थाके अनुसार मानव जीवनकी अवधि

20 A vision of India.

21. Hindu Manners.

22. The Land of the Vedas. Page 34.

23. A History of India Page 31.

24. The System of Castes.

मांटे तौर पर सौ वर्ष मान ली गई थी। प्रथम पांच वर्ष बीतने पर लड़के का उपनयन संस्कार होता था। इतिहासज्ञ गैरट आई, ई० एस० कहते हैं कि प्रथम आश्रम (ब्रह्मचर्य) में बालक का विद्यार्थी होना आवश्यक था। इस काल में वह गुरु के चरणोंमें, घर से पृथक् रहकर विद्योपार्जन करता था। इस समय भिन्नान्न का सादा आहार कर और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर अगामी जीवन की तैयारी करना ही उस का उद्देश्य होता था।

दूसरा 'गृहस्थाश्रम' के अनुसार प्रत्येक हिन्दू शिक्षा समाप्ति के पश्चात् विवाह कर सांसारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरत होता था। यह वह जीवन था जिसमें उसे विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध करना, दीन दुखियों की सहायता करना, सन्यासियों की आवश्यकता को पूरा करना और जीविकोपार्जन करना पड़ता था। जो भाव ब्रह्मचर्याश्रम में गुरु के प्रति होता था इस आश्रम में वह विस्तृत होकर देश और समाज के प्रति हो जाता था। गृहस्थाश्रम में कुछ तो काम की सिद्धि होती थी और कुछ उसे अपने को दमन भी करना पड़ता था क्योंकि एक पत्नि व्रत और एक पतिव्रत साधारण बात नहीं। विद्वान वाथेन के शब्दों में 'वे एक ही विवाह कर सकते थे।' १२५

तीसरा आश्रम वानप्रस्थ था। गैरट साहब कहते हैं—इस आश्रम में सगे-सम्बन्धियों को छोड़ कर वन में निवास करना पड़ता था ताकि सांसारिक इच्छाएं उनकी शान्ति को भंग न कर सकें। १

लार्ड रोनाल्डशे कवीन्द्रवीन्द्रके शब्दों में कहते हैं कि हमारे प्राचीन नाटकों की उत्कट मानव प्रवृत्तियों का जन्म भी यहीं हुआ था। लार्ड महोदय यह भी बतलाते हैं कि प्राचीन भारतीय

जीवन इन जंगलों में बहुत कुछ सम्बन्धित था ।^{२६} निस्सन्देह संसार का विकास विजली में जगमगाते महलों से नहीं हुआ है, किन्तु भारतीय सभ्यता का पाठ संसार में विरक्त ऋषियों ने तपोवन की कुटियों से ही शुरू किया था ।

अन्तिम आश्रम था सन्यस्त विद्वान् गैरट बनलाते हैं कि 'इस अवस्था में हिन्दू अपने मन को ईश्वर में लगा कर जीवन-बन्धन से विमुक्त हो कर अनन्त में लीन होने का प्रयत्न करते थे ।'^{२७} यह प्राचीन हिन्दुओं के जीवन का वह काल था, जब वे समस्त मानवता के कल्याण का चिन्तन करते थे । सारा संसार उन का कुटुम्ब होता था और भुवन-त्रय स्वदेश !

विवाह—

विवाह प्रणाली सामाजिक संगठन की उत्तमता और गृस्थाश्रम की विशालता की एक उत्तम कसौटी है । भारतीय वैवाहिक प्रणाली का विवरण श्रीमती डाक्टर ऐनीविसेंट महोदया की जयानी सुनिये:—'भूमण्डल की किसी जाति में विवाह संस्कार का महत्त्व ऐसा गम्भीर, ऐसा पवीत्र नहीं जैसा कि प्राचीन आर्य ग्रन्थों में पाया जाता है ।'^{२८} अर्न्तजातीय विवाह भारतीय सामाजिक उदारता का एक सुन्दर प्रमाण है । महाभारत काल में शान्तनु और सत्यवति, भीम और हिडिम्बी, बौद्ध काल में चण्डाल कन्या जम्बावती और राजा वासुदेव^{२९} हिन्दू काल में चन्द्रगुप्त और सेल्यूकस-कन्या के विवाह जाति-पाति सम्बन्धी उदारता के ज्वलन्त प्रमाण हैं । हर्ष कालीन इतिहास भी इसी का अनुमोदन

26. See, India, a birds eye view Page, 187, 188.

27. A History of India Page 20.

28. wake up India.

२९, जातक ग्रन्थ भाग ४ वर्ग १५

करता है।^{३०} इवस्टन सेंसर रिपोर्ट का अध्ययन भी हमें इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है।

अतः योनि विधवा विवाह भारतीय समाज में वर्ज्य नहीं था, यह बात आज प्रत्येक विद्वान् ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर ली है। अस्तु इसके औचित्य पर कुछ लिखना अनावश्यक है।

बहु विवाह भी भारतवर्ष में धर्मानुकूल नहीं था। इसे प्रसिद्ध पण्डित मैकडानल्ड ने 'वैदिक विषयानुक्रमिका पृष्ठ ४१८' में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि 'समाज में एक ही विवाह का नियम था। बहु विवाह था आवश्यक पर केवल अपवाद रूप में और वह भी उच्च श्रेणी के लोगों में।' रागोजन महाशय भी इसी का समर्थन करते हुए लिखते हैं—'उस समय बहु विवाह की प्रथा समाज में न थी, यदि कहीं रही भी हो तो केवल सम्पन्न एवं राजकुलों में। बहुपति प्रथा का तो नाम भी न था'^{३१}।

हिन्दुओं की प्राचीन सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए लाहौर गवर्णमेण्ट कालेज के इतिहास प्रोफेसर गैरट कहते हैं—'लड़कियों का विवाह पूर्ण वयस्क होने पर होता था। उन्हें स्वयं अपना पति निर्वाचन करने की आज्ञा थी'^{३२} प्रसिद्ध पाश्चात्य पण्डित जे० यंग की जबानी भी हिन्दू विवाह की महत्ता का वर्णन सुन लीजिये—'यह एक अश्चर्य की बात है कि यहां विवाह का सारा प्रबन्ध माता पिता करते हैं। बहुत से भारतीय घरों में वैवाहिक जीवन अत्यन्त उच्च सर्वांग पूर्ण और उदाहरणीय होता है, इसका कारण विवाह कालीन धर्म शास्त्र की वैवाहिक

३० नापि तान्वय मित्रर्द्ध सीरिणो दास गोपका।

श्रद्धाणाम्य मीषां तु मुक्त्वान्नं नैव दुष्यति ॥ व्यासस्मृति

31. Vedio India, Page 378.

32 A History of India, Page 14.

शिक्षायें हैं। यह अतिशयोक्ति न होगी कि साधारणतया पति अपनी पत्नी के साथ अत्याधिक बंधे होते हैं और अधिकांश में स्त्रियाँ अपने पतियों के प्रति अपने उच्च कर्तव्य का पालन करती हैं।^{१३३}

पण्डितक टेवरनिर बतलाता है कि वैवाहिक जीवन में हिन्दू प्रायः अपनी पत्नियों के प्रति सच्चे होते हैं। व्यभिचार उन में बहुत ही कम है और गुदा मैथुन (Sodomy) का तो नाम ही नहीं सुना।^{१३४} मारिया ग्राह्य की सम्मति है—‘भारत में पत्नी प्रेम का वह विषय है जो मृत्यु के बाद पति का साहचर्य नहीं छोड़ना चाहती।’^{१३५} डाक्टर आर० ब्रूक्स० एम० डी० की जवानी भी सुनिये—‘उनके रस्मों रिवाज सदा हैं। उन्हें धार्मिक रूप से शिक्षा दी जाती है कि विवाह करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। केवल वही लोग इस से विमुक्त हो सकते हैं जिन की ईर्ष्या ईश्वरोपासना में जीवन व्यतीत करने की है।’^{१३६}

प्राचीन काल में सामाजिक संगठन की एक आदर्श व्यवस्था थी। विदेशों में भी कैंट और प्लेटो ने इसी आधार पर अपनी सामाजिक रचनाएँ की हैं किन्तु अस्त और नकल में जितना अन्तर आ सकता है वह स्पष्ट है। प्राचीन काल में हिन्दू समाज के सुख-शान्ति-सम्पन्न होने का प्रधान श्रेय इसी उत्तम व्यवस्था को प्राप्त है। प्रोफेसर हार्टन भी हिन्दुओं की प्राचीन सामाजिक स्थिति की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—‘प्राचीन हिन्दुओं के समान उच्च श्रेणी का सामाजिक संगठन संसार के

^{१३३} Indian People.

^{१३४} Taverniers travels, in India Page 437.

^{१३५} Letters of India, Page 319.

^{१३६} General gazetteer and geographical Dictionary, page 431.

सामाजिक इतिहास में कहीं भी सुलभ नहीं, यह शास्त्रों और वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर अवलम्बित है। यदि इसके अनुरूप व्यवहार किया जाये तो समाज में बहुत कुछ सुख-शान्ति की वृद्धि हो सकती है।'

चार्ल्स टेरे भी इस आदर्श व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए बतलाते हैं—'हिन्दू लोगों की कौटुम्बिक सम्मिलित प्रथा में लोग मर कर ही एक दूसरे से जुदा होते हैं।'^३

आचार

“आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः।”

विकास का पौदा सदाचार की समतल भूमि पर ही पनपता और बढ़ता है। योरूप का प्रसिद्ध विद्वान् ब्लेकी बतलाता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिमार्जित चरित्र की एकान्त आवश्यकता है। इसी लिए समाज की महत्ता और राष्ट्र के बड़प्पन का सापदण्ड चरित्र ही रक्खा गया है। उदारता, गंभीरता, विद्वता, स्रद्धनशीलता, वीरता, साहस, स्वच्छता, परोपकार ईमानदारी, दया और दान किसी भी दृष्टि से प्राचीन भारतीय हिन्दुओं का चरित्र उलट-पुलट कर देख लीजिये—अनुकरणीय होगा।

राम सा पितृ भक्त, लक्ष्मण सा भाई, कृष्ण सा कर्मवीर कर्ण सा दानी, भीष्म सा दृढ़ प्रतिज्ञ, हरिश्चन्द्र सा सत्य-वक्ता भीम सा योद्धा, अर्जुन सा धनुर्धर, विदुर सा महात्मा, रघु सा प्रजा-पालक और चाणक्य सा नीतिज्ञ दुनिया ने आज तक देखा

ही नहीं। गान्धारी भी पवित्रता, सावित्री भी सति, उर्मिला भी सहनशील और लक्ष्मीबाई भी वीर महिलाएं और किस देश में पैदा हुई हैं? जितने आदर्श चरित्रवान् प्राणी भारत मां की गोद में पले हैं, उस का सहस्रांश भी तो अवशिष्ट समार के इतिहास में नहीं मिलता।

सत्यता चरित्र का प्रधान गुण है। भारतीय सदैव से अपनी सत्य-प्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं। ईसा के ३०२ वर्ष पूर्व भारत में पथारने वाला यूनानी राजदूत मेगस्थानीज लिखता है—‘उस काल के हिन्दू प्रायः सत्यवादी और शुद्धाचारी थे, न झूठ बोलते थे और न मद्य पान करते थे। उनको एक दूसरे की सत्यता और पुण्यशीलता पर यहां तक भरोसा एवं विश्वास था कि कोई व्यक्ति घरों में ताले न लगाता था। उनकी सभी प्रतिज्ञायें मौखिक होती थीं। लिखने की आवश्यकता न थी।’^१

दूसरी शताब्दी का इतिहासकार एरिन बतलाता है—‘कभी किसी भारतीय को असत्य भाषण करते हुए नहीं पाया गया।’

स्याम सम्राट का सम्बन्धी स्यू० बी० भारत से २३१ ई० में लौट कर सम्राट को सूचित करता है—‘भारतीय सच्चे और विश्वास पात्र हैं।’^२

चौथी शताब्दी का योरोपियन एफ० जार्डनूस बतलाता है—‘भारतीय व्यवहार में सच्चे और न्याय में प्रसिद्ध हैं।’^३

४०५ ई० का चीनी यात्री फाहियान भारत भ्रमण के पश्चात् अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रकट करता है—‘समस्त देश में

1. History of India.

2. India, Cap, XII, 6 also see Indian Antiquary.

3 India, what can it teach us? Page 35.

4 Marco Polo Vol I, Page 351.

कोई किसी जीव को नहीं मारता, मदिगा नहीं पीता और न लहसुन प्याज खाता है ! मण्डी के पाम कसाइयों की दुकाने और शराब खाने भी नहीं होते ! दातव्य संस्थायें यहां पर अग-मित हैं ।^५ ६०५ में भारत आने वाला चीनी राजदूत फाई-चू (Fei-tu) कहता है—‘वे व्यवहार में सच्चे और धर्म सम्बन्धी शपथों पर विश्वास करते हैं ।’^६

हर्ष कालीन हिन्दुओं का चरित्र चीनी पर्यटक हुएनम्यांग की जवानी सुनिये—‘ब्राह्मण अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करते हैं और अपनी संस्कारगत पवित्रता की दृढ़ रूप से रक्षा करते हुए संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं । वे अपनी सरलता और ईमानदारी के लिये प्रसिद्ध हैं ।’

६१३ ई. में भारत पधारने वाला चीनी विद्वान इ-त्सिंग हिन्दुओं के प्रति अपने यह विचार प्रकट करता है—‘ये सब लोग अपने उज्ज्वल चरित्र के लिये समान रूप से प्रसिद्ध हैं, अपने पूर्वजों के बराबर हैं और ऋषियों के चरण चिन्हों का अनुसरण करने के लिये उत्सुक हैं ।’^७

आठवीं शताब्दी का भारत दर्शक मुलेमान कहता है—‘हिन्दू सच्चे और धार्मिक होते थे ।’^८

१६३० ई. में भारत पधारने वाला अलबेर्नी लिखता है—‘प्राचीन भारतीय बड़े उदार और सच्चे थे ।’^९

११ वीं शताब्दी के प्रख्यात भूगोल पण्डित इड्रसी के शब्दों

5. History of India.

6. India; what can it teach us ? page 97 5.

7. इ-त्सिंग की भारत यात्रा पृ० २८२

8. मुलेमान सौदागर ।

9. Alberuni's India, Vol. 1

में भी भारतीयों के चरित्र को सुनिये—‘वे (हिन्दू) स्वभावतः न्याय प्रिय होते हैं, जिसे कि वे अपने कार्यों से भी प्रदर्शित करते हैं ! मद् विश्वास ईमानदारी और प्रतिज्ञाओं की विश्वस्ता में वे विन्यात हैं । यही कारण है कि चारों ओर के लोग उनके देश में प्रकृत्रित होते हैं ।’^{१०}

तेहरवीं शताब्दी का यात्री मार्को पोलो सूचित करता है—
‘तुम्हें जानना चाहिए, कि यह ब्राह्मण संसार के सर्वोत्तम व्यापारी और मच्चे हैं । ये दुनिया में किसी भी बात के लिये झूठ नहीं बोलेंगे ।’^{११}

१६ वीं शताब्दी के इतिहासकार अब्दुलफजल का कथन है—
‘हिन्दू लोग सत्य के प्रशंसक और व्यवहारिक जीवन में सत्यशील होते हैं ।’^{१२}

जिन हिन्दुओं ने आचार शास्त्र का निर्माण किया था, जो सत्य में ही जय समझते थे, उनके आचार पर कोई उंगली कैसे उठा सकता था । ईसा की तेहरवीं शताब्दी के इतिहासकार जमां का हवाला देकर शमसुद्दीन लिखता है कि ‘हिन्दू धोखे और अत्याचार से अलग थे ।’^{१३}

यह तो हुई यात्रियों और इतिहासकारों की राय अब जरा शास्त्र समुदाय के मुंह से भी कुछ सुनिये—कर्नल स्लीमैन कहते हैं कि मेरे सामने बहुत से मामले उपस्थित हुए जिनमें मनुष्य की जायदाद स्वतन्त्रा और जीवन उनके एक असत्य भाषण पर निर्भर था किन्तु उन्होंने झूठ बोलने से इनकार कर दिया ।”

10. Elliot's History of India Vol 1 Page 83.

11. Marco Polo Vol II Page 350.

12. Tod's Rajasthan Vol 1 Page 648.

13. India; what can it teach us ? Page 575.

प्रोफेसर मैक्समूलर को पूरा निश्चय है कि 'कभी किसी ने उन पर (हिन्दुओं) असत्यता का दोष नहीं लगाया ।'^{१४} पार्लियामेंट के भूतपूर्व सदस्य जे० के० हार्डी का कहना है—'मैं वहाँ के लोग (भारतीयों) में हिलमिल गया । उनके साथ रहा और सर्वत्र उन्हें विश्वास पात्र और प्रेमी पाया ।'^{१५} अवध के भूतपूर्व-सेटलमेंट कमिश्नर मिस्टर वीनेट ने १८६५ में लिखा था—'यूनानियों ने भारतीयों को जैसा ईमानदार ईसा से दो शताब्दी पूर्व चित्रित किया था, अवध और पटना में वे आज भी वैसे ही हैं ।'^{१६} स्ट्रावो कहता है—'हिन्दू इतने ईमानदार हैं कि न अपने दरवाजों पर ताला लगाने की आवश्यकता पड़ती है और न किसी इकरार के लिये दस्तावेज की ।'^{१७}

निर्भीकता-साहस—

निर्भीकता मानव जीवन का वह मोती है, जिसका रंग कभी फीका पड़ता ही नहीं । सफ़लताको तो यह दासी बनाकर रखता है भारत सरकार के ऊँचे अधिकारी, आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व संस्कृत प्रोफेसर हेरिस एच० विल्सन बतलाते हैं—'निर्भीकता भारतीयों के चरित्र की विश्व विभूत विशेषता है ।' तेहरवीं शताब्दी का इतिहासकार 'जमा' का हवाला देकर शमशुद्दीन लिखता है—'वे (हिन्दू) मरने जीने से नहीं डरते ।'^{१८} अंग्रेज राजदूत सरटामसरो की जवान से भी कुछ हिन्दुओं की हिम्मत

14. India: what can it teach us ? Page 57.

15. India, impressions, and suggestions. Page 126.

16. The Oudh Gazette for Feb 1877 'Page 7, 8.

17. Strabo, Lib X V. Page. 488. .

18. India, What can it teach us, Page, 55,

का हाल सुनिये—‘वे, वह लोग हैं जो रास्ते में खड़ शेर से भय नहीं खाने ।’”^{१९}

आत्मसम्मान—

आन पर जान की बाजी लगाना तो हिन्दुओं के बांये हाथ का खेल है। अकबर के समय भारत यात्रा करने वाला फादर मांसेरट बतलाता है—‘मुसलमान कहते हैं, कि मरना कैसे चाहिये—यह राजपूत (Rajput and Rati) जानते हैं ।’”^{२०} संसार प्रसिद्ध यूनानी, प्लेटो की निगाह से भी हिन्दुओं के आत्मसम्मान और हृदय में दहकने वाली स्वदेश प्रेम की आग को देख लीजिये वह लिखता है—सब्बान (Sabbas) नामक क्षत्रिय नरेश को विद्रोह के लिये प्रोत्साहित करने के अपराध में, चलते समय मिकन्दर ने दस हिन्दू दार्शनिकों को बन्दी बनाया था। उनमें से एक दार्शनिक से उस ने प्रश्न किया—

‘किस बात (कौल) पर आपने सब्बास को बगावत (Revolt) करने के लिये भड़काया था ?’

‘कोई दूसरी नहीं, यही की उन्हें या तो जीना चाहिये या सम्मान पूर्वक मरजाना ।’”

मृत्यु मरिता के तट पर बैठे हुए भारतीय दार्शनिक का यह उत्तर था ।”^{२१} फ्रेंड इण्डिया (Friend India) के सुयोग्य सम्पादक जेम्स रेंट्लेज का कथन है—‘वे अपमान के सामने विपत्तियों को सहन करने के लिये तैयार रहते हैं ।’”^{२२}

19. The People of India.

20. Commentary of fate of Monserrate, Page 93

21. Scenes and Characters from Indian History Page, 15,

22. India Past and Present,

सहनशीलता—

चौथाई शताब्दी तक निरन्तर बेसरोसामान लड़ना और मुंह में उफन निकालना, जिन्दा दिवार में चुन जाना और मिर न भुक्ताना, छाती पर दनादन गोलिएं सहना और मुंह पर मन्द मुस्कराहट का दौड़ते रहना—किसने सहनशीलता को इस से अधिक सीने में लगाया है ? भारत के भूतपूर्व वायसराय नार्थब्रुक कहते हैं—भारतीय आपत्तियों का मुकाबला करने में धैर्यशाली है।^{२३} दम्बई के पुराने (१८७७ से ८० ई०) गवर्नर सर रिचार्ड टेम्पुल वार्ट उनके स्वभाव में ही सहिष्णुता बतलाते हैं। डाक्टर फेग्वर्न ने १८६८ ई० में व्याख्यान देते हुए बतलाया था कि हिन्दुओं की शिष्टता और तीव्र बुद्धि सर्वत्र हृदय को स्पर्श करती है। प्रतिष्ठा, कृपा, सम्मान और धैर्य जिसके द्वारा वे अप्रिय एवं प्रतिकूल बातों को भी सहन कर लेते हैं, सराहनीय हैं।^{२४} विद्वान डिगवी कहते हैं—‘भारतीय स्त्री पुरुषों की सहनशीलता आश्चर्यजनक है।’^{२५}

दान—

दूसरों के लिये जीना और मरना, यह पूर्व कालीन हिन्दुओं का मुख्य उद्देश्य था। आज भी हिन्दुओं में यह पद “तब तक ही ज़िन्दगी दीवो पर न थोम” बड़े गर्व के साथ कहा जाता है। हिन्दू कालेज कलकत्ता के भूतपूर्व प्रीन्सिपल जेम्स केर (jame - Kerr) ने सन् १८६५ ई० में कहा था—‘वे लोग जातपात के भेदभाव को भुलाकर गरीबों को दान देते हैं।’^{२६} नीब्यूहर

23. Native opinion, Bombay August, 20 1899.

24. India, May 26, 1899.

25. Indian Problem for English Consideration.

26. India and its People, Page 32

(Nebuhr) बतलाता है कि हिन्दू-संज्ञन, श्रमी और गुणों होते हैं, कदाचित् मानव समाज में वे ही एक ऐसे लोग हैं जो मानवता को सब से कम क्षति पहुंचाते हैं ।' बंगाल के भूतपूर्व ले० गवर्नर की सम्मति है कि 'वे (हिन्दू) समस्त मानवता के प्रति दया-दान का भाव रखते हैं ।' - ५

चिद्धता—

‘शत्रु और मित्र दोनों ही स्वीकार करते हैं कि हिन्दू चिद्धता की दृष्टि से संसार में अद्वितीय हैं ।’ - यह है पार्लियामेण्ट के प्रसिद्ध मन्त्रस्य मिस्टर हार्डी की सम्मति ! सर विलियम वीडेन बर्न बार्ट एम० पी० की सम्मति सुनिये—भारतीय गांव राज-नीतिक परिवर्तनों में भी शताब्दियों तक मजबूत गढ़ बने रहे, वे धरलू सादगी और सामाजिक गुणों के भण्डार थे । इस लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि इन पूर्वकालीन संस्थाओं में जो प्राकृतिक सामाजिक और अपने ढंगकी अनूठी है इतिहासज्ञ और दार्शनिक प्रेम पूर्वक रहे हैं । ये स्वावलंबी, उद्योगी, शांति-प्रिय, शब्द (हिन्दू) के सदर्थ में संरक्षक थे ।’ - २६ किसी देश की वास्तविक परिस्थिति के दर्पण होते हैं, उसके देहात, क्योंकि राष्ट्र के इस भाग में संसार की तेज हवाएं जरा देर से पहुंचा करती हैं; किन्तु भारतीय गांव अनादि काल से ही सुसभ्य चले आ रहे हैं । अब जनरल जी० बी० ग्रांड जेकब की जवानी सुनिये—‘वहां लाखों विचारशील एवं दूरदर्शी व्यक्ति हैं । इतनी जबर-दस्त संख्या में ऐसे अच्छे और सच्चे मनुष्यों को पाने की

27. Modern India. Page 12

23. India impressions and Suggestions Page, 43

29. Indir Rayat,

आशा हम स्वयं अपने देश के सुशिक्षित समुदाय में भी नहीं रखते ।^{३०}

शत्रु भी जिसके चरित्र पर मुग्ध हो जायें, पर छिद्रान्वेपी भी जिसकी सदाचार प्रभा में पड़ कर चौंधिया जायें—ऐसा हिन्दुओं का आचरण है । जिसके प्रमाणों का सहारा लेकर अमरीकन मिस मिथो ने 'मदर इण्डिया' में अपने हृदय की क्लृप्त-कालिमा पोती है, वही मिशनरी एंड्रयुवोइस भी हिन्दुओं के विशाल ज्ञान पर चकित होकर कुछ कहे बिना नहीं रहता—'वे प्राचीन काल से विद्या प्राप्त करते चले आ रहे हैं, और ब्राह्मण तो सदैव से इसके भण्डार ही रहे हैं ।'^{३१} एक योरोपियन यात्री बतलाता है—स्वास्थ्य की ओर उनकी विशेष रुचि थी जहां तक पूर्वीय तत्त्व-ज्ञान का सम्बन्ध है वे बड़े विद्वान समझे जाते हैं ।^{३२}

कृतज्ञता—

दूसरे के उपकारों को भूल जाना—हिन्दुओं के अन्दर एक गुरुतम अपराध समझा जाता है । सर चार्ल्स फौवर्स इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं—'कृतज्ञता उनके जीवन का आदर्श वाक्य है ।'^{३३} भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड नार्थब्रुक भी स्वीकार करते हैं कि भारतीय बड़े कृतज्ञ होते हैं ।

आतिथ्य सरकार—

जर्मन यात्री फ्रैंज आस्ट्रजर कहता है—स्वयं भूखे रह कर

30. People of India, Page 29.

31. Unhappy India.

32. Poverty and Unbritish rule in India.

33. Bombay Champion, June. 25, 1899

आये हुए अनिधि को खिलाना भारतीय हिन्दूओं का ही काम है ।¹ एनेन्टल डू पेरन नामक यात्री बतलाता है—‘लोगों में आतिथ्य सत्कार का भाव बहुत है । मित्रों, पड़ोसियों और अपचितों का सामान रूप से स्वागत किया जाता है ।’² मिस्टर वाई भी यही कहते हैं कि पारस्परिक व्यवहार और वात्चीत में हिन्दुओं का स्थान संसार की अत्यन्त आदर्शाल जातियों में है ।

आध्यात्मिकता—

विश्व के पथ-प्रदर्शन की योग्यता भारतीयों की अध्यात्मिकता का ही परिणाम है । मिस्टर बरनफ का विचार है—‘भारतीय वह जाति है, जो आध्यात्मिक-दातव्य-सम्पन्न है, उनके पास विलक्षण चानुरी, तीक्ष्ण बुद्धि प्रकृति प्रदत्त है । जर्मन परिणित फ्रेडरिक वान शीलगल की सम्पत्ति है—‘भारतीयों को ईश्वर के सच्चै स्वरूप का ज्ञान था, इसमें इनकार नहीं किया जा सकता ! प्रोफेसर वनूमीफोल्ड के विचारों को देखिये—‘भारत में इतिहास के आरम्भ से ही धार्मिक संस्थाएँ हैं । इनका यहां की जनता के चरित्र पर इतना अधिक प्रभाव है जितना अन्यत्र कहीं दृष्टि गोचर नहीं होता ।’³ जेम्स कर्न के शब्दों में ‘वे (हिन्दू संसार भर में सब से अधिक धार्मिक व्यक्ति हैं ।’⁴ फ्रांसीसी यात्री जी० वी० टेवरनियर कहता है—‘प्राकृतिक नियम उन्हें नैतिक शिक्षा देते हैं ।’⁵ दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रयूज की राय है

34 Gentle man's magaine for 1762 a.d.

35. Religion of the Vedos. page, 45

36 People of India, Page, 32.

37 Taverniers travels in India, Page, 437.

कि पूर्व जगन् पाश्चात्य जगन् मे भौतिक सम्पत्ति में अपेक्षाकृत निर्धन भने ही हैं किन्तु उसने अपने अन्तर्जीवन का बहुमूल्य मोती नहीं खोया ।³⁹

व्यक्तिगत चरित्र—

भारत और पाश्चात्य देशों में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है कि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति के आचार के दो विभाग किये जाते हैं। पब्लिक और प्राइवेट, किन्तु यहाँ बाहर भीतर एक सा ही होता है। आचरण एक है, चाहे उसे सार्वजनिक सभाओं में देखें या घर की कोठरी में। भारतीयों के चरित्र में ऐसी बातें नहीं, वह तो खरा सोना है, किसी भी आग में डाल दीजिये, कान्तिमान बनकर निकलेगा। हीगल स्वीकार करते हैं—‘प्राच्य संसार में मदाचार के भाव और बाह्य नियमों में भेद नहीं।’⁴⁰ हिन्दुओं के घरलू और सार्वजनिक जीवन में सदैव एक समान रहने वाले आचार की ओर संकेत करने हुए इम्पीरियल पुस्तकालय कलकत्ता के अध्यक्ष जे० ए० चापमैन लिखते हैं—‘राष्ट्र का चरित्र उसके निवासियों का चरित्र है, उसका निरीक्षण नगनावस्था में ही हो सकता है। (अर्थात् जब बाहर भीतर सामने हो) मनुष्य कैसे प्यार और घृणा करता है, परिश्रम और आराम, पूजा, मरना और जीना, यही सब आचरण में देखने की बातें हैं।’⁴⁰ अस्तु

38. विन्दुसार ने सेल्युकस को एक बार यूनानी शराब का नमूना भेजने के लिये लिखा था। सेल्युकस ने यह कहते हुए कि मैं बड़े प्रसन्नता से शराब भेज रहा हूँ लिखा था—“दुःख है कि यूनानियों का दार्शनिकों से यह व्यापार योग्य नहीं।—Muller, Frag. Hist. Grace Vol, IV, Page 4B1

39 Philosophy of History

40 India its Character.

इस दृष्टि से हिन्दुओं के चरित्र की परीक्षा करनी चाहिये। भारत सरकार के प्रथम गवर्नर जनरल बारेन हेस्टिंग्स ने पार्लियामेंट की कमेटी के सामने गवाही देने हुए कहा था—‘हिन्दू भद्र शुभेच्छु, प्रेमी, वफादार और कृतज्ञ होते हैं। मानवी विकारों की नीच प्रवृत्तियों से दूर रहते हैं। रवेण्ड टी० मोरिस के शब्दों में—‘कौटुम्बिक जीवन में वे (हिन्दू) कोमल और प्रेमी होते हैं।’^{४१} मिस्टर जी० सरसर का २६ वर्षीय अनुभव भी सुनिये—‘वे स्वभाव में वित्तमय व्यवहार में परिष्कृत और धरेलू जीवन में प्रेमी तथा कृपालु हैं।’^{४२}

एतत्तत्पर्य भारत के भूतपूर्व वायसराय की दृष्टि से भारतीय अपने सम्बन्धियों के साथ स्नेह का व्यवहार करते हैं और आड़े समय में उनकी हर प्रकार की सहायता करते हैं। कांट० ए० डी० ग्लूवरनेटिस (इटली) का कथन है ‘वे माता पिता के आज्ञाकारी और अपने बच्चों के लिये स्नेही होते हैं।’^{४३} भारत के भूतपूर्व सेन्सेज कमिश्नर जे० ए० वेनेस महोदय लिखते हैं—‘हिन्दू कुटुम्ब में छोटी-बड़ी के प्रति व्यवहार उदाहरणीय है। अब जरा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व योग्यतम प्रोफेसर विल्सन की दृष्टि से हिन्दुओं के आचार को देखिये—‘मैंने हिन्दुओं को सदैव निर्भय, परिश्रमशील, खुशमिजाज, समझदार और ईमानदार पाया है। सद्यमान और वेकायदगी इनमें नहीं। अन्यत्र आप लिखते हैं—‘हिन्दू सभ्य, समझदार, स्वतन्त्रता प्रिय और स्वाभिमानी होते हैं। उनको संसार के किसी भी देश से सुसभ्य कहा जा सकता है।’^{४४}

41. History of Hindustan Vol. II, Page. 4.

42. Haubard, a debt, a - April, 1813

43. India for the Indians and for England.

44. Mill, a History of India, Vol, I

स्वच्छता—

हिन्दुओं की स्वच्छता संसार में आदर्श है। अनेकों यात्रियों ने इस की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी की है। बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर एलिफन्स्टन भी कहते हैं—‘हिन्दुओं की स्वच्छता लोक प्रसिद्ध है।’^{१४५}

आहार—

प्राच्य एवं पाश्चात्य विद्वान एक मत होकर मानते हैं कि भोजन के अनुकूल ही मानव शरीर बनता है, और उसी के अनुसार उत्पन्न होते हैं विचार। जस्टिस उड्सफी के शब्दों में ‘भारत के अधिकांश निवासी शाकाहारी हैं।’^{१४६} बङ्गाल मनुष्य गायाना के विशेषज्ञों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि भोजन और रहन सहन की पवित्रता ही हिन्दुओं के सुन्दर स्वास्थ्य का कारण है। नीब्यूहर महोदय भी मानते हैं—‘कदाचित् भारतीय नियम विधायकों ने स्वास्थ्य के विचार से ही भोजन में मांस का निषेध किया है। आयों के आहार की तालिका में इतिहासज्ञ गैरट चार चीजें गिनते हैं, गेहूँ, चावल दूध और फल।’^{१४७}

शारीरिक गठन—

आचार विचार और रहन सहन का शारीरिक बनावट पर काफी प्रभाव पड़ता है। कहावत है—‘मन के अनुसार ही तन बनता है’ इस सम्बन्ध में सर फ्रिस्किन पेरे की राय सुनिये—‘हिन्दू मानव

45. History of India. Page, 202,

46. Bhakti Shakti.

47. A, History of India, Page, 14.

जाति की स्वरूपवान जातियों में से हैं।¹⁷⁴⁵ मिस्टर आमी कहते हैं—एक भी जाति दुनिया में गुजराती बनियों से अधिक सुन्दर नहीं।¹⁷⁴⁶ एक दूसरे अंग्रेज विद्वान बतलाते हैं कि हिन्दुओं का शरीर प्रशंसात्मक रूप से सुडौल एवं सुन्दर होता है।¹⁷⁴⁷ अब हिन्दुओं के कट्टर विरोधी मिस्टर मिल की निगाह में भी उन्हें देख लेना वाजिब है—‘हिन्दुओं के शरीर में अद्भुत फुर्ती होती है, केवल गिरहवाजी और कलावाजी की एँठन में नहीं, इसमें तो वे संनार की सभी जातियों से वाजी ले जाते हैं। चलने और दौड़ने में भी अधिक नहीं तो वे स्वस्थ और सुगठित जातियों के बराबर अवश्य है।’¹⁷⁴⁸

जिन हिन्दुओं ने ससार को चलना फिरना, उठना बैठना, और बोलना चालना तक सिखाया था, दुनिया में उनके चरित्र के सामने टहरने की शक्ति किसमें हो सकती है? ब्रह्मा के भूतपूर्व गवर्नर सर बटनर बतलाते हैं कि ‘भारतीय मेहनती और ईमानदार होते हैं।’¹⁷⁴⁹ आज भी चरित्र बल में भारतीय अन्य देशों की अपेक्षा कितने बड़े चढ़े हैं, सर लोपेन० एच० ग्रीफिन के०

48. People of India. Also see, Bird's eye View of India.

49. Chamber's Encyclopaedia. Page 539

50. Mill's India. Vol I, Page, 478

51. सर हारकर्ट बटनर स्वर्गाय प० मोतीलाल नेहरू की मित्रता का दम भरते हुए कहते हैं कि उन्होंने जिन समय कानून तौड़ा भेने उनकी गिरफ्तारी की आज्ञा दी फिर भी हमारे बीच में कोई मनोमाजिन्य नहीं हुआ। पण्डित जी ने कहना भेजा की “यदि मैं अच्छी तरह से अपना कानून जानता होता तो ६ मास के बजाए उन्हें १८ मास कैद की सजा देता।” यह है भारतीयों की निर्भीकता एवं स्पष्ट वादित्वा का नमूना। India Insistent Page, 16, 17

मी० एस० आई की जवानी सुन लीजिये—‘मीधे सादे ईमानदार इद्र्य वाले, यह नहीं जानते कि तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर हम (भारतीय) नैतिकता में अंग्रेजों की अपेक्षा बहुत ऊंचे हैं। वे उद्योगी, सहनशील, संयमी और धार्मिक हैं। उनमें शराबी बहुत कम हैं। कोई निकलेगा भी तो वह होगा अंग्रेज, शराबी स्त्री का तो पता ही नहीं।’^{५२} सन् १८५३ ई० कामन्स की सिलेक्ट कमेटी के सामने गवाही देते हुए सर जी० बी० ग्लार्क ने कहा था ‘दूसरे अधिकांश देशों की अपेक्षा वे ऊंचे हैं। जनरल जान त्रिस्त कहते हैं—‘मेरे परिचित जो बहुत दिनों तक भारत में रह चुके हैं, योरोप की यात्रा करने के बाद दिनों दिन भारतीयों की अधिक सराहना करते हैं। प्रोफेसर मोनियर विलियम्स भी स्वीकार करते हैं कि ‘हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक धार्मिक और अपने साधारण कर्तव्यों को धैर्य के साथ पालन करने वाले व्यक्ति मुझे योरोप में नहीं मिले।’^{५३} सर मुनरो भी यही बतलाते हैं कि हिन्दूस्तानी योरुपियन से सभ्यता में कम नहीं! मिसेज आर० एम० किंग भी कुछ दिनों पति के साथ भारत में रह कर बतला गई हैं—‘भारतीयों के स्वभाव में विनयशीलता और आत्मनियन्त्रण बड़े मार्के का है।’^{५४} दुनिया दूसरों पर शासन करना जानती है किन्तु आन्तेबुल जस्टिस सर जान उडरुफी ने लिखा है कि प्रचीन भारतीयों ने सफलता पूर्वक अपने ऊपर शासन किया है।^{५५} अन्त में मिस्टर जे० बी० नाईट भारतीयों के चरित्र की प्रशंसा करते हुए पक्षपात पूर्ण टीका टिपणी करने

52. People of India.

53. Modern India and the Indians. Page 86, 129

54. Acivilian's wife in India, Vol I, Page, 146

55. See, Is India Civilized ?

वालों को चुनौती देते हैं कि वे उनके और एल्फिन्स्टन, लारेंस, निकोलसन, मुनरो, टाड आदि भारतीय अतिथियों के प्रमाणों का खण्डन करें। जो कह गये हैं कि 'भारतीयों से परिचित होना उन्हें प्यार करना है।' १५६

आज भी भारत मां की गोद में ऐसे अभूतपूर्व चरित्रवान खेले रहे हैं जिनको देख कर, सुन कर दुनियां दांतों तले उंगली दवाती है अपने को अच्छा कहने वाले और अपने मुंह मियां भिट्टू बतते वालों की संख्या संसार में कम नहीं, किन्तु चरित्रवान कौन है।

अच्छा बड़ा है, जिसको अच्छा कहे जमाना।

वीरता

—:०-:०—

अग्निधियो मरुतो विश्वकृष्य आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।

ते स्वानिनो रुद्रिया वर्णनिर्णिजः सिंहा न हेषकनवः सुदानवः ॥

ऋ. ३।२६।५।

वीरता इस भूमि का अपना बीज है, साहस इस उजड़े हुए सुमनोद्यान का ही सुरभित पुष्प और आन के लिये जान देना प्राचीन हिन्दुओं की पुरानी आदत। जिनकी धनुष्टङ्कार से जगत का कोना २ कांप उठता था, जिनके भ्रू भङ्ग से करोड़ों की किस-मन डगमगाने लगती थी, जिनकी कृपा कटाक्ष से संसार के भाग्य खुल जाते थे—ऐसे विश्व विख्यात वीरों को उत्पन्न करने वाली यह वृद्ध भारत मां ही है।

Dr. People of India thier many merits by many who have known

आदम का पुल बांध कर लड़का तक रावण की खबर लेने वाले राम, लड़कपन से ही शूरमाओं से जोर आजमाई करने वाले कृष्ण, बाणों से पतंग छिपाने वाले भीष्म, अमरीका तक आयों की विजय-वैजन्ती फहराने वाले अर्जुन, इसी मां की छातियों का दूध पीकर पजे थे। आर्थर लिली कहते हैं—‘शस्त्र धारी राम संसार के इतिहास में विल्कुल वेजोड़ है।’^१ इतिहास मार्शमैन के शब्दों में राजा सगर महावली था, उसी के नाम पर समुद्र सागर कहलाता है।^२

शौर्य और साहस भारतीयों की बपौती है, दूसरा कोई इसका दावा ही कैसे कर सकता है! कर्नल जेम्स ठाड कहते हैं कि यूनानियों की शक्ति का देवता हरि-कुल-ईश (Hercules) और अपोलो (Apollo) भारत के राम और कृष्ण हैं।^३

वीरता और दया का चोली-दामन का सम्बन्ध है। उसका सुन्दर समन्वय इतिहास के पृष्ठों प्रचण्ड मार्तण्ड के समान चमकने वाले महाराणा संग्रामसिंह के चरित्र में देखिये। महाराणा ने मालवा के सम्राट महमूद को परास्त कर बन्दी बनाया। फरिश्ता का इतिहासकार लिखता है—‘महाराणा ने स्वयं अपने हाथों उसकी परिचर्या की, बावों पर पट्टियां बांधी और स्वस्थ होने पर एक हजार राजपूतों के संरक्षण में बहुत कुछ उपहार देकर उसके देश को भिजवा दिया।’^४ ५२८ ई० में हूणजाति के आक्रमणकारी मेहरगुल को मगध-सम्राट बालादित्य ने विजय कर कैद कर लिया। वीरार्य ने हाथ में आये शिकार को हत्या नहीं

1, Rama and Homer, Page, 151.

2, marsh mau's History of India,

3, See, Tod,s Rajsthan. Vol. I.

4, Briggs Ferishta Vol IVI. Page, 263-266,

की प्रत्युत सम्मान पूर्वक उसे घर वापिस कर दिया ।^{१५} कर्तल टाड कड़ने हैं—‘हम योरूप के इतिहास में ऐसे उत्साह और सर्वस्व गवां देने वाली उदारता के लिये जिम्मेन मृत्यु और वंश दोनों को समुज्ज्वल कर दिया, व्यर्थ दूँढते हैं ।’^{१६}

गौरी, गजनवी, गुलाम, लोदी, खिलजी, तुगलक, मुगल, कितने ही नूकानी बादलों की भान्ति कड़के और अन्तर्हित हो गये । आज संसार में उनका पता नहीं, कीर्ति के आकाश में उनकी प्रभा नहीं किन्तु बप्पा रावल की सन्तानें आज भी उनके सिंहासन पर वर्तमान हैं, वीरगा की प्रतिमूर्ति, आन का पुतला, प्रताप आज भी हिन्दू हृदयों पर शासक कर रहा हैं । देश के दीवाने प्रताप का कार्य समाप्त होने से पूर्ण ही जीवन का अवसान होने लगा. रहस्यमयी आंखों ने अन्तिम बार मेवाड़ और उसकी कोपड़ियों को देखा—भविष्य धुँधला था । मरण शील वीर के मुख पर चिन्ता के रुग में चमक उठी ! टाड महोदय बललाते हैं जब उपस्थित वीरों ने स्वदेश को स्वतन्त्र कर सुख की नौद मोने की प्रतिज्ञाएँ कीं तब कहीं प्रताप की आत्मा सन्तुष्ट हुई और उन्होंने सुख की अन्तिम सांस ली ।^{१७}

रात्र भी यावज्जीवन मित्र की भांति जिसकी कीर्ति का गान करते रहे, वह भारतीय प्रताप का चरित्र था । अब्दुलग्नीम खान खाना के शब्दों में सुनिये—

धम रहमा रहसा धरा, खिम जामा खुरमाण ।

अमर विमम्बर आपरे, निहचै रहनी राण ॥

यही सब कुछ देख-सुन कर कलकत्ते के पुराने पादरी आर०

1. See, Smith's early History of India.

6. Tod's Rajasthan, Vol, I, Page 197

7. Tod's Rajasthan Vol, I, Page 349

हीवर ने लिखा था—वे (हिन्दू) बहुत ऊंची हिम्मत वाले बहादुर हैं।⁹ जयमल और फत्ता की वीरता की याद दुश्मन अकबर के मुंह में भी मिला करती थी। आगरे के किले का अमरसिंह दरवाजा और वीर राठौर का घौड़ा आज भी पुकार पुकार कर बतला रहा है कि अकेला राजपूत किस प्रकार सल्तनत के चुर पाचड़े ढीले कर सकता है। मिस्टर वेली प्रेसर के मुंह से राठौरी कारनामों सुनिये—‘यदि हम अप्रितम आर्दश वीरता, विश्वस्तता और निर्भीक आत्मानुराग के चित्र ढूँढना चाहें तो हमको राजपूतों की शूरता और विशेषतः राठौरों की ओर मुड़ना पड़ेगा, यहां पर हमको दृढ़वीरत्व के वे प्रमाण मिलेंगे जिन से किसी देश अथवा काल के शूर सैनिक बाजी नहीं ले जा सकते।’¹⁰

एफ० वर्नियर० एम० डी० बतलाता है कि राजपूत युद्ध से मुड़ने की अपेक्षा रणस्थल में ही प्राण सम्पर्ण करना श्रेयस्कर समझते हैं।¹¹

वीर दुर्गादास के सम्बन्ध में लेफ्टिनेण्ट जनरल हिजहाईनेस प्रतापसिंह ने अपने आन्तर् चरित्र में लिखा है—कई बार औरंगजेब ने दुर्गादास को कहा कि यहि तुम अपने स्वामी अजीतसिंह को हमारे सिपुं द कर दोगे तो हम तुम्हें सारे मारवाड़ का राजा बना देंगे, परन्तु दुर्गादास एक सच्चा क्षत्रिय था, उसे कोई प्रलोभन विचलित न कर सका। दुर्गादास जब तक जिये उन्होंने अपना शरीर और अपनी आत्मा देश तथा स्वामी के हितचित्तन

9. India for the Indians and for England.

9. Military memoirs of Colonel J. Skinner. Vol, Page 89, 90

10. Travels in the Mugal Empire.

में अर्पित की। आज भी मारवाड़ उनका इन शब्दों में स्मरण करता है:—

जननी चुन ऐयो जने, जैसो दुर्गादास ।

बांध मुंडायो रात्रियो, विन श्मश्रु आकाश ।”

किसी पश्चात्य पण्डित ने लिखा है—‘उन (कृत्रियों) की पैतृक शिक्षा का महत्व इस प्रसिद्ध युक्ति से भली भाँति समझ में आ सकता है—‘अपनी माता का दूध न लजाना’ ‘ ‘ कर्नल टाड वीर श्रेष्ठ दुर्गादास के प्रति श्रद्धाञ्जली चढ़ाते हुए कहते हैं— ‘ + + + उसके कृत्य निरन्तर प्रशंसनीय सिद्धांत हैं, सृजने धोड़े पर सवार, वृद्ध किन्तु वीरत्व में शरावीर,—उनका यह चित्र राजपूत स्वदेश भक्तों की चित्रावली में प्रिय है ।’^{११} जयसिंह हम्मीर आदि असंख्य राजपूत दुर्दैव की काली घटनाओं में सदैव विजली की भाँति चमकते रहे। अब राठौर सरदार मुकन्द की कहानी भी राजपूताने के भूतपूर्व पोलिटिकल ऐजेंट की जबानी सुनिये—राठौर सरदार के किसी स्पष्ट उत्तर को अपमानजनक समझ कर औरंगजेब ने उन्हें निःशस्त्र शेर के समीप कटघरे में घुसने की आज्ञा दी। निर्भीक निहत्था राठौर शेर के समीप पहुँच कर उसे ललकारते हुए बोला:—

‘पे मियां (औरंगजेब) के शेर ! जसवन्त के शेर का सामना कर ।’

शेर ऐसे विलक्षण सम्बोधन का आदी न था। वह चौंक पड़ा आगन्तुक की ओर देखा, गर्दन नीची कर ली और मुड़ गया।

11. “X X The importance of his parental instruction can not be better illustrated than in the, ever recurring simile—“make thy mother's milk resplendent,

12, Tod's Rajasthan Vol II, Page, 82

‘तुमने देखा’ राजपूत चिज़ाकर कहने लगा, ‘इसमें मेरा मुकाबिला करने का साहस नहीं, और यह सब राजपूत के आचार विरुद्ध है कि वह उस शत्रु पर आक्रमण करे जिसमें सामना करने का साहस नहीं।’

अत्याचारी औरंगजेब आश्चर्य चकित हो कर उस का प्रशंसक बन गया और उसे उपहार भेंट करते हुए पूछा कि क्या उसके कोई सन्तान है, जिसे वह अपने इस पराक्रम की वसीयत कर सके ?

‘हम वच्चे कैसे पैदा कर सकते हैं, जब तुम हमको हमारी स्त्रियों से दूर अटक पार रखते हो।’—यह मुकुन्द का उत्तर था।

टाड साहब कहते हैं, इससे स्पष्ट है कि राठौर और भय, परस्पर एक दूसरे से अपरिचित थे।^{१२} राजस्थान के रोम-रोम में शूरवीरों की कीर्ति कहानियां चित्रित हैं। पूरे २४ वर्ष तक उनका सर्वक निरीक्षण के पश्चात् जे० टाड महोदय इन शब्दों में अपना निर्णय देते हैं:—‘राजस्थान में कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं जिसमें धर्मोपोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहां लियोडस जैसा वीर पुरुष उत्पन्न हुआ हो।’

आदर्श वीरता का अन्यत्र ढूंढना समय गंवाना है। भारत भूमि की रेणु को उठा कर इसका चित्र देख लीजिये, प्रत्येक कण और पत्थर में गौरवान्ति अतीत का मूक स्मारक मिलेगा। मिस्टर विल्सन के स्वर में स्वर मिलाकर भूतपूर्व पार्लियामेन्ट के सदस्य मिस्टर हार्डी कहते हैं—‘निर्भीकता भारतीय आचरण का एक विश्व-विख्यात गुण है। महाराष्ट्र केसरी के आचरण पर मुग्ध होकर बर्नियर लिखता है—‘शिवाजी वीर और साहसी पुरुष हैं, मरने जीने से जरा भी नहीं डरते।’ एच० एल० ओ०

गैरेट आई० ई० एस० बतलाते हैं कि इन्होंने कभी व्यर्थ का रक्तपात नहीं किया और न ही किया दीन दुश्मियों पर अत्याचार ।^{१४}

राजस्थान का इतिहास लेखक कहता है कि इंगलैण्ड के सम्राट क्वेयर डी० लाईन (Coeur de lion) इतनी मुदत तक आस्ट्रिया की तंग कोठरी में कैद न रहते यदि राजपूत उनकी प्रजा होते ।^{१५} हिन्दू वीरता की दाद देता हुआ इतिहासज्ञ इब्नजमा लिखता है—‘हिन्दू लोग मरने जीने की परवाह नहीं करते ।’ भारतीयों के साथ लोहा लेने वाले यूनानियों की सम्मति है ‘हिन्दू अत्यन्त वीर जाति है ।’^{१६}

भारत की मिट्टी और पानी में वीरता कूट-कूट कर भरी गई है । आज भी आप यू० पी० की गोचर भूमि से निकल जाइये पशुओं के पीछे दौड़ने वाले कुत्तों के कुप-काय नालक बड़ी मस्ती के साथ गाते हुए दिखलाई पड़ेंगे :—

बरह बरमे कूकुर जीव, त्यारह वरसे जिये सयार ।

वर्ष अठारह बर्सा जीवे, अगे जीवे को धिक्कार ॥

राम-कृष्ण की कह क्रीड़ा भूमि, आल्हा और उदयसिंह की यह जननी, राणा बेनीमाधव और पेशवा नानाराव की यह रङ्ग-स्थली आज भी अपनी छाती में वीर-स्मृतियों को छुपाये पड़ी हैं ।

भारत के चित्र को उठाइये, छोटे से नेपाल का रङ्ग, अन्य देशी राज्यों की भांति पीला नहीं हरा दिखाई पड़ेगा । नेपाल के इस भांति आज तक उड़प्रीव खड़े रहने का कारण है, अमरसिंह और बलभद्रसिंह जैसी वीर आत्माओं की मौत से हाथापाई करने

14, A, History of India Page. 214

15, Tod's Rajsthan, Vol. I. Page. 161.

16, Elphinstone's History of India.

वाली स्वदेश सेवा की लग्न ! अवध के भूतपूर्व सेटिलमण्ट कमिश्नर बीनेट बतलाते हैं कि ब्राह्मण और राजपूतों का साहस पेंटेस्ट है ।^{१७} मेजर जनरल बर्ने स्वीकार करते हैं कि भारतियों ने शत्रु और मित्र दोनों ही रूपों में अपने को बहादुर सैनिक साबित कर दिया है ।^{१८}

अब जरा आधुनिक भारतियों की वीरता का कुछ हाल मिल महोदय कृत इतिहास की एक टिप्पणी में देखिये,—‘बादशाह की १५ वीं और १६ वीं सेना के जो योरूपियन, सेना के आगे थे, उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया, अफसरों की बार २ प्रार्थना और डर-धमकी का भी उनके हृदय पर कुछ प्रभाव न पड़ा । तब तो १८वीं और १९वीं हिन्दुस्तानी सेना के सिपाही आगे बुलाये गये । वे वीरता पूर्वक किला उड़ाने के लिए आगे बढ़े ।’^{१९}

यहां पर वीरता के वर्गीकरण का विचार छोड़ कर इतना ही कहना पर्याप्त है कि जहां लम्बी लम्बी बेतन लेने वाले अंग्रेजों की हिम्मत चर्खा होगई, वहां हिन्दुस्तानियों के ही बाहुबल ने काम दिया था । भारतपुर के घिराव में वीर जाटों ने बहादुरी के जो दांव-पेच दिखलाये थे उन्हें थार्टन साहब के भारतीय गजेटियर में लिखी हुई गुरु गंभीर भाषा में देखिये—‘सन् १८०५ प्रथम घिराव के अवसर पर ब्रिटिश सेना के हिन्दुस्तानी सिपाही यह कहते थे कि हमने शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म पीताम्बर वंशी धारी पवित्रात्मा (कृष्ण) को भरतपुर नगर की रक्षा करते देखा

17. See Oudh gazetter for 1877. Page 7.

18. People of India.

19. Mill's History of India VI. VI, Page 426.

था ।' २० थार्टन साहब के इस स्पष्टीकरण का आशय कुछ भी हां किन्तु इस विषय में अंग्रेजों का घुरी तरह पराजित होना जाट वीरों की बहादुरी का ज्वलन्त उदाहरण है, जिससे कभी भी इन्कार नहीं किया जा सकता ।

जाटों के सम्बन्ध में राजपूताने में आज तक मशहूर है—

आठ किरंगों नौ गौर, जहँ जाट के दो छोरा ।

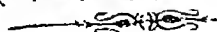
आज भी भारत की प्राचीन राजपूती वीरता का स्मरण करते हुए प० मेकी लिखते हैं—‘वे ही राजपूत जो चन्द्र और सूर्य के वंशधर कहे जाते हैं और जो अग्रिकुल से उत्पन्न हुए हैं, अब अपनी जानि विषयक उत्साहवर्धक कहानियों को भूल सा गये हैं । मूर्खता एवं विलास प्रियता के कारण ऐसे अकर्मण्य बन गये हैं कि जब उनके पूर्वजों की धर्मयुक्त वीरता, बुद्धिमत्ता पूर्ण व्यवहारिक देश प्रेम, प्राचीन सभ्यता तथा उदार हृदयता का स्मरण आता है तो दुःख होता है ।’ २१

इस पृथ्वी तल पर वीरता प्राचीन हिन्दुओं का शृंगार थी, वीरों के भुज-बल से ही भारत ने अमर-ख्याति प्राप्त की थी । भारत का सर्वस्व भले ही चला जाय किन्तु इस की आदर्श वीरता जननी जन्म भूमि का पल्ला न छोड़े, यही कामना है ।

20 In 1805, during the first siege some of the native soldiers in the British service declared that they distinctly saw the town defended by that divinity; dressed in yellow garments, and armed with his peculiar weapons, the bow, mace, couch and pipe.

21. The Nations of India.

स्त्रियों की स्थिति



यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

—मनुस्मृति

इटली के महापुरुष मेजनी ने लिखा है किसी 'राष्ट्र या समाज के उत्थान की सब से बड़ी परख है उस देश या समाज में महिलाओं की स्थिति । जिस देश में स्त्रियों की सामाजिक एवं पारिवारिक अवस्था ऊन्नत है, वह देश अवश्य सभ्य है ।" भारतीय हिन्दू समाज में आदिकाल से ही महिलाओं का स्थान बहुत ऊंचा चला आ रहा है, जो कि इस देश की उन्नत सभ्यता का एक अत्यन्त मान्य प्रमाण है ।

प्रोफेसर एच० एच० विल्सन मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं कि—'प्राचीन काल में किसी भी जाति के अन्दर स्त्रियों का इतना सम्मान नहीं था जितना के हिन्दुओं में ।" १ मिसेज लूसी भी अपने एक लेख में इसी बात का समर्थन करती हैं—'वैदिक काल में भारतीय स्त्रियों की संस्कृति उच्चतम थी । कुछ ने तो ऋग्वेद तक प्राप्त कर लिया था । वेदों तक में उन्हें बराबरी का स्थान दिया गया है ।" २ मनु महाराज के समय में स्त्रियों का स्थान निश्चित करने के लिए आप ने कतिपय मनुस्मृति के श्लोकों का अनुवाद तक उद्धृत किया है ।

1. Mill's history of India Vol 11, Page 51.

साम्राज्ञी शशुरे भवे साम्राज्ञी श्वश्रुश्वो भव

नानांदरि साम्राज्ञी भव साम्राज्ञी अधिदेवपु ॥—अथर्ववेद

"इहे रत्न हव्ये काव्ये चन्द्रे ज्योतेऽदित, सरस्वती महि विश्रुति ।"

यजुर्वेद

शोचन्ति जामयो यत्रविनश्यत्याशु नत्कुनम ।

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते ताद्विसर्वदा ॥ ३

इतिहासज्ञ रोगोजिन महाशय का कहना है कि—‘वैदिक काल के पञ्जाब निवासी आर्यों में महिलाओं का अत्यन्त सम्माननीय एवं उच्चतम स्थान था । समाज में पति के समान ही उनका भी आदर होता था ।’^४ एने डुबोइस के समान द्वेष दर्शक मिशनरी भी स्वीकार करता है—‘जन समूह में उनका बड़ा आदर होता है । निस्सन्देह उनका आदर छेड़छाड़ और मजाक पूर्ण नहीं, जैसा हम लोगों में होता है, जो हमारे स्त्री पुरुषों के लिये लज्जा की बात है । इसके अतिरिक्त उन्हें जन समूह में किसी प्रकार के अपमान का भय नहीं रहता । कोई स्त्री जहां चाहे जा सकती है । . . . जिस मकान में केवल स्त्रियां ही रहती हैं वह देवस्थान तुल्य माना जाता है । अत्यन्त निर्लज्ज गुण्डे तक उनके विरुद्ध आचरण करने का कभी स्वप्न में भी खयाल तक नहीं करते ।’ सर एड्ग्रेसर भारतीयों के सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रकट करते हुए प्रशंसा करते हैं—, वे (भारतीय) भली स्त्रियों के प्रति, चाहे वे योरोपियन हों या भारतीय, वीरता पूर्ण सम्मान प्रकट करते हैं ।’^५ ‘शतपथ’ आज भी पुंकार पुंकार कर कह रहा है कि ‘स्त्री लक्ष्मी स्वरूप है उसका अपमान करने वाला लक्ष्मी विहीन हो जाता है ।’^६

विद्वता—

प्राचीन स्त्री शिक्षा * के सम्बन्ध में श्रीमती डाक्टर एनी

3 Indian Review —April, 1919.

4 Vedio India.

5. Unhappy India.

6. स्त्रीर्व एषा यत्र श्री, नैव तत्र स्यात्, स्त्रियं धति ।’

7. पुरां कल्पे तु नारिणां मौञ्जी बन्धनमिष्यते ।

विमेन्ट सहोदया लिखती हैं—पूर्व काल में बालिकायें उपनयन मंस्कार की अधिकारिणी थीं। वे वेद पढ़ सकती थीं, गायत्री का जाप कर सकती थी।^१

श्रीमती लूमी० एस० बतलाती हैं—‘वह (लीलावती) १२ वीं शताब्दी में एक महान गणितज्ञा हो गई हैं। कदाचित प्राचीन भारत की एक सुप्रसिद्ध महिला मार्गी थीं। जिन्होंने एक दार्शनिक ग्रन्थ लिखा और याज्ञवल्क्य सरीखे विद्वान से वाद विवाद किया। यह भी स्मरणीय बात है कि अंग्रेजी भाषा में प्रथम कविता (Poetry of merit) लिखने वाली भारतीय महिला तोरुदत्त थीं।” ‘देश दर्शन’ के विद्वान लेखक ने इस विषय में किमी पाश्चात्य पंडित को कुछ पंक्तियां उद्धृत की हैं। उनका आशय है कि—‘उम महान उन्नति के समय स्त्रियां पुरुषों के बराबर पढ़ी लिखी हुआ करती थीं और उनकी शिक्षा पुरुषों के समान बड़े ऊंचे दर्जे की होती थी।”^२ वह कौन सा ज्ञान-विज्ञान है जिसमें कदम रख कर भारतीय महिलाओं ने ‘कमाल हासिल नहीं किया? गान्धारी, सावित्री, मैत्रेयी, सीता, अक्का, दुर्गा, भारती, खन्ना, इन्दुलेखा, विद्या जीजी सरीखी भारतीय महिलाएं किसी भी देश में गौरवान्ति बना सकती हैं।

विवाह—

विवाह के सम्बन्ध में भी उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। श्रीमती एनीबिसैट बतलाती हैं—‘वैदिक काल में स्त्रियां विवाह करने के लिए विवश नहीं की जाती थीं। मानसिक और धार्मिक

अध्ययन च वेदानां सावित्री वचनं तथा ॥ सत्यार्थ विवेक

8. Wake up India, Page 55.

कन्याऽप्येवं पालनीया शिक्षणीयाऽतिथल्लतः ।

योग्यनानुसार वे बालब्रह्मचारिणी रह सकती थीं । मोक्ष प्राप्ति के लिये सन्यास लेकर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर सकती थीं ।' °

मिसेज लूमी कुछ ही काल पूर्व का वर्णन करते हुए लिखती हैं—'ऊंची श्रेणियों में बहुत पीछे तक राजकुमारियाँ स्वतन्त्रता पूर्वक स्वयम्बर में अपना पति बरती रही हैं ।' ११

पर्दा—

जिस राष्ट्र एवं समाज में स्त्रियों ने इतना विकास किया हो वहां पर्दे का प्रश्न कैसा ? चीनी यात्री, ह्युनसांग के लेखों से स्पष्ट है कि बालादित्य की राजमाता उनके जाने पर उनसे खुल्लम खुल्ला मिली थी । विदुषी राज्य श्री ने स्वयं यात्री से वार्तालाप किया था और राज्य प्रबन्ध में भी अपने भाई का हाथ बटाया करती थीं । १२

अबूजेद यात्री ने राजदरबारों में पुरुषों के साथ स्त्रियों का उल्लेख किया है । कर्नल टाड महोदय अपने चिर अनुभव को कितने जोरदार शब्दों में व्यक्त करते हैं—'राजपूत महिलाएँ जिस स्वतन्त्रता, सम्मान और सुख का उपभोग करती हैं, मैं किसी भी अवस्था में उनकी इस दशा को 'फैद' नहीं कह सकता ।' १३ मिसेज लूमी महोदया भी इसी मत का समर्थन करती हुई कहती हैं—'वे पर्दे में नहीं रहती थीं प्रत्युत समाज में स्वतन्त्रता के साथ आती जाती थीं ।.....प्राचीन अयोध्या में ऊंचे घरानों की स्त्रियाँ

10. Wake up India

11. सिर्ना बानी पृथुष्टुके या देवता मणि स्वसा ।

जुस्व' ह्य्य माहं प्रजां देवी दिदिड्डिनः ॥ यजुर्वेद ३४-१०

12. Scenes & character of Indian history, Page.

13. Tod's Rajasthan.

का भी रंगमंच पर आना अनुचित नहीं समझा जाता था । इन समस्त बातों से पता चलता है कि स्त्रियां उस काल में किस स्वतन्त्रता के साथ रहा करती थी ।^{१४} एच० जी० रीलीविन्सन एम० ए० आई० ई० एस० का कहना है—‘हिन्दुओं में पदों की प्रथा का जन्म मुसलमान काल में हुआ है ।’^{१५}

अधिकार—

कुछ लोग जिन्हें हिन्दू कानून का पता नहीं, समाज की आन्तरिक स्थिति का ज्ञान नहीं और नहीं है उनके कौटुम्बिक जीवन के आनन्द का अनुभव, वे प्रायः इस बात को लेकर कटाक्ष करते हैं कि हिन्दुओं की पैतृक सम्पत्ति में लड़कियों का बहुत कम अधिकार है । जो लोग हिन्दू समाज की आन्तरिक अवस्था से सुपरिचित हैं, उन्हें पता है कि एक हिन्दू बहन अपने भाई से अपने भरण पोषण, विवाह व्यय एवं समस्त शुभ कार्यों और त्योहारों पर उपहार प्राप्त करने की पूर्ण अधिकारिणी है—पिता से भाई भले ही उत्तराधिकार में कौड़ी की सम्पत्ति न प्राप्त करे । मां का सन्तान पर कानूनी और नैतिक इतना जबरदस्त अधिकार है कि शायद ही संसार के किसी समाज में ऐसा हो ।

केवल पुत्रियां और बहिनें ही नहीं उनकी सन्तान और सम्बन्धी भी पैतृगृह से पारिवारिक उत्सवों और त्योहारों पर उपहार प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार रखते हैं—मिस्टर जे० यंग के शब्दों में—हिन्दुओं के पारस्परिक सम्बन्ध की गांठें बहुत मजबूत होती हैं, जब परिवार का कोई भी व्यक्ति अच्छी अवस्था में होता है तो वह अपने कुटुम्बियों की सहायता करता है । + ×

14 Indian Review, for April, 1919 A.D.

15 Intercourse between India and the western world, Page, 90.

यह गुण अमीर गरीब दोनों में सामान रूप से पाया जाता है।^{१६}

प्रोफेसर विल्सन के शब्दों में—‘सम्पत्ति में उन्हें पूरा अधिकार प्राप्त है।’ आगे चल कर आप बतलाते हैं—‘उत्तराधिकारी पुरुष की अनुपस्थिति में विधवा को आजीवन अधिकार है, उस के पश्चात् लड़की को। यह कहना कि हिन्दू स्त्रियों को जायदाद में अधिकार नहीं—सत्यता से बहुत दूर की बात है।^{१७} हिन्दू कौटुम्बिक जीवन इतना उदार एवं प्रशस्त है कि एक बार भी उस के संसर्ग में आने वाला व्यक्ति अनन्त काल तक के लिए उस में बन्ध जाता है।

स्त्री पर मुकिलित पुष्प से भी आघात न करो यदि उस ने सैकड़ों अपराध भी किये हों।’^{१८}—यह हिन्दू शास्त्रकारों का आदेश है। कर्नल टाड महोदय का विचार है कि इस से सुकोमल भाव आज किसी ने भी नारी जाति के प्रति प्रशित नहीं किये ! लाहौर गवर्नमेण्ट कालेज के प्रथम प्रिन्सिपल और उसके पश्चात् पञ्जाब शिक्षा विभाग के सर्वोच्च अधिकारी डाक्टर लीडनर महोदय कहते हैं—‘वे अपनी स्त्रियों के प्रति जो आदर और पवित्र प्रेम प्रदर्शित करते हैं उस का वाह्य रूप भी हमें योरुप में नहीं मिलता।’ स्त्रियाँ अनादि काल से भारत में समाज का मर्मस्थान मानी जाती हैं, यही कारण था कि इस देश ने संसार में असाधारण उन्नति की थी। सर जान फ्रडरीक टेवज वार्ट बतलाता है—‘किसी जाति के आनन्द का आदर्श और प्रसन्नता का माप दण्ड विशेषतः स्त्रियों पर निर्भर करता है।’^{१९} इस

16. People of India.

17. Mill's history of India.

18. तबद्दर्शनं किशुद्धात्मा नष्टं कर्षयति ।—रामायण

19. The other side of Lantern Page 40

कसौटी पर कसने के बाद प्राचीन हिन्दू ही संसार की समस्त जातियों में सुखी प्रमाणित होते हैं। पण्डितक अलबेरुनी भी लिखता है—वे (हिन्दू) समस्त मामलों और सलाह मशवरे में अपनी स्त्रियों की सम्मति लेते हैं।^१ २० प्राचीन जर्मन या स्कण्डेनेवियों की भांति राजपूत हर एक काम में अपनी स्त्री से सलाह लेते। + + + और उन के नाम के साथ देवी का विशेषण लगाते हैं। २१ मिस्टर रागोजन महोदय के शब्दों में आधुनिक जातियों के सर्व प्रिय जीवनचर्या भी उस आदर्श से बहुत पीछे रह जाती है जिस का इस प्रकार जंगली कहे जाने वाले हमारे पूर्वजों (आर्यों) ने निर्माण किया था।^२ २२

20. Alberuni's India, Vol, 1, Page. 181.

21. Annals of Rajasthan, Vol, I Page 634.

22. Vedio India.

स्त्रियों का आचार



धारध्वनिमिरलं ते नारद, में मासिको गर्भः ।

उन्मद कारणं युद्धया जठरं में ममच्छ्ववर्तति ॥

—कश्चिन्

शौर्य—

भारत में पराक्रम और पौरुष केवल पुरुषों के ही बांट में न आया था, नारियां भी साहस और वीरता में उन्हीं के अनुरूप थीं, विट्ठला का राजकुमार संजय को युद्ध के लिये प्रोत्साहित करना, कुन्ती का ब्राह्मण पुत्र के स्थान पर भीम को बक-राक्षस वध के लिये भेजना, और कर्कई का दशगथ को रणक्षेत्र में सहायता देना, भारतीय महिलाओं की अतुल वीरता के अद्वितीय उदाहरण हैं ।

किरणामयी का कटार लेकर अकबर की छाती पर सवार होना, कुतुबुद्दीन ऐबक का क्रूरमदेवी को पीठ दिखाकर भागना ।¹ रानी दुर्गावती की स्वतन्त्रता को हड़प करने के लिये मुगलों का हाथ लपकाना, इतिहास प्रसिद्ध है । इतिहासज्ञ 'फरिश्ता' लिखता है कि—'दुर्गावती ने घमसान युद्ध किया और घायल हुई । युद्ध-भूमि से मुंह मोड़ना अपमान समझ कर रानी ने रणक्षेत्र में अपना काम अपने हाथों तमास कर लिया ।'²

तारा की तलवार, पद्मिनी का कम्पनकारी जौहर, पन्ना घायल का लोहमर्षक बलिदान, आज भी भारतीयों के शरीर में विद्यत

1 Tod's Rajasthan,

2 Tod's Rajasthan, Vol I Page. 642.

का संचार कर देता है। इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स टाड के शब्दों में—‘किसी भी जाति के इतिहास में राजपूत महिलाओं की भान्ति अनुगम एवं देशभक्ति के इतने अधिक और ज्वलन्त उदाहरण नहीं मिल सकते। पत्नी और माता दोनों ही रूपों में भारतीय महिलाएं विश्व इतिहास के पृष्ठों पर चमक रही हैं। पति-पुत्र को युद्ध में भेजने के लिये अपने हाथों से सजाना, उनके प्रेम एवं वात्सल्य का ऊंचा आदर्श है। रण से विमुख होना,—मां का दूध लजाना—इससे अधिक दाहक अपमानजनक बात, उनके लिये दूसरी नहीं। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर अपनी आंखों देखी बात बतलाता है—‘मैं उस भयानक स्वागत का वयान किये बिना नहीं रह सकता।’^३ जैसा राना की लड़की ने अपने पति का किया था। उसने सुना कि उसके पति ने पर्याप्त साहस से युद्ध किया और केवल चार पांचसौ मनुष्यों के अवशेष रहने पर, शत्रु को रोकने के योग्य शक्ति के अभाव से युद्ध क्षेत्र से वापस लौट आया। राजकुमारी सहानुभूति प्रदर्शन के लिये किसी के स्थान पर महल के फाटक बन्द करवा दिये और कहा ‘उसका पति—राना का दामाद—इतनी गिरी आत्मा का नहीं हो सकता। इस घटना से यह प्रकट होता है कि इस देश की महिलाओं को अपने मान, प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का कितना ध्यान है। उनका हृदय कितना सजीव है। मैं ऐसे और भी दृष्टान्त दे सकता हूँ क्योंकि मैंने बहुत सी स्त्रियों को अपने पतियों के साथ चिता में जलकर मरते हुए देखा है।’^४

बूंदी के महलों में ‘राव’ के रणक्षेत्र में निधन होने की खबर फैल गई, महारानी ने चिल्ला कर पूछा—क्या वह अकेला ही

3. Tod's Rajasthan, Vol, 1 Page, 613.

4. Travels in the Mughal Empire.

चल बसा ? राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स टाड कहते हैं—‘राजमाता ने स्वयं उतर दिया’-कभी नहीं, वह वक्ता जिसने इन छातियों का दूध पिया है, रणक्षेत्र से कभी अकेला प्रस्थान नहीं कर सकता । (अर्थात् सहस्रों का मार कर मरेगा) रानी का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया, उनकी छातियों से दूध बह निकला ।^५

भारत के जलवायु और भारतीय महिलाओं की छातियों के ही दूध का प्रभाव था कि राजपूत अपने शत्रुओं की संस्था नहीं, अपितु बड़ी उत्सुकता के साथ उनका पता पूछा करते थे ।

भारतीय स्त्रियों के सम्बन्ध में लिखते हुए श्रीमती लूसी ; वतलानी हैं कि साँसी की महारानी लक्ष्मीबाई और अहिल्याबाई । भारतके महानतम शासकों में से थीं । सर जान मालकम वतलानी हैं—‘गम्भीरता पूर्वक इनके चरित्र पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि वह एक अत्यन्त पवित्र और आदर्श शासक थीं । उनके जीवन से यह उदाहरण और शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते समय किस प्रकार उनके लिये अपने को ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी समझना चाहिये ।’^६

इतिहास लेखक टी० जेम्स लिखते हैं कि भूमण्डल के इतिहास में बनावर वन्धु (आल्हा उदयसिंह) की माता देवता के समान वीरत्व और सज्जनता का दूसरा उदाहरण शायद ही और कहीं मिले ।

अभी हाल की बात है—जर्मन यात्री एफ० आस्ट्रिजर ने कुछ

5. Tod's Rajasthan, Vol. II, Page, 48

† Indian Review, for April 1919. A. D

G. History of Central India Vol, 1,

प्राचीण भारतीय महिलाओं को देख कर कहा था—सहधर्म (Partner-Ship) के सिद्धान्त को पूर्ण रूप से निर्वाह करने वाली स्त्रियां यहां के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं मिल सकतीं। इनकी महत्तामयी और स्नेहमयी गोद में उछल कूद कर उठने वाले बालक ही युगान्तर उपस्थित कर सकते हैं।”

साधारण चरित्र—

अब भारतीय महिलाओं के चरित्र सम्बन्धी अन्य गुणों को भी देखना उचित है। सर एक० टी० बार्ट के शब्दों में ‘भारतीय नारियां सर्व प्रथम अपनी शानदार हिम्मत का दावा कर सकती हैं। + + + नवयौवना महिलाएं और लड़कियां सुन्दर सदाचारिणी और मलज्ज होती हैं।”^७

सर लेपेल० एच० ग्रिफिन आई० सी० एस० लिखते हैं—
‘भारत में शगाव पीने वाली स्त्रियों का पता ही न था।’^८
भारतीय स्त्रियों के सम्बन्ध में जी० ए० चापमैन का भी विचार सुनिए—‘साधारणतया भारतीय स्त्रियां पुरुषों से अधिक शुद्ध कार्यकुशल और निपुण होती हैं।’^९

प्रसन्न मन स्वस्थ शरीर में रहता है। अस्तु भारतीय महिलाओं की शारीरिक अवस्था से भी यत्किञ्चित् परिचय प्राप्त करना असंगत न होगा। सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता सी० एच० पेनी बतलाता है—‘मालाबार की स्त्रियां साधारणतः और नायर सम्प्रदाय की विशेषतया स्वर्णपान होती हैं।”^{१०} सन् १६६५ ई० का यात्री

7 The other side of the Lantern, Page 48.

8 People of India.

9 India its character, Page 51.

10 Scenes and character of Indian History Page 35.

जेम्स फोर्ब्स लिखता है—‘हिन्दू स्त्रियों से बढ़कर कोई भी स्त्री सफाई का ध्यान नहीं रखती । वे अपनी स्वच्छता, कोमलता और आकर्षण का हर प्रकार से ध्यान रखती हैं । वे अपने लम्बे लम्बे बालों को जवाहिरात और पुष्पहारों से सजाती हैं और आभूषण पहनती हैं ।’^{११}

सर फ्रिस्काइन पेरे भी भारतीय महिलाओं की सुन्दरता का गुणगान करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संसार में किसी भी देश की स्त्रियाँ सुन्दरता में उनका सामना नहीं कर सकतीं ।^{१२} मुलेमान सौदागर का कथन है कि गुरुज (गुजरात) की स्त्रियाँ सारे भारत की स्त्रियों से अधिक सुन्दर होती हैं ।^{१३} प्राचीन संस्कृत कवि माघ भी इसका भाल भान्ति समर्थन करते हैं—

परस्परस्पर्धिपराध्यर्हृपाः परस्त्रियो यत्र विधाय देवाः ।

श्रीर्निर्मितं प्राग् धुग्गल नैक वशीपमा वाच्यमलं ममार्ज ॥^{१४}

पॉलियामेण्ट के प्रसिद्ध सदस्य मिस्टर केर बङ्गाल के सौन्दर्य का गुणगान करते हुए उनके धुंधराले बालों की विशेष प्रशंसा करते हैं ।^{१५} कहने का आशय यह है कि वीरता, सुन्दरता, साहस, सफाई, योग्यता, सभ्य शृंगार, सदाचार, जिस दृष्टि से चाहें आप भारतीय नारियों के दर्शन कर लें, कहीं भी ऊंगली उठाने की जगह न मिलेगी । कविवर वियोगी हरि के शब्दों में संसार यही कहेगा—

अपने ही वन आपनी, रखन हरियाँ साज ।

धनि, आरज-कुल-नारियाँ, जग-नारिनु-सरताज ॥

11. Memories, see also the Peoples of India.

12. See, Bird's eye view of India.

13. मुलेमान सौदागर, पृष्ठ ५४

14. शिशुपाल वध, श्लोक ५८ पृष्ठ ८२

15. See, India impressions and Suggestions.

इन विश्व-विश्रुत महिलाओं की गोदी में खेलने वाले बच्चों के सम्बन्ध में भी, भारत भाग्य विधाता, लार्ड की पदवी को ठुकराने वाले स्मथर्स के भूतपूर्व गवर्नर माउंट स्टुअर्ट एलिफिन्स्टन की जवानी भी दो शब्द सुन लीजिए:—‘हिन्दु बच्चे योरुपियन बच्चों की अपेक्षाकृत बहुत तेज और निपुण होते हैं।’^{१६}

‘मौहैन नारि नारि के रूपा’ की उक्ति का खण्डन भी मिस मैरी स्काट के शब्दों में सुन लीजिये—‘सीता स्त्रीत्व का वह मधुरतम आदर्श, जिसका मैंने कभी अध्ययन किया है।’ सरमोनियर विलियमस सरीखे विद्वान भी सुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं—‘वास्तव में साधारणतया हिन्दू पत्नी विवाह सम्बन्धी वफादारी का पूर्ण आदर्श है।’^{१७} विशाल संसार में किसी भी ओर दृष्टि डालिये भारतीय नारियों के आदर्श चरित्र की समता करने वाला दूसरा उदाहरण न मिलेगा !

ॐ एक बार राजस्थान के किसी सम्पन्न घराने के लड़के को उसके रसिक विद्य-गुरु महोदय मुस्करा २ कर—‘मृग नयनी के नयन मैं मयन अयन मन होय।’ की व्याख्या बतला रहे थे। यह मनक कहीं लड़के की चत्राणा माना के कान में पड़ी। उसने परिचारिका से परेडत जी के पास कहला भेजा कि मेरे लड़के को ऐसे नहीं किन्तु ऐसे दोहे पढ़ावें और समझावें:—

सोढे उमर कंटरो, दो वाही अब यट्ट।

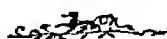
जाने वेहू भाई, आथ करी बे भट्ट

अर्थात् “उमरकोट के सोडा (राजपूत) ने ऐभी यट्ट (तलवार) चलाई जिस से दैरीके दो टुकड़े बराबर २ होगए, जैसे दो भाई पैतृक आय (धन) को तोल कर बराबर २ दो भागों में बांट लेते हैं।”

16. History of India.

17. Indian Epic poetry, Page 68.

स्वदेश प्रेम



जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

भारत धर्म प्रधान देश है और राष्ट्र भक्ति उसका प्रधान अङ्ग । स्वदेश मेवा यहां ईश्वरोपासना ममभी जाती है । धर्म और देश ये ही दो भारतीयों के बलिदान के उत्कृष्ट हेतु हैं । योगीराज कृष्ण ने गीता में कहा है कि स्वदेश सेवा के लिए अपने को सिद्ध देना ही बलिदान की पराकाष्ठा है ।^१

‘स्वदेश’ आयौ में सदैव विद्युत का संचार करता रहा है । संसार त्यागी ‘दधीच’ भी स्वदेश पर संकट का नाम सुनते ही व्यग्र हो उठता है । देश द्रोहियों के दमन के लिये अपनी हड्डियाँ तक मातृ भूमि की भेंट कर देता है । डाक्टर एनि बिसेन्ट कहती हैं,—‘राष्ट्रीय भावनाओं से यह भूमि मालामाल है । राष्ट्रीयता और एकता की जड़ें यहां बहुत गहरे तक पहुंची हैं ।’^२

कृतज्ञता—

राष्ट्रीयता का प्रथम सोपान है कृतज्ञता, भारतीय इसमें कितने बड़े चढ़े हैं सर चार्ल्स फोर्गस की जबानी सुन लीजिए—‘कृतज्ञता उनका (भारतीयों) जातीय सिद्धान्त है । वे एक आघात भूल सकते हैं, किन्तु दूसरे की कृपा कभी नहीं । यह मैं २२ वर्ष उनके साथ और २८ वर्ष उनसे पृथक् रहने के बाद कह रहा हूँ ।’^३

जिस देश ने उपकार का मनन करना—कृतज्ञता, महापाप

1. “इतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा मोक्ष्यसे महीम् ।”

2. See, A Bird's eye view of Indian past.

3. Bombay champion; June 25, 1899.

ममका जाता हो. फिर वहाँ के सुखद ममीर में सांस लेने वाले सम्बन्ध-श्यामला भूमि में विचरने वाले, उनके पानी और अन्न से पनने वाले प्राणी स्वदेश भक्त न हों—असम्भव है। मौत विभितिका जिन्हें भयभीत नहीं कर सकी, विपत्तियाँ जिन्हें विचलित करने में व्यर्थ साबित हुईं, वृद्धावस्था जिन्हें जीर्ण न कर पाई, तेम थे प्राचीन भारत भक्त, जिनके बल पर यह सहस्राब्दियों तक उद्ग्राव खड़ा रहा। यात्री अलवेन्नी कहता है—‘उनका राष्ट्रीय चरित्र अद्भुत है। उनकी जड़ें गहराई तक उनके अन्दर जम गई हैं। हिन्दुओं का विश्वास है कि संसार में सर्वोत्कृष्ट उनका देश है। उनकी जाति के समान दूसरी जाति नहीं, उनके सम्राट ने अच्छा दूसरा सम्राट नहीं और न ही उनके धर्म से बढ़कर है दूसरा धर्म!’* इससे सुन्दर स्वदेश भक्ति का दूसरा उदाहरण और कहाँ मिल सकता है। ‘जो अपनो है भलो’—यही तो राष्ट्र का सन्देश हुआ करता है।

राजपूती हृदय में धधकने वाली स्वदेश प्रेम की आग कितनी तीव्र थी, इतिहास के थर्मामीटर को लेकर मापने वाले कर्नल टाड ने पृष्ठिए—स्वदेश का नाम राजपूतों के मस्तिष्क में एक जादू का असर पैदा कर देता है।^{१५}

जिस देश ने खिला पिला कर इतना बड़ा किया है, जिसकी आती का दूध (अन्न-जल) रक्त बन कर धमनियों में दौड़ रहा है, आड़े समय में उसकी आन रक्षा पर प्राण चढ़ा देने का पाठ भारतीय बच्चे भी स्मरण रखते थे। इतिहासवेत्ता उठती जवानो बाने गोरा और बादल के सम्बन्ध में लिखता है—‘सम्मान और स्वदेश भक्ति की उत्तम भावना से प्रेरित होकर उन्होंने ने अपने

* Alberuni's India Vol. I Page 22.

१५ Tod's Rajasthan Vol. II page 429.

जीवन को न्योझावर कर दिया, अपने सरदार के लिए, रात के लिए और अपने स्वदेश के लिए।”^६

भारतीय स्वदेश प्रेम की जलती हुई ज्योति को देखना हों तो मातृभूमि के पूजारी, स्वाधीनता के अनन्य उपासक प्रताप का स्मरण करलो ! चौथाई शताब्दी तक घास की रोटियां और तालाब के पानी पर जीवन धारण कर असंख्य सुगल सेना के आठों याम लोहा चबाने वाले प्रताप को देखो । प्रताप, देश और जाति का प्रताप, भारत का दुलारा प्रताप, स्वदेश प्रेम की वेदना का सजीव चित्र था । कर्नल टाड अकबर और प्रताप के इन्दु-युद्धों की समता के लिए विश्वविजयी नैपोलियन के युद्ध इतिहास को चुनौती देते हैं ।

सुगलों का नाम उठ गया, उनके शक्तिशाली साम्राज्य का काल गटक गया किन्तु राजपूतों के कलेजे का गर्म लहू अब भी हल्दीघाटी की छाती पर चमक रहा है । प्रताप के अव्यर्थ प्रहारों से सिसकने वाले शत्रुआ की आहें अब भी हवा में सांय-सांय कर रही हैं । राजस्थान का अनुभवी इतिहास लेखक अंग्रेज सूचित करता है—‘अरवली पर्वत में कोई ऐसा दर्रा नहीं जिसमें प्रताप की शानदार विजय और उससे भी ज्यादा देदीप्यमान पराजय का कोई चित्र अङ्कित न हो ।..... किसी भी राष्ट्र को ऐसी वीरता का सौभाग्य प्राप्त नहीं ।’^७ यह है देश भक्ति की शमा पर जल मरने वाले भारतीय परवानों का चित्र । भारत जननी की गोद अनादि काल से ऐसे ही सपूतों से भरी रही है ।

स्वदेश प्रेम, भारतीयों की नसों में रक्त के साथ दौड़ता है, उनका कोई भी कार्य ऐसा नहीं जिस में स्वदेश सेवा का उद्देश्य

6. Report of the Asiatic Society of Bengal, also

7. Tod's Rajasthan Vol I Page 349.

छिपा न हो। पी० एन० एफ० यंग, एम० ए० कहते हैं—‘प्रत्येक भारतीय प्रश्न का हल है राष्ट्रीयता की कुञ्जी।’^८ भारत के गौरव मूर्त्यो को जब कभी मंघों ने ढाँपने का उद्योग किया, उस समय इसका स्वदेश प्रेम प्रचण्ड रूप में सामने आया है। बहुत दिन हुए, स्वदेश पर सङ्कट की घटायें उमड़ी थीं और उनको छिन्न भिन्न करने के लिए दक्षिण की पहाड़ियों पर एक अभूतपूर्व ज्योति ने शिवा के रूप में जगमगा कर महाराष्ट्र ही में नहीं समस्त देश में आन्नद का आलोक छिटका दिया था। उन्हीं शिवाजी के सम्बन्ध में डाक्टर ऐनोविसेन्ट कहती है कि शिवाजी का उद्देश्य था राष्ट्रीयता का निर्माण करना, उसे एकता के सूत्र में बांध कर स्वदेश भक्ति की भावना को जागृत करना। सर हार्ट कोर्ट बतलाते हैं कि वह महान शिवाजी राष्ट्र वीर था जिसे हिन्दुओं ने अर्द्ध देवत्व का सा सम्मान दिया।^९

भारतीयों का स्वदेश प्रेम, दुख दुर्दैव और विपत्ति की दुर्योग मयी रजनी में, धैर्य के साथ निस्वार्थ भाव से राष्ट्र साधना के आदर्श का उज्ज्वल आलोक विकीर्ण करता रहा है। उसके माधुर्य का स्वाद प्राणों का हथेली पर लेकर दौड़ने वाले भारतीयों के अतिरिक्त किसी ने चखा ही नहीं। अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग भारत में व्यतीत करने वाले रेवेण्ड टामसमोरिस की राय है—‘वे (हिन्दु) जितनी अन्यासक्ति अपने पूर्व पुरुषों की संस्थाओं में रखते हैं उससे कम जलता हुआ प्रेम उनक अपने स्वदेश के प्रति नहीं होता।’^{१०} मेजर जनरल सर डब्ल्यू० एच० स्लीमैन का भी अमुभव सुनिये—सार्वजनिक भावना (Public spirit)

8. India in Conflicts Page 23.

9 India Insistant Page 63

10 History of Hidustan Vol. II Page 4.

जानी मनियां, उस वीर भूमि के अतिरिक्त और कहां मिल सकती हैं, लक्ष्मी, कर्णवती, महाभाया और पद्मावती की पुनीत राख ने भागत भूमि को कितनी उर्वरा बना दिया है। कांट हरमान कहते हैं—'वीरता शूना और मरने की ऐसी उत्सुकता संसार में दुमरी जगह नहीं मिलती . . यहीं जयभल की वीर पत्ति ने उसके कन्धे से कन्धा जोड़ कर मुगल सम्राट अकबर से युद्ध किया था।''^{१२} मिमेज रैमजे मैकडानल ने भागत भ्रमण के पश्चात् इंग्लैण्ड जाकर वापित किया था—'भागतवर्ष की महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना पुरुषों की अपेक्षा कहीं ऊंची है।'

भागत के देखने २ कितनी ही जानियां इन दुनियां के बाग में बिल गिलती हुई आई और कराल काल का एक भी आघात बर्दाश्त न कर सकने के कारण विलीन हो गईं। किन्तु सदियों से जमाने की चोटें झेलने वाला भागत आज भी संसार में किसी से कम नहीं, इसका यही कारण है—'उज्ज्वल राष्ट्रीयता और स्वदेश को स्वर्ग से भी बढ़कर समझने वाला जलता देश प्रेम ! रावल (जैसलमीर) का स्वदेश प्रेम पश्चिमी राजपूत रियासतों के पोलिटिकल ऐजन्ट कर्नल जेम्स टाड को जवानी सुनिये—जन्म भूमि मां हैं और उसे हानि पहुंचाने वाला प्रत्येक राजपूत उसका शत्रु है।''^{१३}

12 See *Annals and antiquities of Rajasthan* Vol. II Page 40

13. *TOD's Rajasthan* Vol. I Page 26.

शासन व्यवस्था

न मे स्तेनो जनपदे, न कद्र्यो न मघपः ।

नानाहिनाग्निर्ना विद्वान्, न च स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥

उपनिषद्

तपोभूमि भारत के प्राचीन ग्रन्थों का अनुशीलन करने से पता चलता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में आर्यों का शासन विधान अराजक था । मानव हृदय एक दूसरे के प्रति करुण एवं सहानुभूति से आप्लावित थे । सभी प्राणी अग्नि, वायु, सूर्य और चन्द्र किरणों तथा जल की भान्ति वसुन्धरा एवं प्रकृति के समस्त दातव्यों का उपभोग करने के लिये समान रूप से अधिकारी थे । 'महाभारत' में स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख किया गया है:—
“आरम्भ में न राज्य था और न कोई राजा, न दण्ड विधान था और न कोई दण्ड देने वाला । प्रजा धर्म पूर्णक एक दूसरे की रक्षा करती थी ।” यह आर्यों के मस्तिष्क से निकली हुई स्वर्गीय एवं आदर्श शासन पद्धति थी । जब भारत की जनता केवल धर्म द्वारा ही शासित होती थी । ऐल विश्व विद्यालय के डाक्टर एफ० वाशबर्न हॉपकिंस ने भी इस बात को किसी अंश से स्वीकार किया है ।^२

शनैः शनैः समाज का विस्तार बढ़ा । सज्जनों में से कुछ असज्जन भी निकले, लोगों में स्वार्थपरता की भावनार्य भी जगीं कुछ लोग दूसरों के मुँह से रोटी का टुकड़ा छीनने के लिये भी नैव राज्य न राजासीज दण्डो न च दण्डिकः ।

धर्मैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति परस्परम् ॥”—महाभारत० श०

हानि बढ़ाने को तैयार होने लगे। समाज ने ऐसे दुर्गुणचारियों के लिये 'वहिष्कार' अथवा असहयोग की व्यवस्था दी।^३

वहिष्कार का यह नियम समाज में बहुत दिनों तक सफल न रह सका। इसे पर्याप्त न समझ कर लोगों ने वहिष्कार के साथ साथ कुछ दण्ड की भी व्यवस्था की, जो भारत वर्ष में बहुत दिनों तक किसी न किसी रूप में प्रचलित रही और आज भी है। ६१३ ई० में भारत पधारने वाला चीनी पर्यटक इत्सिंग लिखता है—“भारत में जो लोग नीचतम अपराधी समझे जाते हैं, उनके शरीर में गोबर लीप कर उन्हें उजाड़ में निकाल दिया जाता है क्योंकि वे मनुष्य समाज से वहिष्कृत होते हैं।”^४

फिर भी यह अशांति कम न हुई। निदान लोगों को प्रजापति की आवश्यकता पड़ी किन्तु पहले तो कोई भी राजत्वके गुरु-तम भार को सहन करने के लिये समुद्यत न हुआ।^५ अन्त में कुछ सुयोग्य, साहसी, इस सेवा के लिये आये और राज्य व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ।

प्रजातंत्र—

लार्ड रोनाल्डशे कौटिल्य अर्थशास्त्र का हवाला देते हुये लिखते हैं कि कौटिल्य ने इस बात को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि उस समय सम्राट प्रजा के सेवक समझे जाते थे।^६ उन का

^३ “वाक् शूरो दण्ड पुरुषो यश्चस्यात्मार जायिका;,”

यः परस्वमथदाद्यात्याज्यां तस्ता दंशा इति।

तन्मन ममयं कृत्वा समये नावतस्थिरे।”

^४ इत्सिंग की भारत यात्रा, पृ० २१०

^५ “विभोमि कर्मणः पापा द्राज्पं हि मृशदुस्तरम्, विशेषनौ मसुष्येपु मिथ्या-वृत्तेषु निहदा।”

^६ India; A bird's eye view. Page, 185.

निर्वाचित प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा होता था । प्रो० गीन डेविड्स ने इस बात को प्रमाणित करने के लिये स्पष्ट रूप से लिखा है कि संस्कृत के 'राजन' शब्द का ठीक वही अर्थ है जो कि ग्रीक के आरकन और रोमन के काउंसल (Council) शब्दों का । वेदों में भी यही बतलाया गया है कि "हे राजा ! राज्यकार्य सञ्चालन के लिये प्रजा तुझे निर्वाचित करती है ।" लेफ्टीनेन्ट कर्नल मार्क विल्कस भारतीय नागरिक प्रजातन्त्र शासन की विवेचना करते हुये कहते हैं कि समस्त भारत इन छोटे प्रजातंत्रों का एक विस्तृत स्वरूप है ।^१

दुर्गाप्रहरी मिस्टर मिल को भी यह बात स्वीकार करनी ही पड़ी — "प्राचीन संस्थाओं और नियमों का निरीक्षण करने के पश्चात् उन में प्रजातन्त्र के कीटाणु प्राप्त हुये ।" इस भांति प्रजा द्वारा निर्वाचित राजा एक व्यवस्थापिका सभा का प्रतिनिधि होता था जो उक्त परिपद् के द्वारा राष्ट्र रक्षा और राज्य व्यवस्था करता था । राजा का राज्यभियेक और महाभियेक भी होता था । महाभियेक के अनुसार राजा को कड़ी शपथ लेनी पड़ती थी । वह कहता था कि यदि मैं राष्ट्र को हानि पहुंचाऊं तो मेरे जीवन के युग कर्म, मेरा परलोक एवं सन्तान सभी नष्ट हो जायें ! भारत में प्रजातन्त्र की ये भावनायें कितनी प्रचल थीं, महाभारत काल में कुरु के निर्वाचन, रामायण काल में प्रजा की अनुमति से राम राज्यभियेक की तैयारी और बुद्ध काल में महाराज हर्ष का निर्वाचन इसके जीते जागते उदाहरण हैं । महाराजा रणजीतसिंह के पूर्व पंजाब का शासनविधान प्रजातंत्र था । प्रसिद्ध इतिहासज्ञ

^१ त्वं विशो वृणाता राज्यया त्वामिमाः प्रतिशः पञ्च देवी ।

वर्धमे राष्ट्रस्य ककुदी अश्वत्ततेन उर्गो विवाक्ते वसुनी ॥

^२, Historical Sketches of the south of India.

स्मिथ कहते हैं कि पंजाब, पूर्वी राजपूताना और मालवा के अधिकांश भागों में ऐसी जातियाँ रहती थीं, जिन में प्रजातन्त्र राज्य-संस्थाएँ स्थापित थीं।^९ ऐशियाटिक सोसाइटी के प्रधान हार्नेल ने जैन मत पर व्याख्यान देते हुये बतलाया था—“पटने से २७ मील दूर वर्तमान बकसर ही प्राचीन वैशाली नगरी है। अतीत काल में यह वैशाली बीनिया और कुन्दन नामक गावों में विभाजित थी ..। इस राज्य संस्था को हम अल्पजनिक प्रजातन्त्र कह सकते हैं। राज्य प्रबन्ध करने के लिये एक सभा भी थी। सभापति को ही राजा की पदवी दी जाती थी।”^{१०}

राजतंत्र

इसके बाद धीरे-२ जनता एक व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर, उसे राष्ट्र भक्ति की प्रत्तिष्ठाएं लेकर विशेष अधिकार एवं सुविधाएं देने लगी, क्रमशः यह व्यवस्था घिगड़ कर राजा वंशपरम्परागत होने लगे किन्तु प्रजातन्त्र की भावनाएं कभी भी भारत की ज़र्रा भूमि से निर्मूल नहीं हुईं। राष्ट्रद्रोह सदैव परमात्मा से द्रोह करना समझा जाता था। प्रजानुरञ्जन और प्रजा पालन ही ‘राजा’ का अर्थ था।^{११} शुक्राचार्य ने राजाओं के गुणों का इस प्रकार वर्णन किया है—“राजा विद्वानों में शरच्चन्द्र के समान शीतल, शत्रुओं में ग्रीष्म-मार्तण्ड के समान प्रचण्ड और प्रजा में वसन्त ऋतु के समान सुहावना रहे।”^{१२} भारत में राज्यधिकार

9. Early History of India.

10. Bengal Asiatic Society Proceeding. 1885, Page, 40

11. महाभारत० शा० प० अ० ६६

12 विद्यावत्सु शरच्चन्द्रो निदाघार्को द्विपत्सु च

प्रजासु च वसन्तार्क इव स्यादत्र विधो नृप ।—शुक्र नीति

वस्तुतः एक धरोहर माने जाते थे। उच्छृंखल होने पर राजा को उनसे हाथ धोना पड़ता था। लोकमत का राज सत्ता पर कितना प्रबल प्रभाव था, महाभारत का पन्ना पन्ना इसका साक्षी है। सरज्ञान उडरुफ़ी बतलाने हैं—“जो लोग यह कहते हैं कि भारतीय स्वायत्त शासन जानने ही नहीं, वे स्वयं इस विषय में कुछ नहीं समझते। हिन्दू सम्राट् स्वेच्छाचारी नहीं होते थे, उनकी इच्छा सर्व साधारण के उत्तरे ही आधीन थी जितनी अन्य लोगों की।” यही कारण है कि वे प्रजा की अद्भुत भक्ति के पात्र थे। संसार की यात्रा करने वाले सर जान मानडिविले (Sir J Maundeville) के ० टी० लगभग १३३१ ई. में भारत पधारे थे। आप लिखते हैं कि लोगों का विचार है कि वह (राजा) पवित्र और कृपालु है।^{१३}

अपनी प्रतिज्ञाओं से पराङ्गमुख हो कर कोई भी राजा इस भारत भूमि में चिरकाल तक टिक नहीं सका, अत्याचार की ओर झुकना और अधिकार से हाथ धोना—यह क्रियाएँ यहाँ साथ २ हुआ करती थीं। अत्याचारी वेगु और खनिनेत्र की कथा पंचम वेद महाभारत के पृष्ठों पर आज भी चमक रही है।^{१४} सैहरगुल के बध की बात आज भी भारतीय इतिहास में इसका ज्वलन्त प्रमाण है। सृच्छकटिक नाटक का राजा पालक निर्पराधी आर्यक को कैद करने के अपराध में ही राज्युचित किया

13. Is India Civilized ?

14. Voyage and travels of sir Johan P. III.

* See. India old and new,

15. तं प्रजामु विधर्माणां रागद्वेषं वशानुगम् ।

मन्त्र पूर्तः कुशैर्जस्तुः ऋषिभिः ब्रह्मवादिभिः ॥—शा० पर्व

खनिनेत्रस्तु विज्ञानतो जित्वा राज्यम् कण्टकम् ।

नाश कर्तुं क्षितुं राज्यं नन्वा रज्यन्ते तं प्रजाः ॥ अ० पर्व

गया था। मगध का सहा पराक्रमी सम्राट अपनी उच्चैःखलता के ही कारण चाणक्य के कोषान्त में सपरिवार भस्मी भूत हुआ था।^{१६} यही कारण है कि दुनिया भारतीय शासन व्यवस्था को आज भी सराहती है। इतिहासवेत्ता चार्ल्स मोरिस की दृष्टि से अतीत की उस झलक की झांकी कर लीजिये—‘समस्त मानवीय संस्थाओं के इतिहास में प्राचीन आर्यों का राजनीतिक सङ्गठन अत्यन्त मनोरंजक था।^{१७} प्राचीन इतिहासवेत्ता ऐरियन प्रशंसात्मक ढंग से बतलाता है कि प्रत्येक भारतीय स्वतन्त्र था।^{१८}

व्यवस्थापिका सभायें—

आज राज्य पद्धति के अनेकों रूपों का उदय हुआ, संसार ने भी इसकी उपयोगिता एवं महत्ता को आँखों फाड़ कर देखा किन्तु आज का प्रजातन्त्र प्राचीन भारत के राजतंत्र का पासंग भी तो नहीं। रामायण काल में राम को युवराज बनाने के लिये राजा दशरथ जनता से पुकार २ कर कह रहे हैं—“जो पवहि यह लोग नंका, कोरे हर्ष हिय रामहिं टीका।” महाभारत में भीष्म पितामह सत्तात्यक राज्य की अलोचना करते हुए युधिष्ठिर के सामने एक व्यवस्थापिका सभा (Assembly) के सम्बन्ध में विवेचन करते हुए कहते हैं—इस सभा में ४ आयुर्वेदाचार्य, विचारशील प्रगल्भ स्नातक, ४ शुद्ध हृदय वाले ब्राह्मण, ८ युद्ध विद्या-निपुण क्षत्री, ११ धन-शालि सम्पन्न वैश्य और एक उन्नतमत्ता अष्टगुण युक्त अधेड़ सूत हो।^{१९} प्राचीन राज्य प्रबन्ध का विवेचन करते हुए प्रोफेसर मैक्स डंकर महादय बतलाते हैं—‘सम्राट प्रत्येक ग्राम

16. School history of India,

17. Aryan race Page, 153

18. Indica ch. X, See also, Elphinstone's India, Page, 219

19. महाभारत । शान्ति पर्व, अ० १५

में एक आफ़िमर नियुक्त करता था जिसे 'पति' कहते थे, दस या बीस गांवों को जिले के रूप में सुसंगठित कर एक दूसरा आफ़िमर नियुक्त किया जाता था। ऐसे पांच अथवा दस जिलों के समूह को कैंटन (Canton) कहते थे जिस में १०० जनसंघ सम्मिलित होते थे। ऐसे १० कैंटन निम्न में एक हजार गांव होते थे जिनका अधिकारी गवर्नर (Governor) कहलाता था। जिले के ओवरसियर के अधिकार में सिपाही रहते थे जिनसे वह शान्ति स्थापन करता था। यह प्राचीन काल की शासन व्यवस्था है।^{१०} प्रोफ़ेसर एच० जी० रास्कीविन्सन चंद्रगुप्त मौर्य के शासन सुप्रबन्ध का वर्णन करते हुए लिखते हैं—नगर और ग्रामों की व्यवस्था प्रणाली का सीधा-सादा, दयालु लोकव्यवहार, तथा प्राचीन प्रबन्ध के विविध कर्तव्य हमें आधुनिक कालीन मिथिल सर्विस का स्मरण दिलाते हैं।^{११}

प्लेटो का तत्कालीन वर्णन और यूनानी राजदूत मेगस्थनीज का विशाद विवेचन हमारी आंखों के सामने ईसा से सैकड़ों वर्ष पहिले का वह शासन चित्र पेश करता, है जिसमें व्यवस्थापिका सभाओं एवं प्रजा के प्रतिनिधित्व का वह उज्ज्वल स्व. प मिलता है जिसका समुन्नत, सुसभ्य कहलाने वाले बीसवीं सदी के संसार में भी पता नहीं।^{१२} दक्षिण भारत में मुद्रान्तकम् स्टेशन के पास उतरामूल नामक गांव में पाये गये लेखों से पता चलता है कि वहां के गांव और कस्बों के लोग प्रतिनिधि शासन, का ईसा की ६ वीं शताब्दी में भी उपभोग करते थे।^{१३} ताम्र लेखों

^{१०} History of Antiquity Vol, IV, Page, 215 See also शुक्र तीर्ति

^{२१} Intercourse between India and the Western world. P 86, 56

^{२२} See plintarch, vit Har 62,

^{२३} India inscription, Vol, III, Page, 9.

द्वारा भी यह मालूम हुआ है कि ६ वीं और दसवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में ऐसी शासन व्यवस्थाएं भली भांति प्रचलित थीं। जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने की पूरी सुविधा थी। प्रत्येक हल्के से प्रतिनिधि चुने जाते थे। चुनाव टिकटों अथवा आधुनिक परिचियों (Slip) द्वारा होता था, जिसमें वोटर्स की योग्यता के सम्बन्ध में पूरा २ ध्यान रखा जाता था।^{२४}

कहां तक कहा जाय मुसलमानों की भी नीति प्रतिनिधि राज्य की समर्थक थी।^{२५} भारतवर्ष में, जैसा कि कुछ इतिहास से अनभिज्ञ व्यक्ति कल्पना किया करते हैं, कभी भी राजा की जवान कानून नहीं बनी। लार्ड रोनाल्डशे सरीखे सुयोग विद्वान भी स्वीकार करते हैं—‘यह कल्पना करने की गुंजाइश नहीं कि भारतीयों में राज व्यवस्था सम्बन्धी गुणों की पर्याप्त उदारता नहीं थी। अगर हम डाक्टर आर० के० मुकर्जी की विवेचना को स्वीकार करें, तो वे (भारतीय) प्राचीन काल में केन्द्रीय शासन की उत्तम प्रणाली को जानते थे और उनके अन्दर मिलकर कार्य करने की उत्तम योग्यता मौजूद थी। अन्त में आप लिखते हैं कि कई शताब्दियों पूर्व भारत में इस प्रणाली ने बहुत उन्नति की थी।^{२६}

कानून

कानून राज्य व्यवस्था की एक उत्तम कसौटी है। लार्ड रोनाल्डशे कहते हैं कि ईसा से तीन शताब्दी पूर्व, कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी पहले भारत में राजनीति, विज्ञान के विद्वानों का एक ग्रिय

²⁴ See Arch. Survey report of India for 1904-02. Page, 132-136

²⁵ आईन अकबरी

²⁶ India, A bird's eye view Page, 122-126,

विषय था।^{१२०} मिस्टर हाल्लैंड की सम्मति है 'प्राचीन ब्राह्मणों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की अपेक्षा पुराने और स्पष्ट ग्रन्थ संसार में नहीं।'^{१२१} सर डब्ल्यू जोन्स के शब्दों में मनु का कानून सोलन (Solon) और लार्ड कुरगस (Lycurgus) से भी पुराना है।^{१२२} बाईबिल इन इण्डिया (Bible in India) का लेखक स्पष्ट रूप से लिखता है कि मनु की आचार शिला पर मिथ्री रोमन, फार्सी और यूनानी कानूनों की रचना हुई है और उसका ही प्रभाव आये दिन योरुप में भी अनुभव किया जाता है। प्रोफेसर विल्मन कहते हैं—'एक कानून ग्रन्थ जिसमें पारम्परिक सम्बन्धों की इतनी विशद व्याख्या हो, उसी समय निर्मित किया जा सकता है जब सामाजिक संगठन अपनी उन्नतव्यस्था में हो।'^{१२३} एफ० डब्ल्यू० हापकिन्स, प्रोफेसर ऐल विश्वविद्यालय बनलात है—'मनु से पहले भी यहां बहुत से कानून निर्माता हुए हैं। इन में पहले सूत्र और वेदों में भी यह नियम हैं। अस्तु यह मालूम होता है कि मनु कानून बनाने वाले अत्यन्त पुरातन आर्य नहीं थे।'^{१२४} हिन्दुओं के विशाल साहित्य में एक दो नहीं अनेकों न्याय और राजनीति सम्बन्धी ग्रन्थ आज भी मौजूद हैं। शुक्र नीति, कामन्दकी नीति, नीति वाक्यमृत, विदुर नीति, बार्दासपत्य सूत्र आदि, आज भी इनका अध्ययन एवं मनन कर पाश्चात्य सुसभ्य संसार ने बहुत कुछ सीखा है और सीखेगा। किसी विद्वान ने

27. India A bird's eye view Page 135 See also the Agganna Suttanta of the Digha Nikaya,

28. Code of Hindu law. see also Sublimity of the vedas,

29. Haughton's institutes of Hindu law Page, X

30. Mill's India, Vol. II Page, 262,

31. India old and new. 208

दैनिक पत्र 'कार्ड' में एक योग्यता पूर्ण लेख कर निम्न किया है कि आज उपयोग होने वाले सिविल सर्विस के कानून, पेंशन, बुनियाद, और प्रावीडेन्ट फंड आदि की समस्त व्यवस्थाओं का विशद विवेचन शुक्रनीति में न जाने कब किया जा चुका है ।^{१२} विद्वान् कानूनमैन हिन्दू न्याय विधान के सम्बन्ध में अपना यह अभिप्राय व्यक्त करते हैं—कानून ग्रन्थ के लिए जैसी गम्भीर भाषा की आवश्यकता है, मनुस्मृति उन्हीं गम्भीर और उदार भाषा में लिखी गई है। उसके सामने हमारा सिर आदर से नत हो जाता है। ईश्वर को छोड़ कर बाकी समस्त नियम निर्माण करते समय, हममें बहुत स्वतन्त्रता से काम लिया गया है। हममें न्याय-निर्णय नरेशों की ऐसी खबर ली गई है कि देखते ही बनता है ।^{१३} मिस्टर मारिया ग्राह्य हिन्दुओं की कानूनी पुस्तकों के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हैं—“इनमें बहुत से ऐसे कानून हैं जिनसे प्रकट होता है कि उनका शासन विधान कितना बुद्धिमत्तापूर्ण एवं माननीय था, वे हमें प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था का एक उच्च विचार देते हैं ।^{१४} डाक्टर राबर्टसन कहते हैं—“मनु-स्मृति अत्यन्त महत्व पूर्ण ग्रन्थ है, इसका विवेचन अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धि से किया गया है। इस लिए इसका निर्याय सर्वकाल, समस्त विश्व के मानने योग्य है। जिस गनातन न्याय के उच्चतम तत्व पर इस धर्म शास्त्र का निर्माण किया गया है, और जो समाज इसका मानने वाला है, उसे अवश्य ही पूर्ण वैभव-सम्पन्न और सुवर्ण हुआ होना चाहिये। इसमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनकी कल्पना भी पाश्चात्यों के लिए संभव नहीं। मनुस्मृति देख कर

12. See Forward—Jan 1614.

13. Coler's mythology of the Hindus Page, 8

14. Letters on India Page, 90

ही हिन्दू समाज की श्रेष्ठता स्वीकार करनी पड़ती है। इस का की रचना अत्यन्त प्राचीन काल में हुई थी, यह जानकर मैं चकित हो जाता हूँ।^{१३५} हिन्दुओं के साक्षी कानून (Hind. law of evidence) के सम्बन्ध में मद्रास के भूतपूर्व चीफ जस्टिस सर थामस स्टैज ने लिखा है—प्रत्येक अंग्रेज वर्क को इसके अध्ययन से लाभ तो होवेगा किन्तु साथ ही आत्म और आदर का अनुभव हुए बिना न रहेगा।

हिन्दू कानून कितना स्पष्ट सुन्दर और सम्पूर्ण है, इसके पाठकों ने बड़े २ कानून पण्डित और पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से देखलिया अब कुछ थोड़ा बहुत एफ० एच० स्काइन आई. ए. एस की जवानी सुन लीजिये + 'जिन विचारों पर आज' हम गर्व करते हैं, उनका श्रेय पुरातन प्रकाश को ही है।^{१३६} इतिहास बड़े जोरों से साक्षी देता है कि हिन्दू राजनीति फ्रान्सिसियों द्वारा अनूहित होकर योरूप की भाषाओं में भाषान्तरित हुए। न्यायमूर्ति नौशेरवां के विख्यातन्याय का एक मात्र श्रेय अग्रचेता देश को ही है। उनका मंत्री इसी भूमि से न्याय का पद पढ़ कर गया था।

पहला मुसलमान फारसी यात्री सुलेमान सोदागर लिखता है कि 'भारत में यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को भगा ले जाता है या जबर्दस्ती उसके साथ मुंह काला करता है अथवा चोरी करता है तो उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी जाती है।^{१३७} लगभग सन् १०३० ई० का पर्यटक अलवेरुनी भी भारतीय न्याय नियमों का विवेचन करता है—'उनके सिद्धान्त दया एवं परहेजगारी पर

35, Disquisition concerning India, Appendix, Page 217

36, सुलेमान सोदागर

अवलम्बित हैं, वे किसी भी अवस्था में किसी का बध नहीं करने।”^{३७} इतने पर भी कुछ दुराग्रह पक्षपाती इतिहास लेखक हिन्दू नियमों को कड़े बतलाते हैं। वास्तव में हिन्दू कानून की भांति उदार नियम संसार में चराग लेकर दूँढने से भी न मिलेंगे उनकी सी आदर्श व्यवस्था आज इतिहास के पुराने पृष्ठों से बाहर नहीं मिलती। प्राचीन नियमों का निरीक्षण करने के पश्चात् कोई भी समझदार उन पर कड़ाई का दोष नहीं लगा सकता है। उन नियमों को कार्य रूप में परिणत करने वाले अवश्य न्यायपथ से राई रत्ति भी हटना सर्वव्यापी सर्वेश्वर के सामने दापी होना समझते थे। यही कारण है कि वे अपराधों के प्रकृत रूप को देखकर दण्ड की आयोजना किया करते थे।

सुद्र इतिहासकार, ‘चोर को प्राणदण्ड देने की व्यवस्था सुन कर, उसे कठोर और अमानुषिक बतला कर चिल्ला उठते हैं, किन्तु वे सम्राट चन्द्रगुप्त के इस विधान की आलोचना करते समय मेगस्थनीज की इस रिपोर्ट को बिल्कुल भूल जाते हैं कि तत्कालीन भारत में चोरों का नामोनिशान भी न था, लोग अपने घरों में ताला तक नहीं लगाते थे। बहुत दिन नहीं हुए, नवम्बर सन् १४४२ ई० में कालीकट के वन्दरगाह पर उतरने वाला कमालुद्दीन अब्दुलरजाक अपनी आंखों देखी बात बतलाता है—इस राज्य में ऐसा न्याय है कि बड़े २ मालदार व्यापारी अपने माल भरे जहाज यहां पर उतारते और सड़कों तथा बाजारों में रख कर बिना किसी को सौंपे अथवा रक्षक नियुक्त किये एक मुदत के लिए छोड़ कर चले जाते हैं।”^{३८} लार्ड रोनाल्डशे कौटिल्य का हवाला देते हुए लिखते हैं कि यदि सम्राट प्रजा के खोये हुए धन का पता न

37, Alburinis India, Vol. II. page 161

38. Scenes and Character from Indian History. Page. 55

लगा सके तो उसके नुकसान की पूर्ति उसको अपनी जेब से करना चाहिए।^{१९} —आधुनिक काल में माल असबाब की कौन कहे, नौजवान लड़के लड़कियां तक गायब होते और अधिकारी सुंह मटका कर चुप हो जाते हैं,—उम चन्द्रशुभ काल की कल्पना भी की जा सकती है।

यह आदर्श नियम और व्यवस्था केवल भारत ही में नहीं उसके सुन्दर उपनिवेशों में भी उमी तत्परता से पालन किये जाते थे। आर्थी के उपनिवेश जावा में कलिंग नामक राज्य था, वहाँ ६१४ ई० में सिमा नाम की एक नारी सिंहासनारुढ़ हुई। उसने प्रजा का पुत्रवत् पालन किया, चोरी का शब्द केवल कोप में रह गया। सुमात्रा में बसे हुए अरबों के सरदार ने परीक्षा के लिए कलिङ्ग राज्य की सीमा में थैलियों से भरी अशफ़ी रख दी। तीन वर्ष तक जहाँ की वहाँ पड़ी रही। एक दिन राजकुमार के पैर से टकरा कर अपने स्थान से अलग जा पड़ी। स्थान से थैली के हटने की बात रानी को मालूम हुई, उसने दण्ड स्वरूप राजकुमार के पैर का अंगूठा कटवा दिया।^{२०} यह है भारतीय न्याय की चज्जवल किन्तु तीव्रधार ! आज के शासक और राजनीतिज्ञ इसे कठोर नहीं कठोरतम भले ही कहलें किन्तु ऐसी सुव्यवस्था उनकी आंखें जन्म जन्मान्तर में भी नहीं देख सकती। मिस्टर मारिया ग्राह्य हिन्दू साहित्य का अध्ययन कर अपनी मम्मति इस प्रकार प्रकट करते हैं—‘हम हिन्दुओं के प्राचीन ग्रन्थों में सर्वत्र उस पवित्रता और गम्भीर नैतिकता के स्वयं सिद्ध सिद्धान्तों को पाते हैं जिनका आधार है मानवीय प्रकृति.....

39. India. A bird's eye view Page, 174 The Aggoina suttanta of the Digha Nikaya,

उनके कानून स्वयं कपट और दम्भ के भावी दण्ड का विधान कर देते हैं।^{१४१} यही कारण है कि सर एम० मोनियर विलियम्स के० सी० आई० ई० को सन् १८८७ ई० में लिखना पड़ा था—
‘योरुपियनों की अपेक्षाकृत भारतीयों में अपराधों की संख्या कम है।’^{१४२} मिस्टर जे० थॉमस महोदय भी मार्किट महोदय के कोप से १८६६ ई० के आंकड़ों को उद्धृत कर कहते हैं कि अन्य देशों अपेक्षाकृत भारत में अपराधों की संख्या बहुत कम है।

जैदेया का सत्या प्रति प्लान प्रीट्टे—

कितने ही योरुपीय देशों में १०० से २३० तक

इंग्लैन्ड और वेल्स ६०

भारत में केवल ३८।^{१४३}

आज गई गुजरी अवस्था में भी भारतीयों के इस सदाचार का कारण है, इस तपोभूमि का प्रताप और उसके पूर्वजों के रक्त की बचीखुची लाली का प्रभाव। सन् १८५३ ई० में बम्बई के गवर्नर जी० बी० रॉलैंड ने सिलेक्ट कमेटी के सामने गवाही देते हुए बतलाया था कि उच्च वर्गीय हिन्दू में ऊँचे दर्जे की और निम्न श्रेणी वालों में भी प्रशंसनीय नैतिकता मौजूद है। आप योरुप के अधिकांश देशों की अपेक्षा यहां अनैतिकता और गरीबी कम पायेंगे।^{१४४} राष्ट्र की स्मृद्धि एवं सदाचार का एक मात्र आश्रय कानून उत्तमता पर निर्भर है, क्योंकि कानून ही जनता के समग्र जीवन का नियमन और नियंत्रण करते हैं।

कानून की उत्तमता और आदर्श व्यवस्था का इससे सुन्दर

41 Letters on India. Page, 87

42. Modern India and the Indians,

43 The people of India. Page 13.

44. The People of India Page, 48

प्रमाण और दूसरा क्या हो सकता है कि भारतीयों ने कभी विदेशियों को भी गुलाम नहीं बनाया।^{४५} मेगस्थनीज हैरान रह गया कि संसार प्रचलित गुलामी की प्रथा, जो कि रोम और यूनान में भी जारी है, उसका यहां कहीं भी पता नहीं।^{४६} भीख मांगता तो यहां बहुत बड़ा पाप समझा जाता था। चार्ल्स टेल् नामक अंग्रेज पर्यटक (१८४०) में लिखता है—‘एक दिन बाजार में एक हिन्दू भिखमंगा मेरे पास आया, वह उन लोगों में से था जिन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नीचा नहीं किया।’^{४७} सर मोनियर विलियम्स डी० सी० एल० (१८१५) ले० कर्नल एस० विलियम्स के दक्षिणी भारत सम्बन्धी ५० वर्ष पूर्वके अनुभवों का हवाला देकर कहते हैं—‘यहां कुछ धार्मिक भिक्षुओं के अतिरिक्त कोई भी भीख मांगने वाला न था!’.....विशेष अवसरों और धार्मिक मेलों पर नर्बदा के किनारे लाखों आदमी एकत्रित होते थे, कोई लड़ाई भगड़ा, कोई अशान्ति न थी और न ही था कोई शराबी।^{४८}

यह था भारतीयों की समुत्तम व्यवस्था का नमूना, उदार नियमों का नतीजा। इन्हीं की छत्र छाया में चल कर भारत ने सम्पन्नता और स्वर्गीय सुख के वह दिन देखे हैं जिनकी कल्पना पाश्चात्य संसार के लिये अलादीन के चिराग से कम विस्मय जनक नहीं।

45. Hindu Superiority,

46. Intercourse between India and the western world. Page. 58

47. Scenes and thought in foreign lands.

48. Modern India and the Indians, PP, 50—51 and also see memoir of the zilla Brooch. Page, 103

भूमि कर



पाश्चात्य अर्थ नीतिज्ञों में रिकाडों ने सर्व प्रथम भूमिकर समस्या पर विचार किया था। अन्य समस्त अर्थनीतिज्ञों ने न्यूनाधिक उसीका अनुसरण किया है। उसका कहना है—‘भूमिकर भूमि की उपज का वह अंश है जो भूस्वामी को भूमि की मौलिक और अक्षय शक्ति से काम लेने के बदले में दिया जाता है।’^{४९} किन्तु सभ्य भारत के सुनहरे अतीत में कभी ऐसे उट-पटांग नियमों का समावेश नहीं हुआ था। यहां पर तो अग्नि, जल और वायु के समान सभी भूमि से बराबर लाभ उठाने के अधिकारी थे। यहां प्रजा ने अपनी रक्षा के लिए राजा का निर्वाचन करते समय साफ़ २ कह दिया था कि ‘हम आपके कोष के लिए पशु और धातु का पचासवां तथा धान्य का दशांश देते रहेंगे’^{५०}

उपरोक्त अवतरणों द्वारा भली भांति स्पष्ट हो गया कि भारत के भू-कर विधान का उच्च आदर्श पाश्चात्यों के कल्पना लोक से कोसों दूर रहा है, पाश्चात्य संसार ने बसुन्धरा—राष्ट्र और समाज की सम्पत्ति, भूमि को अपनी बपौती मानकर भू-कर का सिका विठला दिया किन्तु भारत में यह कर प्रजा राजा को अपने सुख-

49 “Rent is that portion of the earth which is paid to the landlords for use of the original and indestructible powers of the soil,

५० “तम व्रतन्प्रजा मा भैः कर्तुं नेनो गमिष्यति

पशूनामधियं चाशद्विरणस्य तथैव च ।

धान्यस्य दशमं भागं दास्यामः कोषवर्द्धम्,

पंच धर्मं चरिष्यन्ति प्रजा राजा सुरक्षिताः ॥”

शान्ति और रक्षा के लिये देती थी। भूमि को उपयोग में लाने के लिए नहीं। रक्षा का भार ज्यों २ गुरुतर होता गया कर भी उन्हीं अनुपात से बढ़ता गया। यह कह कर महाभारत काल में दशंग से बढ़कर षष्टांश हो गया और इसका नाम पड़ा 'वलि'। इस सम्बन्ध में व्यास जी युधिष्ठिर ने कहते हैं—'षष्टांश वलि लेका भी जो राज राष्ट्र की रक्षा नहीं करता, वह प्रजापाप के चतुर्थांश का भारी होता है।'^{५१} कदाचित् यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह 'वलि' भी रक्षा के बदले दी जाती थी, भूमि जोतने के लिये नहीं क्योंकि वह राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाती थी। प्रोफेसर एफ़० वाशबर्न हॉपकिन्स भी स्वीकार करते हैं—'गांव की ज़मीन सभ्मे में हुआ करती थी।'^{५२} भूमि किसी की ठेकेदारी या पुश्तैनी जायदाद न थी। मि० गीस डेविड्स की पुस्तक से भी इसी का समर्थन होता है, जिसे आपने बुद्ध काल के सम्बन्ध में लिखा है—'सब लोग स्वतन्त्र थे, न ज़िम्मीदार थे न भिखमो सर्वसाधारण मजदूरी लेकर काम करने में अपना महान् अपमान समझते थे, केवल आपत्ति आने पर ही वे ऐसा करते थे।'^{५३}

कर की यह व्यवस्था सौर्यकाल तक वैसी ही रही। इतिहास-बीसेंट स्मिथ के अनुसार सौर्यकाल में कर बढ़ कर चतुर्थांश था किन्तु प्रसिद्ध भारतीय इतिहासज्ञ ला० लाजपत राय ने षष्टांश ही माना है।^{५४} कौटिल्य अर्थशास्त्र से भी स्मिथ का भ्रमपूर्ण मान्य होता है, क्योंकि चाणक्य ने चतुर्थांशकर प्रायः वलि षड् भाग यो राष्ट्र नामि रक्षति,

वेष्टाति तत्प्रापं चतुर्थेन भूमिपः।'^{५५}

a old and new. Page 224, & also, Abhid Page, 575

1st India

ये, तारीख हिन्द प्रथम भाग

लेन के लिये राजा को प्रजा से याचना करने की व्यवस्था उस समय की है जबकि राष्ट्र आपत्ति ग्रस्त हो । एफ० डब्ल्यु मैपकिंस मंडोदय के अन्वेषणानुसार—'सम्राट धान्य का षष्टांश कर स्वरूप लेते थे ।' ^{११५} चीनी यात्री ह्यूनस्यांग और फाहियान भी अपने यात्रावर्णनों में कर के हल्के होने का उल्लेख करते हैं । मुसलमान काल से पूर्व पृथ्वी राज दिग्विज नामक ऐतिहासिक काव्य के अवलोकन से पता चलता है कि कुछ हिन्दू राजा उस समय तक भी दशांश ही कर स्वरूप ग्रहण किया करते थे ।

गणतानि गन्धु पवनानि वापिका--

रमरमाः प्रपाश्व दधती वनुधर,

दिननायकस्य जगदेकचक्रपो-

प्याधुनाधुते दशम भाग दश्यताम् ।

मुगल सम्राट अकबर कुछ काल तक तो चतुर्थांश या तृतीयांश का धान्य रूप में ही वसूल करता रहा किन्तु उसके अर्थ मंत्री टोडरमल की नई व्यवस्था बनने पर यह कर नकद रूपों के रूप में वसूल होने लगा । आज इस दुर्बल देश के कन्धों पर कर का कितना करारा बोझ है, सभी अनुभव कर रहे हैं फिर कहने की आवश्यकता ही क्या ?

राज्य विस्तार

जिस जाति ने वायु की तरङ्गों पर बैठ कर जल की लहरों पर सवार होकर संसार की छाती पर अपना सिका जमाया हो, दुनिया के एक ओर से दूसरे ओर तक उपनिवेश बसाये हो, आज पराधीनता के पिंजरे में पालनू पत्नी की भांति टें टें करने वाले उत्तराधिकाकरी पूर्वजों की राज्य सीमा का ठीक ठीक चित्र कैसे खींच सकते हैं ! फिर भी, अपने बल पर न सही पराये पौरुष ही पर कुछ प्रयत्न करना आवश्यक है ।

विद्वान चार्लस मोरिस बतलाते हैं—‘इतिहास की आदिम अवस्था में आर्यों के साम्राज्य का इतना विस्तार था कि कुछ भाग के अतिरिक्त समस्त योरुप और सम्भवतः उत्तरी रूस का पश्चात्त साम्राज्य, तथा एशिया में एशिया माइनर, काकेशिया, मीडिया, पर्शिया, भारत और मध्यवर्ती भकटीरिया तक समविष्ट था ।⁵⁶ डाक्टर आर० ब्रुक एम० डी० भी हिन्दुस्तान की सीमाओं के साथ लगभग समस्त एशिया के देशों का नाम ले लेते हैं ।⁵⁷ मर डब्ल्यू जॉन्स इथोपिया को हिन्दुस्तान का उपनिवेश बतलाते हैं ।⁵⁸ कर्नल जेम्स टाड ने स्कंडेनेविया की भूमि पर भारतीय यदुकुल के कंडे का पता ढूंढ़ निकाला है ।⁵⁹ मिस्टर कॉलमैन कहते हैं कि जर्मन यात्री, वैज्ञानिक बी० हम्बोल्ड, हिन्दुओं के प्राचीन खण्डों का अमीरका में पता लगाकर वापस आये हैं । सुलेमान सौदागर राष्ट्र कूट वंशी किसी बल्लभ उपाधि धारी राजा के

56. Aryan Race Page, 291.

57. The general gazetteer and geogeraphical Dictionary Page. 474

58. Asiatic Researches. Vol I. Page 426

59. Tod's Rajasthan. Vol I. Page, 529.

राज्य विस्तार का वर्णन करता हुआ लिखता है,—‘बलहरा के राज्य की भूमि का श्रीगणेश समुद्र के किनारे से होता है जो जंकन के नाम से विख्यात है। इसका राज्य चीन की भूमि से मिला है। इसका राज्य जमीन की जिह्वा (द्वीप) पर है।’^{६०} इतिहासज्ञ एच० जी० रालीविंसन आई० ई० एस० असीरियन राज्य के दो प्रान्तों, एराकोसिया और गिडरोसिया (Arachosia and Gedrosia) का चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में शामिल होना बतलाते हैं।^{६१} समुद्रगुप्त के प्रताप से प्रकंपित होकर कितने विदेशी राजाओं ने उसकी सेवा में उपहार समर्पित किये थे, आज भी भारतीय विद्यार्थी भूले भटके इसका स्मरण करते हैं। कहने का आशय यह है कि कभी भारत की घोर गर्जना पर संसार दौड़ पड़ता था, इसके राज्य की सीमायें विस्तृत वसुन्धरा की रेखाएं समझी जाती थीं। ऐन्ट्रेय ब्राह्मण स्पष्ट शब्दों में बतला रहा है कि सम्राट सुदास ने समस्त विश्व में विजय दुंदुभी बजाई थी।^{६२} कर्नल टाड ने जैसलमीर के पुराने पोथों को उलट कर पता लगाया है कि इस्लाम के उत्कर्ष से पूर्व यदु का राज्य समरकंद से गजनी तक फैला हुआ था।^{६३} चित्तौड़ के बप्पा की तलवार ने खुरासान तक दौड़ लगाई थी। बाबर गजनी के इतिहास में लिखता है—“यहां इस्लाम के प्रारम्भकाल में हिन्दुओं का राज्य था। वह उस घटना का भी उल्लेख करता है जब हिन्द के राय ने सुवुक्तगीन को गजनी में घेर लिया था और सुवुक्तगीन ने चरमों में गोमांस छुड़वाकर अपना पिंड वचाया था।

60. सुत्तमान सौदागर पृष्ठ ५१-५२

61. Intercourse between India and the western world.

62. महाभारत । सभा पर्व अ० ५१

63. Tod's Rajasthan. Vol. II. Page 231, 222.

महाराज युधिष्ठिर के अभिषेक पर चोल, पांड्य, कम्भोज (अफगानिस्तान) यवन (फारम) चीन, काश्मीर, रोमक (रोम), अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, ताम्रलिप्त (लङ्का), हिमालय (तिब्बत), अफ्रीका और कितने ही बर्बर देशों के राजा कर लेकर इन्द्रप्रस्थ आये थे । यह घटना इस बात की द्योतक है कि भारत का राज्य एक दिन समस्त भूमण्डल पर विस्तृत था ।

राजनीतिक एकता—

कुछ पक्षपाती इतिहासकारों का मत है कि भारतवर्ष ने कभी राजनीतिक एकता प्राप्त नहीं की । सर ओसवालड ने इंग्लैण्ड में भाषण देते हुए कहा था कि भारत में २५० विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं.....धार्मिक विचारों में भी काफी अन्तर है । इसकी आलोचना करते हुए मेजर डी० ब्राह्मपूल महाशय पूछते हैं कि इंग्लैण्ड में कितनी भाषाएं बोली जाती हैं ?^{४६} आपकी शुभ सम्मति के अनुसार इतने बड़े देश में इतनी भाषाओं और धर्मों का होना कोई बड़ा दोष नहीं ! डाक्टर एनीविसेन्ट महोदय ने भी प्रो० राधाकुमर मुकजी का हवाला देकर यह बात मुक्तकंठ से स्वीकार की है कि भारत में बुनियादी एकता मौजूद है । धार्मिक साहित्य के अनुसार भारत एक राष्ट्र है ।^{४५} प्रसिद्ध ऐतिहासक विसेन्ट स्मिथ ने चन्द्रगुप्त के राज्य विस्तार का वर्णन करते हुए लिखा है—'दो हजार साल से भी अधिक पूर्व भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त किया था, जिसके लिए उसने ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में आ रहे हैं और जिसको मुगल बादशाहों ने भी कभी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त किया । अन्यत्र पाश्चात्य इतिहास पण्डित लिखता है कि अशोक और

(4. Modern review for 1934

65 A bird's eye view of India's past Page, 6,

समुद्रगुप्त काल में भारत ने एकता राजनीतिक एकता प्राप्त कर ली थी।^{१६} प्रसिद्ध विद्वान एच. जी. वेल्स की सम्मति में समस्त इतिहास के असंख्य विज्ञाताओं और चक्रवर्ती सम्राटों में केवल अशोक। मौर्य ही ऐसा योग्य है कि उसकी गणना संसार के ६ महापुरुषों में की जा सकें। कैप्टेन वेब के कथनानुसार महा-गणा उदयपुर का राज्य वंश संसार में सब से पुराना है।

राजनीति दर्शन का प्रकाण्ड पण्डित बतलाता है कि जिस राष्ट्र की जनसंख्या खूब फली फूली होगी वह कभी कुव्यवस्थाओं में नहीं रह सकता ! इस भाप दण्ड पर भी भारतीय शासन व्यवस्था को कसना आवश्यक प्रतीत होता है। सेसीयास (Ctesias) लिखता है—‘वे (हिन्दू) संख्या में इतने अधिक थे जितना दूसरे समस्त राष्ट्र मिलकर भी नहीं।’^{१७} प्रोफेसर डंकर कहते हैं कि भारत समस्त राष्ट्रों से महान्तम देश है।^{१८} पाठलीपुत्र के सम्बन्ध में मैगस्थनीज का विचार है कि वह दुनिया में सब से अधिक मजबूत नगर है।^{१९} स्ट्राबो की राय है कि यूकराटाइड्स (Eukratides) १००० शहरों का स्वामी हैं जो कि हाईड्रस्पेस (Hydraspes) और हाईफैसिस पंजाब के बीच में बसे हैं। अंग्रेज यात्री फोस्टर (१६१२-१६ गुजरात की राजधानी अहमदावाद का वर्णन करते हुए लिखता है—‘यह चारों ओर मजबूत दिवारों से घिरा है और इतना बड़ा है जितना कि लन्दन १७० हब्ब्यू० एस० काइन एम० पी० १८१८-८८) लिखते हैं—बनारस

१६, Early History of India. Page, 6,

१७, History of antiquity, Vol VI Page 18

१८, Historical Researches, Vol, II Page. 220

१९, Intercourse between India and the western world

१० Foster's early travels in India, Page. 206

स्वर्गद्वार है।⁷¹ अकबर कालीन अंग्रेज यात्री फादर मानसरेट स्थान २ पर भारत की सम्पन्नता का चित्रण करता हुआ मथुरा के सम्बन्ध में लिखता है कि मथुरा एक विशाल और भली भान्ति आबाद नगर है इसकी शानदार इमारतें बहुत सुन्दर हैं। ग्वालियर को तो देखकर एक स्थान पर वह हैरान ही रह गया।⁷² प्राचीन इतिहास कार ऐरियन स्वीकार करता है कि भारतवर्ष की आबादी बहुत अधिक है और शहरों की संख्या का तो अन्दाजा लगाना ही कठिन है।

ग्राम्य शासन व्यवस्था



किसी राष्ट्र के सुख शान्ति और प्रसन्नता का प्रधान कारण है उसकी शासन पद्धति। भारत जिस सुशासन में पला और फला फूला था, उस व्यवस्था का वर्णन करते हुए विद्वान मोनियर विलियम्स डी० सी० एल० इस भान्ति करते हैं—‘संसार का कोई भी ऐसा भू भाग नहीं जहाँ की जनता ने राष्ट्र की जनसंख्या को सामूहिक रूप से सुसंगठित कर स्वशासन की ऐसी स्वतन्त्रा प्राप्त की हो जैसी की भारतवर्ष में पाई जाती है। इसका ग्राम्य संगठन शुद्ध स्वराज्य के आधार पर हुआ था जिसका मूल था सामयिक विधान ! + + मनु के हिन्दुत्वा से स्पष्ट है कि भारत में नियमित ग्राम्य शासन विधान, ईसा से कई शताब्दियों से पूर्व, इसके अनेक भागों में प्रचलित था।⁷³ वह बुद्ध काल था।

71 A trip round the world,

72 Commentary of Father mon-serite, Page, 93

73, Modern India and the Indian, Page 84-50

डाक्टर टी० डब्ल्यू रीजडेविड की लेखनी द्वारा उसका कुछ आभास मिलता है। आप लिखते हैं—‘बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के समय, राजतन्त्र शासन से भारतीय अपरिचित थे। ... भारत वर्ष के उस भाग में भी जो बुद्धमत के प्रभाव में पहले आया था, वार प्रजातन्त्र राज्यों के बीच में एक सत्तात्मक राज्य था। उस समय देश में यह प्रवृत्ति थी कि छोटे २ प्रजा सत्तात्मक राज्य इन एक सत्तात्मक राज्यों में सम्मिलित हो जाते थे।’^{७४}

इस प्रणाली का विवेचन करते हुए सर एम० विलियम्स सहोदय लिखते हैं—‘एक हजार गांवों के प्रधान अधिकारी को ग्रामाधिपति कहते थे जो सम्राट से सम्बंधित था। इसके अधीन १०० गांवों का अधिकारी होता था। उन गांवों के समूह को जिला या परगना कहते हैं। इनके अधीन प्रत्येक गांव का प्रधान होता था। ऐसी अवस्था मनुकाल से भी बहुत पूर्व प्रचलित थी, किन्तु भूमि की मलकियत और अधिकार के नियम भारत में भिन्न थे।’

“भूमि अधिकार की विभिन्नताओं से स्पष्ट है कि गांव का प्रधान या मुखिया राज्यका कर्मचारी या लगान एकत्रित करने का एजेंट नहीं होता था और न उसके लिए राज्य से कोई सम्बन्ध रखना ही आवश्यक होता था, फिर भी ग्रामाधिपति के लिए गंभीर और प्रभावशाली होना आवश्यक था। वास्तव में वह ग्राम्य जनता द्वारा अपने कुछ विशेष गुणों के कारण निर्वाचित किया जाता था। उसको अपने हल्के में कुछ स्वतन्त्र अधिकार भी प्राप्त थे। इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उसको उस पंचायत का कौंसिल से मिलकर काम करना पड़ता था जिस का कि वह प्रधान था। भारत में हर गांव और कस्बे में पंचायते

होती थीं जो योरुपियन म्यूनिसिपल बोर्डों से बहुत कुछ मिलती जुलती थी।”

“वास्तव में पंचायत भारत का प्राचीन विधान है।... भारत में एक आम कहावत है “ग्राम पद्मेश्वर”।^{१५५} ग्राम्य शासन समितियों के सम्बन्ध में कुछ और मार्के की बातें लार्ड रोनाल्डशे की जवानी सुनिये। गांव की कौंसिल (पंचायत के पंचों की वाक्य आप बतलाते हैं—“उस (पंचायत) में ऐसे व्यक्ति हुआ करते थे जिनकी आर्थिक स्थिति के साथ साथ नैतिक योग्यता और एक मीमा तक कानूनी एवं धार्मिक ज्ञान भी अवश्य होता था। गांव हलकों में बँटे होते थे और उस कौंसिल (पंचायत) के अन्तर्गत अनेक सब (Sub) कमेटियां हुआ करती थी।”^{१५६}

पंचायतों की प्रबन्ध व्यवस्था का वर्णन करते हुए मिस्टर जे० मालथाई लिखते हैं कि हर गांव में एक पाठशाला होती थी, जिस को माफी जमीन मिली रहती थी।^{१५७} लार्ड रोनाल्डशे बतलाते हैं कि इस प्राचीन शासन व्यवस्था में लोग सार्वजनिक कार्यों के लिये दान भी दिया करते थे। दीवानी और फौजदारी के मुकदमों का भी यह लोग फैसला कर दिया करते थे।^{१५८} मिस्टर टामस मुनरो, गवर्नर मद्रास के शब्दों में अंग्रेजी शासन से पूर्व का चित्र मिस्टर जे० के० हार्डी एम० पी० इस भान्ति खंचते हैं—यदि उत्तम कृषि प्रणाली, अद्वितीय कला कौशल सुविधा और सुख-सामग्री पैदा करने की योग्यता, पढ़ना, लिखना सिखाने को प्रत्येक गाँव में स्कूल आतिथ्यसत्कार और दान प्रणाली तथा

75. Modern India and the Indians. Page, 40, 41, 42, 43.

76. India a bird's eye view Page 135, 136.

77. Village government in British India Page. 21

78. India a bird's eye view Page, 174

मर्जोपरि स्त्रियों के प्रति विश्वास एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार जो कि मभ्यता का एक व्यापक चिन्ह है, देखता है तो हिन्दू योरु-पियनों से कम नहीं।^{७६} देखिए गर्वमैण्ट के उच्च अधिकारी भी भारतीय ग्राम्यशासन की उत्तमता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं। + + + गांव के आन्तरिक प्रबन्ध गांव की पंचायतों के हाथ में थे, और प्रजा का अधिकार था कि वह अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने रीति रिवाज बदल लिया करें।^{७७}

एल्फिन्स्टन महोदयके भी इतिहासक अनुसन्धान और अनु-व्रक्ष का सार देखिए—‘भारत में ग्राम्य पन्चायतों के ऐसे चिन्ह अब भी पाये जाते हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि भारतवर्ष में भी अफगानिस्तान के समान संस्थाएं थीं। शताब्दियों के अत्याचार और अशान्ति के बाद भी मध्य भारत के गांवों में घूमते हुए उन की उत्तम दशा देख कर, यात्री के चित्त में उत्पन्न हुए आश्चर्य के भावों का ये ही चिन्ह (ग्राम्य पञ्चायतें) समाधान करते हैं।^{७८}

गांवोंकी इस उत्तमदशा की व्याख्या बम्बई प्रान्तमें रहने वाले लेफ्टीनेन्ट कर्नल एम० विलियम्स की भी जवानी सुनिए—‘कर्नल ने एक दो ही नहीं अनेकों गांवों का परिभ्रमण कर लिखा है। अपरचितों का आतिथ्य सत्कार बड़ी सावधानी से होता था। बिना सङ्कोच के दान दिया जाता था + + असमर्थ और रोगियों की सेवा गांव के आन्तरिक प्रबन्ध द्वारा होती थी। सर्वत्र पारस्परिक विश्वास काम करता था, रुपये के लेन देन में लिखा पढ़ी की जरूरत न थी। किसान लगान देकर रसीद नहीं लेते थे। रुपया पैसा और अन्य बहुमूल्य वस्तुएं लोग एक दूसरे

76. Last impressions and suggestions Page, 5, 6

87. Towards home rule.

81 Account of the kingdom of Kabul Vol, I. Page. 284

की याददाशतों पर ही नोट जमाकर देते थे, अन्य किसी जमानत की जरूरत न थी। विशेष अवसर पर नमदा के किनारे मेलें होते थे लावों आदमी उनमें इकट्ठा होते, किन्तु कभी कोई भगाड़ा बखेड़ा नहीं होता था।^{१५}

सुप्रसिद्ध अंग्रेज इतिहास विमर्शक स्मिथ भी इस सुव्यवस्था के सम्बन्ध में लिखते हैं—‘परान्तक के शिलालेख ग्राम्य-संस्था जिज्ञासुओं के लिये मनोरंजक है। उनमें इस विषय का पूरा विवरण है कि गांवों का स्थायी शासन, प्रबन्ध और न्याय ग्रामीण पंचायतों और समितियों द्वारा किस भांति नियमित रूप में सम्पादित होता था। इन्हें राज्य की ओर से पूर्ण स्वत्व प्राप्त रहते थे। यह दुख की बात है कि स्थानीय शासन की ऐसी उत्तम रीति, जो प्राचीन काल में सर्व प्रिय होने के कारण भारत में सर्वत्र प्रचलित थी, शताब्दियों से लुप्त हो गई है। संसार की वर्तमान गजसन्तारें यदि ऐसी उत्तम स्थानीय शासन की रीति प्रचलित कर सकें तो अपना बड़ा सौभाग्य समझेंगी।’^{१६}

सर चार्ल्स मिटकाफ़ प्रतिनिध संस्थाओं के सम्बन्ध में कहते हैं—‘ग्राम्य समितियां छोटे प्रजा तन्त्र हैं। उनकी आवश्यकताएँ उनके अपने पास हैं। और वे किसी भी विदेशी जाति के प्रभाव से स्वतंत्र हैं। वे स्थायी प्रतीत होती हैं, वहां, जहां कि सब कुछ अस्थिर है। वंशों के बाद वंश बदले, क्रान्तियों पर क्रान्तियां हुईं। पठान, मुग़ल, मराठ्टा, सिक्ख और ब्रिटिश शासक बने किन्तु वेसे ही रहीं।’^{१७} लेफ्टीनेन्ट कर्नल मार्क

82. Memoir of the zilla of Broach, 103

83. Early history of India, Page 114 to 119;

84. Report of the select committee of the house of commons
Vol. III, Page. 33

ब्रिटिश के शब्दों में—समस्त भारत ऐसी छोटी छोटी प्रजातन्त्र संस्थाओं का समूह है।^{८५}

ईसा की अठारवीं शताब्दी के अन्त तक इस देश में इन पंचायतों का कुछ न कुछ अभाव अवशेष था। इसी लिए भारत आज की अपेक्षा स्मृद्धिशाली और शान्ति सम्पन्न था। पंचायत शासन व्यवस्था भारत की आदिम प्रणाली है। आधुनिक पश्चात्य संसार ने केन्द्रीय शासन व्यवस्था म्यूनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की नींव इसी के आधार पर स्थापित की है। श्रीमती डाक्टर एनीविसेन्ट बतलाती हैं कि एंग्लो सैक्सन ग्राम्य शासन (Anglo Saxon village Govt) का आधार भारत की पंचायत व्यवस्था है।^{८६} सौर्य शासन काल में भी म्यूनिसिपैल्टी का सुप्रबन्ध और प्रजापति निधित्व का आदर्श माने हुए इतिहासकार पण्डित स्मिथ के शब्दों में पढ़िये—‘राजधानी पाटलीपुत्र नगर प्रबन्ध एक म्यूनिसिपल कमेट्री के आधीन था। इसमें ३० सदस्य थे। यह युद्ध मंत्री मंडल (War Cabinet) के समान छे बोर्डों (उपसमितियों) में विभाजित थी। ये बोर्ड रौर सरकारी पञ्चायतों के सरकारी रूप थे। भारतवर्ष की प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय और व्यवसाय में प्राचीन काल से पञ्चायतों द्वारा ही आन्तरिक और स्थानीय प्रबन्ध करने की विधि चली आती है।’^{८७}

इन प्रमाणों की मौजूदगी में कदाचित् यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चात्य जगत ने अपने शासन-विधान का ढांचा भारत की प्राचीन शासन व्यवस्था को ही देख कर बनाया है।

85 Historical Sketches of the south of India Vol, I Page 119

86 See, Theosophical teaching. Page, 224-234

87. Early history of India. Page, 124-125

लेकिन फिर यह साधारण सी आवा में क्यों डगमगाने लगता है, डबोन्निये, कि नींव में दूटनीति (Diplomacy) का सीमेन्ट लगाया गया है।

यात्रियों की दृष्टि

देशवासियों की सम्पन्नता और उनका सदाचार भी शासन व्यवस्था का एक आदर्श है किन्तु उसका चित्रण पुस्तक में पृथक् प्रकरण में किया जा चुका है। यहां हम भारतीय शासन पद्धति का अवलोकन एवं राष्ट्र का दिग्दर्शन समय २ पर इस देश में पधारने वाले यात्रियों द्वारा कराएंगे। ईसा के २०३ वर्ष पूर्ण भारत पधारने वाला यूनातो राजदूत मेगस्थनीज लिखता है कि पाटलीपुत्र की व्यवस्था के लिए ६ कमेटियां बनी हैं। राज्य में जगह २ सड़कें हैं, प्रत्येक मील पर दूरी बतलाने वाले पत्थर गड़े हैं। सड़कों का प्रबन्ध एक विभाग के अधिकार में है। पाटलीपुत्र के बाजार मालामाल हैं। लोगों को माल अमवाय की रक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती। लोगों का विचार है कि यहां अकाल नहीं पड़ा...।

प्रथम चीनी पर्यटक फाहियान जिसने ४१३ ई० में भारत भ्रमण किया था, प्रजा की सम्पन्नता, स्वतन्त्रता, और प्रसन्नता की प्रशंसा करते हुए लिखता है 'कोई भी जीवधारी की हिंसा नहीं करता, शराब नहीं पीता और न ही खाता है प्याज और लहसुन। दातव्य संस्थाएं बहुत हैं। सड़कें सुरक्षित और उनके किनारे पथिकाश्रम (Rest houses) बने हैं। राजधानी में एक अस्पताल है जहां से औषधियां मुफ्त मिलती हैं।^{११} भारतीय पशु नहीं बेचते।

दूसरा चीनी यात्री ह्युनस्यांग देश की स्मृद्धता एवं प्रजा की प्रमत्तता का वर्णन करते हुए सम्राट हर्ष की दो ऐसन्धलियों का जो कि प्रयाग और कन्नौज में हुई थीं चित्रण करता है—‘प्रयाग की परिषद् में ४ वर्ष का एकत्रित कोष खाली हो गया... अपना राज दान कर हर्ष कहता है कि मैं भविष्य में भी अपने भाइयों के सहायतार्थ धन एकत्रित कर सकूँ । .. इस परिषद् में १८ राज्यों के आधोश्वर और ५ लाख विद्वान एकत्रित हुये थे ।’^{६९} शमन हुईली (Shuman Hurei Li) बतलाता है कि हर्ष ने दुख पहनने के लिए अपनी वहन से लिया था । वास्तव में प्रजाहित साधन के लिये राव से रंक बन जाना भारतीय सम्राटों का ही काम था ।

चीनी विद्वान जिसने ६७३ ई० में भारत परित्रमा की थी, इसके सम्बन्ध में आंखों देखी गवाही देता है—‘सब लोग-अपने उज्ज्वल चरित्र के लिये समान रूप से प्रसिद्ध हैं, प्राचीनों के बराबर हैं और ऋषियों के चरण चिन्हों का अनुसरण करने के लिए उत्सुक हैं ।’ + + आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रदेश का अर्थ है देश । आर्य देश पश्चिम (पंजाब, युक्तप्रान्त आदि) का नाम है क्योंकि वहां श्रेष्ठ चरित्र के मनुष्य क्रमशः प्रगट होते हैं और सभी लोग इस नाम से उस देश की प्रशंसा करते हैं ।^{७०}

पहला मुसलमान यात्री फारस का सौदागर कहता है—यहां मुझे कोई ऐसा मनुष्य नहीं दिखाई पड़ा जिसने मुसलमानी धर्म

69. Scenes and character of Indian history: Page 40-42

90 इ-तसिंग की भारत यात्रा पृष्ठ २८८, १४४,

इसका यह अर्थ नहीं कि विन्ध्यांचल के उस ओर दंगलत विहार एवं उड़ीसा में अयोध्या एवं असम्य लोग रहते थे । किन्तु इस यात्री का जहां के लोगों से अधिक परिचय हुआ है वही का वर्णन किया है ।

ग्रहण किया हो अथवा जो अबी भाषा बोलता हो।" भावद (भारतीय राज्य) और चीन राज्य में परस्पर दूत आया जाव करते हैं किन्तु चीनियों को भावद से भय रहता है।" बलहरा भारतवर्ष में सबसे बड़ा राजा है। + + वही सब भारतीय राजाओं की अपेक्षा अबी से अधिक प्रेम भाव रखता है और इसी के समान इसके राज्य वाले भी। + + इस राज्य में द्वय बहुत है।" १ डाक्टर ऐनोविसैंट महोदय प्रथम अंग्रेज यात्री शिरवोर्न कं, पाणि का उल्लेख करती हैं जिसे इङ्गलैंड के सम्राट अल्फ्रेड ने भेजा था। उसने बड़े आराम से ८८२ ई० में भारत आकर इस देश के दर्शन किये। इतिहासकारों ने लिखा है कि वह अपने साथ वे शानदार विदेशी पौदे और जवाहरात इङ्गलैंड लेकर वापस आया जिसे कि वह देश प्रचुरता से उत्पन्न करता है। २ नवम्बर सन् १४४२ में भारत आने वाला पर्शियन राजदूत कमालुद्दीन अब्दुलरजाक प्रसिद्ध दक्षिणी हिन्दू राज्य बीजापुर के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य प्रकाशित करता है—यहां के शासक का जिस राज्य पर अधिकार है वह आस्ट्रिया (Austria) से बहुत बड़ा है। बिजयनगर शहर ऐसा है जिस की समता का दूसरा स्थान समस्त संसार में न आंखों ने देखा है और न कानों से सुना है। -- + — बाजार बहुत लम्बे चौड़े हैं... प्रत्येक माल के व्यापारी अलग अलग हैं, उनकी दुकानें एक दूसरे के निकट है जोहरी हीरा जवाहिर मोतियों आदि को खुल्लमखुल्ला बाजार में बेचते हैं। उस आकर्षक क्षेत्र में जहां कि सम्राट का महल है भांति भांतिके फवारे हैं। प्यारी सुन्दर नालियां कटे पत्थरों की बनी हैं। पत्थर पालिश किये हुये चिकने हैं। ... यह देश भली भांति

91 सुलेमान सौदागर पृष्ठ, ८४, ९७, ९९, ९८,

92 A. birds eye view of India's past,

आवाद है जिसका ठीक अनुमान लगना भी असम्भव है। सभाट के कोष में तहखाने बने हुए हैं जो गलाए सोने से भरे हैं। देश निवासी, अमीर गरीब सभी जेवर पहनते हैं।^{११६३} तत्कालीन इतिहास से पता चलता है कि उस समय विदेशों से भारत के राज्यों में बराबर दूत आया जाया करते थे। ऐतिहासिज्ञ सी०एच० पेनी (C. H Payne) १५वीं और १६ वीं शताब्दियों में आने यात्रपयिनों की सम्मतियां उद्धृत करते हैं जिन्होंने क्षेत्रफल और सम्पन्नता की दृष्टि से विजयनगर को विलक्षण बतलाया है। कुछ एक की निगाह से -- 'शान और स्मृद्धता में कोई भी पाश्चात्य राजधानी इसकी समता नहीं कर सकती।'^{११६४}

विश्व की यात्रा करने वाला सर जान मानडौवली (Sir Joan maundeaille) सन् १३३१ में भारत देखने के पश्चात् अपने विचार प्रकट करता है—'प्रत्येक द्वीप में बहुत से शहर और कस्बे हैं और जनसंख्या असंख्य है।'^{११६५} डाम मैनुअल (Dom manuel) सम्राट पुर्तगल का भेजा हुआ वास्कोडीगामा इस विशाल देश को मालामाल देख कर चकित हो लिखता है कि यहां की स्त्रियां सोने की हंसलियां गर्दन में, कितने ही कड़े हाथों में जवाहिरात से जड़ी हुई अंगूठियां और छल्ले पहनती हैं। तमाम आदमी सुशील एवं विनम्र हैं।'^{११६६} लंगड़े तैमूर के पोते का राज दूत अब्दुलरियाज ने १४४२ई० में दक्षिण भारत का भ्रमण कर अपनी सम्मति प्रकट की थी। -- 'खानदेश का राज्य इस समय बड़ा ही समृद्धशाली राज्य है। नदियों के तट पर स्थान २ पर

११. Scenes and characters from Indian history. Page 48, 57, 63.

११. Scenes and characters from Indian history Page 48

११. Voyage and travels of Sir John. Page, 111

११. Scenes and characters from Indian history, Page 85

पत्थर के अनेक सुन्दर घाट बने हुये थे, जिनके कारण खेतों की सींचाई बड़ी सुगमता से हो सकता है ! घाटों की बनावट इस देश की कला और निवासियों की योग्यता का उद्वलन्त प्रमाण है। १५ वीं शताब्दी के मध्य में मोहम्मद तुग़लक के अव्यवस्थित एवं अगान्तिमय राज्य में आनेवाला विदेशी यात्री इब्नबतूता के अनेक बड़े २ शहरों का जिक्र करता हुआ लिखता है कि अगजकता और अशान्ति के काज में भी देश की इतनी अच्छी अवस्था है तो शान्ति और सुशासन के समय में न मालूम यह कितनी उन्नतावस्था में रहा होगा ?' सन १४२० ई० में देश की सुसम्भावस्था का चित्रण करने वाले इटैलियन यात्री आंग्वो का भी अनुभव देख लीजिये—गंगा का किनारा सुन्दर मनोहर बाग बगीचों से भरा पड़ा है, अच्छे नगर बसे हैं। भाजिया नगर तो सोने चांदी से भरा पड़ा है। सोलहवीं शताब्दी का योरूपियन पर्यटक वार वोरा खम्भाना को एक सुदृढ़ उपजाऊ एवं सुन्दर भूमि पर बसा हुआ नगर बतलाता है जिस में फ्लैण्डर्स (हालैंड की भांति सब देशों के व्यापारी तथा कारीगर रहते हैं। सीजर फ्रेडरिक और वार टेमा पाश्चात्य दर्शकों ने भी इसी यात्री का समर्थन किया है।”^{६०} लगभग १०३० ई० में भारत पधारने वाले विदेशी यात्री भी इस देश के खुशहाली और कमाल के बर्णन में बृहद् प्रन्थ ही रच डाला है।^{६१}

† फादर पेड्री डू जारिस भी पूर्व का सब से बड़ा केन्द्र बतलाया है !

यात्री विलियम एफ (1609-11) इसे गजरात का बाजार कह कर सम्बाधित किया है। कर्नल टाड इसका हिन्दू और शुद्ध नाम खम्भावती बतलाते हैं । Akbar and the Jesuits, Page. 231,

“G. Poverty and an British rule in India. “India Reforms”

18 See, Alberunis India. Vol I and II.

इतिहासज्ञ मुअर टीपू सुलतान की शासन व्यवस्था की ओर इंगारा करते हुए कहते हैं—‘जब कोई व्यक्ति किसी अज्ञात देश की यात्रा करता है और उसमें उत्तम कृषि, व्यापारियों की गुंजान बस्ती, नए नगर और उनकी उन्नती तथा बढ़ा हुआ व्यापार देख कर वह मालूम कर लेता है कि यहां की प्रजा सुखी और शासन पद्धति के अनुकूल हैं।’ अब चौदवीं सदी के भारत की अवस्था का वर्णन जरा ब्रिटिश शासक एलफिन्स्टन की जवानी मुन लीजिए (१३४१-१३६४)—‘प्रजा सुखी थी, लोगों के घर सुन्दर थे, माकोअसबाब की कमी न थी। + शेरशाह ने बंगाल से सिन्धु नदी के निकट पश्चिमीय रोहितास तक ४ मास यात्रा की लम्बी नदक बतवाई थी, उसके प्रत्येक पड़ाव पर एक सराय और प्रत्येक डेढ़ मील पर एक कुवां था।... ..सड़कों के दोनों तरफ यात्रियों की छाया के लिए उसने वृक्षों की पंक्तियां लगवाई थीं।^{६६} भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर भी भारत को धनी और उबकोटि का देश बतला कर कारीगरों की चातुरी पर आश्चर्य प्रकट करता है। फादर पी० डी० जारिस अकबर कालीन भारत के विषय में लिखता है—‘देश का अधिकांश भाग फलों से भरा पड़ा है, जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएं प्रचुरता से उत्पन्न होती हैं। इन प्रान्तों की सम्पत्ति, औपिध, मसालों, मोतियों, सूती एवं सुनहरी कपड़ों (जरीं, कमरुबाब आदि), ऊन, रेशम, कालीन, मयमल और धातु की वस्तुओं एवं अन्य बहु मूल्य चीजों के विस्तृत व्यापार से बढ़ गई हैं।’^{१००} इतिहासकार एलफिन्स्टन यह भी बतलाते हैं कि अकबर ने लड़कों को चौदह वर्ष और लड़कियों का बारह वर्ष की अवस्था से पूर्ण विवाह करने की सख्त मनाही

^{६६} Munstou; India. Vol, II, Page, 203, 151,

^{१००} Scenes & Characters from Indian History, Page 172 173

करदी थी कुर्बानी में मारे जाने वाले जानवरों का वध भी रोक दिया था। हिन्दू धर्म के विरुद्ध उसने विधवाओं को अपना दूसरा विवाह करने की भी आज्ञा दे दी थी। १०१ जहांगीर शासन सुन्यवस्था की कुछ दास्तान, १६२३ ई० इटैलियन यात्री के मुंह से भी सुन लीजिए। प्रायः सभी शान के साथ जिन्दगी बितते हैं क्योंकि राजा अपनी प्रजा को झूठी शिकायतों पर दण्ड नहीं देता और उन्हें शान के साथ अमीरों की भांति रहता देख कर किसी वस्तु से वर्चित नहीं करता। १०२ न्याय की सुनहरी जंजीर इतिहास के पृष्ठों पर जहांगीर की न्याय प्रियता का सुन्दर नमूना है। सर टामस रो सन् १६१५ ई० में सम्राट शाहजहां से छावनी में मिला वह बतलाता है कि कम से कम दो एकड़ भूमि सोने और चान्दी के कामदार कपड़ों, कालीनों आदि से ढकी थी, जिसका मूल्य सोने और जवाहिरातों से जड़ी हुई मखमल के बराबर होता है। इस विपुल सम्पत्ति को देख कर सर टामस मुनरो हैरान रह गया। फ्रांसीसी पर्यटक फ्रान्क्वीस वर्नियर एम० डी० आश्चर्य चकित होकर कहता है कि मुझे सन्देह है इतनी सम्पत्ति अन्य किसी सम्राट के पास भी हो सकती है। १०३ टेवरनियर फ्रांसीसी यात्री हैरान है कि 'उसका अपनी प्रजा पर शासन राजा की भांति नहीं प्रत्युत एक बड़े परिवार पर उदार हृदय पिता की भांति है' अन्यत्र फ्रान्सीसी यात्री बतलाता है कि भारत भूमि में काफी सोना चान्दी और जवाहिरात गढ़े हैं। वह आसाम राज्य के धनियों की शिकायत करता हुआ बतलाता है कि लगभग सभी अपने कोप को अपनी जिन्दगी ही में जमीन के अन्दर गाड़ देते हैं।" यात्री

101. Elphinstons History Vol, 1. Page 280

102. Reform Pamphlet. Page 12,

103. Travels in the Mugal Empire, Page, 128.

एक हिन्दू बनारस विद्वान का भी जिक्र करता है जिसे शाहजहां ने २ हजार रुपया पेंशन दी थी।^{१०४}

अब जग महाराष्ट्र की ओर आइये ! विद्वान सी० एच० पेनी बतलाता है कि शिवाजी ने अपने राज्याधिकार की जड़ बड़ी मजबूती से जमाई और अपनी शासन व्यवस्था एवं सेना का नये और योग्यता पूर्ण ढंग से सुसज्जित किया। संसार उनकी स्थिति के सम्बन्ध में अंधकार में न रहे, उन्होंने शाही दर्जा और सुविधाएं प्राप्त की थीं। ६ जून सन १६६४ ई० में सर्वसाधारण में गहरी (रायगढ़) के किले में बड़ी आन बान और शान से उनका राज्यभिषेक हुआ था। मिस्टर आक्सिन्डन (Henry-Oxinden) जो सन्धिके लिये कम्पनी की ओर से भेजे गए थे, ने स्वयं देखा है।^{१०५} भारतयात्री विद्वान मोरियाग्राहम जो १८१० ई० में पूना पहुंचे थे ने लिखा है कि राज्यभिषेक हुआ, इनके नामका सिक्का ढला और इस समय से उस साहसी की शक्तिके साथ सम्राट का अधिकार सम्मिलित कर दिया गया। यद्यपि उनका १६८० ई० में उनका स्वर्गारोहण हुआ किन्तु स्फूर्ति जो उन्होंने भर दी थी ... उनके पश्चात् भी ७० वर्ष तक समस्त भारत और दक्षिण में फैली रही।^{१०६}

सितारा में बने हुए शिवाजी के महल के विषय में विसांकोटेस फ्राक लैण्ड कहती है कि वह छोटा महल सुन्दर प्रकाशमान और एक छोटे तालाब से चारों ओर घिरा था। भवन का अन्दरूनी भाग नीचे से ऊपर तक शानदार और चमकीला था।..... आखिरकार हम इसके अन्दर एक सरोवर के तट पर पहुंची जो

104, Tarveiner's travel. Page, 205, 341

105. Scenes and character from Indian History,

106. Letters on India, Page, 187

चारों ओर से आलोकमय था। मुझे मालूम हुआ कि मैं एक जादू के महल में हूँ। १०^{१२} सुविख्यात महाराष्ट्र केसरी द्वारा सुशामित देश का १८०३ ई० में सरजान मालकम ने निरिक्षण किया था, उसी सम्बन्ध में कमेटी आफ कामन्स के सामने बयान देते हुए आप कहते हैं—‘सन १८०३ ई० में ड्यूक आफ वॉलिंगटन के साथ मुझे दक्षिण महाराष्ट्र देग्वन का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस प्रदेश के समान उपजाऊ भूमि की भान्ति भान्ति की पैदावार तथा व्यापारिक सम्पत्ति मुझे अन्य किसी दूसरे देश में आज तक दे ने को नहीं मिली। यहां विशेषता मैं कृष्ण नदी तट की ओर सङ्केत करता हूँ। पेशवाओं को राजधानी पूना एक अत्यन्त स्मृद्धिशाली और उन्नतशील व्यापारिक शहर है। एकोर्टल डु पेरन नामक यात्री के मुंह से महाराष्ट्र के अतीत का हाल सुनिए—‘जब मैं ने मरहटों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों मैं स्वर्णयुग के सरल और आन्नन्द्य प्रदेश में पहुँच गया हूँ। वहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, युद्ध और अकाल का किसी को पता ही न था। लोग प्रसन्न चित्त और पुरुषार्थी और खूब स्वस्थ थे। अतिथि सत्कार की भावनाएं चारों ओर मौजूद थीं। मित्रों पड़ोसियों और अपरिचितों का समान रूप से प्रत्येक स्थान पर स्वागत किया जाता था १०^{१५} मालकमहोदय मध्य भारत के इतिहास (प्रथम खण्ड) में अहिल्या वाई के सम्बन्ध में अपने विचार इस भान्ति व्यक्त करते हैं—‘अपने राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में अहिल्यावाई की सफलता अदम्य थी। उसके राज्य को बाहरी आक्रमणों से जो मुक्ति और निश्चिन्तता प्राप्त की थी उसकी अपेक्षा देश की निर्विघ्न आन्तरिक शान्ति

अधिक उल्लेखनीय है ।.....उसके समकालीन भारतीय नरेश उसके राज्य पर चढ़ाई करना अथवा किसी दूसरे के द्वारा उसके राज्य पर आक्रमण होते देखकर रक्षा के लिये न दौड़ पड़ना महापाप समझते थे । पेशवाओं से लेकर निजाम और टीपू सुल्तान तक उसे उसी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे । हिन्दू तथा मुसलमान दोनों एक साथ मिलकर ईश्वर से उसकी चिरायु और अभ्युदय के लिये प्रार्थना करते थे ।

वरार प्रदेश के सम्बन्ध में एक अन्य यात्री के अनुभव का अनुशीलन कीजिये—‘इस प्रदेश की यात्रा में हमें जो आनन्द मिला है, वर्णन की अपेक्षा उसकी कल्पना ही आसान है । इस प्रदेश में महाराष्ट्र सरकार के सुशासन के कारण यात्रा में हमारे साथ हर प्रकार का आदर पूर्ण व्यवहार हुआ । अन्न काफी यात्रा में बहुत सस्ते मूल्य पर मिला जो कि यहां की उपजाऊ जमीन में उत्पन्न होता था । सड़कों की ओर ध्यान न दिया जावे पर यहां से इतना माल बाहर जाता था कि फरीब एक लाख बैल उस के ढोने में लगे रहते थे ।’^{१०६} पेशवाओं के शासन काल का कहना ही क्या । ग्रान्टडफ़ इतिहासज्ञ के अनुसार ‘गरीबों की अमीरों, और निर्बलों की अत्याचारियों से रक्षा करने तथा तत्कालीन समाज की आज्ञानुसार सबके साथ समानता का व्यवहार करने के लिए प्रसिद्ध थे ।...नाना लैंश (१) पेशवा के जमाने को सारे महाराष्ट्र के किसान अब तक आशीर्वाद देते हैं ।’^{१०७}

भारतीय शासन काल में बंगाल की अवस्था का भी वर्णन पश्चात्य विद्वान हालबैल की जवानी सुन लीजिए ।’ इस प्रान्त में प्राचीन भारतीय शासन की सुन्दरता पवित्रता, धार्मिकता,

109. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृष्ठ ५२ See also Asiatick annual Register Vol, II

110. History of the Marathas, Vol. II, Page 162

चारों ओर से आलोकमय था। मुझे मालूम हुआ कि मैं एक जाट के महल में हूँ। १०० सुविख्यात महाराष्ट्र केसरी द्वारा सुशामित देश का १८०३ ई० में सरजान मालकम ने निरिक्षण किया था, उसी सम्बन्ध में कमेटी आफ कामन्स के सामने बयान देते हुए आप कहते हैं—‘सन १८०३ ई० में ड्यूक आफ वेर्लिगटन के साथ मुझे दक्षिण महाराष्ट्र देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस प्रदेश के समान उपजाऊ भूमि की भान्ति भान्ति की पैदावार तथा व्यापारिक सम्पत्ति मुझे अन्य किसी दूसरे देश में आज तक देने को नहीं मिली। यहां विशेषता मैं कृष्ण नदी तट की ओर सङ्केत करता हूँ। पेशवाओं को राजधानी पूना एक अत्यन्त स्मृदिशाली और उन्नतशील व्यापारिक शहर है। एकोर्टल डु पेरन नामक यात्री के मुंह से महाराष्ट्र के अतीत का हाल सुनिए—‘जब मैं ने मरहटों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों मैं स्वर्णयुग के सरल और आन्नदय प्रदेश में पहुंच गया हूँ। वहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, युद्ध और अकाल का किसी को पता ही न था। लोग प्रसन्न चित्त और पुरुषार्थी और खूब स्वस्थ थे। अतिथि सत्कार की भावनाएं चारों ओर मौजूद थीं। मित्रों पड़ोसियों और अपरिचितों का समान रूप से प्रत्येक स्थान पर स्वागत किया जाता था १०० माल्कमहोदय मध्य भारत के इतिहास (प्रथम खण्ड) में अहिल्या बाई के सम्बन्ध में अपने विचार इस भान्ति व्यक्त करते हैं—‘अपने राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में अहिल्याबाई की सफलता अद्भुत थी। उसके राज्य को बाहरी आक्रमणों से जो मुक्ति और निश्चिन्तता प्राप्त की थी उसकी अपेक्षा देश की निर्विघ्न आन्तरिक शान्ति

अधिक उल्लेखनीय है ।.....उसके समकालीन भारतीय नरेश उसके राज्य पर चढ़ाई करना अथवा किसी दूसरे के द्वारा उसके राज्य पर आक्रमण होते देखकर रक्षा के लिये न दौड़ पड़ना महापाप समझते थे । पेशवाओं से लेकर निजाम और टीपू सुलतान तक उसे उसी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे । हिन्दू तथा मुसलमान दोनों एक साथ मिलकर ईश्वर से उसकी चिरायु और अभ्युदय के लिये प्रार्थना करते थे ।

वरार प्रदेश के सम्बन्ध में एक अन्य यात्री के अनुभव का अनुशीलन कीजिये—‘इस प्रदेश की यात्रा में हमें जो आनन्द मिला है, वर्णन की अपेक्षा उसकी कल्पना ही आसान है । इस प्रदेश में महाराष्ट्र सरकार के सुशासन के कारण यात्रा में हमारे साथ हर प्रकार का आदर पूर्ण व्यवहार हुआ । अन्न काफी यात्रा में बहुत सस्ते मूल्य पर मिला जो कि यहां की उपजाऊ जमीन में उत्पन्न होता था । सड़कों की ओर ध्यान न दिया जावे पर यहां से इतना माल बाहर जाता था कि फरीब एक लाख बैल उस के ढोने में लगे रहते थे ।’ १०६ पेशवाओं के शासन काल का कहना ही क्या । ग्रायटडफ़ इतिहासज्ञ के अनुसार ‘गरीबों की अमीरों, और निर्वलों की अत्याचारियों से रक्षा करने तथा तत्कालीन समाज की आज्ञानुसार सबके साथ समानता का व्यवहार करने के लिए प्रसिद्ध थे ।...नाना लैंश (१) पेशवा के जमाने को सारे महाराष्ट्र के किसान अब तक आशीर्वाद देते हैं ।’ ११०

भारतीय शासन काल में बंगाल की अवस्था का भी वर्णन पाश्चात्य विद्वान हालचैल की जवानी सुन लीजिए ।’ इस प्रान्त में प्राचीन भारतीय शासन की सुन्दरता पवित्रता, धार्मिकता, 109. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृष्ठ ५२ See also Asiatick annual

Register Vol, II

नियमिता, निष्पक्षता और प्रबन्ध की कठोरता के चिन्ह अभी तक पाये जाते हैं। यहां के लोगों की सम्पत्ति और स्वतन्त्रता सुरक्षित है। यहां खुली अथवा इक्की दुक्की लूटमार और डकैती का नाम भी नहीं सुना जाता, मुसाफिरों की रक्षा को सरकार अपना कर्तव्य समझती है, उनके पास कोई कीमती माल हो या न हो। उनकी रक्षा और ठहरने का उत्तरादायित्व भी इन्हीं सिपाहियों पर होता है। एक मंजिल के सिपाही दूसरी मंजिल पर पहुंच कर मुसाफिर को आदर पूर्वक वहां के सिपाहियों के हवाले कर देते हैं। वे सिपाही, पिछले सिपाहियों के व्यवहार के विषय में कुछ पूछ ताछ कर और मुसाफिर तथा उसके समान को अपनी रक्षा में लेने का दाखिला देकर, पहले सिपाहियों को छुड़ी दे देते हैं। यह प्रमाणपत्र पहली मंजिल के अफसरों के पास पहुंचता जो इसकी सूचना नियमित रूप से राजा को दे देते थे। सफर में मुसाफिर को खाने, पीने, स्वारी और माल असबाब की दुलाई का खर्च कुछ नहीं देना पड़ता ! .. इस प्रान्त में यदि किसी को रुपये पैसों की थैली या अन्य कोई कीमती चीज खो जाती है, तो पाने वाला उसे नजदीक के पेड़ पर टांग देता है और पास की पुलिस चौकी में इसकी सूचना कर देता है। चौकी की पुलिस ढोल पीटवा कर उस की सूचना सर्व साधारण में करवा देती है। १११

आचरणहीन अलीवर्दीखां के दुर्गुणों को स्वीकार करते हुए इतिहास लेखक स्टुअर्ट उसकी शासन प्रणाली का इस भान्ति वर्णन करते हैं। + + + उस समय स्मृद्धि शांति और व्यवस्था का सर्वत्र साम्राज्य था। प्रान्त के किसी सुदूरस्थ कोने से

111. Reform Pamphlet, Page, 21, See also, Hostwels's Tracts upon India,

किमी कहर और वागी जिमीदारी के कभी कभी हो साने वाले बलबे को छोड़ कर प्रजा की गहरी और सार्वभौम शान्ति में कभी विन पड़ता ही नहीं था । कलाइव कहता है कि यह ऐसा देश है जो अपने स्वामियों को संसार में सब से अधिक सम्पत्ति शाली बनाए बिना नहीं रह सकता ।^{१ १ २}

प्रजा के मानस मन्दिर में प्रवेश करने के लिये मस्तक को किता मु काना चाहिये, यह बात भारतीय सम्राट सिंहासनारूढ़ होने ही सीख लेते थे । उस लिये हिन्दू लोग राजा को देवतुल्य और राजभक्ति को धर्म स्वरूप मानते थे । प्राचीन भारत की आदर्श और सुख-शान्ति का यही रहस्य था । आईये राजपूती द्वार-झाया में कुछ देर विश्राम करने वाले हाइट महोदय की भी कुछ सुन लीजिये । यहाँ के तेजस्वी स्वाश्रमी किसानों को देख कर यही प्रतीत होता कि राज्य में उनके अधिकारों और स्वत्तों का अधिक खयाल रखा जाता है ।... १८१० में अंग्रेजी सेना ने देहरी राज्य में दो मास तक विश्राम किया था । उस प्रदेश में स्मृद्धि और सम्पन्नावस्था को देखकर सारी सेना आश्चर्यान्वित हो गई थी ।^{१ १ ३} अतीत कालीन अवध की नब्बावी पर भी एक दृष्टि डालते चलिये । आपने उस नगरी के प्रायः अधिकांश दुकानदारों को प्रातः काल यह कहते सुना होगा “जिस का न मौला, अमे दे आसुफहौता” । किन्तु यहां प्रमाणिक पुरुष पादरी हीबर के अवध पर भी निगाह डाल लीजिये । यहां पर हमने सर्वत्र सभ्य और स्वभाव के मनुष्य देखे । ..हमारा आतिथ्यसत्कार तो उन्होंने इतना अच्छा किया, और इतना अधिक स्थान हमें मिला जितना लन्दन में विदेशियों को भी मुशकिल मिला होगा । यहां

112. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृ० ३६, ४०

113. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृ० ५२, ५६

के वर्तमान शासक साहित्य और तत्व ज्ञान के प्रेमी हैं।" मन्त्र अलीखां स्वयं एक बुद्धिमान और गुणी आदमी थे। व्यापार के और उनकी विशेष रुचि थी और उसके सञ्चालन की भी पर्याप्त कुशलता प्राप्त कर चुके थे। उन्हें जीवन के सन्ध्या काल में अभ्यवश मद्यपान की इल्लत पड़ गई थी। फिर भी उनके आधीन प्रदेश की भूमि उर्वरा, जनसंख्या ६० लाख कोष में २० लाख रुपया नकद, अर्थविभाग सुविख्यात और किसान मन्तुष्ट थे। दिखाने के लिये कुछ पुलिस के अतिरिक्त कोई फौज बगैरा भी न थी। प्रत्येक ओर दृष्टिपात करने से मालूम होता था कि शासन सुव्यवस्था के कारण प्रजा सुखी और मालामाल है। १११४

भारतीय शासन व्यवस्था कितनी सुन्दर थी, इसका एक मात्र प्रमाण है, प्राचीन विश्व के विस्तृत आङ्क में कल्लोल करने वाला उनका असीम साम्राज्य। प्राचीन भारत दुनिया के साथ कपट नीति (Diplomacy) से काम नहीं लेते थे, यह कारण कि एक दिन संसार के लिये वे उपयोगी ही नहीं किन्तु प्रिया भी थे। आज भी उनके अन्दर से शासन व्यवस्था का वह भाव विलकुल तिरोहित नहीं हो गया। एक छोटे राज्य में सुव्यवस्था स्थापित करने की योग्यता राजनीतिज्ञता का बेसा ही प्रमाण है जैसा कि किसी बड़े राज्य की प्रबन्ध कुशलता ! इस सिद्धान्त का अनुमोदन करते हुए सर फ्रेडरिक मैक्समूलर महोदय ने भावानगर के प्रधान आमात्य गौरीशङ्कर उदयशङ्कर ओझा के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका भी अवलोकन कीजिये—‘इन शब्दों में जीवनभर के कार्य का दिग्दर्शन मात्र ही सम्भव है। हम यदि इस भारतीय राजनीतिज्ञ के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण करें तो हमें बड़े २ देशों में भी थोड़े ही प्रधान मंत्री दीख पड़ेंगे जिन्होंने

नये कठिन कार्य को दाथ में ले कर इतनी योग्यता, निर्भिकता और सफलता के साथ पूरा किया हो। पार्लियामेंट के शिखर पर लगी हुई बड़ी घड़ी यद्यपि जेबी घड़ी की अपेक्षा जोर से बजती है, पर दोनों की मशीनें एक सी हैं और दोनों के स्प्रिंग को एक सा ही काम करना पड़ता है। डिजरायनी और ग्लैडस्टर्न जैसे मनुष्य भी यदि इन भारतीय राजनीतिज्ञों की स्थिति में होते तो भी इन गियास्तों के शासन में इन से अधिक न जान पड़ते।... विस्मार्क ने यदि जर्मनी का निर्माण किया है तो मैं कहता हूँ कि गौरीशंकर ने किया है भावानगर का ११५ सर जान सारैस ने १८६४ ई० में कहा था कि 'भारतीयों को अपने मामलात में व्यवस्था करने की पूर्ण योग्यता है।' ११६

आमाम के भूतपूर्व चीफ कमिश्नर हेनरी जी० एस० काटन अपने चिरकालीन अनुभव प्रकट करते हैं—'दिशवासियों में अपने लोगों में शासन और न्याय की सुयोग्य व्यवस्था करने की कुशलता मौजूद है,—यह निर्विवाद है।' ११७ सुयोग्य पोलिटिकल एजेंट विलियम डिग्वी सी० आई० ई० कहते हैं—'भारतीय अकवर कालमें जैसे थे आज भी वैसेही हैं। उनकी योग्यता कम नहीं हुई। उनकी मस्तिष्क शक्ति उतनी ही विशाल है जितनी की उनकी व्यवस्था की कुशलता, जो अब तक भी फेल नहीं हुई। यह वे दिन प्रमाणित करते हैं।' ११८ इङ्ग्लैण्ड के लार्ड चांसलर ने १८८३ ई० में भारतीय न्यायधीशों के सम्बन्ध में बतलाया था मैंने कुछ वर्षों तक भारतीय मुकदमों की प्रीव्वाकौंसिल की जुड़ी-शल कमेटी के सामने बकालत की है। मुझे भारतीय जजों की

115. Towards Home rule.

116. What India wants,

117 "India,, Sept, 8, 1899.

118, India for the Indians and for England 1885, a, d.

उस प्रणाली के अवलोकन करने का पर्याप्त अवसर मिला है, जो कर्तव्य पालन उन्होंने दीवानी के मुकदमों में किया था। मुझे यह कहते जग भी संकोच नहीं होता, और मैं जानता हूँ कि यह तत्कालीन जजों की भी सम्मति थी कि भारतीय जजों के फैसले अंग्रेज न्यायधीशों की तुलना में अधिक प्रियकर हैं।^{११} भूतपूर्व सेक्रेटरी आफ स्टेट सर स्टाफोर्ड ने १८६७ में हाउस आफ कामन्स को बतलाया था कि यह कहना कि भारतीयों में पर्याप्त राजनीति का पाण्डित्य और योग्यता नहीं, एकान्त असम्भव है।^{१२}

भारतीय शासन सुव्यवस्था का सुरीला राग इसकी मोझ शीतल सुखद छाया में बैठ कर बड़े २ विदेशी विद्वान और आस-सुद बसुन्धरा का संथन करने अख्य यात्री तक अलाप चुके हैं। इसके प्राचीन आदर्श शासन प्रबन्ध का एक सीधा साधा प्रमाण यही है कि लगभग दो अगव वर्ष। के जीवन में यहां केवल एक क्रान्ति हुई और वह महाभारत का युद्ध। भारत में असंख्य आक्रमणकारी आये, कितने ही वंशों ने बेतना की भान्ति यहां के वायु मण्डल में अपने को विस्तृत किया किन्तु आंसू की तरह गिर कर अपना अस्तित्व तक खो गये। शक्ति के मामले स्वभाविक दीनता प्रदर्शित करने का बीज विधाता ने भारतीयों के रक्त में मिलाया ही नहीं! ये गाए जैसे निरीह पशु तक की पूजा करते हैं किन्तु राजदूत सर टामस रो के शब्दों में 'ये लोग वह हैं जो मार्ग में खड़े हुए शेर से भी भयभीत नहीं होते।'^{१३}

भारत आज भिखमंगा है, जो कुछ भी देसका बचा खुचा

119. India in transition

120. What India wants

121. The People of India

वैभव, सम्पत्ति और ज्ञान की धुंधली किरणें यहां दिखलाई देती हैं, वह उन भारतीय आदर्श शासकों की करतूत हैं जो रक्षा कर चत्री और प्रकृति रञ्जन करने से ही राजा कहलाते थे । भारत सरकार के भूतपूर्व सुयोग्य अधिकारी डब्ल्यू० डिग्वी सी० आइ०, ई० ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया था कि + + + यदि हमने रेल और सड़कें बनाई हैं तो प्राचीन भारतीयों ने नहरें खोदी थीं और आपाशी का विशाल मजबूत काम किया था जो कि आज हीनवस्था में होने पर भी हमारे लिये एक आश्चर्य हैं । ये सब प्रशंसनीय सम्राटों के शाही कार्य थे । हमने भारतवर्ष से कुछ भी काम नहीं किया जिससे बलिक उस से भी बढ़कर उसके पुत्रों ने न किया हो केवल एक बात के अतिरिक्त... १२२ कहने का तात्पर्य यह है कि यदि इतिहास मुड़कर देखना नहीं भूलता तो एक दिन भारत ध्वजा पर फिर मोटे अक्षरों में लिखा होगा:—जामु राजप्रिय प्रजा दुखारी, नो नृप अवसि नरक अधिकारी ।



शिक्षा

शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है ।

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य को उसकी वास्तविक परिस्थिति में सुपरिचित करा देना । भारतीय शिक्षा का अर्थ सदैव ज्ञान प्राप्ति रहा है क्योंकि ज्ञान से कर्म और भाव की शुद्धि होती है । भावों के परिष्कृत होने पर ही मनुष्य, मनुष्य बनकर समाज राष्ट्र और संसार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है । शिक्षा और संस्कृत इन दोनों के समवन्त्य का नाम उत्थान है । यही कारण है कि विद्या विहीन व्यक्ति इस में पशु तुल्य समझा जाता था । सन्तान को शिक्षा न देने वाले माता पिता समाज की दृष्टि में बालक के शत्रु और राजदण्ड के अधिकारी बनते थे ।^१

भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों में सदाचार, संयम त्याग और स्वतन्त्रता की भावनाएं उत्पन्न करती थीं । जस्टिस सर जान डइरफ्री ने अपने एक व्याख्यान में बतलाया था कि प्राचीन भारतवर्ष में स्वतन्त्र विचार आचार का एक अङ्ग था । स्वतन्त्र विचारों के कारण ही लोग मुनि कहलाते थे । जो स्वतन्त्रा पूर्वक विचार कर अपनी सम्मति नहीं बना सकता था वह

1. विद्या विहीनः पशुः—यंचित्र

2. माता शत्रु पिता वैरी येन बानो न पाठितः—हितोद्देश

१. भोज के समय में तकड़हारे तक शिक्षित ही नहीं प्रत्युत संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ हुआ करते थे तथा अशुद्ध बोलने पर एक तकड़हारे ने राजा को उत्तर दिया था—“भारं न बाधते गजन् बाधन्ति बाधने” ।

वास्तव में सुनि नहीं था ।^३ यह था प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आदर्श ! इस प्रणाली का विवेचन करते हुए रेवरेण्ड एफ० ई० 'की' लिखते हैं—'वेदों के विभिन्न अङ्ग जिस समय पूर्णता को प्राप्त कर चुके थे उस समय ब्राह्मणों की शिक्षा पद्धति पूर्ण रूप से सुसंगठित थी + + + धीरे धीरे आद्यौगिक या कम से कम गृहस्थ शिक्षा की उत्पत्ति हुई । यज्ञोपवीत संस्कार के अनुसार वे ब्राह्मणों गुरुओं के यहाँ पढ़ने जाते थे और कम से कम १२ वर्ष तक विद्याध्ययन करते थे । आगे चलकर 'की' महाशय बतलाते हैं कि जिन लम्बी शताब्दियों में ये शिक्षा प्रणालियाँ काम कर रही थीं, इस बात का प्रमाण है कि उनमें सारयुक्त तत्व अवश्य थे । उन्होंने कितने ही महापुरुषों और सत्यान्वेषकों को उत्पन्न किया है । बौद्धिक क्षेत्रों में भी उनका काम किसी भी अवस्था में कम नहीं हो सकता । उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी कितने ही महान आदर्शों को विकसित किया जो शिक्षा विषयक विचार और अभ्यास के लिये बहुत मूल्यवान हैं ।'^४

सन् १८६८ ई० में बंगाल के एक इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स जो पञ्जाब के स्कूलों का निरीक्षण करने के लिये भेजे गये थे अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं—'भारत की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का निर्माण उन शास्त्रीय विधानों के अनुसार हुआ था जो जीवन के साधारण दैनिक कामों में भी गौरव का सञ्चार कर देते हैं । इसी लिये भारत की शिक्षा पद्धति को एक धार्मिक सहत्व प्राप्त हो गया था ।'

भारतवर्ष में शिक्षा बिल्कुल निःशुल्क दी जाती थी । शिक्षा के बदले शुल्क लेना पाप समझा जाता था । 'की' महाशय के

3. Bhat Shakti, Page, 71

4. Ancient Indian education

कथनानुसार यहाँ स्थान स्थान पर पाठशालायें थीं जिन्हें तोल कहा जाता था और बहुत से तोलकर एक विश्वविद्यालय की सृष्टि होती थी। इनके अतिरिक्त प्रत्येक नगर और गांव में बड़े बड़े ब्राह्मण पण्डित हुआ करते थे जो विद्यार्थियों को सुप्त शिक्षा दिया करते थे। इनके अतिरिक्त ऋषियों के आश्रम और गुरुकुलों में भी भारत राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण किया जाता था

तोल—

जे० माल्थाई बतलाता है कि ये तोल स्थानीय ग्राम्य पंचायतों के अधिकार में होते थे। इनके व्यय के लिये होती थीं मार्फ़ी जर्माने।^१ बंगाल के उक्त स्कूल इन्स्पेक्टर लिखते हैं कि “ये पञ्चायतें, समाज की विभिन्न श्रेणियों को शिक्षित बनाने में बहुत सहायता पहुंचाती थीं। इसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का फल है कि आज भी देश में असंख्य पाठशालायें और चट शालायें और तोल विद्यमान हैं। इन संस्थाओं की आधुनिक अवस्था चाहे कितनी ही गिरी क्यों न हो, किन्तु हजारों वर्षों की उदासीनता, उपेक्षा और प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच में भी जीवित रहकर ये संस्थायें इस बात को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती हैं कि जन्म काल के समय इनकी कितनी अधिक क्षमता रही होगी। पार्लियामेंट के सदस्य केरहार्डी तत्कालीन शिक्षा विस्तार के सम्बन्ध में लिखते हैं ‘मेक्समूलर ने सरकारी कागजों और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर, जो बंगाल पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित होने के पहिले यहां की शिक्षा के सम्बन्ध में लिखी गई थी, लिखा है कि उस समय बंगाल में ८०,००० पाठशालायें स्थापित थीं। अर्थात् प्रान्त के प्रत्येक ४०० मनुष्यों के पीछे एक पाठशाला

3. Village Government in British India chapr. II. See also loci,

श्री : लाहौर गवर्नमेंट कालेज के प्रथम प्रिंसिपल डाक्टर लीडनर बताने हैं कि सन १८५३ ई० में मिस्टर आदम ने इन स्कूलों की संख्या १ लाख अनुमान की थी। सन १८८२ में सर टामस मुनरो ने मद्रास में एक जांच कमेटी नियुक्त की थी, उसने १२४६८ पाठशालाओं की सूचना दी थी। इनमें १८८६५० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते थे। बम्बई प्रान्त में भी इसी प्रकार सर्वत्र पाठशालायें पाई गई थीं। १८५४ की जांच पड़ताल के अनुसार पंजाब प्रान्त में ३३७२ पाठशालायें थी इनके अतिरिक्त घरों पर शिक्षा देने वालों की संख्या अलग है। लीडनर महोदय ने तत्कालीन पंजाब प्रान्तीय छात्रों की संख्या ३,३३,५५० बतलाई है।^१

प्राचीन ग्राम्य पाठशालाओं के विषय में लाडलो की भी सम्मति सुनि—'प्रत्येक हिन्दू गांव में जिसका पुराना संगठन अभी तक बना हुआ है, मेरा विश्वास है कि आम तौर पर सब बच्चे लिखना पढ़ना और हिसाब करना जानते हैं। किन्तु जहां हम लोगों ने ग्राम्य पंचायतों का नाश कर दिया है, जैसे बंगाल वहां उनके साथ २ पाठशालायें भी लुप्त हो गई हैं।'^२

इनकी शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम का व्याग भी रेवरेण्ड 'की' को ज्ञानी भी सुनि—दोनों प्रकार की शिक्षाएं परस्पर निर्भर न थी। ये आरम्भिक पाठशालाएं व्यापारी, शिल्प और कृषि के सर टामस मुनरो मद्रास प्रान्त की शिक्षा पूर्वकान को अपेक्षा तिहाई बताने हैं।—*El hinstons History of India, Page, 205,*

लीडनर साहब के सरकारी शब्दों में सरकारी और इमदादी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या पंजाब में ११३००० है।

6. India Impresions and Suggestilions. Page, 6-7,

7. Unhappy India see also Blue books.

8. Ludlow's History of British India, See also, India Page, 6-7

लिये थीं और संस्कृत पाठशालाएं धार्मिक तथा विद्वान लोगों के लिए । अन्यत्र आप लिखते हैं कि भारतवर्ष में सुन्दर कला और दस्तकारी की ओर शताब्दियों से जन प्रवृत्ति थी और भविष्य में इनकी ओर भी उन्नति की आशा है । + + + कला कौशल के लिए एक विशेष सीमा तक नियमित रूप से ड्राइंग की भी शिक्षा दी जाती थी ।

प्राचीन आश्रम—

१—अयोध्या के पश्चिम मालिनि नदी के तट पर कश्यप ऋषि का आश्रम था, २—नर्मदा तट पर च्यवन, ३—वम्बई के निकट अगस्त्य, ४—प्रयाग में भारद्वाज का, ५—अमरावती के समीप ऋषि आपस्वस्व, ६—याज्ञवल्क्य ऋषि का मिथिला में, ७—रेवत ऋषि का सिन्धु तट पर, ८—कलकत्ते के समीप कपिल का, ९—तुंगभद्रा तट पर मतंग ऋषि का, १०—भागलपुर जिले में शृंगी ऋषि का, ११—सरयू तट पर भारकण्डेय का, १२—विदूर में वाल्मीकी का, १३—नैम्यषारण्य में शौनक ऋषि का, १४—जावली ऋषि का नैम्याषारण्य में, १५—सन्दीपन का उज्जैन में और अर्थशास्त्री चाणक्य का पटना में आश्रम था । इनके अतिरिक्त विद्वान विद्यार्थियों को शिक्षा दिया करते थे । इन आश्रमों में अधिकांश के विद्यार्थी भिक्षा द्वारा अपना उदर पोषण किया करते थे । भोजन के समय में नगर को चले जाते थे वहां गृहदेवियां भोजन से थाल सजाये हुए गृहद्वारों पर खड़ी इनकी प्रतीक्षा किया करती थीं । कहीं कहीं दस हजार विद्यार्थियों तक के भोजन वस्त्र का एक ही आदमी प्रबन्ध करता था । जिसे कुलपति (Chancellor) कहते थे ।

ब्रह्मा: कितनी सुन्दर थी यह प्रथा ! इस से विद्यार्थियों के अन्दर सरलता, विनम्रता और स्वदेश प्रेम की कितनी श्रीवृद्धि होती रही होगी । देश का अन्न खाकर वे इसके ऋण को चुकाना अपना सर्वप्रथम कर्तव्य समझते थे । इतना होने पर भी ब्रह्मचारी विद्यार्थियों के प्रति देश में कितनी श्रद्धा और सम्मान था, वसिष्ठ मुनि के आदेश से ही अनुमान कर लीजिये । ब्रह्मचारी और राजा एक ही मार्ग पर आते हुए एक दूसरे के सन्मुख हो जायं तो राजा को उचित है कि वह स्नातक के सम्मानार्थ मार्ग को छोड़ दें ।” ‘की’ महोदय स्पष्ट रूप से बतलाते हैं कि ‘निर्धन धनी सभी को सादा जीवन व्यतीत करना पड़ता था । नियंत्रण कठोर था किन्तु कटुता का आभास नहीं ।’

इन अध्यापकों के सम्बन्ध में भी रेवरेण्ड ‘की’ का कथन है—‘अध्यापक किसी आर्थिक दृष्टि से शिक्षा न देते थे प्रत्युत वे इसे अपना कर्तव्य समझते थे । हाँ, शिक्षा समाप्ति पर धनी कुछ गुरु दक्षिणा देते थे वह शिक्षा के बदले नहीं प्रत्युत श्रद्धा भेष्ट के रूप में ।’^{१०}

गुरुकुल—

यह भी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के केन्द्र थे यहां विद्यार्थियों को विविध प्रकार की शिक्षाएँ दी जाती थीं । किन्तु राष्ट्रीय सभ्यता के आदर्श को अमर रखता था इनकी शिक्षा का उद्देश्य ! आधुनिक गुरुकुल कांगड़ी का निरीक्षण करते हुए भारत के भूतपूर्व मंत्री रैमजे मैकडानल्ड ने लिखा था—‘मैकाले के भारतीय शिक्षा पर कलम उठाने के बाद से अब तक भारतवर्ष यदि कोई नई महत्वपूर्ण संस्था खुली है तो वह गुरुकुल है ।

जापान के प्रसिद्ध विद्वान किमूरा ने गुरुकुल में भाषण देते हुए कहा था—‘अपने अल्प काल के निवास में मुझे यहाँ से अनेक शिक्षाएँ मिली हैं। जो मेरी जन्म भूमि जापान के लिये विलुप्त नई है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में जापान के बहुत से विद्यार्थी गुरुकुलों में आकर भारत की प्राचीन संस्कृति का अध्ययन करेंगे।

विश्वविद्यालय—

जिस देश में ज्ञान्यशून्य रहना गुनाह माना जाय, जिस समाज में बुद्धि विद्या और कर्म धर्म के ही आधार पर मनुष्य का स्थान नियत किया जाय वहाँ शिक्षा संस्थाओं की गणना यदि असंभव नहीं तो दुर्लभ अवश्य है। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा, अजन्ता, अवन्तिका, काशी कंची, नवद्वीप, केनहेरी, नासिक, पाण्डुपुर, आदि विश्वविद्यालय थे। सिस्टर निवेदिता वनलाती है कि ‘हिन्दुओं के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से प्रत्येक अपनी किसी विशेषता के लिये प्रसिद्ध था।’^{११}

नालन्दा—

शमनद्धिन नामक चीनी पण्डित लिखता है कि यहाँ विद्यार्थी और अध्यापकों की संख्या १०००० थी वहाँ सूत्रों और शास्त्रों के २६ संग्रहों के पढ़ानेवाले १०००, तीस संग्रहों को पढ़ानेवाले ५०० और पचास संग्रहों को पढ़ाने वाले १० अध्यापक थे। विशाल मन्दिर में प्रतिदिन १०० धर्मोपदेशक उपदेश दिया करते और विद्यार्थी इनमें सम्मिलित होते थे।^१ चीनी यात्री ह्यून स्यांग बतलाना है कि यहाँ सुदूर विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। इसकी चौमंजिल इमारतों, रंग विरंगे दरवाजों, कढ़ियों, छतों

औरस्वम्भों की सुन्दरता देखकर लोग मोहित हो जाते थे । यहां कई बड़े पुस्तकालय और छः बड़े विद्यालय थे ।' अध्यापकों के सम्बन्ध में पर्यटक कहता है कि 'उनका जीवन पवित्र और सरल था । उनकी विद्वता का सिक्का दूर देशों में जमा हुआ था ।'

छात्रावास—

छात्रावास का भी वर्णन यात्री की जबानी सुनिए—विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था, प्रत्युत उन्हें आवश्यक वस्तुएं-भोजन वस्त्र औषधि आदि मुफ्त दी जाती थी । उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को एक अच्छा कमरा और छोटी श्रेणी के विद्यार्थियों को साधारण कमरा दिया जाता था ।^{११२}

तत्तशिला—

भारत के प्राचीन इतिहास में तत्तशिला अपने विश्वविद्यालय के लिये विशेष विख्यात है । प्रसिद्ध वैयाकरणों पाणिनि और अद्वितीय वैद्यकला प्रवीण जीवक के जन्म स्थान होने का भी इसे परम सौभाग्य प्राप्त है । सुप्रसिद्ध भारतीय विद्वान डाक्टर राधा कुमुद मुखोपाध्याय बतलाते हैं कि 'प्राचीन तत्तशिला सदृश्य विश्व-विद्यालयों में ६४ कलाओं की शिक्षा दी जाती थी ।'^{१३} एक दूसरे पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि यहां दूरस्थ देशों के लोग और बड़े बड़े राजवंशों के राजकुमार शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे ।^{१४}

निवेदिता कुछ भारतीय विश्वविद्यालयों के उनकी विशेषता की दृष्टि से वर्गीकरण करती हैं—'दक्षिण वेदाध्यन के लिये महान

12. Buddhist records of the Western world. Vol, 11,

13. Nationalism in Hindu culture, Page, 81

14. Historical glances Page, 1, 2

था आज भी कांजीवरम और समस्त दक्षिणि संस्थाएं मशहूर हैं। इसी भान्ति बंगाल में नदिया न्याय के लिए और दक्षिण के नासिक और पाण्डुरपुर अपनी अपनी अलग विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध थे। व्याकरण, दर्शन आदि के लिए बनारस मशहूर था। अब भी वहां बड़े विद्वान हैं।^{१५} १७वीं शताब्दी के मध्य में आने वाला फ्रांसीसी यात्री भी बनारस के विश्व-विद्यालय और वहां के विशाल पुस्तकालय की सूचना देता है।^{१६} श्रीमती एम० ई० नोबुन केनहेरी और ऐलीफेन्टा दो विद्यापीठों का और पता देती है।^{१७} 'कि' महोदय प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—'ब्राह्मण शिक्षकों ने केवल एक ऐसी शिक्षा पद्धति की स्थापना ही नहीं की जो राज्यों के विध्वंस और समाजों के परिवर्तन के पश्चात्य भां जीती जागती बनी रही वरन इन्होंने सहस्रों वर्षों तक उच्च शिक्षा प्रदीप को भी प्रज्वलित रखा। उनमें से ऐसे दार्शनिक उत्पन्न हुए जिनकी द्वाप भारत की शिक्षा पर ही नहीं वरन समस्त संसार के बौद्धक जीवन पर लगी है।'^{१८}

स्त्री शिक्षा—

भारत में ब्रिटिश शासन का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित होने से पूर्व स्त्री शिक्षा की व्यवस्था का वर्णन लाहौर गवर्नमेंट कालेज के प्रथम प्रिंसिपल की जवानी सुनिए—'पंजाबी स्त्रियां न्यूनतम संख्या में स्वयं शिक्षिता नहीं होती थीं प्रत्युत दूसरों को भी शिक्षा देती थीं। ब्रिटिश अधिकार में आने के पूर्व दिल्ली में ६

5. Foot falls of Indian History, Page, 352

16. Travels in the Mugal Empire, 341,

17. Foot falls of Indian History, Page, 165

18. Ancient Indian Education Page, 57

मावर्जनिक कन्या पाठशालाएं चलाती थीं। १८८२ ई० में शिक्षा मन्त्रालयी जांच कमीशन के सामने गवाही देते हुए जो बयान दिया था, उसी के कुछ उदाहरण यहां पर पेश किये जाते हैं—देशी गार्ज्यो और ब्रिटिश राज्य में निस्सन्देह बहुत सी स्त्रियां पढ़ सकती हैं। चनाब और अटक के बीच के जिलों में सिक्ख महिलाओं के लिए देमी स्कूल सदैव से चले आ रहे हैं। पुरोहितों को स्त्रियां अपनी समाज की अन्य स्त्रियों के पास जाकर पढ़ावें—यह ठीक ही है। + + + धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, सौना पिरोना गोटा पट्टा करना, गृहस्थी के लिए अत्यन्त सावधानी के साथ भोजन पकाना, सफाई से रहना, दुःख में कोमल व्यवहार, षरेलू भगड़ों का नमी से निपटारा आदि गृह शासन की विशेष बातें ये जानती हैं। १९ सन १८८५ ई० में संयुक्तप्रान्त और पंजाब में लोगों के घरों पर उनकी निजी पुत्री पाठशालाएं थीं। शिक्षा का वर्णन जो विदेशी इतिहासज्ञों और विद्वानों की जवानी कराया गया है, यह उस अशान्ति और राजनीतिक संघर्ष के समय का है जब भारत के भाग्याकाश में चारों ओर से काली घटा घिर चुकी थी। इससे एक दो शताब्दी पूर्व की अवस्था स्वयं पाठक सोचें। भारतीय प्राचीन राजे महाराजे और सुगल सम्राट तक इस ओर कितना ध्यान देते थे इसका आभास बेंलारी जिले के कलेक्टर ए० ड० कैम्पबेल की १८२३ की रिपोर्ट से मिलता है—
'+ + पूर्वकाल में राज्य की आय का एक बहुत भाग विद्या की उन्नति और प्रचार में व्यय किया जाता था, जिससे राज्य के सम्मान की वृद्धि होती थी। हमारे शासन में वह भाग घट कर बहुत ही कम रह गया है और उसका भी उपयोग विद्या को प्रोत्साहन देने के बदले अविद्या की वृद्धि करने में किया जाता

है। पहले राज्य की ओर से विद्या को प्रचुर सहायता मिलनी थी, उसके बन्द हो जाने के कारण, अब विद्या को केवल उदार व्यक्तियों को अनिश्चित दान पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत के इतिहास में विद्या के इस प्रकार के पतन का दूसरा समय दिखाना कठिन है.....।” अब जरा इस से एक शताब्दी पूर्व १७२३ ई० की कम्पनी की एक सरकारी रिपोर्ट को देखिए— जिसमें ग्राम्य शिक्षा का उल्लेख किया गया है:—

‘ब्रिटिश भारत के अनेक भागों के किसानों की दशा शिक्षा प्रचार की दृष्टि से इतनी ऊंची है कि इस विषय में किसी भी देश के किसानों की तुलना नहीं की जा सकती।’

केवल १०० वर्षों में ही भारतीय शिक्षा कहां से कहां पहुंच गई। इन दो रिपोर्टों का तुलनात्मक निरीक्षण हो पाठकों को इस भयानक पतन का दिग्दर्शन करा सकता है। इस विगड़ी दशा में भी अंग्रेज हम से कुछ सीखते रहे। इन्होंने यहाँ की ग्राम्य पाठशालाओं की प्रणाली पर इंग्लैण्ड में जाकर शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की। ३ जून सन १८१४ को कम्पनी के डाइरेक्टरों द्वारा बंगाल गवर्नर को भेजे हुए पत्र के एक अंश में इसे भी पढ़िए:—

“भारत में जो शिक्षा प्रणाली वहाँ के आचार्यों के आधीन अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है, उसकी इस देश में अधिक प्रशंसा हुई है। वहाँ तक कि वह प्रणाली मद्रास के भूतपूर्व पादरी रेवरेण्ड डाक्टर वेल की देख रेख में इस देश में प्रचलित की गई है। हमारी राष्ट्रीय संस्थाओं में इस समय उसी पद्धति से शिक्षा दी जाती है क्योंकि हमें विश्वास हो गया है कि इससे भाषा

का सीखना और सिखलाना बहुत ही सरल हो जाता है ।

कहा जाता है कि हिन्दुओं की इस प्राचीन और उपयोगी न्याय को राजनीतिक क्रान्तियाँ भी कोई धक्का नहीं पहुंचा सकीं । पंजाब शिक्षा विभाग के भूतपूर्व सर्वोच्च अधिकारी डाक्टर लिटनर महोदय भी मुकंठ से स्वीकार करते हैं कि—जिस प्रकार भारती कला कौशल के आदर्श के आधार पर वर्तमान अंग्रेजी कलाकारों की कला का विकास हुआ है, उसी प्रकार भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति से इंग्लैंड के स्कूल भी प्रभावित हुए हैं ।^{२२} मिस्टर हाई अम० एम० ए० सी० एस० एस० ने भी इस भारतीय ऋण को माना है किन्तु बहुत संकुचित रूप में—‘ षट् के अन्दर ! स्त्रियों, वह पुस्तक भारतीय विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल है ।^{२३}

प्रचीन भारत वह पुण्य पावन देश है जहां से दुनिया के शेष सभी देशों ने अपनी सभ्यताएं सीखी हैं । फिर अंग्रेजों का कहना ही क्या, यह तो अभी कल अंधकार से निकल कर आखें मीचते प्रकाश में आए हैं । डाक्टर लिटनर जैसे पंडित भी इस महान देश के प्रति अपनी अद्राज्जलि समर्पित किए बिना नहीं रहते । आपके ही शब्दों में—इस सूर्य के देश ने अपने पुत्रों को आवश्यक्ता से भी कहीं अधिक प्रतिभा प्रदान कर रखी है ।’

एशिया—

एशिया का प्राचीन नाम जम्बूद्वीप है, भौगोलिक आकृति भी नाम के ही अनुसार है । स्वर्गीय डाक्टर एनीबिसेन्ट भी प्रोफेसर राधाकुमुद मुकर्जी का अनुमोदन करती हुई स्वीकार करती हैं कि ‘अशोक’ जम्बू द्वीप और भारतवर्ष का सम्राट

^{२२} Unhappy India, See also Blue books

^{२३} See Pioneers of Progress,

था । २४ आज भी किसी शुभ कार्य में हाथ डालते समय हिन्दू अपने उन वैभव के दिनों को स्मरण कर जम्बू द्वीप के साम्राज्य को याद कर लेते हैं । २५ यह महाद्वीप एक दिन इनकी ही छाया में पलता था । इन्हीं की ध्वनी को प्रतिध्वनि करता था किन्तु काल कि विकराल चाल ने कलम के द्वारा आज हमें इसी ध्रुव सत्य का प्रमाण खोज कर चित्रित करने के लिए विवश कर दिया है । इसे एशिया क्यों कहते हैं, यह कर्नल जेम्स टाड की जबानी सुन लीजिए—‘द्यमिदा (Deomida) और भजस्व (Bajaswa) ‘इन्दु’ (चन्द्र) वंशीय नाम की एक जाति थी वही इसके अधिकांश देशों पर अपना अधिकार विस्तृत किये थी, तभी से इसका नाम अश्व से बदलते २ एशिया बन गया । अब इसके विभिन्न देशों का पृथक् २ वृत्तान्त सुन लीजिए—

चीन—

कर्नल टाड बतलाते हैं कि चीन और तातार की वंशावलियों से विदित होता है कि ये लोग हिन्दू सम्राट के पुरुरवा के उत्ताराधिकारी ‘अवर’ की सन्तान हैं । २६ सर विलियम जॉस भी चीनियों का आदिम स्तोत्र हिन्दु बतलाते हैं । २७ सब से पहला सुसलमान यात्री सुलेमान भी लिखता है—“वहां (चीन) की धार्मिक बातें भारतवर्ष से ली गई हैं ! भारतवासी निस्सन्देह उनके धार्मिक गुरु हैं । २८

24. A birds eye view of Indias past as the foundation of India's future Page 61

25 ओ३म् तन्मन् ओ ब्राह्मणो द्वितीय प्रहराद्धे दैवस्वन मन्वन्तरेऽथविश-
न्तिमे कवियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे..... ।

26. Annals of Rajasthan. Vol, I Page; 35, and 37.

27. Annals of Rajasthan. Vol, I Page. 35, and 37.

28. सुलेमान सैदागर पृ० ८४

स्युकिंग (Schuking) चीनी ग्रन्थ में लिखा है कि ईसा से २२०० वर्ष पूर्व फोई नामक एक सज्जन के साथ चीन वालों के पूंज गए थे। वे लोग चीन के पश्चिमवर्ती पहाड़ प्रान्त से आये थे। चीनके पश्चिम प्रान्त हैं कौन ? काश्मीर पंजाब तिब्बत आदि और यह हैं प्राचीन भारत के अंग।

पेरिंग विश्वविद्यालय परिषद् के प्रधान लियांग चिचाव नत मन्तक होकर स्वीकार करती हैं कि 'हमें अपनी लोक कथा से मान्य होता है कि सम्राट शिन्जि हुआंग के समय इस देश में कुछ हिन्दु थे। + + + ६७ ई० से १६६ ई० तक ३७ हिन्दु विद्वान चीन आये। इस संख्या में पूर्वीय और पश्चिमीय तुर्कि-मान से आने वाले हिन्दुओं की संख्या सम्मिलित नहीं।..... मुझे यह कहते हुए अभिमान होता है कि भारतीय विचार हमारे अनुभव के संसार में पूर्णतया सम्मिश्रित होकर हमारी चेतना का अभिप्रांश बन गये हैं। ओकाकारा बड़े मार्केकी बात बतलाता है कि केवल लियांग प्रान्त में दस हजार भारतीय परिवार और तीन हजार भारतीय साधू थे, जो भारतीय धर्म सभ्यता एवं कला का प्रचार करते थे।" २६ प्रोफेसर हीरन महोदय के अनुसार 'चीन' नाम ही भारतीय है।

इतने अधिक दातव्यों को शिरोधार्य कर प्राचीन चीन को वृद्ध भारत की गोद का पाला हुआ ज्येष्ठ पुत्र कहने से कौन इन्कार कर सकता है।

जापान—

चीन की भान्ति जापान भी भारत का पुराना चेला है। जापानी विद्वान जे० टाका क्यूसो लिखते हैं कि प्राचीन में भारत का बौद्धिक एवं भौतिक पर्याप्त प्रभाव जापान पर पड़ा था।

+ + कितने ही भारतीय जापान आये थे एक ब्राह्मण भारद्वाज ने अन्य पुरोहितों के साथ चम्पा होते हुए ओसाका और नारा आकर संस्कृत सिखाई थी।^{३०}

जापानी वर्णमाला का आविष्कार भी संस्कृत के आधार पर हुआ है। डाक्टर विन्टरनिटज (Winternitz), जापानी साहित्य की समालोचना करते हुए लिखते हैं कि जापानी कविता का अलङ्कार भी हिन्दू ग्रन्थों से लिखा गया है। यही नहीं जापानी पुराणों में दाई नीची का वर्णन मिलता है जिसका अर्थ है “महान्सूय” !

तुर्किस्तान—

तुर्किस्तान और समस्त उत्तरी एशिया में हिन्दुओं का राज्य था। संस्कृतज्ञ मैक्समूलर का कथन है कि ‘तुर्की की ही सन्तान तुरानी थे।^{३१} टाड साहब लिखते हैं कि तर्क का पुत्र तमक हिन्दू पुराणों का नरिक्तक हैं।^{३२} यह अभिशप्त हो कर देश छोड़कर चले गये थे, इन लोगों ने ही तुर्किस्तान का उपनिवेश बसाया था। मिस्टर जे० टाका क्योसो ने भी तुर्किस्तान में हिन्दू प्रवारकों के निरन्तर आने जाने का अनुसन्धान किया है। चीनी यात्री फ्राहियान के भी यात्रा वर्णन से पता चलता है कि चीनी तुर्किस्तान में उसके समय में भारतीय रीति रिवाज प्रचलित थे और लोग बौद्ध धर्म के अनुयाई थे। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि तीसरी चौथी शताब्दि तक यह देश अपूर्व पुरुषों के पद चिन्हों का अनुसरण कर बराबर अहिंसा परमोधर्म का पाठ याद

30. Journal of the Royal Asiatic Society for 1905 Page, 872, 873

31. Science of Language, Page, 245

32. Tod's Rajasthan Vol, Page. 103

करता रहा। अन्त में तलवार की धार पर फैलने वाला इस्लाम इन्हें भी निगल गया।^{३३}

खुरासान—

इतिहासवेत्ता जेम्स टाड ने जैसलमीर के प्राचीन इतिहास पत्रों से पूछ ताँछ कर पता लगाया है कि चन्द्रवंशी यदु और बह्लिक जाति ने महाभारत युद्ध के पश्चात्क खुरासान में राज्य स्थापना की। इनके अतिरिक्त पराजित कौरव लोग भी इधर उधर जा बसे थे।

जुविलस्तान—

यह देश भी समरकन्द तक और गजनी तक कृष्ण के पुत्रों ने बसाया था।^{३४} यह भी महाभारत के बाद बसे और इस्लाम के उभार के साथ हिन्दुओं के हाथ से निकल गये।

अफगानिस्तान—

प्राचीन भारत में अपवंश नाम की एक जाति थी, उसमें अपगण नाम का एक मनुष्य हुआ है। उसी की सन्तान अफगान नाम में प्रसिद्ध हुई। अफगान और प्राचीन भारत का बहुत पुराना सम्बन्ध है। महाभारत काल में राजा धृतराष्ट्र का विवाह यहां की राजकुमारी गान्धारी से हुआ था। दिग्विजय करते समय पाण्डव यहां के राजा के मेहमान बने थे। बौद्धकाल तक यह देश भारत का एक अंग रहा है। महाराज जसवन्तसिंह और मानसिंह ने इसे पुनः विजय किया था। कर्नेल टाड लिखते हैं कि जैसलमीर का राज्य विक्रम सम्वत् से पूर्व गजनी से लेकर समरकन्द तक फैला था।^{३५}

33. Tod's Rajasthan Vol, 1, Page, 43

34. Tod's Rajasthan, Vol, Page, 43

35. See Tod's Rajasthan, Vol, I

साइबेरिया—

महाभारत के सर्वनाशी युद्ध के बाद बहुत सी सूर्य और चन्द्र-वंशी जातियां भारत को छोड़ कर सुदूर देशों में जा बसी थीं। इन्हीं में से कुछ लोगों ने जाकर साइबेरिया में अपना राज स्थापित किया था जिसकी राजधानी थी वज्रपुर। जब इस देश का राजा किसी युद्ध में मारा गया, तब श्रीकृष्ण के तीन पुत्र प्रद्युम्न, गद और शम्भु बहुत से ब्राह्मणों और क्षत्रियों को ले कर गए। इन तीनों में बड़ा भाई वहां की गद्दी पर बैठा। श्री कृष्ण की मृत्यु पर ये लोग पुनः द्वारिका आये थे।^{३६} साइबेरिया और फिजिलैण्ड के प्रदेशों में यदुवंश की दो जातियों का होना इतिहास में मान्य होता है। ये दोनों ही चन्द्रवंशियों की सन्तानें थीं। एक का नाम श्याम-यदु (Sam oyedes) और दूसरी का जादों (Jhonces) है।

ब्रह्मा—

ब्रह्मा का नाम, धर्म, रीति रिवाज सब कुछ भारतीय रङ्ग में रङ्गे हैं। मिस्टर विल्सन के शब्दों में ब्रह्मा और तिब्बत की सम्भवता भारत से ली गई है। सर ए० पी० फेयर भी बतलाते हैं कि लोअर ब्रह्मा अथवा पीगूतेलगू राज्य से आये हुए लोगों द्वारा जीता गया था।^{३७} आज भी बर्मा भारत का एक भाग है।

भारती उपद्वीप समूह

कर्नल टाड महोदय बतलाते हैं कि यह उपद्वीप समूह (Isles of the Archipelago) सूर्यवंश के क्षत्रियों द्वारा बसाये गए थे। उनकी देवगाथायें और वीरता के इतिहास मन्दिर की दीवारों 36. दन्तिन, हरिवंश पुराण विष्णु पर्व, अध्याय ६७

और पुस्तकों में अङ्कित हैं।^{३८}

कम्बोदिया—

संस्कृत 'कम्बोज' का अपभ्रंश है। सन १८८२ में एक फ्रांसीसी ने यहां एक मन्दिर ढूँढ निकाला था, जिसके लेखों से मालूम होता है कि यह प्राचीन भारत के साम्राज्य का एक भाग नहीं तो उपनिवेश ज़रूर था।^{३९} मिस्टर हवेल साफ लिखते हैं कि ईसा की चौथी शताब्दी में तक्षशिला के आस पास के प्रदेश जिसे कम्बोज कहते थे, लोगों ने जाकर यहां उपनिवेश बसाये थे, और अपने देश के ही नाम पर इसका भी नाम कम्बोज रखा था।^{४०}

इतिहासवेत्ता फर्गुसन कहते हैं—‘अमरावती के विशाल खण्डहर बतलाते हैं कि कृष्णा और गोदावरी के मुहाने से उत्तरपश्चिम भारत के बौद्धों ने पीगू कम्बोदिया और जावा के उपनिवेश बसाये थे।^{४१} आधुनिक कम्बोदिया के यात्री एन० ए० पीरूमल को वहां की नृत्यकला का निरीक्षण कर भारत की याद आ गई। आप लिखते हैं आज भी उनके जीवन में भारतीय सभ्यता का गहरा प्रभाव है।^{४२}

जावा—

इतिहास लेखक एलिफ्रिन्स्टन का कथन है—‘जावा के इतिहासों से मालूम होता है कि बहुत से कार्लिंग के हिन्दुओं ने यहां आकर बस्तियां बसाईं, लोगों को सभ्यता सिखाई और अपना सम्बन्ध चलाया। इस सम्बन्ध का आरम्भ ईसा के ७५ वर्ष पूर्व से होना है।^{४३} मिस्टर सिवेल लिखते हैं कि इस के पश्चात् जावा

38. Tod's Rajasthan, Vol II. Page P18 foot note

39. The Indian mirror, 2nd Sept 1882,

40. Indian Sculpture and Painting, Page, 136

41. Indian Architecture.

42. The Hindu illustrated weekly, Dec 31, 1933

43. History of India, Page 168

को गुजरात देश का एक राजकुमार ई०३ ईस्वी में ५००० व्यक्तियों को लेकर वहां पहुंचा और मतंगम नामक स्थान बस गया। कुछ काल बाद २००० दो हजार बौद्ध वहां पहुंचे और उन लोगों ने बौद्धमत का प्रचार किया। ४४

वोनियो—

डाल्टन साहित्य लिखते हैं कि इस द्वीप में स्थान २ पर हिन्दू धर्म के चिन्ह मिलते हैं। पर्वत कन्दराओं और खुले मैदानों में हिन्दू जैसे मन्दिरों के खण्डहर दिखाई देते हैं। समुद्र तट के लगभग ४०० मील की दूरी पर बहु नामक स्थान पर कई मन्दिर हैं, जिनकी कला उत्कृष्ट है। ये सब हिन्दू उपासना स्थानों के ही समान हैं। ४५

वाली—

जावा के पूर्व में बसे हुए द्वीप का वर्णन करते हुए सर स्टाम फर्ड रेफिल्स लिखते हैं—यहां केवल ब्राह्मणों का धर्म ही नहीं प्रत्युत प्राचीन भारतीय स्थानीय शासन प्रबन्ध की शैली भी मिलती है। ४६

सुमात्रा—

यह द्वीप भारत के पूर्वी समुद्री किनारों के लोगों द्वारा बसाया गया था। ४७ इतिहासकार कोल मैन एडर्सन का हवाला देकर लिखते हैं कि उन्हें वहां एक विशाल दूटा हुआ मन्दिर और मूर्तियां मिली हैं जो साफ तौर पर हिन्दुओं की मालूम होती हैं। ४८

43. Royal Asiatic Society Journal Page, 402 (1906)

45. Asiatic Society Journal Vol, VII, Page 153

46. Description of Java, Vol, 11. Page, 286

47. R. A. S. Journal Vol, XVII.

48. Hindu mythology Page, 361

म्याम—

म्याम की कहावतों और इतिहास से पता चलता है कि यहां बुद्ध के जन्म से पहिले भी हिन्दू आबाद थे । यहां ४२० ई० में चिन्टिन्य नाम का एक ब्राह्मण आया था । पान पान देश के लोगों ने उसे अपना सम्राट बना लिया । इसके पश्चात् ४०२ ई० में अष्टिमिक यहां एक राजा था जिसके दरबार में बहुत से ब्राह्मण थे । यहां के प्रसिद्ध मन्दिर अंगकोर को देखकर एक पार्श्चात्य यात्री निवृत्त है—जिन जिन पार्श्चात्य यात्रियों ने इसे देखा है एक स्वर से कहते हैं कि उन्होंने संसार में अन्यत्र कहीं ऐसा मन्दिर नहीं देखा । इसका बनना हिन्दुओं के काल में शुरू हुआ था और सम्पूर्ण होते २ यहां बौद्धमत फैल गया । ४६

कोचीन चीन—

मिस्टर रीस डेविड लिखते हैं कि चम्बा और भागलपुर के लोगों ने यहां आकर वस्तियां बसाई थीं और अपने देश के नाम पर ही इसका नामकरण संस्कार किया था । ४०

यह समस्त द्वीप हिन्दुओं के उपनिवेश थे । चीनी यात्री इत्सिङ्ग १० हिन्दू उपनिवेशों के नाम गिनता है, जिनमें हिन्दू रीतों, रिवाज, धर्म और संस्कृति का अध्ययन उस समय प्रचलित था । ४१ भारतीय प्रभाव की धुंधली छाप आज भी इन द्वीपों में मौजूद है इनमें से कितने ही अब तक हिन्दू धर्म को किसी न किसी अंश में मानते हैं ।

आस्ट्रेलिया-

आस्ट्रेलिया में भी हिन्दुओं के पहुंचने और उपनिवेश स्थापित

40. Hindu Superiority, Page 143, 144

41. Subhist, India, Page, 35

42. इत्सिङ्ग की भारत यात्रा ।

करने का पता चलता है। हिन्दू जाति का प्रभाव चलाने वहाँ अनेक चिन्ह मिलते हैं। उनमें प्रधान एक बामरंग नामक अस्त्र है। इसकी यह विशेषता है कि यह अस्त्र निशाना चूकने पर चलाने वाले के पास पुनः वापस आजाता है। यह वश अस्त्र है जिसका प्रयोग महाभारत काल में अर्जुन और कर्ण ने किया था।^{५२}

एक दिन भारत की विशाल हिन्दू जाति ने वसुन्धरा के कोने को दूँढ़ २ कर, लोगों को गिरि गुफाओं से निकाल कर सभ्यता का आलोक दिखलाया था, सर्वत्र अपने उपनिवेश स्थापित कर सुख शान्ति की स्थापना की थी। यह आज योरुप अमरीक आदि पाश्चात्य देशों के प्रकाण्ड पण्डित नत मस्तक हो कर एक स्वर से स्वीकार करते हैं।

भारत के प्रकर्ष का इतिहास आज इस भूमि में ही नहीं भू-भाग के प्रत्येक कोने में छुपा पड़ा है। ज्यों २ भू-भर्ग टटोल जायगा, त्यों २ संसार को हक्क बक्का करने वाला कोई न कोई भारत की पुरानी किस्मत का टूटा फूटा सितारा चमक उठेगा! हम कौन थे, और क्या बन गये ! यही सोचने की चीज है।

52. See Military science



भारतीय सभ्यता का विस्तार



विश्व के विशाल स्टेज पर भारत का ही सर्वा पूर्ण अवतरण हुआ था। विस्तृत संसार को उसने ही ज्ञान की मशाल जलाकर ज्ञान के अंधकार से बाहर लाकर सभ्यता का पाठ पढ़ाया था—इस आज दुनिया के प्रायः सभी विद्वान एक स्वर से स्वीकार करते हैं। पाश्चात्य पण्डित आज भी जम्बू द्वीप को Torch bearer Asia कह कर सम्बोधित करते हैं। भारत ने मानवता उद्धार के लिये विदेशों की ओर किस शुभ मूर्त में कदम उठाया था—शुभ पयान की वह पुनर्ततिथि वसुन्धरा के किसी भी पत्र पृष्ठ पर अङ्कित नहीं, ओर होती भी कैसे? लोगों को इतना ज्ञान ही कहाँ था, हाँ बूढ़ा भारत अपने पुराने पञ्चागों को उलट कर कुछ अवश्य बता देता किन्तु वह सदियों पूर्व बर्बर विदेशियों के हम्मामों को गर्म करने में ईंधन बन गए!

भारत का नाम एक दिने दुनिया के बच्चे बच्चे की जवान पर था। संसार उसके झण्डे के नीचे एकत्रित होता था और वह प्रेम पूर्वक सभी को अपना कुटुम्ब समझ कर छाती से चिपकाये हुए था। अनुभवी विद्वान, “टर्नर आफ इण्डिया” के भूतपूर्व सम्पादक सर स्टेनली रीड बतलाते हैं कि अत्यन्त पुरातन काल से ही भारत ने बाह्य संसार को बहुत कुछ दिया, यह बात कम महत्वपूर्ण नहीं है कि उसका निर्यात मानवों के देशान्तर्गमन (Human migration) की अपेक्षाकृत विचारों के ही रूप में था? कांट जर्नास्टर्जनी भी इसी का समर्थन करते हुए कहते हैं

कि आर्यवर्त केवल ब्राह्मण धर्म का पालना नहीं । प्रत्युत हिन्दुओं की उस उच्च सभ्यता का उत्पत्ति स्थान है जो शनैः शनैः पश्चिम में एथियोपिया (Ethiopia) मिश्र, फोनोशिया (Phoenos) पूर्वी में चीन, जापान, दक्षिण में लंका, जावा सुमात्रा और उत्तर में फारस, काल्डिया (Caldoea) और कोलचिज (Colchis) तक फैल गई, वहां से भारतीय सभ्यता की यह लहर यूनान और रोम आदि में फैल गई ।”^२ पी० आर० गोडले० जी० एस० आई, सी० आई० ई० ने भी प्रबल प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि प्राचीन संसार का भारत के साथ निकटतम सम्बन्ध था ।^३ अब जगत् इसी बात को पश्चात्य पण्डित एस० डेल्वास् के शब्दों में भी सुन लीजिए । भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रभाव हमारे चारों ओर निरन्तर विद्यमान है । वह देश देशान्तरों में भी परिव्याप्त है । अमरीका और योरुप में सर्वत्र दिखाई दे रहा है । यह वही सभ्यता है, जिसका जन्म स्थान गंगातट है ।”

कर्नल अल्काट सहोदय भी तुलनात्मक भाषा विज्ञान के अध्यापक और संस्कृत साहित्य का अन्य भाषाओं से मिलान कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आर्य सभ्यता पश्चिम में पहुंची । आगे चलकर अपने चिर अन्वेषण के आधार पर आप बतलाते हैं कि मिश्र, यूनान, रोम और उत्तरी योरुप के दर्शन शास्त्र भारतीय विचारों से परिपूर्ण हैं ।^४

प्रख्यात चर्लिस सहोदय कहते हैं कि इतिहास के श्रीगणेश के साथ आर्य संसार का इतना विस्तार था कि उसने योरुप के कुछ इधर उधर के भागों के अतिरिक्त उत्तरी रूस तक और एशिया में, एशिया माइनर, काकेशिया, आर्मेनिया मेडिया, पशिया और

2. Theogony of the Hindus Page, 168

3. India: The New Phase

4. The Theosophist, March 1881

विक्टोरिया तक प्राचीनतम आर्यों की सीमाएं थीं।^५

किन्तु योरूपियन इतिहास में इस बृद्धे भारत की जवानी के चिलचिलाते दिनों की दास्तान बनाने की योग्यता ही कहाँ ! भारत भाग्य ने महाभारत काल में गहरा पलटा खाया। इसी समय में इस देश ने विदेशी भूमि के साथ अपना प्रेम सूत्र भी मुटुड़ कर लिया। अस्तु इस पल्ले को ही पकड़ कर भारतीय सभ्यता का विदेशों में विस्तार ढूँढना भी ठीक है।

यह बात स्मरण रखना चाहिये कि महाभारत काल में विदेशों में जाकर भारतीयों ने अपने सम्बन्ध को पुनः दृढ़ किया।

वास्तव में महाभारत के सर्वनाशी युद्ध ने संसार के इतिहास का एक प्रकाशमान पन्ना उलट कर भारत भाग्याकाश को सदैव के लिए काली घटाओं से आच्छादित कर दिया। इसने इस देश के गौरव, ऐश्वर्य और सभ्यता पर ऐसा भीषण प्रहार किया कि यह आज तक भी सिसक रहा है। कलयुग के प्रारम्भ अर्थात् डाक्टर एनिविसेन्ट^६ के शब्दों में ईसा से ५००० वर्ष पूर्व से लेकर आज तक इस विशालोद्यान ने दुबारा उस वसन्त बहार को देखा ही नहीं। इस महानाश में हजारों, लाखों नहीं करोड़ों महापरजामी यादवा, विज्ञान विशारद और महान आत्माओं का संहार हुआ। अत्यन्त प्राचीन काल की विकसित सभ्यता, ज्ञान, विज्ञान, और कला कौशल का हास हो गया।

इतना ही नहीं अत्यन्त असंख्य शक्तिमान, धीमान और विविध विज्ञान कला विशारद अपने साथ अवशिष्ट ज्ञान के प्रकाश को लेकर वसुन्धरा के विभिन्नभागों में जाकर बस गए।

5 Aryan Race, Page, 291.

6. A bird's eye view of India's past as the foundation for India's future. Page 3.

वहां भारतीय सभ्यता की कला का प्रभाकर पूर्ण प्रताप से प्रोजासित हुआ। यह है भारत की बर्बादी और दुनिया की आवादी की दुर्द भरी दास्तान। इतिहासज्ञ पैकाक तक भी दुखित हृदय से इसकी दास्तान कहानी कहते हैं—‘भारतीय युद्ध के सदृश भयानक परिणाम वाली घटना कदाचित्त ही और कोई घटी हो। इसके कारण अणुगणित भारतीय स्वदेश को छोड़ कर चले गए। इनमें कितने ही प्राचीन सभ्यता के अद्वितीय ज्ञाता और इससे भी अधिक शास्त्र विद्या विशारद सैनिक थे। .. ये लोग योरुपियन लोगों के लिये कला एवं विज्ञान के लिये कीटाणु ले गए। शक्ति सम्पन्न मानव ज्वार जिसने पंजाब की सीमा को पार किया, योरुप तथा एशिया में पहुंच कर विश्व के नतिक उत्पादन के लाभकारी स्थान को परिपूर्ण किया।’^७

इस भान्ति अब तक ज्ञान के अलोक को ग्रहण करने वाला संसार, भारतीय ज्ञानियों और विज्ञानियों, योद्धाओं और कलाकारों को भी मां की गोद से अपनी ओर खींच ले गया। विश्व सम्पन्न बन गया और हम हो गए विपन्न, इतिहासकार सी० मारिस बतलाता है कि “समस्त विजित भूभाग पुनः हाथ से निकल गये और सौलहवीं शताब्दी के शुरु में आर्य जाति के अधिकार में कुछ भी न रहा।”^८

अफ्रीका मिश्र—

पुरातत्व इतिहास वेत्ताओं की गम्भीर गवेषणाओं और अथक परिश्रम ने यह बात प्रमाणित करदी है कि पृथ्वी के प्रत्वेक भू-भाग में यशस्वी आर्यों ने प्रतापी साम्राज्य की स्थापना कर अपनी सभ्यता को जगतव्यापी बनाया था। आज विश्व के उन्हीं

7. India in greece, Page 27.

8. Aryan Race, Page 91.

श्रेष्ठों में प्राप्त होने वाले स्मारक चिन्ह आयों की महान किति का परिचय दे रहे हैं। संसार में मिश्र की सभ्यता प्राचीनता की दृष्टि में अपना विशेष महत्व रखती है, अस्तु सर्व प्रथम वहीं पर हिन्दू सभ्यता के प्रभाव का पता लगाना भी आवश्यक है। कर्नल अल्काट कहते हैं कि “अपने इतिहास के अनुसार मिश्री लोग एक रहस्यमय भू-भाग, पवित्र पुंट (Punt) से आये थे, जो इनके देवताओं का असली आवास था..... हम देखते हैं कि यह पुंट (Punt) कोई अन्य स्थान नहीं प्रत्युत भारत था। भारत ने ८००० वर्ष पूर्व अपने देश का एक दल बाहर वसने के लिये भेजा था जो कि अपनी उच्च सभ्यता और कला को लेकर वहां गए थे जिसे आज (Egypt) या मिश्र कहते हैं।”^९ इतिहास के प्रकाण्ड पणित पेकाक अपने चिरकालीन ऐतिहासक अन्वेषण के आधार पर भारतीयों द्वारा मिश्र में सभ्यता प्रस्तार के निम्नाङ्कित कारण पेश करते हैं। १ मिश्री दरयाओं और प्रान्तों के नाम भारत से लीए गये हैं। २—राजाओं के नामों में भी समता है जैसे राम और रामसेस (Ramases) ३—मूर्तिपूजा कला के बहेश्य और भवन निर्माण की शैली में भी समता है। ४—शब्दों को अनुवाद करने की शक्ति भी काफी मिलती जुलती है।^{१०} इसके अतिरिक्त संस्कृत और मिश्री भाषा में भी गजब का सामकजस्य है।

9. Theosophist for March 1881.

10. India in greece, Page 201.

संस्कृत		मिश्री	
शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अक	मोड़ना	अक	मोड़ना
अव	आय	अस्	देना
आत्मा	आत्मा	आत्मु	आत्मा
देव	अग्नि	देव	अग्नि

प्रोफेसर हीरेन रंग और शिर की बनावट में मिश्रियों और भारतीय के अन्दर आश्चर्य जनक समानता देलते हैं ।^{११} वास्तव में विद्वान प्रोफेसर का यह प्रमाण कम मार्के का नहीं । अन्यत्र इतिहासान्वेषी हीरेन महोदय ने कुछ बनियों के प्राचीन काल में अफ्रीका जाकर बसने का सुराग लगाया है ।^{१२} विद्वान वेन भारतीय एवं मिश्र साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि, प्रलय उत्पत्ति के सिद्धान्तों, साहित्य और वेद तथा मिश्र धर्म ग्रन्थों में काफी एकता पाई जाती है ।^{१३} पादरी माइकिल रुसले इस विषय में अपने मन्तव्य का प्रकाश करते हैं—“दोनों देशों के निवासी विविध श्रेणियों में विभक्त हैं—ये वर्ग अपरिवर्तनीय हैं—वे लोग भी प्राचीन काल में भारतीयों की भान्ति चार वर्गों को स्वीकार करते थे ।^{१४}

इथोपिया (Ethopia) भी भारतीय उपनिवेश था । सर डब्ल्यू जोस की सम्मति है कि “इथोपिया और हिन्दुस्तान एक

11. Hearn's Asiatic Nations. Vol. II. Page 303.

12. Hearn's Historical Researches, Vol. II. Page 309.

13. Egyptian Religion-Badge.

14. Ancient and Modern Egypt, introduction. Page 24-25.

हो तानि के अधिकार में थे, अथवा थे उपनिवेश !”^{१५} प्राचीन अश्वीनीया में भी सिन्धु के आस पास जाकर लोग आबाद हुए थे।^{१६} कांट जर्नास्टजर्नी बतलाते हैं कि ‘प्राचीन भूगोल पण्डित थोपिया को अफ्रीका के उज भाग से सम्बोधित करते थे जिसे वर्तमानकाल में न्यूबिया (Neubu) अश्वीसीनिया सनावर (Sanaor) डारफर (Darsfu) और डंगोला (Dongola) कहते हैं।’^{१७}

यूनान—

योरुप के इतिहास में यूनान की सभ्यता बहुत पुरानी है। इतिहासज्ञों के कथनानुसार यूनान योरुप का गुरु है। किन्तु सम्मान का यह आसन युनान ने भारत के श्री चरणों में बैठकर ही प्राप्त किया था। विख्यात विद्वान चार्लस मोरिस कहते हैं कि भारतीय और यूनानी कहावतों एवं धार्मिक ग्रन्थों में अपूर्व समानता पाई जाती है।^{१८} कर्नल अल्काट की अनुमति है— वेगेलोनिया, मिश्र, यूनान, रोम और उत्तरी योरुप के दर्शनशास्त्र और धर्म भारतीयों के विचारों से परिपूर्ण हैं। पैथागौरस सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, होमर, जीनो, हीसिवड, सिसरो, वर्जिल, आदि तत्व वेताओं के विचारों की तुलना कपिल, मनु, व्यास, गौतम, बाल्मीकि, कणादि, जैमिन, नारद, मरीच आदि महर्षियों से करने पर स्पष्ट होजाता है कि पश्चिमीय दर्शन शास्त्रों का आधार पूर्वीय दर्शन शास्त्र हैं.....इन विचारों में इतना साम्य है जितना दर्पण

¹⁵ Asiatic Researches. Vol. 1. Page 44..

¹⁶ Haeru's Historical researches, Vol. 11 page 410

¹⁷ Theogony of the Hindus Page 44.

¹⁸ Aryan race Page 244.

के सम्मुख को वस्तु और उसके प्रतिविम्ब में । १९

रामायण और ईलियड के कथानक में अपूर्व समानता है । लखनऊ के भूतपूर्व रेजिमेंट बतलाते हैं कि होमर ने वाल्मीकि रामायण पढ़कर ही ईलियड की रचना की । नीतिकार महाराज मनु ने भारतीय समाजशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था और यूनान में 'मिनोस' ने ! कुछ प्राचीन यूनानी कथाओं के आधार पर 'मिनोस' का स्थान यूनान न था और न ही वह था मनुष्य ! वह सूर्य पुत्र था । २० भारतीय इतिहास के अनुसार महाराज मनु सूर्य वंश के प्रवर्तक थे । यूनानी दार्शनिक गेनोफेनस (Xenophanes) का कथन है कि संसार और ईश्वर वास्तव एक है । यह एक ही सत्य, स्थिर और परिवर्तन शील है । २१ भारतीय वेदान्त की गर्जना है कि प्रकृति और ईश्वर वास्तव में एक है और वह है अविनाशी ! 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' भारतीय वर्ण व्यवस्था और दार्शनिक प्लेटो की वर्ण व्यवस्था भी कुछ मिलती जुलती है । दोनों देशों के उत्पत्ति के सिद्धान्त में भी समानता है । भारतीय दार्शनिक संसार की उत्पत्ति पञ्च भूतों द्वारा बतलाते हैं । उनके कथनानुसार शून्य प्रलयावस्था से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नी, अग्नी से जल और जल से पृथ्वी ! यूनानी दार्शनिक एम्पेडोक्लीस भी वही बतलाता है कि सर्व प्रथम शून्य (Chaos) से आकाश आग, पृथ्वी, पानी और वायु पैदा हुए । २२ इन्हीं समानताओं तथा अन्य प्रबल प्रमाणों के आधार पर इतिहासकार पीकाक

19. Theosophist March, 1881

20. Encyclopaedia, Britanica, 'mimo's'.

21. History of greece Vol. 1. Page 10.

22. W. Ward's History, Literature and mythology of Hinduz P. 21.

बतलाता है कि यूनानियों की भाषा, रीति, रिवाज, नदी-पर्वत वहाँ तक कि इतिहास भी भारत से मिलता जुलता है ।^{२३} प्रसिद्ध पश्चात्य पण्डित आर्थर लिंली गहरे अनुसन्धान पश्चात् अपने मन्त्र का प्रकाश करते हैं 'यूनान' की प्राचीन देवमाला (Mythology) का आधार भारत है ।^{२४} प्रोफेसर राली-विन्सन ने यूनान और भारत के अत्यन्त पुरातन सम्बन्ध का पता लगाया है—कवि होमर भी इस से अपरिचित न था, उसने इन्द्रे इयोपियन का जिक्र किया है । हिरोडोटस (Herodotus) बतलाता है कि इस शब्द का व्यवहार दक्षिणी भारत के द्राविड़ों के लिए किया गया है ।^{२५} प्रोफेसर एच० जी० रीलीविंसन कहते हैं कि सर्व प्रथम लेखक ने लिखा है कि भारत यूनान के भूगोल का पिता है । आप यह भी बतलाते हैं कि प्राचीन यूनानी इतिहास में भारत के आठ नगरों के नाम आये हैं, जैसे कश्यप-पुरा और कन्धार आदि ।^{२६} इतिहास यह भी बतलाता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में कम्बोदिया से ले कर यूनान तक बोल अथवा बाली ने राज्य किया था । उस के सम्बन्ध में प्रोफेसर मोरिस की सम्मति है, कि बाली महाद्वीप भारत का शक्तिशाली सम्राट था । इन समस्त अवतरणों और प्रमाणों से सिद्ध होता है कि यूनान ने पुरातन काल में भारत की छत्र-छाया में ही पलकर योरुप में अग्रगण्य होने का सौभाग्य लाभ किया था ।

पार्श्वीया—

वेदज्ञ मैक्समूलर की राय है कि 'पार्सी', जिन का धर्म

23 India in Greece Page 129.

24 Rama & Homer, Page 62.

25. Herod Vol. 70.

26 Intercourse between India and the western world, Page 18, 19.

जिन्दावस्ता में सुगिद्धत हैं, भारत से देश त्याग कर उत्तर पश्चिम की ओर चले गए थे। और पार्सी (Zoroastrians) उत्तर भारत के विदेशों में बने हुए लोग थे।^{२७} सर डब्ल्यू जॉन्स कहते हैं कि जिदकोष (Duperron's zind Dictionary) में मुझे १० में से ६—७ शब्द शुद्ध संस्कृत के मिले।^{२८} प्लोनी अतलाता है कि 'अवस्ता' (Avesta) शब्द स्वयं हिन्दुओं का है। मुसलमानों के लिए हिन्दू लोग प्रायः 'यवन' शब्द व्यवहृत किया करते हैं। यह शब्द यूनान में पहुँच कर आश-वोनिया (Ionian) बन कर इण्डिया (India) बन गया।^{२९} स्वयं 'एरा' शब्द चन्द्रवंशी पुरुष के पुत्र इला का अपभ्रंश है, जिस से ईरान की उत्पत्ति हुई। मिस्टर हांग ईरानियों और भारतियों की रीति रिवाजों, कहावतों की समानता दिखलाते हुए कहते हैं कि जेन्द अवस्ता के प्राचीन अंशों एवं वैदिक कालीन साहित्य में धर्म विषय बहुतसी समानताएँ पाई जाती हैं।^{३०}

प्रोफेसर हीरेले 'मनुस्मृति' दसवें अध्याय के ४३, ४४वें श्लोक का हवाला दे कर फारसियों को क्षत्रियों की सन्तान म्निह करते हैं।^{३१}

भारतीय इतिहास के प्राचीन पृष्ठ इस बात के जीवित साक्ष्य हैं कि समस्त पर्शियों पर एक दिन भारतीयों का उंचा झण्डा लहरा रहा था। एक स्थान पर लिखा है 'नरक के असुर राजा नरकासुर और उनके मन्त्री मुरु के असुर ने, इन्द्र का राज्य छीन

27. Science of Language. Page 242, 253.

28. Sir W. Jones's works Vol. I, Page 82, 83.

29. Intercourse between India & the western world P. 19, 20.

30. Haug's Essays on the Parsees. Page 287.

31. Historical-Researches Vol. II. Page 22.

लिया था। कृष्ण ने इन्द्र की सहायता की तथा उपरोक्त दोनों आक्रमणकारियों को मार कर 'मुरारी' की उपाधी प्राप्त की। पर्शिया का इतिहास स्पष्ट रूप से बतला रहा है कि इन्द्रदेव (Iddabugash) अमरावती (Elam) का सम्राट था।^{१३२}

पार्सियों की धर्म पुस्तक में बतलाया गया है—'मैंने मनुष्यों को बहुत सुन्दर और उर्वरा देश सौंपा है, कोई भी ऐसा देने की नार्थ नहीं रखता। यह भूमि पर्शिया के पूर्ण में है जहां प्रति सायंकाल तारे चमकते हैं। जार्नस्टर्जन्स कहते हैं कि उपरोक्त स्थान कोई अन्य नहीं प्रत्युत भारत के उत्तर पश्चिमीय प्रदेश है।^{१३३} ईरान के कुछ भागों में असुरों का राज्य था जिसे अर्नोरिया या असुर देश कहते थे।^{१३४} कर्नल टाड के अनुसार इसका नाम मधु भी था।^{१३५} इन्हीं असुरों पर मधु देश में विजय प्राप्त करने के कारण भगवान् कृष्ण मधुसूदन कहलाये थे। कर्नल टाड मंहोदय का यह भी विचार है कि कृष्ण के पुत्रों ने समरकंद और कितने ही अन्य स्थानों को आबाद किया था।^{१३७}

पौराणिक ग्रन्थों एवं आधुनिक इतिहासज्ञों ने प्रबल प्रमाण द्वारा यह स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि स्वर्ण भारत का सिक्का एक दिन पर्शिया की भूमि में चल रहा था।

जिस अमेरिका को १४६८ ई० में खोजने का सेहरा मिस्टर कोलम्बस के सर पर बांधा जाता है, महाभारतकाल में वही पाताल देश अर्जुन की सुसराल था। उस समय धार्मिक एवं राजनीतिक

^{१३२} भागवत पुराण स्कन्ध १०

^{१३३} History of Persia Vol. 1 Page 85, 95, 96.

^{१३४} History of Persia Vol. 1, Page.

^{१३५} Tod's Rajasthan 32.

^{१३७} Tod's Rajasthan, Vol. 1 Page 85.

उद्देश्य को लेकर भारतीय बराबर विदेशों की यात्रा किया करने थे ! महर्षि व्यास जी ने सुखदेव जी के साथ अमेरिका को प्रस्थान किया था ।³⁹ किसी जाति के इतिहास का अनुसन्धान करने के लिए देवमाला (Mythology) का मिलान बड़े मार्के का होता है । प्रेस्काट महोदय बतलाते हैं कि प्राचीन मैक्सिको के निवासी एजटेक लोग संसार को अनादि करते हुए स्वीकार करते हुए सम्पूर्ण काल को ४ युगों में बाँटते थे । प्रत्येक युग लाखों वर्षों का होता था । सृष्टि और प्रलय के भी वे कायल थे । घण्टा घड़ियाल भी शुभ अवसरों पर बजाते थे ।⁴⁰ प्राचीन अमेरिका की देव कथाएँ तो विलुप्त भारतीयों से मिलजुल ही गई हैं । अब रीति रिवाजों की समता भी इतिहासवेत्ता की जबानी सुनि—‘इस दृष्टिकोण से पीह निवासियों (Ieruvians) के पूर्व पुरुष और भारतीय एक ही मालूम होते हैं ।’⁴¹

प्राचीन मैक्सिको के लोग मृतकों की दाह क्रिया करते थे । राख हड्डियाँ बर्तनों में रख कर समाधि बनाया करते थे । इस सम्बन्ध में भी पाश्चात्य इतिहासज्ञ कहता है—

“निस्सन्देह मृतकों को जलाने की यह प्रणाली, राख को एकत्रित कर समाधि बनाने का तरीका.....यह सब मिश्र और भारत का स्मरण करा देती हैं ।”⁴²

अब धार्मिक भावनाओं और मन्दिरों पर निगाह डालिये । प्राचीन अमेरिकन काली, महादेव, चरण चिन्ह, पृथ्वी माता आदि की उपासना जोरों से किया करते थे । स्कायर साहब तो

³⁹ देविया, महाभारत, शान्ति पर्व पृ० ३२६

³⁹ History of the Conquest of Mexico Page 31.

⁴⁰ India in Greece, Page 17.

⁴¹ Conquest of Mexico Page 663.

मध्य अमेरिका में बौद्ध मन्दिरों के मिलने की बात बतलाते हैं।
कैनमैन साहब लिखते हैं कि विख्यात जर्मन यात्री वेरन हम्बोल्ट
(Baron Humboldt) का कथन है कि इस समय भी अमेरिका
में हिन्दुओं के स्मारक चिन्ह मिलते हैं।⁴²

प्राचीन मैक्सिकन (एजटेक) लोगों में यह अनुश्रुति विद्यमान
थी कि 'उनकी सभ्यता का मूल पश्चिम में है।..... उनकी भाषा
की लोकोक्तियों और सप्तान्तों में भी समता है।'⁴³ अभी मिस्टर
आर्थर क्रिस्टी (Arthur Christy) न अमेरिकन कवि व्हीटियर
(Whittier) की कुछ कविताएं ढूँड कर पेश की हैं जिनमें
महात्मा बुद्ध को 'शान्ति पुत्र' (Son of peace) और पवित्र
कह कर स्मरण किया गया है।⁴⁴ बंगला पत्रिका 'भारती' की
योग्य सम्पादिका ने बहुत दिनों पूर्व यह सिद्ध किया था कि
पाँचवीं शताब्दी में बौद्ध प्रचारकों ने अमेरिका में प्रचार की
धूम मचा रखी थी।⁴⁵

सर विलियम जोस के अन्वेषणानुसार अमेरिकन राम और
सीता को भी मानते थे, वहाँ रामलीला के समान वार्षिक मेला
भी होता था।⁴⁶ मिस्टर डब्ल्यू० एच प्रेसकाट्सरीखे इतिहास
के मर्मज्ञ भी सामान्यतया इस बात से सहमत हैं कि पूर्वी एशिया
और प्राचीन अमेरिकन सभ्यता पर भारतवर्ष का प्रभाव
पड़ा है।⁴⁷

42. Hindu Mythology Page 350.

43. Ibid Page 579, 588.

44. Aryan Path for May 1934.

45. भारतीय फाल्गुण १३१० (बंग)

46. See Asiatic Researches Vol. 1, Part

47. See Conquest of Mexico.

देवगाथा, रीति रिवाज, भाषा लोकोक्तियां वस्तुकला, इतिहासक अन्वेषण आदि सभी एकमत होकर प्रमाणित करते हैं कि अमेरिकाकी सभ्यता का आदिम स्तोत्र यही प्राचीन भारत-वर्ष हैं। अमेरिका के आविष्कर्ता कोलम्बस के जन्म प्रहण में अनेकों शताब्दियों पूर्व अमेरिका के पश्चिम तट पर भारत की धर्म और व्यापार की वैजन्ती उड़ा करती थी—पर्याप्त अनुसन्धान के पश्चात् क्लेफोर्निया यूनिवर्सिटी के पाश्चात्य साहित्य प्रोफेसर जान फ्रेयर (Fryer) ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है। ४८

योरुप—

यह नाम ही संस्कृत 'हरि युपिया' से लिया गया है। वेदों तक में इसका वर्णन मिलता है—“इन्द्र ने हरयुपिया देश में जाकर विशाल दैत्य के पुत्रों का जाकर वध किया।” ४९ टाइट महोदय इसकी व्युत्पत्ति 'स्वरूप' शब्द से बतलाते हैं। ५० कुछ भी हो इसका नाम अवश्य हिन्दू हैं। इस दृष्टिकोण से इसे भी भारत का उपनिवेश बतलाना असंगत न होगा। इसे देखने के लिए सर्व प्रथम हम वर्तानिया को ही लेते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन—

एंग्लों सेक्सन (Anglo Saxon) जाति से पहले यहां कल्ट रहते थे। इनके रीति रिवाज आर्यों से मिलते जुलते थे। इनके पुरोहित ड्रुइड कहलाते थे। प्राचीन इतिहास लेखक स्ट्रावो का कथन है कि ड्रुइड (Druid) आत्मा और संसार के अम-

48. भारती, माघ १३१० (वंग)

49. “वधोत इन्द्र वर शिखस्य शेषः यन हरिगुर्पो या याम।” ऋग्वेद

स्व पर विश्वास रखते थे। कांट जर्नस्टजर्नी बतलाते हैं कि इनके माप में सम्राट भी थर्राया करते थे।^{५१} अनवाईल लिखते हैं कि ये लोग कैल्ट (Celt) बालकों को शिक्षा दिया करते थे। ज्ञान ग्रन्थ प्रायः छन्दोबद्ध हुआ करते थे।^{५२} इन समस्त जाहरणों से भलि भान्ति मालूम होता है कि कैल्टों के पुरोहितों के आयों के ऋषि और पाठ्य ग्रन्थ वेद थे।

भाषा सम्बन्धी अन्वेषण में मिस्टर पेकाक बड़े पते की बात कहते हैं कि आज भी अंग्रेजी भाषा में व्यवहृत होने वाला हुर्रा (Hurrah!) शब्द ब्रिटेन निवासी राजपूतों के बाप दादों के गुद्गानाद 'हर' 'हर' था। वेल्स (Waies) में पाई जाने वाली जित्मा जाति के सम्बन्ध में पाश्चात्य पण्डित ने अन्वेषण कर वह सिद्ध कर दिया है कि यह भी भारत से ही आई थी। विद्वान एम० हम्बोल्ट भी भाषा तत्त्व विज्ञान के आधार पर कैल्ट जाति को बाहर से आया समझते हैं।

इंग्लैण्ड का इतिहास बतलाता है कि जिस देश पर रोम निवासियों ने आक्रमण किया तो ड्रूयड सेंट अथवा मोना द्वीप मुनि द्वीप था और ड्रूयड थे द्रुपद की सन्तान द्रोपदेय! विद्वान इतिहासज्ञ टाड ने यदुवंशियों के एक नत्थे के उत्तर की ओर जान का पता लगाया है। यदुवंश और द्रुपद के पुत्रों में काफी मैत्री थी। सम्भवतः ये लोग भी उनके साथ चले गये होंगे। विद्वान प्राथमे हिमिन्स महोदय भी बतलाते हैं कि ये लोग भारत से आकर इंग्लैण्ड में बसे थे।^{५३} इतिहासिक कसौटिया ने यह सिद्ध करने की कोई कोर कसर नहीं रखी कि एक दिन भार-

1. Theogony of the Hindus Page 104.

51. Celtic Literature,

52. See, Celtic Druids.

तियों की जय पताका इंग्लैण्ड के मस्तक को गौरवावन्धित कर रही थी ।

इटली—

इटली और प्राचीन भारत में अत्याधिक समानता पाई जाती । यहां की वर्णव्यवस्था भी इटली से मिलती जुलती है ।

वर्णव्यवस्था		देवता	
भारत	इटली	भारत	इटली
ब्राह्मण	Priest (पुरोहित)	इन्द्र	Jupitar
क्षत्रि	Senators (शासक)	गणेश	Ianus
वैश्य	Patricious (साहूकार)	पार्वती	Juno
शूद्र	Pleadiou s (दाम)	सरस्वती	Minerva

दोनों की देवगाथाओं और वर्णव्यवस्था की समानता के बाद रस्मों रिवाज का भी नीरीक्षण कीजिये । विवाह में कन्या का पिता ठीक भारतीयों की भान्ति अग्नि को साक्षी कर, जला-कजलि के साथ कन्या का दान करता था ।^{५४} विवाह के पहले संगीनी होना भी आवश्यक था । पूर्ण युवास्था से पूर्व भी यदि विवाह हो जाय तो कन्या अपने ही घर रहती थी ।^{५५}

54. Leg. 66, 1 Digest Of Justinian.

55. See, 10 Desposabious Page 323, 324

इन दोनों देशों में इतनी अधिक समानता है कि इटली इतिहास में विचर होकर अपने पुराने मंत्रक का नाम भारत बताना ही पड़ता है ।

जर्मनी—

मिस्टर मायर (Muir) का कथन है कि यह बात बहुत से लेखकों ने नोट की है कि जिम भान्ति हिन्दू मनु को अपना पूर्व पुत्र मानते हैं उसी तरह जर्मन देवमाला में ट्यूटानम Tentors के पूर्व पुरुष को मानुप (Manus) बतलाया गया है । अंग्रेजी शब्द Man (मैं) जर्मन Mann यह दोनों ही मनु से मिलकुल हो मिलते जुलते हैं । जर्मन मेन्श (Mensch) और मनुष्य में भी पूरी समता है । ५५

अब जग रहन सहन और आदतों को देखिए । प्राचीन इतिहासज्ञ टेस्टिस लिखता है कि वे प्रातःकाल उठ कर स्नान कर मिर के बालों में गाँठ लगाते और ढीला लबादा पहनते थे । टाड साहब स्वीकार करते हैं यह सब बातें पूर्विय हैं शीत प्रधान देशों में कैसे प्रचलित हो सकती हैं । ५७

कनल टाड कहते हैं कि जब योरुप और इंगलैण्ड में मेक्सन जाति के बड़े २ गिरजों के चित्र उनकी कारीगरी और मूर्तियों को देखते हैं तो कृष्ण और गोपिकाओं की याद आ जाती है । जिस देश की देवमाला, रहन, सहन, स्वभाव और इमारतों में इतनी जबरदस्त समता हो उसका प्रेज़ीडेंट हर हिटलर फिर अपने को आर्य क्यों न कहे ? वेदज्ञ मैक्समूलर तो सप्रमाण सिद्ध करते हैं कि “जर्मन” शब्द शर्मन है । भारत का शर्मन् जर्मा वन

कर जर्मन हो गया। संस्कृत में शब्द 'श' 'ज' 'अ' परम्पर बदन जाते हैं। जसे आर्य, 'आज्य' आप्य ! ^{५८} अब अधिक कहने की गुब्जाइश ही नहीं।

स्केण्डिनेविया (स्वीडन और नार्वे)—

यह नाम स्कन्ध नाभि का अपभ्रंश हैं। जिस का अर्थ है क्षत्रिय ! कर्नल टाड बताते हैं, कि वहां के ईड्डा (Edda) नामक ग्रन्थ से पता चलता है कि यहां प्रथम बसने वाले गेटिस (Getes) या जित्स (Jits) थे। ये 'असि' थे जिन की पहली आवाही असिब्रह्म थी।

पिकर्टन यहां महात्मा ओडिन (Odin) के ईसा से पांच सौ वर्ष पूर्व पधारने का सम्वाद सुनाते हैं और महात्मा बुद्ध को उनका उत्तराधिकारी बतलाते हैं। ^{५९} यह तो हुआ स्केण्डिनेविया के क्षत्रियों द्वारा बसाए जाने का इतिहास। इनके सप्ताहिक दिनों का नामकरण तक भारती वीरों के आधार पर हुआ है। यहां की देवगाथा का आदिम हिन्दू देवमाला का आदि स्रोत स्वीकार करते हुए, यहां के प्रकाण्ड पण्डित जर्नास्टजर्ना स्वयं कहते हैं—
“स्केण्डिनेविया की प्राचीन धर्म पुस्तकें “इड्डा” वेदों से ली गई हैं। ^{६०}

इतने प्रबल प्रमाणों की मौजूदगी में प्राचीन भारत के उपनिवेशों की तालिका में इस देश को शामिल न करना सरासर अन्याय होगा !

58. Maxmuller's *Regveda*.

59. See, *Tod's Rajasthan Vol. I Page 6*.

60. *Theogony of the Hindus* Page 108.

स्वस्तिक चिह्न—



भारत की प्राचीन सभ्यता इस विस्तृत भूमि में ही नहीं, विशाल विश्व के अणु-अणु और कण-कण में परिब्याप्त है। इंग्लैण्ड के अजायब घर में संसार के विभिन्न देशों से लाई हुई प्राचीन वस्तुओं का एक सुन्दर संग्रह है। इन वस्तुओं पर भारत का स्वस्तिक चिह्न अङ्कित है। आज आपने को आश्चर्य कहने वाले जर्मनी के भाग्यविधाता हररिडलर ने विशेष रूप से इस चिह्न को ऋपताया है, राष्ट्रीय इमारतों, शहीदों की समाधियों और प्रत्येक राष्ट्रीय कार्यकर्ता के बैजों (पट्टों) पर स्वस्तिक चिह्न अङ्कित है। अभी हाल ही में इंग्लैण्ड की इम्पेरियल लीग आफ फैसिट्स (साम्राज्यवादी समाजवादी संस्था) ने काउण्टी पैलेस में साम्राज्य दिवस पर इसके प्रति पर्याप्त सम्मान प्रदर्शित किया था।

प्राप्त वस्तुओं के आधार पर मिस्टर गवले डिप्लोमिया ने पुगतत्ववेत्ता की दृष्टि से स्वस्तिक प्रसार का एक कालानुक्रमिक चित्र बनाया है। उसमें आपने व्यक्त किया है कि ईसा से दो शताब्दी पूर्व यह चिह्न मैसोपोटामिया (सूसा) में था, और वहीं से आपके अनुसन्धान का श्री गणेश होता है। भारत में ईसा के ३०० वर्ष पूर्व इस चिह्न के प्राप्त होने का आप उल्लेख करते हैं। ईसा की ६ शताब्दी तक यह चिह्न आस्ट्रेलिया और रूस को छोड़कर संसार के प्रायः समस्त देशों में फैल गया था।

यह सब होते हुए भी भारतवर्ष के अतिरिक्त कोई भी देश इसके अर्थ, विज्ञान, इतिहास और नाम का भी पता नहीं देता।

इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि यह उनकी अपनी नहीं अपितु बाहर से आई वस्तु है। उधर भारत में आज से नहीं वैदिक काल से यह प्रचलित है। गृह्यसूत्र आश्वलायन सूत्र आदि में इसका स्पष्ट उल्लेख है। यहां भारत की अपढ़ मंत्रियों तक इसके गुणों और उपयोगों से पूर्ण परिचित हैं। आज भी भारतीय हिन्दू आये दिन इसी के स्मरण में ऋग्वेद का यह मन्त्र कहते हैं:—

‘आश्म स्वास्म मित्रा वरुणा स्वग्निं पयं रेवति ।

स्वग्निं न इन्द्रमाग्निश्च स्वस्तिनो अग्निं कृषि ।’

इसका यह अर्थ है कि कल्याण, दिन, प्रकाश, जीवन, गौरव और स्वर्गीय वरदान का निदर्शन यह स्वस्तिक चिन्ह भारत की अपनी वस्तु है और भारतीय यात्रियों के एवं विजेताओं के द्वारा ही संसार के कोने २ में फैला है। इस रेखाचित्र को रेखाएं पृथ से पश्चिम की ओर चलती हैं। संसार की सभ्यता की भी यही गति रही है, + और यह है इसका सूचक।

इतने पर भी यदि दुराप्राही अंग्रेजों अन्वेषकों को सन्देह हो तो उन्हें चार्ल्समोरिस के शब्दों द्वारा इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए कि एक दिन भारतीय हिन्दुओं का साम्राज्य एशिया माइनर, काकेशिया, आरमीनिया, मेडिया और पर्शिया तक फैला था।^{६१} प्राचीन इतिहासकार प्लोनी प्राचीन भारतीय साम्राज्य में गिडरोसिया (Gedrosia), अटाचोसिया (Ata-

प्रत्येक शुभ अवसर पर चन्दन, हल्दी अथवा चन्दूर से दरवाजे, खंबारों और पवित्र वेदियों पर इस का चित्र उस के द्वारा बराबर खींचा जाता है।

एशिया (Asia), पारपोमीस (Parpamius) का नाम गिनाता है । एलफिन्स्टन इतिहासकार इसमें एशिया का पूरा चौथाई भाग भी जोड़ देते हैं । १२

कहने का तात्पर्य यह है कि इस्लाम का धर्म अविभाज्य होने के कारण एशिया के पश्चिमी भाग पर हिन्दुओं का शासन था । इसी बहुत दिन नहीं हुए बाबर बतलाते हैं कि हिन्दू के राज ने तुर्कगीन को गजनी में जाकर घेरा था । बप्पा रावल ने खुगलान के तलवार बजाई थी । इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि एशिया में यह स्वयंसेवक चिह्न हिन्दुओं द्वारा पहुँचा था और भारतीय सभ्यता के प्रसार के साथ ही साथ यह भी समस्त संसार में फैलता गया ।

कहने का आशय है कि मि० रायस विलसन द्वारा अंकित इस चित्र में स्वस्तिक चिह्नों से चिह्नित देशों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बोल बाला था ।

मि० गलवेडी एलवियला के कथनानुसार ईसा से ३५०० वर्ष पूर्व सोसोपटामिया में, लगभग २ हजार वर्ष पूर्व मिनोयान के ग्रीट सुहरों में, १३०० वर्ष पूर्व दि द्रोड साइसिनी, और देरामारा में, ११०० वर्ष पूर्व जिलानोडा, ग्रीस (मिट्टी के बरतनों में), लाइकोनिया में, काकेशस में ३०० वर्ष पूर्व आस्ट्रिया ग्रीस (कब्रों में, ५०० वर्ष पूर्व ग्रेग में मैसोडोनिया और एशिया माइनर में, ४०० वर्ष पूर्व ग्रीस सिसली में, ३०० वर्ष पूर्व २०० वर्ष स्कैंडिनेविया, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, उत्तर अफ्रीका और चीन में, ईसा की तीसरी शताब्दी में रोम और पारस में, तीसरी से ८ वीं सदी तक तिब्बत और जापान में, एवं नवीं सदी में आइसलैण्ड में स्वस्तिक चिह्न के प्रचलित होने के प्रमाण मिले हैं ।

भाषा

वृहस्पतेः प्रथम वाचो अग्रं यन्त्रैर्गन् नामयेय दधत्ताः ।

चंडा श्रेष्ठं यद्वरिं समासीद्व्रणा नंदेषां निर्दितं गुदाधिः ॥-ऋ. १०।२५

हे वेदाधिपति अन्तरात्सर्व देश महेश । आपकी अपार कृपा से उत्पत्यनन्तर इतर वाणियों के उच्चारण के पूर्वी ही पदार्थों के भिन्न २ नाम धारण करते हुए ब्राह्मण गण जो जो वचन प्रेरित हैं वह वाणियों में अग्र अर्थात् श्रेष्ठ हैं । तथा जो इनमें श्रेष्ठ होने हैं जो पाप रहित होते हैं वह इनके हृदयरूप गुप्त स्थान में गुप्त ज्ञान, इनके प्रेम से आविर्भूत होता है । उन्हीं की अभिव्यक्ति के लिए संसार में भाषा का जन्म हुआ । योनूपियन विद्वान् गेलिंग महोदय का तो विचार है कि “भाषा के बिना मानवीय सज्जानता का उत्पन्न होना या इसका ध्यान में लाना ही असम्भव है ।”

सैक्समुलर महोदय ने भी ‘भाषा विज्ञान नामक पुस्तक में इसी भांति अपने विचारों को प्रकट किया है’ ‘संसार में ससक्त से आने वाले शब्दों और विचारों का अटूट सम्बन्ध है । शब्दाभाव में न विचार मिलते हैं और न विचारों के बिना कोई शब्द । जब विचारों का अभिप्राय किसी प्रकार का तर्क उपस्थित करना होता है तो उसकी सिद्धि के लिये भाषा की नितान्त आवश्यकता होती है ।’

भाषा विज्ञान के ज्ञाता इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि समस्त प्रचलित भाषाएँ किसी एक भाषा से निकली हैं । अब प्रश्न उठता है कि आधुनिक प्रचलित भाषाओं की जननी

होने का सौभाग्य किस भाषा को प्राप्त है। तथा उसका प्रादुर्भाव कैसे हुआ? आर्य लोग इसका समाधान इस प्रकार करते हैं कि सृष्टि कर्त्ता परमात्माने सार्थक शब्दों का ज्ञान चार ऋषियों को प्रदान किया। वह भाषा वैदिक भाषा थी और अधुनिक संस्कृत है। उसका निकट स्वरूप, जिसमें प्रायः सभी प्रचलित भाषाओं का जन्म हुआ है। एडवर्ड कार्पेन्टर महोदय इस बात को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि 'किसी नवीन विज्ञान की न हमें खोज करने की आशा हो सकती है और न इच्छाही करनी चाहिये। जो विचार वेदों के अन्दर मन्त्रों में दिये हैं, उन्हीं का प्रभाव प्रत्येक विद्वान और वैज्ञानिक के ऊपर पड़ा।' भाषा विज्ञान विशारद टी० जे० केनेडी० बतलाते हैं कि प्रत्येक भाषा-विज्ञान-वेत्ता की भान्ति में भी जानता हूँ कि आर्य भाषा का काल १०००० ईसा पूर्व है।^१ एक अन्य प्रख्यात पाश्चात्य परिद्वत भी मानते हैं कि आर्यों के बोलचाल की, प्राचीनतम विश्व की भाषा संस्कृत है।

तुलनात्मक भाषा विज्ञान एक ऐसी उत्तम कसौटी है जिसके द्वारा इस बात का निश्चय किया जा सकता है कि आधुनिक प्रचलित भाषाओं की जननी और प्राचीनतम विश्व की भाषा कौन सी है। निम्नांकित तालिका द्वारा यह प्रयत्न किया जायगा कि प्राचीन भाषा संस्कृत से संसार की अन्य पुरानी भाषाएँ किस प्रकार बनी हैं।

1, Art of Creation, Page 7.

2 Religion and philosophy

संस्कृत अथवा जी	नियोनियन Lithuanian	लैट Lithuanian	सैंटोनान Santonian	प्राचीन स्लाविक Slavonic	ग्रीक Greek	प्रामाण्य Pragmatic	गो
अस्मि I am	इस्मि अस्मि ...	अस्मि	अस्मि	अस्मि	अस्मि	अस्मि	अस्मि
अस्ति He is	इस्ति अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति
पितृ Father	पितर	पितर	पितर	पितर	पितर	पितर	पितर
मातृ Mother	मातृ	मातृ	मातृ	मातृ	मातृ	मातृ	मातृ
पशु Cattle	पशु, पेकु	पशु	पशु	पेकु	पेकु	पेकु	पेकु
गो Cow	गो	गो	गो	गो	गो	गो	गो

उतना ही नहीं क्रियाओं की गढ़ीन उनके पुरुष और संज्ञाओं एवं गणना में भी संस्कृत के साथ अन्य भाषाओं का सम्बन्ध है।

क्रियाओं की समता Analogy of verbs							
संस्कृत	लैटिन	ग्रीक	लैटिन	संस्कृत	लैटिन	ग्रीक	नियोनियन
ददासि ददासि ददासि	द	द	द	द	द	द	द
ददामि ददामि ददामि	द	द	द	द	द	द	द
ददामि ददामि ददामि	द	द	द	द	द	द	द
ददामि ददामि ददामि	द	द	द	द	द	द	द

भाषाओं के तुलनात्मक विवेचन में शब्दों के वाह्य रूप पर नहीं आन्तरिक रचना पर विचार करना एकान्त आवश्यक है। शब्द रचना से पूर्ण रूपेण परिचिन होने के लिए उसके प्रकृत ('radical') और प्रत्यय को जानना जरूरी है। उदाहरणार्थ 'पचक' को ही लेलीजिए, इसमें 'पच' प्रकृति (पकाना) और 'अक' प्रत्यय (कर्तृत्व) है। भारतीयों ने भाषा विज्ञान यास्तक से भी बहुत पहले प्राप्त किया था। योनूपियन विद्वानों ने तो इन मूल तत्वों को कल समझा है। उस से पूर्व तो वे वाह्य तुलना को ही उधेड़ चुन कर रहे थे। प्रोफेसर मैकममूलर भी इसे स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि वास्तविक शब्दों का निवेचन शब्द के वाच्य सादृश्य पर कभी निर्भर नहीं होता। ' ' सदा अममान प्रचीन होने वाले शब्द भी भाषा विज्ञान की दृष्टि से एक हो सकना है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी का 'होल्डर' और संस्कृत का 'कार' शब्द ही को ही ले लीजिए। दोनों में बहुत साम्य है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'क' का परिवर्तन 'ख' और उस से 'ह' में हो जाता है।

पहले बताया जा चुका है कि संस्कृत भाषा में प्रत्येक शब्द की रचना प्रकृति और प्रत्यय के भेद को समझ रख कर की गई है। अस्तु प्रत्येक शब्द अपने रुढ़ि अर्थ को धातु के मौलिक अर्थ के साथ प्रकट करता है। शब्दों के रूप समझने के साथ उनके यथार्थ अर्थ, व्याख्या और लक्षण भी साफ २ समझ में आजाते हैं जैसे 'मनुष्य' कहने से केवल एक प्राणी का ही नाव होता है प्रत्युत पशु जगत में भेद करने वाला लक्षण 'मनन (Rational) भी साफ २ समझ में आ जाता है। इसी भांति

Science of Language and thought.

Science of Language.

‘मत्स्य’ ‘अस’ धातु से बन कर ‘होने’ का अर्थ बनलाना है अर्थात् ‘जो हो’। ‘सम्य’ शब्द भी इसी तरह सभा के योग्य व्यक्ति की संज्ञा है अथ अंग्रेजी के Man, Truth और Civilized शब्दों को ले कर कोप के पत्रे पलटिये, कहीं कुछ भी पता नहीं चलता। भाषाओं के इस तुलनात्मक विवेचन से यह बात सिद्ध होगई कि विश्व की कोई भी भाषा पूर्णतः, सार्थकता और महत्त्व में संस्कृत की समता नहीं रह सकती। सर डब्ल्यू० जॉन्स के शब्दों में— संस्कृत भाषा की रचना अपूर्व एवं आश्चर्य जनक है। वह ग्रीक की अपेक्षा अधिक परिपूर्ण, लैटन से अधिक विस्तीर्ण और दोनों से ज्यादा ओजस्वनी है।^५ प्रोफेसर मैक्समूलर की दृष्टि से—‘यह भाषाओं का भाषा और भाषा विज्ञान की आत्मा है।’^६ प्रोफेसर हरीरेन का विश्वास है कि ‘संस्कृत सम्पन्नतम, और परिष्कृत है। अत्यन्त सूक्ष्म विचारों को भी व्यक्त करने वाले परिभाषिक शब्दों का इस में प्राचुर्य है।’^७

जर्मन विद्वान शीलगर संस्कृत के सम्बन्ध में कहते हैं— ग्रीक का सौंदर्य लैटन की अर्थ विशेषका द्वित्र की स्फुर्ति सभी कुछ मौजूद है।^८

वास्तव में संस्कृत एक मधुर, प्राञ्जल, और ध्वन्यात्मक (Phonograph) भाषा है। शीलगर महोदय के शब्दों में संस्कृत ‘नामकरण ही भाषा की पूरी पूर्णता और परिमर्जित होने का परिचायक है।’ प्रोफेसर विल्सन भी इसी का समर्थन करते प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार लिखता है कि ‘हिन्दुओं की भाषा

5. Asiatic Researches. Vol. 1 Page 412.

6. Science of Language Page 203.

7. Historical Researches Vol 1.

8. History of Literature Page.117.

अत्यन्त मीठी और एकान्त शुद्ध है। उन की विद्या भी संसार में सब से अधिक पुरानी है।^{१६}

प्रोफेसर हीरेन बतलाते हैं कि “जिन्द संस्कृत से निकली है।”^{१७} सर डब्ल्यू जोंस प्रमाण देते हैं कि “जिन्द कोष (Duperrens zind) में १० में छे-सात शब्द संस्कृत के हैं।”^{१८} मिस्टर कार्पेन्टर महोदय की सम्मति है कि ‘यद्यपि संस्कृत का आदिम स्थान आर्यावर्त है फिर भी यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि यह प्राचीन योरुप के अधिकांश देशों की भाषा थी।’^{१९} मिस्टर पोकाक के कथनानुसार ग्रीक भाषा की जननी संस्कृत ही है।^{२०} संस्कृत के प्रख्यात जर्मन पण्डित महाकवि फ्रेडरिक शीलगल ने चिरकालीन अनुसन्धान के पश्चात् संसार के सामने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि ग्रीक लैटिन तथा योरुप की अन्य भाषाओं की आदि जननी संस्कृत भाषा है। भारत भट्ट मैक्समूलर महाशय ने अशोक काल में प्रचलित दो प्रकार की लिखी जाने वाली लिपियों का पता लगाया है ! उनमें से एक बाईं ओर से दाहिनी ओर और दूसरी दाहिनी से बाईं ओर लिखी जाती थी।^{२१} इसी आधार पर आधुनिक विद्वानों ने इस बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि अरबी भी भारतीय प्रभाव से अछूती नहीं।

अन्वेषण और जागृति के इस काल में स्वीडिश कांट जर्न-

१६. Marsh Man's History of India.

१७. Historical Researches Vol, II Page 220

१८. Sir W Jfhne's work Vol, I

१९. Journal of the Indian Association

२०. Indian in grace Page 18

२१. The Science of language

स्टर्जनी, डाक्टर वलेटाइन, डब्ल्यू० सी० टेलर प्रोफेसर वीवर डाक्टर प्रिट चार्ड आदि असंख्य पाश्चात्य संस्कृत पण्डितों ने संस्कृत साहित्य पर मुग्ध होकर अथक परिश्रम द्वारा इसे समस्त संसार की भाषाओं का स्रोत एवं प्राचीनतम सिद्ध करने में ज़रा भी कोई कसर नहीं रखी। जर्मन विद्वान फ्रैंज बाघ प्रबल प्रमाणों के आधार पर बतलाने हैं कि एक समय समस्त विश्व में संस्कृत भाषा बोली जाती थी।^{१५} मांम डुवोइस के शब्दों में 'संस्कृत आधुनिक योरोप की भाषाओं का आदिम स्रोत है।^{१६} इतिहासकार गैरट के भी अनुसन्धान को देखिए—'आर्यों की भाषा से ही संस्कृत, लैटिन ग्रीक और फारसी भाषाएँ निकली हैं।'^{१७} जिस राष्ट्र की भाषा इतनी परिपूर्ण, प्राञ्जल परिमार्जित एवं प्राचीन हो उसकी सभ्यता कितनी पुरानी और उन्नत होगी इसे यकीन करने के लिए कदाचित अधिक प्रमाणों की आवश्यकता नहीं।

15. Edinburgh review No. XXXIII Page 43

16. Bible in India

17. A History of India Page 11



प्राचीन भारत में लेखन कला



स्वर्गादपि गरीयसी भारत भूमि में लेखन कला का प्रचार अत्यन्त प्राचीन काल से है। सन् १८३८ ई० की अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य कांग्रेस लीडन (Leyden) में प्राचीन भारत में लेखन कला का प्रयोग^१ नामक निबन्ध पढ़ते हुए श्रीयुत एस० के वर्मा ने बड़ी विद्वता के साथ सिद्ध किया था कि 'ऋग्वेद की ऋचाएं' मूत्रकाल के ग्रन्थ और साहित्य का गद्य आज तक कभी भी मुग्नित न रहता यदि उस काल में लेखन कला का प्रचार न होता। प्रोफेसर वेल्सन ने लिखा है कि सूत्र और ब्राह्मण काल से पूर्व वेदों में कला, विज्ञान, स्वर्ण के गहने, कवच, अस्त्र शस्त्र आदि थे। यन्त्र काल में तो आपने बड़ी २ संस्थाओं और बड़े बड़े कानूनों के पोथों तक का जिक्र किया है।^२ अन्यत्र आपने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है कि हिन्दू लोग लेखन कला से उतने ही लम्बे काल से परिचित हैं जब से कि साहित्य से।^३

शतपथ ब्राह्मण का वचन है "तदेतत् पश्यन् ऋषि मिदेवः प्रतिपद ।"
(१४.४।२.२२) ऐतरेय ब्राह्मण की भी कुछ ऐसी उक्ति है "तदेत
द्विः पश्यन्तुवाच नियत्वा इन्द्र सारथिः ।(६.१)"

इन दोनों प्रमाणों का भाव यह है कि ऋषियों ने वेदों को देखा। देखना आंखों का कार्य है। वे वही वस्तु देख सकते हैं जिस का कोई रूप हो। अर्थात् ऋचाएं लिखित रूप में थी तभी उन्हें देखा गया।

1. Rigveda (Translation) Introduction Page

2. Mill's India Vol, Page, 49 footnote.

सूत्र काल में लेखन कला का प्रभाव 'पटल' और 'सूत्र' शब्दों में मिलता है। पटल शब्द इस वान का परिचायक है कि सूत्र विभिन्न भागों में विभक्त किये गए थे। जिनका नाम 'पटल' था। 'सूत्र' स्वयं पुस्तक की संज्ञा है। जिन सज्जनों ने प्राचीन ग्रन्थ भोजपत्र अथवा तालपत्र पर लिखे होंगे उन्होंने यह भी देखा होगा कि उन पत्रों के बीच में एक छेद होता है जिस में एक सूत्र (Thread) डालकर उन पत्रों को बांधा या तस्थी किया जाना है। जर्मन लोग अब तक उन पुस्तक को बैंड (Band) कहते हैं जिसका अनुवाद संस्कृत में सूत्र ही होगा। प्रोफेसर हीर्ग का भी अनुमान है कि भारत में वर्णमाला की लेखन शैली अत्यन्त प्राचीनकाल से प्रचलित है। इसका प्रयोग केवल (Inscription) शिला लेखों तक ही में सीमित न था प्रत्युत जीवन के सभी साधारण व्यापारों में इसका व्यवहार होता था।^३

उत्तर सिन्धु प्रदेश के लरकाना जिले में एक अत्यन्त प्राचीनतम नगर 'मोहंजोदाड़ो' में भारतीय पुरातत्व विभाग के डाक्टर जनरल सर जान मार्शल के निरीक्षण में खुदाई का काम कई वर्षों से जारी है। तथा मण्डलपुरी जिले के 'हरप्पा' नामक स्थान में भी खुदाई हुई है। यहां से सैकड़ों सोल सुहरें तथा धातु के खुदे लेख पाषाण प्रतिमाएं तथा भिन्न पशु पक्षियों की आकृति के विलौने, सुती और उनी रंग विरंग चित्र युक्त वस्त्र आदि उपलब्ध हुए हैं। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि 'मोहंजोदाड़ो' नगर ताम्र युग में अपनी उन्नति के उच्च शिखर पर था। विश्व के सभी विद्वान ताम्र युग की समाप्ति ईसा से २००० वर्ष पूर्व मानते हैं। सुप्रसिद्ध भारतीय पुरातत्ववेत्ता श्री राखलदास बंधोपाध्याय एम०ए०ने प्रबल प्रमाणों द्वारा यह प्रमाणित किया है कि कि ताम्र

युग के आरम्भ काल में भारतवासियों ने लिखने की प्रणाली निकाली थी ! अमृतु विद्वानों के अन्वेषणानुसार “जो लिख कर वेदों को वेचते हैं वे वेदों को दूषित करते हैं ।”^१ इसके अतिरिक्त हमें ग्रन्थ में ‘ग्रन्थ’ शब्द ‘मूल पाठ’ और पुस्तक भार के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है ।^२ पाणिनी ने यूनानी, लिपीकर, पटल ग्रन्थ, खरड, सूत्र, वर्ण, वर्णस्वर और अक्षर आदि शब्दों का प्रयोग कर अपने एवं पूर्व काल में लेखन कला के आस्तित्व का आभास दिया है । ‘उन का ‘अदर्शन’ लोपः’ सूत्र तो तत्कालीन लेखन कला का जीता जागता प्रमाण है । पाणिनी महागज अपनी शैली में कहीं लोप, कहीं आगम और कहीं प्रत्यय लगा कर शब्द निद्रि करते हैं । लोप का अर्थ लुप धातु, कट जाने का बोधक है । सोचने की बात यह है कि कोई वस्तु कट कर तभी अलग होगी, लोप भी उनी समय सम्भव है जब वह वस्तु भी हो जिस से वह वस्तु कटी हो, नहीं तो लोप कहाँ होगी ? यदि पाणिनी काल में लेखन कला का प्रचार न होता तो ‘रूप सिद्धि’ ही नहीं हो सकती थी भला फिर लोप किसका होता ! यही नहीं पाणिन काल में सर्व साधारण अपने पशुओं के कान पर कोई चिन्ह खोद दिया करते थे ।^३ प्रसिद्ध जर्मन विद्वान व्युहलर लिखते हैं कि अशोक के शिला लेखों के अक्षर उनसे ४-५ सौ वर्ष पूर्व भारत में प्रचलित थे । अन्यत्र आप कहते हैं कि सम्राट प्रियदर्शी अशोक के लेखों में भी ब्रह्मलिपी का भारत में लम्बा इतिहास है ।^४ इतिहासकार वीसेन्ट स्मिथ बतलाते हैं कि चन्द्रगुप्त से बहुत पहिले भारत में

^१ अनुशासन पर्व श्लो० १३४५

^२ पञ्चम — श्लोक ११३१६—४८

^३ ‘कणै लक्षणस्याविष्ट पञ्चमन्मणि भिन्न छिन्ना छिद्रवत्तस्त कस्य’

^४ Brahmi Alphabet तथा इतिहास की भारत यात्रा Page 35 and 47

सब साधारण के अन्दर लेखन कला का प्रचार था ।^{१८}

बौद्ध काल के सतम्भ और शिला लेख तो अब तक तत्कालीन लेखन कला के ज्वलन्त प्रमाण हैं । मथुरा के भूगर्भ से निकले पत्थरों की इतिवृत्त देते हुए डाक्टर फर्हर (Führer) कहते हैं—“वह अब से २००० वर्ष पूर्वा वासुदेव आदि राजत्व काल में लिखे गए थे ।”^{१९} प्रोफेसर मैक्समूलर का मत सभी से निराला है । आपका कथनानुसार भारत में लेखन कला का ईसा से छः हजार वर्ष पहले ही भारतवासी लेखों को धातु आदि पर खोद कर चिरस्थाई रखने की युक्ति जानते थे ।

प्रोफेसर हीवर और मैक्समूलर दोनों ही विद्वानों ने महा-भारत को प्राचीन ग्रन्थ माना है ।^{१०} यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इसका प्रचार पाणिन के बाद हुआ है । पाणिन ने यद्यपि संस्कृत का व्याकरण जैसा विषय रच डाला फिर भी वह लिखना नहीं जानते थे ।—यह आपकी शुभ सम्मति है । वास्तव में प्रोफेसर साहब इस विषय में समुचित न्याय नहीं कर सके, कारण कुछ भी हो । आपने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास पृष्ठ १८७ और ८७३ पर होत्रियों की प्रार्थना पुस्तक (Prayer Book of the Hotris) का उल्लेख किया है । विचार करने की बात तो यह है कि जब उस काल में भारतीय लेखन कला से अपरिचित थे तो ‘पुस्तक’ शब्द कहां से आया । इसी भांति उसी पुस्तक के १३८ पृष्ठ पर आप कात्यायन को पाणिन का समकालीन मानते हैं और फिर १४८ पृष्ठ पर लिखते हैं कि कात्यायन ने वर्तिका लिखा । जब कात्यायन ने जो

8. Early History of India Page. 127

१९ Epigraphia Indica.

10. Literature Schieble Page 56

कि पाणिन के समकालीन थे पुस्तक लिखी तो फिर पाणिन निम्नता कैसे नहीं जानते थे ? जो भी हो इस विषय में मैक्समूलर महाशय का मत भी मान्य नहीं हो सकता । स्वीडिशकांट जर्नास्टर्जना कहते हैं कि 'इस से २८०० वर्ष पूर्व अथवा इब्राहीम से ८०० वर्ष पूर्व हिन्दुओं के पास लिखित धार्मिक पुस्तकें मौजूद थीं ।'^{११} फादर पाल्यूना (F. Paulino) ने तब यहां तक पता लगाया है कि कृश्चियन इतिहास काल (Era) से पूर्व भारत में सूई का कागज व्यवहृत (Cotton Paper) होता था ।^{१२} वास्तव में भारत की किसी भी कला की जन्म तिथि ठूँढ़ना कोई साधारण बात नहीं क्योंकि यहां जिस समय पूर्ण कुटीरों में बृहद् ग्रन्थों की रचना हो रही थी, दुनिया की सभ्यता भाड़ियों और पृथ्वी की कन्दराओं के अन्धकार में लम्बी तान कर खराटे ले रही थी ।

11. Theogony of the Hindus Page 26

12. Historical researches Vol, II Page 187



दर्शन

मनुष्य क्या वस्तु है ? सृष्टि क्या है ? मानवी आयु की समाप्ति पर भी मनुष्य का कोई अस्तित्व है ? इन गुत्थियों को सुलझना, मनन करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । अपने, सृष्टि के पुर्जन्म सम्बन्धी प्रश्नों को हल करने की प्रवृत्ति से ही दर्शन शास्त्र की उत्पत्ति होती है । यही दर्शन शास्त्र के सिद्धांत हैं जो जगत में पद-पद पर मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करते हैं । विश्व को दर्शनों का विशाल सम्वाद सुनाने वाले जगद्गुरु भारत के ही ऋषि थे । विद्वान् मैकलमूलर ने लिखा है 'हिन्दू दार्शनिकों की एक जाति थी । उनके संघर्ष विचारों के संघर्ष रहे हैं ।'^१ स्वीडिस क्रांट कहते हैं—'हिन्दू गेम् और ग्रीक के दर्शनिकों से बाँसों आगे बढ़े थे ।'^२ हिन्दुओं के सम्बन्ध में विद्वान् काल ब्रूक स्वीकार करते हैं कि वे शिक्षक थे, शिष्य नहीं ।'^३ योरुप के सर्वप्रथम दार्शनिक के सम्बन्ध में सर एम० मोनियर विलिमस वतलाते हैं—प्लेटो और पैथागोरस दोनों ही शास्त्र के सम्बन्ध में हिन्दुओं के ऋणी हैं, वे इन सिद्धांतों पर विश्वास भी करते हैं ।'^४

प्रो० मैकडानेल ने ग्रीक में प्रचलित कथाओं के अनुसार अन्वेषण किया है, थैल्ल, एपीडो, विल्स, डिमाक्रीट्स एवं अन्य दूसरे विद्वानों ने दर्शन शास्त्र का अध्ययन करने के लिए पूर्व

1. Ancient Sanskrit Literature Page 31

2. 'The Theogony of Hindus, Page, 27

3, Transaction of R. A. S, Vol. 1

4. Indian wisdom, Page 23.

की यात्रा की थी।^५ डाक्टर एन० फील्ड भी बतलाते हैं कि पैथागोरस आदि महातुभावों ने इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारत यात्रा की थी जो कि बाद को ग्रीक के प्रसिद्ध दार्शनिक हुए हैं। मुकरान और प्लेटो का आत्मा के अमरत्व का सिद्धांत प्राच्य दर्शन का ही सिद्धान्त है।^६

प्राचीन आयौ ने जिम ओर पैर बढ़ाया, वही संसार का निश्चित मार्ग बन गया। वे जिम ओर झुके, संसार भी झुक गया। आज दुनियां पर उन के ऋण का भार है। मिस्टर प्रिंसेप मुक्ककण्ठ से स्वीकार करते हैं—‘पैथागोरस ने अपने सिद्धान्तों को भारत से लिया—यह बात साधारणतः स्वीकार की जाती है।

जर्मन दार्शनिक शेलगल इसी बात का समर्थन करते हुए कहता है—‘योरूप का सर्वोच्च दर्शन भारतीय दर्शन के सामने ऐसा ही है जैसा मध्ययुग-मार्तण्ड के सामने टिमटिमाता प्रदीप।’^७

उपरोक्त प्रमाणों से यह बात प्रतिपादित हो गई कि दर्शन का स्रोत भारत की पुरातन भूमि है। दर्शन संख्या में ६ हैं—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तर मीमांसा।

न्यायः—उपनिषद् परीक्षणं न्यायः

न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम हैं। इसका सर्वोत्कृष्ट भाष्य वात्स्यायन मुनि का है। न्याय में आत्मा की सत्ता का सुन्दर विवेचन है। आत्मा में ही स्मृति रहती है। इसमें मोक्ष को ही अपवर्ग सिद्ध किया गया है, जो कि केवल दुःखों से मुक्त हो जाना है। न्याय का विवेचन करती हुई श्रीमति मिनिङ्ग कहती हैं—‘इस से गौतम कीमानसिक शक्ति और गम्भीरतम

५ Macdonell - Sanskrit Literature;

६ History of Philosophy Page 65

७. History of Literature.

प्रश्नों को वर्णन करने की क्रियात्मक शैली का पता चलता है, जो कि मानव मस्तिष्क को प्रभावित कर लेती है ।^{१५} शैलान महोदय का विचार है कि न्याय का निर्माण तर्क और पवित्रता पर है, जिसके बड़ाहर्ण अन्यत्र कम मिलते हैं ।^{१६} डाक्टर रय महोदय दर्शनों के सम्बन्ध में एक स्थान पर लिखते हैं कि संस्कृत शब्द व्याप्ति का अंग्रेजी में उपर्युक्त पर्यायवाची शब्द मिलना ही अत्यन्त कठिन है ।^{१७} हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में विद्वान मैक्स-मूलर महोदय की सम्मति है—हिन्दुओं के तार्किक अनुसन्धान किसी प्रकार वर्तमान जगत् के तर्क ग्रन्थों से पीछे नहीं ।^{१८} सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ मिस्टर एलिफिन्स्टन लिखते हैं—“ब्राह्मणों ने इस विषय पर अत्यन्त ग्रन्थ लिखे हैं ।”

वैशेषिक—

इसके रचियता कणाद मुनि हैं । आपने सृष्टि का मूल तत्व परमाणु बतलाए हैं । सृष्टि के पूर्व ये परमाणु एक दूसरे के प्रति अव्यवस्थित रहते हैं । किसी अदृष्ट कारण विशेष से इनमें एक प्रकार का कम्पन या गति होती है । इससे परमाणु एक दूसरे के प्रति आकर्षित होकर परस्पर मिलने लगते हैं । इसी मेल से सृष्टि रचना का श्री गणेश होता है । संस्कृत में न्याय और वैशेषिक—ये दोनों मानव शास्त्र कहलाते हैं । प्रिंसिपल सील, इतिहासज्ञ मिल के विचारों का विवेचन करते हुए लिखते हैं कि यह विचार मिल की अपेक्षा अधिक सुलभे हुए हैं । मिस्टर एलिफिन्स्टन और श्रीमती मिनिङ्ग भी इसकी मुक्तकण्ठ से सराहना करती हैं ।

१५. Ancient and Mediaeval India, Vol I Page 173

१६. Translation of Bhasparichhed

१७. History Antiquary, Vol IV page 310

सांख्य—त्रिविध दुःखात्पन्त निवृत्तिरयन्त पुरुषार्थः ।

दर्शन की इस प्राचीनतम प्रणाली के जन्मदाता कपिल हैं । इसमें प्रकृति और पुरुष को मूल तत्व बतला कर, प्रकृति के संस्कार पुरुष पर पड़ने से उत्पन्न एक प्रकार के कम्पन द्वारा सृष्टि उत्पत्ति के मत का प्रतिपादन है । पुरुष का एक और प्रकृति के २४ भेद माने गए हैं । इसमें पुर्नजन्म और आत्मा का अमरत्व स्वीकार किया है । सर डब्ल्यू० हण्टर मानते हैं कि आधुनिक मानस शास्त्रियों के विकासवाद के सिद्धान्त कपिल के सिद्धान्तों नवीनालोक में पुनरावृत्ति हैं ।^{११} प्रोफेसर मैकडानल बतलाते हैं कि “संसार के इतिहास में सर्व प्रथम मानव मस्तिष्क को स्वतन्त्रता का पूर्ण प्रकाश प्रदान कर अपने मत का सतर्क प्रतिपादन किया गया है।”^{१२} सांख्य का नास्टिक (Gnostic) मत पर यथार्थ प्रभाव पड़ा है ।^{१३}

योग—योगाश्चिन्तवृत्ति निरोधः ।

चित्त वृत्तियों का निरोध कर त्रय ताप से मुक्त होकर उपासना में लीन होने का इस से उत्तम साधन आज तक संसार में नहीं ढूँढ़ा जा सका । इसी की साधारण क्रियाओं को सीख कर आज संसार में लोग अजीब २ करिश्मे दिखला रहे हैं है । इसके कर्त्ता महर्षि पातञ्जली हैं, भाष्य व्यास मुनि का प्रमाणिक हैं । पठ्यटक अलबेरुनी लिखता है--योग ज्ञानके बिना कोई भी मानव स्वभाव की गहराई तक नहीं पहुँच सकता, हृदय के रहस्य और वास्तविकता से ही परिचित नहीं हो सकता और न ही प्राप्त कर सकता है आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ।^{१४}

11. Indian Gazetteer India Page, 514

12. Macdonald's Sanskrit Literature, Page, 386

13. India's Past Page, 423

14. Max Muller's Science of Language Page, 165.

योग की आठ अवस्थाएँ हैं:—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। प्राचीन योगियों को देख कर बड़े २ पाश्चात्य पण्डितों के पावों तले से पृथ्वी निकल गई। इनके विस्तृत विवरण के लिए कर्नल अल्काट, प्रो० विलसन, डाक्टर प्रेगर आदि की पुस्तकों का अनुशीलन कीजिए।^{१५} सर फ्लूड मार्टिन की आंखों देवी घटना का चन्द्रण करते हुए प्रोफेसर चार्ल्स राकवेल लालमैन (हावर्ड युनिवर्सिटी) लिखते हैं कि १८३७ में राजा रगजीतसिंह के दरबार में हरिदास नामक व्यक्ति ६ सप्ताह तक जमीन में मुँह की भाँति दबा रहा। यह है हिन्दुओं के आश्चर्य जनक योग का एक करिश्मा! जान० सी० ओमन्स 'Men of India' में जैकोबी ने अपने अनुवाद Leipzig 1882 Vol. I में मि० कर ने अपनी पुस्तक History of Buddhism में योग के चमत्कारों की पूरी २ प्रशंसा की है।^{१६}

मीमांसा—

पूर्व मीमांसा में कर्मकाण्ड का विषय एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। इसके प्रणेता जैमिनि हैं। व्यास मुनि ने इसका भाष्य किया है। मैक्समूलर कहते हैं कि यह अपने ढंग का अनूठा है, जिसका मानव सस्तिष्क ने कभी उत्पन्न किया था। मिस्टर एल्फिंस्टन प्राचीन ग्रीक से पुरातन भारत की तुलना करते हुए लिखते हैं कि—उनका सर्व साधारण ज्ञान विस्तृत और प्रकृति एवं परमात्मा का विशेष था उनके पास एक आलोक था जो यूनान के उत्थान से पूर्व भी उनके अधिकार में था।

उत्तर मीमांसा के कर्त्ता महर्षि व्यास हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण

15. See Essays on the Religion of the Hindus & Vol. 1,

16. Modern Review for Jan 1913

दर्शन है। इसमें आत्मा, ब्रह्म और प्रकृति का विवेचन है। जिस में जगत की उत्पत्ति, स्थिति, और प्रलय होती है वही ब्रह्म है, शेष सब भ्रम है—मिथ्या है ! अंग्रेज दार्शनिक सर जेम्स मैकिन्तोश वेदान्त सिद्धान्तों को परिकृष्ट, अद्वितीय सुन्दर और मर्म वतलाता है। सर डब्ल्यू० जॉन्स वेदान्त की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं, जब तक इसका यथोचित अनुवाद योरोपीयन भाषा में न होगा, उनके दर्शन का इतिहास अपूर्ण रहेंगा। मि० ए० ए० मैकडानल वतलाते हैं—प्राच्य दर्शन का युनानी दर्शन पर बहुत प्रभाव पड़ा है—जेनो फितस पर मैनिडस के सिद्धान्तों तथा वेदान्त में कुछ साम्य है।^{१७}

भारत के दर्शन हिन्दुओं का वह अक्षय कोष हैं जो आज भी पग पग पर संसार का पथदर्शन कर उनको उदग्रीव खड़ा किये हैं। उनकी महत्ता एवं विशालता का गुणगान करते हुए लार्ड गेनौल्डशे लिखते हैं—‘यह रुच बड़े मारके के ग्रन्थ हैं, जो उस प्राचीन काल के भारतीयों के आश्चर्य जनक उच्चतम विचारों के अद्वितीय प्रमाण हैं। उनके विचार महान मौलिक हैं।’^{१८}

साहित्य—

भाषा और कला के मेल से भावों और विचारों का जो मनोरम स्वरूप बनता है, वही साहित्य है। मानव मस्तिष्क ज्ञान का स्थान है, और साहित्य है उसका आहार। खाद्य सामग्री की पवित्रता एवं पौष्टिकता पर ही मस्तिक का विकास निर्भर है। साहित्य मानव जीवन में वह विकास उत्पन्न करता है जो उसे पाथरान् प्राणी की हँसियत से ऊँचा उठा कर मनुष्यत्व की चरम सीमा तक पहुँचा देता है।

¹⁷ Indian's Past Page, 155

¹⁸ India, a birds eye view Page 303

विश्व के इतिहास में साहित्य का प्रभाव अमोघ है । इस कारण विद्वानों ने साहित्य को राष्ट्र आत्मा और उसके उत्थान पतन के इतिहास का समुज्ज्वल दर्पण माना है । उन्नति शील साहित्य, प्रगतिशील राष्ट्र का ज्योत्स्न प्रमाण है । विश्व इतिहास के पृष्ठ पलटिए, आज भी वह पुकार २ कर कह रहा है कि प्राचीन भारतीय साहित्य ने संसार का नेतृत्व किया है । स्वीडिश कांट वतलाते हैं—भारतीय साहित्य हमें प्राचीन काल के एक महान राष्ट्र से सुपरिचित कराता है, जिसमें ज्ञान की प्रत्येक शाखा का समावेश है । इसका मानव इतिहास में सदैव ही सर्वोच्च स्थान रहेगा ।”^{१९} पादरी वार्ड कहते हैं—“कोई भी समझदार व्यक्ति प्राचीन भारतियों की प्रशंसात्मक विशाल विद्वता से इन्कार नहीं कर सकता । उनकी विभिन्न विषयों की विद्वत्ता पूर्ण विवेचना इस बात का प्रमाण है कि वे ज्ञान विज्ञान की अनेक शाखाओं में पारङ्गत थे ।”^{२०} विद्वान मैक्समूलर का विश्वास है कि ‘आधुनिक काल में कदाचित् ही कोई ऐसा ज्ञान विज्ञान होगा जिस ने प्राचीन भारतीय साहित्य से नवजीवन और अविनय प्रकाश न प्राप्त किया हो ।”^{२१}

वास्तव में भारतीय साहित्यकारों की काष्ठ कलम के जिस ओर मुंह मोड़ा कमाल के जौहर दिखलाए । प्रोफेसर ईरिह महोदय के शब्दों में “हिन्दू साहित्य गद्य और पद्य दोनों में ही सम्पन्नतम एवं वैज्ञानिक साहित्य है ।.....जिन लोगों से यह सम्बन्धित था वे उच्च श्रेणी के सुसंस्कृत और सर्वात्कृष्ट ज्ञानी थे २२ प्रख्यात चीनी पण्डित लियांग चिचाव ने भारत के प्रति

19, Theogony of the Hindus Page, 85

20 Ward's Antiquity of Hinduisms Vol, IV

21. Ibid. . What can it teaches us ? Page 140

22. Heerens Historical Researchoes Vol, II Page 201

श्रद्धा और सम्मान प्रकट करते हुए लिखा है:—‘सुझे यह कहते हुए अभिमान होता है कि भारतीय विचार हमारे अनुभव से संसार में पूर्णतया लम्बिलत होकर हमारी चेतना का अभिप्रांश व्रत गए हैं। उन्होंने हमारी मानसिक शक्तियों के विकास में सहायता दी है, उनके बल पर हमने साहित्य और कला के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।’

प्राचीन भारतीय साहित्य ने अज्ञान के अन्धकार में भटकने वाली लक्ष्य हीन जातियों को सुमार्ग का पथ प्रदर्शन करने का काम किया है। इस आलोक माला की एक भी किरण गंभी नहीं जिम्मे दुनिया को कोई नया मार्ग न दिखलाया हो। न्यूयार्क निवासी मिस्टर डेलमा महोदय अपने एक लेख में भारतीय साहित्य और ज्ञान का वर्णन करते हुए लिखते हैं—‘पश्चिमीय जगत् को जिन बातों पर अभिमान है, वे वास्तव में भारतवर्ष से ही वहां पहुंची थीं।’ २३

भारतीय विशाल साहित्य विश्व का ज्ञान कोष है, मानवी सम्पत्ता की रीढ़ है और प्राचीन प्रतिमा-सम्पन्न ऋषि एवं कवि-कावियों की दी हुई विलक्षण विभूति, पक्षपात पूर्ण, संकीर्ण इन्द्र और अकृतज्ञ भले ही भारत का आभार स्वीकार करने में आनाकानी करें किन्तु भूमण्डल के इतिहास का प्रत्येक शब्द अपनी जन्मभूमि भारत बतला रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक कांग्रेस लन्दन के सभापति महोदय के अपने व्याख्यान में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था—‘हमारे ज्ञान के महान् तत्व और सभ्यता हमारी भाषा और समस्त आदर्श, कलाएं, धर्म और गाथाएं, हमें पूर्व से प्राप्त हुई हैं।’ डाक्टर डब्ल्यू० डा० ब्राउन महोदय का विचार है कि—“हिन्दू साहित्य इस आधुनिक सभ्यता को

आश्चर्य चकित कर देगा। य भारत का फिर एक बार शताब्दी पुष्प की भान्ति देखेंगे, जब वह प्रकुल्लित होकर अपनी मनोहर सुगन्धि प्रसारित करेगा। ये उस समय उसकी शाखाओं से कुसुम-दल माँगेंगे।^{२४}

प्राचीन भारतीयों के ज्ञानामृत का यह अगाध निम्बु संसार की ज्ञान पिपासा को तृप्त करने ही के लिए अविभूत हुआ था किन्तु इसका परायण एवं मनन भी हमी खेल नहीं। सर डब्ल्यू जोन्स ने ठीक कहा है—“हिन्दू साहित्य के किसी एक अंश से भी भली भान्ति परिचित होने के लिए मानव जीवन पर्याप्त नहीं।”^{२५}

साहित्य उन आभापूर्ण अमूल्य रत्नों का भण्डार है, जो विज्ञानलोक में चौगुनी चमक दमक कर, बड़ी बड़ी चमकीली आंखों को चौंधिया देता है। प्रोफेसर मैक्समूलर और प्रोफेसर मैकडानल बतलाते हैं कि “संस्कृत साहित्य रोम और ग्रीस के संयुक्त साहित्य से बड़ा है।”^{२६} मिस्टर डब्ल्यू० सी० टेलर के शब्दों में इस अनन्त साहित्य की सीमाओं तक पहुँचना कल्पना के लिए भी कठिन है।^{२७} प्रोफेसर विलसन इसकी उपयोगिता, महत्ता एवं विशालता पर कुछ लिखना ही व्यर्थ समझते हैं। वेदज्ञ मैक्समूलर ग्रीक के साहित्य के साथ इसकी तुलना करना ही अनावश्यक बतलाते हैं। आप का ख्याल है कि ग्रीक साहित्य में वह बातें कहाँ जो संस्कृत में हैं।^{२८}

पाश्चात्य पण्डित इमरसन ने लिखा है कि “जीवन की

24. Superiority of Vedic Religion

25. Asiatic Researches Vol, I, Page 335

26. History of Sanskrit Literature

27. India What can it teach us

तमोर गवेषणापूर्णा व्याख्या करने और कला के प्राप्ति में अपने प्राप्ति का एकीकरण करके आनन्द धारा बहा देने वाली अलौकिक दिलोर का नाम ही साहित्य है ।” वह हैं संस्कृत साहित्य निम्नके द्वारा हमें “सत्यं शिवं सुन्दरम्” का बहुत बृह आभास मिल सकता हैं । श्रीमती डाक्टर एनीबिसेन्ट के शब्दों में इस वर्तमान और अतीत साहित्य के आधार पर ही भारतीय राष्ट्रीयता का अमरत्व निर्भर है ।”^{२०} अस्तु आज के दिन हमारा कर्तव्य है कि हम अपने साहित्य को समझें । उसे जीवन से भी उच्च, पवित्र एवं आदर्श बनाए रखें ।

वैदिक साहित्य—

वैदिक साहित्य में वेद और सूत्रों का समावेश है । वेद संख्या में चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, । प्रो० मैक्समूलर वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हैं—
‘वैदिक साहित्य मानव जाति के आधार ज्ञान का दिग्दर्शन कराता है, जिसका जाड़ हम संसार में अन्यत्र कहीं नहीं पाते ।’^{२१}

वैदिक काल के सम्बन्ध में आप कुछ ठीक निश्चय न कर उन्हें प्राचीनतम मानते हैं ।^{२०} प्रो० ब्लूमफीड ऋषियों को अपना पूर्व पुरुष बतलाते हुए मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं—
“वेद प्राचीनतम हैं.....इतनी शताब्दियों के पश्चान्, हमारे भाव, भाषा और धर्म में परिवर्तन होने के बाद आज भी वेदों में हमारे लिए बहुत कुछ मौजूद है—‘सदैव स्मरण रखना चाहिए ।’”^{२१} लार्ड मार्ले का विश्वास है—‘जो कुछ वेदों में हैं,

२०. A Bird's eye View India.

२१. India what can it teaches us

२०. History of Sanskrit Literature.

२१. Religion of Vedas.

अन्यत्र कहीं नहीं भी मिलता ।” सर डब्ल्यू० हण्टर महोदय के विचारानुसार—पूज्य ऋग्वेद काल अगम्य है ।” मि० मोरिश-फिलिप बतलाते हैं—‘प्राचीन टेस्टामेण्ट (old Testament) के इतिहास और कालनिपुण शास्त्र की अन्तिम खोजों के पश्चात् हम निश्चय पूर्वक कहते हैं कि ऋग्वेद केवल आयौ का ही नहीं प्रत्युत समस्त संसार में सब से पुराना है ।” इज्जलैण्ड के प्रसिद्ध दार्शनिक और पुरातत्ववेत्ता एडवर्ड कार्पेण्टर, जिन्होंने कई बार भारत यात्रा की है, लिखते हैं—“किसी नवीन दार्शनिक विचार प्रवाह की न हमें आशा करनी चाहिये और न इच्छा ही. क्योंकि इतिहास परिशीलन से हम इस परिणाम तक पहुंचते हैं कि प्राचीन काल से लेकर शोपनहार और विट्रुमैन तक वेद में जो बीजरूप विचार व्यक्त किए गए हैं वे ही प्रत्येक धर्म और दर्शन शास्त्र के प्रेरक सिद्ध हुए हैं । २३

जरतुश्त शिक्षा का आधार वेद बतलाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक कांग्रेस लन्दन के सभापति महोदय ने अपने व्याख्यान में बतलाया था कि अत्यन्त प्राचीन, अति सरल और सभी धर्मों का आदि स्वरूप वेदों में मिलता है । मिमान्स ल्यून उपर्य अकादमि युक्तियों के आधार पर उद्धोषित करते हैं, “ग्रीस और रोम कोई ऐसा स्मारक नहीं, जो ऋग्वेद से बहुमूल्य होवे ।’ वेदों के प्रति भारतीयों की ही नहीं, मनुष्य-मात्र की पूज्य बुद्धि है । विशाल विश्व में आयौ के अतिरिक्त अन्य जाति नहीं और वैदिक संस्कृत के सिवा दूसरी भाषा नहीं २४ जिसे वैदिक साहित्य के समान अद्वितीय अलौकिक ज्ञान भण्डार को अपना लेने का सौभाग्य प्राप्त हो ।

22. Teaching of the Vedas

33. Art of Creation.

34. Science of Language and tongues.

फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक तथा योगी 'एडवर्डशूरे' अपनी पुस्तक 'राम एण्ड भोजिज' ग्रन्थ में लिखते हैं—'एक अत्यन्त सुन्दर स्फटिक मणि की भान्ति वेद में अनादि सत्य सूर्य की किरण है और विश्वव्यापी सत्य सिद्धान्त सूर्य रश्मियों की तरह चमकते हैं।' अमरीकन महिला ह्वीलर विलाक्ल के शब्दों में "वेदों में केवल जीवन सम्बन्धी धार्मिक विचार ही नहीं प्रत्युत वास्तविकताएँ हैं जिन्हें समस्त विज्ञानों द्वारा सत्य होने का प्रमाण मिला है।" ३५ जकोलियट महोदय वेदों की महत्ता को स्वीकार करते हुए बतलाते हैं 'वेद अनन्त का ज्ञान हैं, सिद्धान्तों के सिद्धान्त हैं जिनका रहस्य हमारे पूर्व पुरुषों पर प्रकट हुआ था।" ३६ कील विश्व-विशालय के विद्वान प्रोफेसर 'कील' महोदय वेदों की महिमा के गीत गाते हुए मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं—'वेद समग्र ज्ञान का आदि और अन्त हैं।' ३७

बेलजियम के प्रसिद्ध नाट्यकार कवि और दार्शनिक मैटर-लिक का अनुभव है—'वेदों के अपूर्ण विचार हमारी बुद्धि को चकित कर देते हैं। वे इतने साहस एवं विश्वास से बोलते हैं, जिसका हमारे अन्दर आज भी अभाव है। उनके विचार हमारे विचारों की अपेक्षा अधिक ठीक सिद्ध हुए हैं। कई ऐसे विषय भी हैं जिन पर भटक भटक कर वर्तमान विज्ञान अब वेद मार्ग पर आया है... उन ऋषियों की अपार बुद्धि और अपरिमित ज्ञान का अन्दाजा लगाना हमारे लिए कठिन है।" ३८ प्रो० विल्सन ने ऋग्वेद के अनुवाद द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि—'सूत्र और

35. The Sublimity of the Vedas.

36. The Bible in India.

37. The Pre-historic Antiquity of Aryans,

38. The Great Secret.

ब्राह्मण काल से भी पूर्वी वेदों में कला, विज्ञान, आभूषण, कवच, अस्त्र-शस्त्र, औषधियां और उनके एंटीडोट (Antidote) समय विभाग, न्याय नियम आदि सभी बातें पाई जाती हैं।^{३९}

ईश्वरीय ज्ञान—

श्रीमती बलाबोटास्की का दृढ़ विश्वास है कि 'वास्तव में वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं।'^{४०} प्रख्यात पण्डित मोरिस फिलिप महोदय भी इसी सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि—“वैदिक आयु के उच्च और विशुद्ध विचार ही उनके आदिम ईश्वरीय ज्ञान होने का कारण है।”^{४१} टिनावली के विशप (Vishop) डाक्टर काडवर्थ मानते हैं—“कि हम ऐसे विचारों को ईश्वरीय ज्ञान मानने में जरा भी आनाकानी नहीं करते।’

वेदज्ञ मैक्समूलर महोदय वेदों के सम्बन्ध में लिखते हैं ‘किसी भी भाषा के ग्रन्थ ने जो काम नहीं किया वह वेदों ने संसार के इतिहास में किया है। जिन्हें अपने और अपने पूर्वजों का अभिमान है, जिन्हें बौद्धिक विकास की इच्छा है, उन सबको वेदों का अभ्यास करना एकान्त आवश्यक है।’^{४२}

इसके अतिरिक्त मिस्टर कालभ्रुक ने ‘Asiatic Research’ राबर्ट रिसले ने ‘The Future of Hinduism’ डाक्टर डब्ल्यु० डी० ब्राउन ने ‘Superiority of Vedic Religion’ टी० जे० कनेडी ने ‘Religion and Philosophy’ राबर्ट वालिन ने ‘Social environment and moral Progress’ मिस्टर राथ ने ‘History of the Literature of the Vedas’

३९ Rigveda (translation) VIX.

४०, Secret Doctrine.

४१. Teachings of the Vedas.

४२, History of Sanskrit Literature.

प्रो० हीरेन ने 'Historical Researches' मैकडानल ने 'Sanskrit Literature' में, वीवर महोदय ने 'Indian Literature' में, प्रोफेसर राक ने 'Vedic Literature and History' में और संस्कृत जर्मन महाकोश में तथा प्रो० हीग, प्रो० ह्रीट, प्रो० लिडव आदि असंख्य पाश्चात्य पण्डितों ने वेदों की महिमा का बखान किया है।

ब्राह्मण ग्रन्थ—

वेद के पश्चात् वैदिक-काल के प्राचीन ग्रन्थ ब्राह्मण हैं। उनमें वेद-मंत्रों की विशद-व्याख्या की गई है। प्रत्येक वेद-संहिता के पृथक् पृथक् ब्राह्मण हैं उनमें से मुख्य यह हैं:—ऋग्वेद के ऐतरेय और कौशिकी, यजुर्वेद के शतपथ और तैत्तिरीय, साम वेद के तारण्य, षड्विंश और छान्दोग्य तथा अथर्व-वेद का गौपथ।

मोरिस फिलिप कहते हैं कि 'ब्राह्मणों के पढ़ने से साफ पता चल जाता है कि ये वेदों के पश्चात् के ग्रन्थ हैं किन्तु फिर भी उनमें मनोरञ्जक एवं शिक्षाप्रद बातों का समावेश है।' ४३ प्रोफेसर वीवर महोदय के विचारानुसार ब्राह्मण-ग्रन्थ या तो वेदों की व्याख्या हैं अथवा उनकी दार्शनिक व्याख्या। प्रोफेसर मैकडानल महोदय की सम्मति है कि वे इन्डो योर्नियन परिवार के प्राचीन गद्य-लेखन का नमूना है। ४४

मिस्टर हालहेड ब्राह्मण-ग्रन्थों के सम्बन्ध में बल्लान्त हैं। कि:—प्राचीनता की दृष्टि से संसार के पास उन ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य निर्विवाद-ग्रन्थ नहीं जिन्हें प्राचीन ब्राह्मणों ने लिखा था। ४५

43 Teachings of the Vedas.

44 Macdonell's Sanskrit Literature.

45 The Code of Hindu Law,

सूत्र—

सूत्र ६ भागों में विभाजित हैं:—१—शिक्षा २—कल्प
३—व्याकरण ४—छन्द ५—निरुक्ति ६—ज्योतिष ।

सूत्रों का यह विभाजित प्राचीन भारतीय अध्ययन-प्रणाली के परिष्कृत रूप और सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता का पूर्ण परिचायक हैं । प्रोफेसर एच० एच० विलसन महोदय शिक्षा सूत्र का विवेचन करते हुए लिखते हैं:—ऐसा परिश्रमशील सूक्ष्म, परिष्कृत मानवी-वाणी के उच्चारण का वर्णन किसी भी जाति के साहित्य में सुलभ नहीं ।^{४६} डाक्टर डब्ल्यु० डी० ब्राउन वैदिक-साहित्य का विवेचन करते हुए वतलाते हैं—‘सतर्क-निरीक्षण के पश्चात् एक निष्पत्त-मस्तिष्क को मानना पड़ता है कि भारत साहित्य एवं परमार्थज्ञान में संसार की मां है ।’^{४७}

राबर्ट वालिस महोदय छन्दों के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं—छन्दों-भजनों (Hymns) का आश्चर्यजनक समूह धार्मिक शिक्षा की विशुद्ध एवं उच्च-प्रणाली है । वैदिक-कालीन छन्द किसी प्रकार भी हमारे विशाल-तम धार्मिक छन्दों और मिल्टन शैक्सपियर और टेनीसन से किसी प्रकार घट कर नहीं ।^{४८}

प्रो० मैक्समूलर महोदय कहते हैं—‘समस्त-भाषा को संक्षिप्त कर कुछ अल्प-संख्यक धातुओं में बन्द करने का विचार, जिस का प्रयत्न योरुप में हेनरी स्टेनी ने १६वीं शताब्दी में किया था, उस से ब्राह्मण कम से कम ईसा से ५०० वर्ष पूर्व भली भाँति परिचित थे ।’^{४९}

46. Wilson's Essays on Sanskrit Literature Vol. III Page, 311

47. Superiority of Vedic Religion

48. Social Environments and Moral Progress.

49. Maxmuller's Lecture on the Science of Language.

व्याकरण—

प्रोफेसर सर मोनियर विलियम्स बतलाते हैं कि 'संस्कृत-व्याकरण उस मानव-मस्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम नमूना है जिसे किसी देश ने अब तक सामने नहीं रक्खा !'^{५०} श्रीमति मैनिंग भी इसी बात का प्रतिपादन करती हैं कि 'संस्कृत का व्याकरण समस्त व्याकरणों से बहुत उंचा है ।'^{५१} प्रो० मैक्समूलर महोदय के शब्दों में 'हिन्दुओं के व्याकरण-अन्वय की योग्यता संसार की किसी भी जाति के व्याकरण-साहित्य से बढ़ चढ़ कर है ।'

विद्वान् कालत्रुक कहते हैं—'व्याकरण के वे नियम अत्यन्त सतर्कता से बनाए गए थे और उन की शैली अत्यन्त प्रतिभा-पूर्ण थी ।'^{५२} सर डब्ल्यु० डब्ल्यु० हण्टर लिखते हैं—'संसार के व्याकरणों में पाणिनि का व्याकरण चोटी का है । उस की वर्ण-शुद्धता, भाषा का धात्वन्वय, वाक्य-विधान के सिद्धान्त और प्रयोग-विधियाँ अद्वितीय एवं अपूर्व हैं.....यह मानवीय प्राप्ति का अत्यन्त महत्व-पूर्ण-आविष्कार है ।'^{५३} पाणिनिय, कात्यायन और पातञ्जली यह भारतीय व्याकरणाचार्यों की त्रयी है । इस के अतिरिक्त कश्यप, गर्ग गालव, भारद्वाज आदि कितने व्याकरण महारथियों ने इस भाषा-उद्यान को अपने विशाल-श्रम से विभूषित एवं परिष्कृत बनाया है । सर एम० विलियम्स की सम्मति के अनुसार 'कोई देश इसकी तुलना योग्य व्याकरण पेश नहीं कर सकता ।'^{५४}

50 Indian Wisdom Page 176.

51. Ancient and Mediaeval India.

52. Weber's Indian Literature.

53. Gazetteer of India.

54. Indian wisdom.

काव्य—

काव्य शास्त्रं विनोदं कान्तो गच्छति धीमताम्—हितोपदेश

काव्य की अनूठी कलिकाएँ जो इस कुसुमोद्यान में हम खेल गई हैं, नन्दन कानन में ही कदाचित नसीब हों। उन का अक्षय सौरभ आज भी भारतीयों को आनन्द की चरम चोटी पर बिठला देता है। शरीर को ले कर अशरीर की अनुभूति लाभ करा देना, इही लोक से उठा कर दूसरी दुनिया में बिठा देना, प्राचीन भारतीय काव्य का ही काम है। विद्वान जानाम्स्टर्जन कहते हैं 'काव्य भारतका भारत में शासन है।' ^{१५} विद्वान मारियात्ताह बतलाते हैं—'काव्य का वह मनोहरीरूप जो यूनानी देवमाला का आधार है। यद्यपि यह बालक व्यस्क बनकर सुन्दर और शक्ति सम्पन्न बन गया है जिसका माता ने कभी अभिमान नहीं किया। फिर भी हम उस मूल स्रोत का सम्मान किए बिना नहीं रह सकते जिसने हमको प्रसन्न किया और शिक्षा दी है। काव्य की इन गम्भीर प्रवृत्तियों ने हमारी वेदना और वासना को शान्त कर हमें एक नवीन नैतिक अस्तित्व प्रदान किया है।' ^{१६} इस लिए प्रो० मेक्स डेकर कहते हैं कि 'भारत का काव्य-कोष अनन्त है।' ^{१७} प्रो० विल्सन इस की सादगी, उत्तमता, महत्ता, पवित्रता, कोमल कल्पना और मौलिकता पर सौ जान से निह्दावर हैं। ^{१८} इम्पीरियल पुस्तकालय कलकत्ता के पुस्तक अध्यक्ष विद्वानों का सलाह देते हैं कि 'भारतीय काव्य की प्रत्येक पंक्ति में उस के आचार का कुछ न कुछ रूप विद्यमान है, इसे आप को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिये।' ^{१९}

55. Theology of the Hindus Page 80.

56. Literature on India Page 21.

57. History of Antiquity Vol. IV. Page 27.

58. Elphinstone's History of India Page 155.

59. India its Character.

संसार के गहन-तम विषयों को भी काव्य के सुललित सांचे में डाल कर आकर्षक बना देना प्राचीन हिन्दू कवि कविदों का अपना काम था, जिसे विद्वान ने इसके जिस जौहर को समझा उसी पर मुग्ध हो कर उस का गुण-गान करने लगा । सरदार कोर्टवटलर कहते हैं कि भारतीय धार्मिक एवं काव्य ग्रन्थों ने प्रकृति को सुन्दर निरूपण किया है ।^{१०} संस्कृत-साहित्य मर्मज्ञ पद्मप्राह्म के शब्दों में भारतीय काव्य में भी सभी सुन्दरताओं एवं अलङ्कारों का समावेश हुआ है । + + + इस में अतीव हृदयस्पर्शी भावों का प्रवेश हुआ है ।^{११} प्रभुवात-पाश्चात्य पण्डित हीरेन की सम्मति से प्रचुरता से फूली-फली हिन्दू काव्य की विभिन्न शाखाएं आश्चर्य जनक सफलता के साथ विकसित हुई हैं । उदाहरण रूप में आप महाकाव्य, नाट्य काव्य, गीत काव्य, नीति काव्य आदि का नाम लेने हैं ।^{१२}

प्राचीन हिन्दू-काव्य-प्रदीप के आलोक में संसार ने जिस सूक्ष्म तत्वों को प्राप्त किया है, वह आधुनिक विज्ञानियों का जगमगाती ज्योति में भी नहीं मिलता । देखिए, मैकडानेल सर्वोच्च विद्वान भी इस से प्रभावित हो कर कहते हैं कि संसार का अपेक्षाकृत हिन्दू साहित्य अपने काव्य निबुञ्ज पर गर्व कर सकता है ।^{१३}

महाकाव्य

संसार की अन्य जातियों के पास इने गिने महाकाव्य किसी कोने में भले ही पड़े हों किन्तु भारत के अनेकों महाकवियों ने

(10), India Insistent Page 13

(11), Letters on India Page, 23

(12) Historical Researches Vol VII, Page 186

(13), See History of Sanskrit Literature Page, 377

कितने ही महाकाव्य रचे हैं। प्रोफेसर हीरेन के शब्दों में 'हिन्दुओं का साहित्य महाकाव्य-सम्पन्न है। दूसरों के पास इतने महाकाव्यों का कोष हो ही कैसे सकता था? वीर भूमि भारत के अतिरिक्त अन्यत्र इतने महापुरुष हुए भी कहाँ हैं?

विश्व-साहित्य-भण्डार में ओडसी और ईलियड अन्य दो और महाकाव्य हैं जिन पर पाश्चात्य पण्डित यत्किञ्चित् गव किन्तु रामायण और महाभारत की समता में ये खड़े रह सकें यह हो ही नहीं सकता! सर्व प्रथम उन के आकार की ही तुलना कर लीजिए!

महाभारत	२२००००	पंक्तियाँ
रामायण	४८०००	,,
ईलियड	१५६६३	,,
ईलिय और ओडसी		३००००	,,

डाक्टर एक० वाशबर्न होपकिन्स बतलाते हैं कि 'यदि हम उन की तुलना करें तो बड़ा अन्तर मिलता है। विशाल काय महाभारत ईलियड और ओडसी दोनों के योग से सतगुने से भी बड़ा है और रामायण है महाभारत का चौथाई।' ^{६४} डाक्टर महोदय यहाँ कुछ गलती कर गए। मैकडानेल के कथनानुसार महाभारत इन दोनों को मिलाकर भी इनके अठगुने के लग भग होता है। ^{६५}

पाश्चात्य जगत् के पास एक Virgil's Aeneid भी है

64. India old and new.

65. See, San Kait Literature Page 382,

जिम में ६८६८ पंक्तियां हैं किन्तु इतिहासज्ञ गेरट के शब्दों में बल्मीकि रामायण में २४,००० पद और सात काण्ड हैं ।^{६६} आकार की दृष्टि से तो विश्व के महाकाव्य महाभारत और रामायण के सामने बच्चे ही ठहरते हैं । अब तात्विक दृष्टि से भी इनके अन्तर्गतम को टटोल कर मुकाबला कर लीजिए । प्रोफेसर मोनियर विलियम्स का ही निर्णय सुनिए—इन दोनों की तुलना हिम-मण्डल-ऊँचे हिमालय से निकल कर अनेकों सहायक नदियों के साथ बहाने वाली गंगा और सिन्धु की समता अटीका (Attica) अथवा थेसेली (Thessally) के झरनों से करना है ।^{६७} अब रामायण और महाभारत को पृथक पृथक रख कर भी विद्वानों की दृष्टि से देखना उचित है ।

रामायण—

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने अपने देश काल को अपनी काव्य रूपी कण्ठ दिया था, रामायण उसी का असर सन्देश है ।^{६८} रामायण के नायक हैं राम, सर मोनियर विलियम्स के शब्दों में—राम का चरित्र चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है । मानव समाज में वे बहुत बड़े निःस्वार्थी थे ।^{६९} आर्थर-लीली का विश्वास शास्त्रास्त्र सज्जित राम दुनिया के इतिहास में अपना दूसरा नहीं रखते ।^{७०}

इस महाकाव्य की नायिका थीं सीता, उस के सम्बन्ध में

66 ▲ History of India Page 121

67, Indian Epic Poetry Page 1

68 रामायण की घटना वैदिक काल के पश्चान् और ईसा से बहुत ही पहले की है—गेरेट

69, Asiatic Researches Page 265,

70. Rama and Homer Page 151.

डोडेन (Dowden) की राय है कि वे एक स्वर्गीय महिला थी ; लम्बेनऊ के भूतपूर्व रेजिमेंट ए० लीली० का कथन है कि सीता वह सुललित चरित्र थी जिसने कभी मानव अथवा देव हृदय में पैठ कर कल्पना को जगाया था । ' ' मिस एस० स्काट कहती हैं—'सीता स्त्रीत्व का एक सद्गुण-रम आदर्श थीं जिन का मैंने कभी अध्ययन किया है।' ' रामायण में कवि ने राम को मनुष्यत्व से उठा कर देवत्व पद पर पहुँचाया है। रामायण की महिमा राम-रावण के युद्ध से नहीं। यह बटना राम और सीता की दाम्पत्य प्रीति को उज्ज्वल बनाने के लिए उपलब्ध मात्र है, भाई का आत्म त्याग पिता के प्रति पुत्र की वश्यता, पति पत्नी की पारस्परिक निष्ठा और राजा प्रजा का आदर्श सम्बन्ध ही हजारों वर्ष पूर्व के भारत-हितपण्ड के रूप में स्पन्दिन हो रहा है। विद्वान् मार्ग्याग्रह रामायण की विवेचना करते हुए इस को प्राचीन-तम काव्य एवं इतिहास बतलाते हैं।^{१३} रेवरेंड पीटर पर्सेवल के शब्दों में इस विशाल ग्रन्थ की ओर एक निगाह भर कर देख लेने से ही इसके अन्तराम का बहुत कुछ पता लग जाता है। यह अनेकों ग्रन्थों का आदर्श है।^{१४} पण्डित चार्ल्स मोरिस कहते हैं कि रामायण की शैली सर्वोत्कृष्ट है। मानवीय कृत्यों में इस का आसन बहुत ऊँचा है।^{१५} प्रिंसपल प्रिथक के शब्दों में 'अन्यत्र कहीं भी काव्य और नैतिकता का इतना सम्मोहक समन्वय नहीं मिलता।''

गृहस्थाश्रम भारतीय आयसमाज की भित्ति है और रामायण है उसका एक महाकाव्य । शान्ति ब्रह्मसूत्र गृहधर्म को ही करणा के अश्रु जल से अभिषिक्त कर महान शौर्य वीर्य के उपर प्रतिष्ठित किया है । प्रोफेसर एम० एम० विलियम्स रामायण का पाठायण कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—“रामायण से अधिक सम्मोहक काव्य संस्कृत साहित्य में दूसरा नहीं. भाषा की निर्दोषिता, शैली की सरलता और सुन्दरता साथ ही कवित्व पूर्ण भावनाओं की प्रचुरता, भीरुत्व पूर्ण घटनाओं का चित्रमय वर्णन, प्रकृति के विग्राह दृश्य, मानव हृदय की परिष्कृत भावनाओं और द्वन्द्वों की तन्मूर्त विश्लेषण का सुन्दर समन्वय है इसे किसी राष्ट्र के किसी युग काव्य की समता में रखा जा सकता है । रामायण एक अतद् दायक वाटिका के समान है । यत्र तत्र इसमें वनैल दृश्य भी हैं । यह अत्यन्त स्तोत्र सिञ्चित फल फूलों से सुसम्पन्न है । इसके सघन कानन भी आनन्द दायक पगडण्डियों से भरपूर हैं ।”^{१३} ‘फ्रेण्ड इण्डिया’ के सम्पादक जेम्स रटलेज ने भी बताया था कि इसके विवेचन के लिए भी एक ग्रन्थ की आवश्यकता है । एल० विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रोफेसर डाक्टर होपकिन्स बताते हैं—रामायण अधिक परिमार्जित अनुकूल और परिष्कृत है । यह अपने विषय और सामाजिक वातावरण के दृष्टिकोण से अतीव शुद्ध है ।^{१४}

रामायण मिस्टर मोरिस के शब्दों में प्राचीन विचारों का एक आश्चर्य जनक आदर्श है । इसके टकर का दूसरा ग्रन्थ आज तक किसी ने देखा ही नहीं । इसके आधार पर कितने ग्रन्थ आज तक बने हैं किसी ने गिनने का कष्ट ही नहीं उठाया । प्रसिद्ध

फ्रांसीसी विद्वान एम० एच० फाउचे (Fauche) ने रामायण के फ्रांसीसी अनुवाद की भूमिका में चिर अनुसन्धान के पश्चात् लिखा है कि रामायण की रचना होमर काव्यों के पूर्व की है। होमर ने अपने विचार यहीं से लिए हैं। प्रथम के तीन अध्यायों की अपूर्व समता को देख कर ही आर्थर लीली फैसला देते हैं कि वाल्मीकि रामायण को पढ़कर ही होमर ने अपने ग्रन्थों की रचना की है। लीली महोदय ने दोनों ग्रन्थों की तुलना ही से एक तीसरा ग्रन्थ रच डाला है।⁷⁸

पाठक इस ग्रन्थ को केवल कवि का काव्य ही समझ कर ही न देखें प्रत्युत इसे भारत का रामायण समझें। वे रामायण द्वारा भारत और भारत के द्वारा रामायण का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

महाभारत—

महर्षि वेदव्यास की यह रचना उस विशाल वृक्ष के समान प्रतीत होती है जो देश के हृदय तृपी भूतल से उत्पन्न होकर उस देश को आश्रय रूपी छाया देता हुआ खड़ा हो। मिस्टर निवेदता के शब्दों में इसकी रचना राष्ट्रीय अमर प्रार्थना का उच्च काव्य है।⁷⁹ मैकडानल महोदय का कथन है कि 'महाभारत आदर्श दर्शन की अक्षय खान है।'⁸⁰ अमरीकन विद्वान जेरेमिह कर्टिन लिखते हैं—मैंने इससे अधिक आनन्द अपने जीवन भर में अन्य किसी भी पुस्तक को पढ़कर प्राप्त नहीं किया। भारतीय आयों का सदाचार और बौद्धिक पद (स्थान) समस्त संसार की आंखें खोल देगा।⁸¹

78 See Rama and Homer.

79. Foot falls of Indian History

80. Sanskrit Literature Page 378

81. Maha Bharat part XXX

महाभारत की रचना के अन्तस्तल से वह स्वर्गीय तान निकलती है जिसके द्वारा भारत ही नहीं समस्त विश्व एक प्रकार के अमृत पूर्व सुख का अनुभव करना है। देविण अमरीका के मिल्ड डक्टर एफ० ए० हेसलर कहते हैं—मेरे जीवन के अनुभव ने मुझे कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं मिला जिसने बुद्धिमानों के इस विशाल ग्रन्थ की भान्ति मुझे आनन्दित किया हो। वास्तव में अतीतकाल में मैंने किसी भी ग्रन्थ की अपेक्षाकृत इसका अधिक अध्ययन किया है और लगभग १००० नोट अपने मनन के लिए कम से तैयार किए हैं। महाभारत ने मेरे सामने एक नवीन संसार का उद्घाटन किया है। मैं इस पुस्तक के पृष्ठों पर अङ्कित बुद्धि, ज्ञान, सत्यता और सत्य प्रेम को देख कर आश्चर्य चकित रह गया। इतना ही नहीं, मैंने कितने ही सत्यताएं जिन्हें ईश्वर और सृष्टि के सम्बन्ध में मेरे हृदय ने स्वयं मुझे बताया था, इस पुस्तक का मैंने सुन्दर और स्पष्ट भाषा में पाया है।^{१२}

चार्ल्स मोरिस की जवानी भी इसका कुछ वर्णन सुन लीजिए—“महाभारत एक विलक्षण ग्रन्थ है। यह केवल एक काव्य नहीं प्रत्युत कवितामय आख्यान है।”^{१३} प्रोफेसर हीरेन बतलाते हैं कि ‘महाभारत एक सम्पन्नतम ग्रन्थ है, जो कभी रचा गया था, —इससे इन्कार नहीं किया जा सकता!’^{१४}

रेवरेण्डपोटर पर्सिवल कहते हैं कि महाभारत एक अत्यन्त योग्यता पूर्ण रचना है। सुयोग्य विद्वान निष्कर्षकों ने बतलाया है कि यह महाकाव्यों का एक अत्यन्त सुन्दर नमूना है जो किसी काल में रचा गया था। यह अपनी शानदारशैली के

^{१२} Roy's Mahabharat

^{१३} Aryan Rice Page 249

^{१४} Historical Researches Vol II Page 161

लिए सुविख्यात हैं।^{१५} = मेट एच० वार्थ लेमी लिखते हैं कि मन् १७२५ ई० में जव मिस्टर विल्किंस ने इस विशाल ग्रन्थ के अंश को प्रकाशित किया था तो संसार इसकी प्रभा ने चौंधिया गया था।^{१६}

विशाल भारत की कुटियों से निकली हुई सर्वोत्कृष्ट रचना ने संसार के कितने हृदयों में सुख शान्ति की थपकियां दीं इनका बहुत कुछ आभास विद्वानों के इन शब्दों से हो गया। अब इसके आदर्श पर रची जाने वाली यूनानी पुस्तक की साक्षी का एक नमूना कर्नल विल्फोर्ड से भी ले लीजिए। आप कहते हैं कि 'डायोनीसस आफ नन्स' (Dionysus of Nouns) का कथानक महाभारत से लिया गया है।^{१७}

महाभारत अपने ढंग का विलकुल वेपोड़ ग्रन्थ है। 'सत्यमेव जयति' और ले डूबता है एक पापी नाव को संभधार में इस का आदि अन्त हैं। कविन्द्र रविन्द्र के शब्दों में 'शताब्दियों पर शताब्दियां व्यतीत होती चली जाती हैं किन्तु रामायण और महाभारत का श्लोक भारत में नाम को भी शुष्क नहीं होता।' ये दोनों महाकाव्य हिमालय और गङ्गा की भांति भारत के हैं।

महाकाव्य

भारतीय महाकवियों ने भावुकता और प्रतिभा को साथ ले कर इस कुसमोद्यान में कदम रखा है। उनकी भाषा में, भावों में, आभास में, और इंगित में एक अलौकिकता है। शब्द सुमन शर शरीर को बाल बाल वचा कर सीधे हृदय में पैठ जाता है, सौरभ मस्तिष्क को सुवासित करने लगता है।

85. The Land of the Vedas Page 79

86. Journal Das Savant for Sept. 1886

87. Asiatic Researches Vol IX Page 93

इस सुधा को मधुलोभी संवरे एक बार ओठों से लगा कर प्रशंसा का राग यावज्जीवन गुनगुनाया करते हैं। प्रोफेसर विन्सत सत्य ही कहते हैं कि हिन्दुओं की भाषा, प्रकृति और रीतिरिवाज का अध्ययन किए बिना कोई यथोचित रूप से प्रशंसा कैसे कर सकता है।”

‘जो जाको गुण जानही सो नेहि आदर देन।’

देखिए, पाश्चात्य संस्कृतज्ञ मैकडानल को काव्य का यह मजा दूसरी जगह तसीब ही नहीं होता। आप तो लोगों को यहां तक समझा देते हैं कि भारतीय काव्य का सुस्वादु लेने के लिए बर्दा रहना आवश्यक है क्योंकि अनुवाद मूल को नहीं पा सकता। ठीक है स्वर्गीय पद्मसिंह के शब्दों में यह आसन्न दूसरे वर्तन में पतटते ही सिरका हो जाता है। आइए देखिए! दुनिया के जोहरियों की आंखें हिन्दू काव्य को प को किन् ललचाई निगाहों में देख रही हैं।

मेघदूत को ही उठा लीजिए, पढ़ना प्रारम्भ कीजिए, सत्य और कल्पना का अन्तर भूल जाइएगा! देखिए, पीटर पर्सिवल जैसे पाश्चात्य पण्डित क्या कहते हैं—‘समस्त रचना प्राकृतिक एवं प्रीतिशील है, सुकोमल भावनाओं का व्यक्तिकरण, राष्ट्रीय चरित्र के सुन्दर प्रभाव अङ्कित किए बिना नहीं रहती।’

यह समस्त यात्रा के चित्रण के पश्चात् सन्देश चाहक मेघ से कहता है—

नूनं तस्य प्रवन रुदिनोच्छून नेत्र प्रियाया,

विश्वासा नार्माशिरतया मित्र वर्षाऽधरोष्ठम्।

हस्तमस्त मुख सप्तकल व्यक्ति लम्बालकृत्वा,

दिन्दोर्दन्य त्वदनु सरणविलष्टयान्ते विभर्ति ॥^{८५} ३०:२३

I view her now ! long weeping Swells her eyes,
 And those dear lips are dried and parting sigh's;
 Sad on her hand her pallid cheek decline;
 And half unseen through veiling tresses shires:
 As when a darking night the moon enshrouds'
 A few faint rays break straggling through the clouds.

प्रोफेसर मैकडानल बतलाते हैं कि इस 'ग्रन्थ का विषय एक सन्देश है, जो एकनिर्वासित अपनी सुदूर वासिनी प्रेयसी को बादलों द्वारा प्रेषित करता है। फाचे (Fauche) कहता है कि योरूपियन साहित्य में मेघदूत की समता का दूसरा ग्रन्थ नहीं। डाक्टर एफ० डब्ल्यू० होपकिन्स संस्कृत प्रोफेसर एल (Yale) विश्वविद्यालय बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि कालीदाम हमारे लिए एक सुन्दर काव्य ग्रन्थ छोड़ गये हैं ।^{१०६} विग्न लोक में विचरण करने वालों के लिए दक्षिण पवन का एक भोंका ।^{१०७} विद्वान मारिया ग्राह्म की सम्मति से-इस काव्य के विशाल सौन्दर्य और सुकुमारता ने हिन्दू महाकाव्यों में विशेष स्थान देखा है ।^{१०८}

रघुवंश—

विद्वान एम० ग्राह्म ने इस की प्रशंसा के गीत अपने लिखित पत्रों में गाये हैं, 'कालत्रुक ने भी इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है ।'^{१०९} इस के काव्य सौरभ से भी मस्तिष्क को सुवासित कर लीजिए:—

80. India old and new Page 61.

90. मित्रा सद्यः किमस्य पुनान्देव दारु द्रुमाणं,
 येनत्वीर स्रुतिसुरमयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः ।
 आग्निह्वयन्ते रणवति मया ते तुषाराद्रियाताः,
 पूर्वं स्पृष्टं किञ्च यदि भवेदङ्गमेभिस्तवेति ॥

91. Letters on India.

92. Letters on India Page 32

एकान्तं पत्रं त्रयानः प्रभुत्वं,

नवं वयः कान्तं मिदं वपुश्च ।

अल्पस्य हेतोर्बहुहातु मिच्छन्—

विचार मूढः प्रतिभानि मन्वान् ॥

राजा का उत्तर भी सुनिये:—

क्षत्राश्रितं त्रायत इत्युदग्रः,

क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु खट्वः ।

राज्येन किं तद्विपरीतं वृत्तेः

प्रणै ह्य कोश मनी मन्त्रैर्वा ॥

शिशुपाल—

मारिया ग्राह्य के शब्दों में 'माघ का शिशुपाल वध संस्कृत के ६ सर्वोत्तम काव्यों में एक है ।'^{१६२} कालत्रुक भी कहते हैं कि एक दूसरा प्रतिष्ठित महाकाव्य है ।'^{१६३} सौन्दर्य की परिभाषा और रवेत्तक की शोभा, दोनों का काव्य में दर्शन कीजिये—

दृष्ट्वेऽपि शैलः सः सुहृर्मुग्धरे,

रपूर्वं वहिस्मय मातृतान ।

क्षणे क्षणे यन्नयतामुपैति,

तदेव रूपं रमणीयं नायाः ॥

कुमार सम्भव—

कालीदास अत्यन्त सौन्दर्योपासक कवि थे, किन्तु इस सौन्दर्य का अन्तिम सिरा होता था भोग-विराग, जहां पहुंच कर कालीदास की कल्पना शान्ति और लेखनी विश्राम ग्रहण करती है । मिस्टर ग्रिफथ इसे 'भाव पूर्ण और सम्मोहक बतलाते हैं ।'^{१६४}

११ Ancient & Mediaeval India Vol, II, Page. 134

१४ Hindu Superiority Page 200.

भारिया प्राह्म के शब्दों में 'हिममण्डित हिमालय का वर्णन सुन्दर और स्वाभाविक है।' ⁹⁵ कवि सौन्दर्य को वस्त्राभूषण सुसज्जित शरीर में नहीं देखता, उस के ही दृष्टिकोण में सौन्दर्य-मृत पान कीजिये—

इयं सा कर्तुं मन्वन्ध्य रूपतां, समधि मास्थाय तपोभिरात्मनः ।

कवि कुल शिरोमणि कालीदास के इस काव्य में कामदेव का उच्छ्वास और धर्म-ध्वनि साथ साथ निकली है ।

किरातार्जुनाय—

“भाव प्राचुर्य और अनुप्रासों का सुन्दर समावेश है।” यह है विद्वान् कालप्रक की सम्मति ! आप भी द्रोपदी की इस वीरोचित भावना का अवलोकन कर कवि-प्रतिमा की दृढ़ दीजिए ।

यशोऽथ गेन्तु मुखनिःसर्था वा मनुष्य संख्या मतिवार्तुः ।

निरुपकानामभि योग भाजां समुत्सर्वाक सुपैति कश्चमी ॥

नलोदय—

श्रीमती मेनिग के शब्दों में “यह असाधारण काव्य है।” रेवरेंड पीटर पर्सिवल कहते हैं—“काव्य-निर्माण में कालिदास ने कवित्व का कोष ही खाली कर दिया है। इस काव्य में अनु-

And now the sun had set with crimson tinge
The loins red had lost its glowing hue
From which it was apparent to the eye;
The sun has been a most notorious thief:
The clear of his beams the fact discloses,
But soon he lost his most unlawful grain,

⁹⁵ Letters on India Page 32,

⁹⁶ Afoients & medivavel India Vol. II. Page 135.

And suffer'd for the sly nefarious deed,
The darkness thicken'd round his Path-to show;
That loss of glory is the fruits of Sin.

प्राप्त के अपूर्व नमूने हैं।^{१६} एक दूसरे आलोचक की सम्मति है—
—इस में संस्कृत भाषा की असाधारण शक्ति का दिग्दर्शन कराया
गया है, कवि की कौशल पर आश्चर्य प्रकट न करना असम्भव
है।^{१७} =

भट्टिकाव्य—

भर्तृहरि का यह काव्य अत्यन्त प्रसिद्ध है।^{१८} इस बिलक्ष्ण
कवि की प्रतिभा का सिका मानते हुए डाक्टर होपकिन्स 'माधु-
दर्शनिक' की उपाधि से विभूषित करते हैं।^{१९} व्याकरण के
विद्यार्थी इसे धातुओं के रूप याद रखने को पढ़ते हैं। इस में
रामायण की कथा संक्षेप रूप में दी गई है। अलिराज और कुसुम
को लेकर कवि ने कितनी सुन्दर कल्पना की है, देखिए:—

प्रभान्वताश्चिन्ति कम्पिताकृतिः,

कुमुदति रेणु विशद्ग विग्रहम् ।

निराम भृङ्ग कुपितेव पदिमनी,

न मानिनो संसहतेऽन्यमंगमम् ॥

नल दमयन्ती—

प्रोफेसर हीरेन इसकी प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि इसके
कुछ भागों का सम्मान होमर भी स्वीकार करेंगे।^{२०} आप कहाँ
जा रहे हैं? केवल इस प्रश्न को पृष्ठने के लिए दमयन्ती के मुँह

97 The Land of the Vedas Page 60.

98. Old India poetry,

99. Abhid Page 137.

100. See India old and new Page 60,

101. Heeren's Historical Researches Vol. II, 167.

से कवि ने कितना अलङ्कारिक श्लोक कहलाया है । कवि का यह कौशल भी सामने है—

निवर्त्येतां हन्त समापयन्तौ,

शिरीष के पश्र्वाभाभिमानम् ॥

पादां क्रियद्गुणमर्मा प्रयामे,

निधी ताते तुच्छदणं मनस्ते ॥

नैषध चरित्र—

श्रीहर्ष के नैषध की गणना संस्कृत महाकाव्य की बृहद्व्रथा में की गई है । मारियाप्राह्म भी स्वीकार करता है कि यह मन्कृत भाषा के सुन्दरतम काव्यों में से एक है । जरा सा कांटा मानव शरीर में बिध कर भीम काय व्यक्तियों को व्याकुल कर देता है किन्तु दमयन्ती सरीखी सुकुमारी राजदुलारी के मर्मस्थान (हृदय) में नल जैसा चक्रवर्ती नरेश प्रवेश कर क्या कुछ अवस्था उत्पन्न कर देगा, कवि के शब्दों में सुनिए—

निविशते यदि शूक शिखा पदे,

सृजति सा क्रियर्नामिव नव्यथाम् ।

मृदुतने त्रितने तुकथं न न,

मननिमृत्तु निविश्य हृदिस्थिनी ॥

यह है हिन्दू महाकाव्यों की एक भांकी, जिस की हम नहीं बड़े २ अमरीकन योरुषियन तक महत्ता स्वीकार करते हैं । दुनिया के काव्य और महाकाव्य इन्हीं की छाया पर रचे गए हैं, इसी आदिम स्तोत्र से निकले हैं । फ्रांसीसी स्पष्ट बतलाते हैं कि हमारे काव्यों का आधार रामायण है । लेसीन महोदय ग्रीक काव्यों में महाभारत का आधार देखते हैं । प्रोफेसर हीरेन अपने विशाल अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यूनानियों की

अपेक्षा जर्मन और अंग्रेजों की देव मालाएं हिन्दुओं के काव्यों में मिलती जुलती है। १०२

नाटक

सभ्यता एवं संस्कृत की परीक्षा में समस्त साहित्य के इस प्रमुख अंग का नीरीक्षण एकान्त आवश्यक होता है, क्योंकि इनका प्रादुर्भाव और विकास जातीय जीवन के उसी स्वर्णकाल में होता है जब लोग प्राकृतिक रहस्यों के उद्घाटन में बहुत कुछ मग्न हो चुकते हैं। जिस भारत ने अपने चिर संचित कोप से द्रिड़ दुनिया को सम्पन्न बना दिया, वह भला नाट्यजैसे आवश्यक साहित्य की वसीयत में कैसे पीछे पिछड़ जाता ?

नाटक के प्रधानतः तीन लक्षण हैं गीत काव्य, आख्यान और कथोपकथन। ये तीनों ही पुरातन ऋग्वेद के पुनीत पृष्ठों पर अंकित हैं। सरमा और पाणिन, पुरुरवा और उर्वशी, यम और यमी के प्रसंगों को पढ़ लीजिए, वैदिककाल ही में आपको भारतीय रंग मंच पर आभास साफ दिखाई देगा। महाभारत में भी नाटक का वर्णन मिलता है। पाणिन ने अपने व्याकरण में 'शिलालिन' और कृशाश्व दो नाट्याचार्यों का उल्लेख किया है। पतञ्जली ने भी अपने महाभाष्य में रंगशालाओं और अभिनय के सम्बन्ध में सुन्दर विवेचन किया है। उस समय 'कंसवध' और बालिवध मरीखे भी अभिनय होने लगे थे। महाभारत काल के पश्चात् लिखी हुई हरिवंश पुराण में भी 'रूपक' में कैलाश पर्वत तक के दृश्य दिखाए जाते थे, जो नाटक की कुशलता और अतीव उन्नत-वस्था के परिचायक हैं। कौवेरमा भिसार और विक्रमोर्वशी के अभिनय कोई हंसी खेल नहीं थे। इस इतिहासिक विवेचन से

यह बात स्पष्ट हो गई कि प्रभु ईसा के जन्म से हजारों साल पहले भारतीय रंगमञ्चों पर बैठ कर अभिनय देखा करते थे। मैक्डानल कीथ आदि प्रमुख पश्चात्य पण्डितों ने भी स्वीकार किया है कि नाटकों का सबसे पहले आरम्भ इसी भारत भूमि में हुआ था।

सभ्यता की प्राचीनता के अखाड़े में चीन भी पुराना पहलवान है। चीनी नाटकों के सम्बन्ध में प्रोफेसर विलसन कहते हैं ... वे सुन्दर और प्रायः मनोरञ्जक हैं। वे सत्यता के साथ गति-विधियों और भावों का प्रदर्शन करते हैं। वे सुसभ्य व्यक्तियों की कृतियाँ हैं।^१ * चीन ने यह कला सीखी कहाँ से ? स्वयं पेकिंग विश्व-विद्यालय परिषद् के सभापति की जवानी सुनिये— 'रंगमंच पर खेले जाते वाले हमारे सर्व प्रथम नाटक का नाम 'पूटू' है। आधुनिक अनुसन्धान से सिद्ध हुआ है कि यह नाटक का प्रचार 'पूटू' नामक देश से हुआ था। विद्वानों का कथन है कि यह टोटुंग से दस हजार मील की दूरी पर दक्षिण भारत के समीप था। इस दृष्टि से नाट्य कला क्षेत्र में भी हम भारत के आभारी हैं।' सर डब्ल्यू० जोस की राय है कि विक्रमादित्य के काल में जिन्होंने ईसा से एक शताब्दी पहले राज्य किया था नाट्यकीय मनोरञ्जन की विभिन्न शाखाओं का पूर्ण विकास हो चुका था।^२ * हिन्दू नाटकों का विकास कब हुआ था इसकी तारीख ढूँढना आसान नहीं। विद्वान प्रोफेसर इस से पहले के सुप्रसिद्ध नाट्यकार 'भास' को भूल ही गए जिस ने लगभग एक दर्जन नाटकों की रचना की थी।

रेवरेण्ड पीटर पर्सिवल जैसे सम्मानित विद्वान की भी इस विषय में सम्मति लेना आवश्यक है आप कहते हैं हिन्दू नाटक

केवल प्राचीन ही नहीं, किन्तु उन में मौलिकता भी है। संस्कृत में सर्वोत्तम नाटक लिखे गए हैं।^{१०५}

हिन्दू नाट्य कला में रूपक के दस भेद हैं—नाटक प्रकरण भागा, व्यायोग, समवकार, डिम, इहामृग, अङ्क, वीथी, और प्रहसन्न आगे चल कर उपरूपक के भी १८ भेद किये गये हैं। रङ्गशालाएं भी तीन प्रकार की बतलाई गई हैं—प्रेक्ष गृह (१०८ हाथ लम्बा) चतुर्गश्च (६४ × ३२ हाथ) और त्र्यश्च। इस के अतिरिक्त नायक पात्रों तथा अङ्गार और वस्त्राभूषण का इतना विस्तृत विवेचन मिलता है जो कि परिष्कृत स्टेजों पर भी नहीं दिया देता। प्रोफेसर हीरेन की राय में हिन्दुओं के विशाल थियेटर (Theatre) ही पात्रों के परिधान और सजावट का पता बतलाने में काफी हैं।^{१०६}

हिन्दू नाट्य शास्त्र में शृंगार, वीर, कण्ठा अद्भुत रोद्र भयानक वीभत्स हास्य और शान्त—ये नौ रस हैं। इनकी जागृति कर दर्शकों के हृदय में नाट्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। 'लैटिन और ग्रीक के सुखान्त नाटकों की कामुकता हिन्दुओं में कम है'—यह है चिद्धान विलसन का फैसला! अन्यत्र आप यह भी लिखते हैं कि हिन्दू ड्रामे सम्माननीय हैं उसमें कभी परकीया नायिका को सहत्व नहीं दिया जाता।^{१०७} दूसरी विशेषता रेवरेण्ड पी० पर्सिवल से सुनिये—'उनकी एक विशेषता यह भी है कि उनमें दुःखदायक चित्रण नहीं होता। भारत निवासी ऐसे दृश्यों के विरुद्ध हैं।'^{१०८}

105. The Land of the Vedas Page 87.

106. Hearen's Historical Researches Vol II

107. Miel's History of India

108. The Land of the Vedas Page 84.

नाटक जाति के आन्तरिक और बाह्य जीवन का चित्र है। समाज का हृदय नाटकों में स्पष्ट दिखाई पड़ता। भारतीय नाटकों में कहीं पर नैतिकता की सीमा में एक अंगुल आगे भी पैर नहीं बढ़ाया गया। यह प्राचीन हिन्दुओं की कला-कुशलता का एक ज्वलन्त प्रमाण है। प्रेम के चित्रण में दुनिया के लेखक बे लगाम हो गये किन्तु भारतीय नहीं, श्रीमती मेनिंग इस चित्रण पर सौ जान से निश्चावर है आपकी राय में "भारतीय काव्यों" की भान्ति प्रेम और मनोरोग का व्यक्तिकरण और कहीं इस वेग में नहीं हुआ।¹⁰⁹

यों तो नाट्य कला के आचार्य भरत मुनि माने जाते हैं। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वान कालिदास के समय से ही हिन्दू नाटक कला में विशेष रूपेण परिचित हैं। कारण मुसलमानों के आक्रमणों ने जहाँ कंटों के काफिलों पर भारत लूट की अनुत्तल सम्मति लादी थी, वहाँ साहित्य में भट्टियां गर्म करने में भी किञ्चित् संकोच और वेदना का अनुभव नहीं किया। महानुभाव विल्सन के शब्दों में काल "चक्र से जो कुछ बचाया जा सका सामने है।"

रेवरेण्ड पीटर पर्सिवल बतलाते हैं कि 'सम्राट विक्रमादित्य विद्या का माना हुआ संरक्षक था। स्वयं यह और उसके आठ कवि हिन्दू साहित्य के नवरत्न हैं। कालिदास इनमें अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इसने भारतीय नाटकों को पूर्णता के शिखर पर पहुँचा दिया था। इसे हिन्दू शैकरूपियर कहा जाता है किन्तु अकारण नहीं।¹¹⁰ प्रोफेसर हीरेन कहते हैं 'कालिदास अपनी जाति के ही नहीं प्रत्युत समस्त सभ्य मानवता के सम्मान का कारण हुआ

109. Ancient and medival India Vol II Page 178

110 The Land of the Vedas Page 33.

है। ' ' ' प्रोफेसर मैकडानल के शब्दों में 'कालिदास ने जिस कल्पना प्राचुर्य से काम लिया है और जो कौशल, कोमल भावनाओं के प्रकाशन में दिखलाया है, उसने संसार के नाट्यकारों में उनको उच्च स्थान दिया है। ' ' ' विल्मन महोदय के अनुसार कालिदास संसार के सर्वोत्कृष्ट नाट्यकार थे।

शकुन्तला—

कालिदास का सर्वोत्कृष्ट नाटक शकुन्तला है, जिसका अनुवाद आज संसार की ससम्मत समुन्नत भाषाओं में हो चुका है। इसके लिए डाक्टर पेट्स (Yates) के उद्गार सुनिष्ट 'इस कृत्य को कालिदास ने प्राच्य-पाण्डित्य के अगाध समुद्र से लाए हुए मुक्ताओं द्वारा अलंकृत किया है।' ' ' ' डाक्टर हयटर कहते हैं। शकुन्तला के प्रेम और शोक ने आधुनिक कवियों के लिए एक मूल मिढान्त को सजा दिया है। योंरूप के महाकवि गेटे ने एक ही पद्य में शकुन्तला का गीत गाया है—“यदि कोई तन्मयवत्सर के फूल और परिगणित वत्सर के फल, मर्त्य और स्वर्ग को एकत्र देखना चाहें तो वे उसे शकुन्तला में प्राप्त होंगे।' ' ' ' वास्तव में शकुन्तला का पूर्व और उत्तर मिलना ही स्वर्ग और मर्त्य है।

विद्वान् मारिया ग्राह्म कहता है—इसके चित्रण में अपूर्व बिल

111, Historical Researches Vol II Page 1931

112 Sanskrit Literature Page 353,

113, The Land of the Vedas Page 89.

114 Wouldst thou the young years.

Blossoms and fruits of its decline,

And all by which the soul is Charmed,

Enraptured, feasted, fed.

क्षणा है।^{११४} 'वेदों की भूमि' नामक पुस्तक के विद्वान लेखक नाटक के रंगमञ्च पर किस भान्ति विस्मय-विमग्न हो कर खड़े रहे उनके ही शब्दों में सुनिष्ट। 'चेतन और अचेतन के साथ ऐसी आन्तरिक आत्मीयता अन्यत्र एकान्त दृर्लभ है तपोवन में शकुन्तला के विद्याप्रदण करते समय कएव कहते हैं—

“पातुं न प्रथम व्यवस्थितिं जलं युष्मास्वपीतेषु या,

नादत्तं त्रियमगडनापि भवतां स्नेहेनया पल्लवम् ।

आद्ये वः कुमुदं प्रसूतिं समये यस्याभवन्नुत्पवः,

मेव यन्ति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुजायताम् ॥

*Wouldst thou the earth and Heaven itself in one
sole name Combine*

*I name thee O Sakuntla ! and all atonce is said
Transtateley Eastwiche.*

शकुन्तला के बाद फिर संसार ने ऐसी रचना नहीं देखी। इसके आधार पर विदेशियों में अनेकों ग्रन्थों की रचना हुई है। योरूपियन संस्कृतज्ञ मैकडानल कहते हैं कि प्रतिष्ठित शकुन्तला नाटक के आधार पर प्रसिद्धतम योरूपियन नाटक लिखे गये हैं।^{११५}

विक्रमोर्वशी—

कालीदास की दूसरी रचना विक्रमोर्वशी है इसकी तुलना शकुन्तला के साथ करते हुए प्रोफेसर विल्सन कहते हैं कि “भाव

115 Letters on India Page 36,

‘My body moves onward, but my restless heart runs,’

Back to her like a light flag borne on a staff against the wind
and fluttering in an opposite direction.

116, History of Sanskrit Literature Page 416.

कोमलता और वर्णन कुशलता दोनों में समान है ! विचारों की सुकुमारता और शैली का उत्कृष्ट सौन्दर्य भी दोनों को समान रूप में प्राप्त है । फिर किसे प्रधानता दी जाय, यही कठिन है चित्रण स्वाभाविकता कुशल कवि की कला का अपना कमाल है कलम के ये जोहर चित्रकार भी कूँची में भी तो नहीं आसक्त । रथ सञ्चालन के इस करिश्मे को देखिये—

अप्रे यान्ति रथस्य रेणु पट्वा चृणां भवन्तो घना-

अक्रधान्निर्गन्तरेषु वितनोत्यन्यामिवारा वनाम् !

चित्रा रम्भविनिश्चयं हयशिरस्याग्रामवच्चासरं,

यन्मध्ये समप्रस्थितो ध्वजपटः प्रान्ते च द्रंगानिजात् ॥

राम चरित्र—

कालिदास के बाद सातवीं शताब्दी के अन्त में भवभूति हुए हैं । इस प्रतिभासम्पन्न नाट्यकार की लेखनी ने मालतीमाधव के रूप में शृंगार, रामचरित्र के रूप में कल्याण और महावीर नाटक के रूप में वीर रस का स्रोत सञ्चिचारित किया है । उनमें से प्रथम दो बहुत प्रसिद्ध हैं । पीटर पर्सिवल लिखते हैं कि 'इन्होंने प्रकृति का भव्य उत्कृष्ट चित्रण किया है । मेघमाला मण्डित पर्वत, घने निकुञ्ज, निर्भरों का झर झर कर अन्धकार से ढके विशाल वन और अर्धरात्रि की नीरखता इन के प्रिय विषय हैं ।' ११० विल्सन महाशय की राय है—कि मानवीय चित्तवृत्तियों का ऐसा यथार्थ चित्रण कदाचित् ही किसी अन्य हिन्दू नाटक में मिले । राम और सीता का वियोग अवस्था में विरह प्रकाश बड़ी कोमलता से व्यक्त किया गया है ।न्याय और सौन्दर्य के ऐसे भाव किसी भी साहित्य से कम नहीं ।' ११५

117' The Land of the Vedas Page 87.

118, Wilson's Theatre of the Hindus Vol II Page 383-384

‘वज्रादीनि कटोरगणि मद्रूनि कुसमादपि’ राम के ही मुंह से सुनिए—

अस्मिन्नेव जनागुह्ये त्वमभवरत्नसार्धं दत्तत्रणः,

मा हर्षः कृत कौतुका चिरमभृद गोदावरा सैकते ।

आयांत्या परिदुम नायितमिव त्वां वीक्ष्य वद्धस्तया,

कान्त्यादाराविन्द कुड्मन निभो मुग्धः प्राणसाधजनिः ॥

मालती माधव—

मालती माधव के मस्यन्ध में एम० ग्राह्य सहोदय बतलाते हैं—भवभूति ने इसे १० अंकों में समाप्त किया है । प्रथम पांच अंक अत्यन्त रोचक हैं इन्होंने कथानक के विकास को स्वभाविक बना दिया है । कथानक बहुत ही मनोरञ्जक है, विलक्षण अगड़े भी धरेलू हैं । १० विद्वान विन्सन की गाय है कि ऐसे विभिन्न प्राणियों को इस भान्ति एकता के सूत्र में जकड़ देना हिन्दुओं का राष्ट्रीय चरित्र है । वास्तव में इस नाटक की स्नेह स्रिता बड़ी विषम भूमि से प्रवाहित हुई हैं किन्तु फिर भी कामुकता के कर्दम का कहीं पता भी नहीं । वियोगी माधव, मालती को हजम कर जाने का दोषारोपण बन पर किस भान्ति आरोपित करता है भवभूति के शब्दों में सुनिए—

नवेषु लोभे प्रसृष्टेषु कान्ति दर्शः कुरंगेषु गीत गजेषु ।

जनासुनव्रथमिति प्रमथ्य व्यक्तं विमलं विपिने प्रियामे ॥३॥

119. Lesteres on India Page 37 and 41.

§ नव पुष्टित लोभ के वृच्छनुने नव कोमल कानि लई सुकुमारी ।

अरु लोचन चारु कुरंगु ने गीत मत्त मर्दगनु ने मतकारी ॥

इन वेत्ता नखेलिनू ने मन मोहन नम्र स्वभाहि की छवि धारी ।

यह जानि परै सब ने वन में मिली चांति लई मम प्राण पियारां ॥

—सत्यनारायण

मुद्राराक्षस—

यह विशाख दत्त की लेखनी का कमाल है। समस्त नाटक में केवल एक स्त्री का अविभाव हुआ है, वह भी प्रौढ़ा गृहणी के रूप में। फिर भी नाटक में सजीव रोचकता है। पंडितों की मूर्ख और संहार, राजनीतिक गुत्थियों का सुलभना और दृटना, विद्वान लेखक की प्रतिभा का आश्चर्यजनक नमूना है। प्रोफेसर विन्सन ' ' ' के विचार से समस्त नाटकों के साहित्य में जामन का इस से उत्तम एवं सफल चित्रण प्राप्त करना कठिन है। इतिहासिक और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से यह महत्व पूर्ण है। एच० जी० रालीविन्सन आई० ई० एस्० लिखते हैं—'यह एक अत्यन्त रोचक ऐतिहासिक नाटक है और चारों ओर में चन्द्रगुप्त पर प्रकाश डालता है। ' ' ' मौर्य साम्राज्य के संस्थापक, योद्धा का मिर्चिलियन, अर्थशास्त्र और नीति के विश्व-विख्यात आचार्य का पर्णकुटी का चित्र कवि के शब्दों में सुनिष्ट और अतीत भारत की इस प्राचीन पावन वेदी पर दो अश्रु-क्षण चढ़ा डिये—

उपशकनमेतद्धं देकं गोमयानाम्

बहुभिरपहतानां बहिर्भास्तोममेतम् ।

शरणमापे समिद्धिः शुष्यमाणमिदमिदं

विनमितं पटलानां दृश्यते जीर्णं कुक्ष्यम् ।†

1. Wilson, s theatre of the Hindus Vol II Page 254

2. Intercourse between India and the Western world Page 45.

कहुं परे गोमय शुष्क, कहुं सिद्ध परि मौभा दे रही ।

कहुं तिन, कहुं जव—रासि लागी बहुत जो भिच्छा लही ॥

कहुं कुस परे, कहुं समिध सूखत भार सों ताके नयो ।

यह लखी छप्पर महा जर जर होई कैसी झुकि गयो ॥

प्रबोध चन्द्रोदय—

प्रबोध चन्द्रोदय भी अपनी शैली का निगला नाटक है इसके रचना करने वाले हैं कृष्ण मिश्र । प्रोफेसर लीमन कहते हैं कि 'दूसरे देशों के इतिहास में एक भी नाटक इस की समता का नहीं ।'

मृच्छकटिक—

शूद्रक का मृच्छकटिक भी तत्कालीन समाज का एक सुन्दर चित्रण है ! इस में नाटकीय कला का अच्छा समावेश है । वर्णन शैली सुन्दर और भाषा रोचक हैं । संसार में आपतियों का आक्रमण किस प्रबल वेग से होता है, न्यायालय में खड़े चारुदन के शब्दों में सुनिए—

यथैव पुन्यं यथैव विद्वाने,

समेत्य पातुं मधुराः प्रवृत्तिः ॥

एवं मनुष्यस्य विपत्तिं काले ।

द्विद्वन्वर्था बहुर्ना भवन्ति ॥

एक दो नहीं, अनेकों नाटकों से संस्कृत का भव्यभण्डार भरा है । रत्नावली, और बेगमी संहार की टकर के नाटक रोम चीन मिश्र के साहित्य कोष में आज भी न मिल सकेंगे । मैक्समूलर पिशल आदि सभी विद्वान भारतीय नाटकों की प्राचीनता का लोहा मानते हैं । सर विलियम जोंस कहते हैं कि आधुनिक योरोप के किसी भी देश से भारतीय नाटक संख्या में कम नहीं । । मोरियस ब्राह्म * २२ की शुभ सम्मति है कि हिन्दू
† कपटत है जैमे मधुद, खिन्नत फूल को देखी ।

परत विपत चहुं ओर से , अनरथ होत विमेखी ॥

साहित्य के नाटक योगपियनों को बहुत आनन्द दायक सिद्ध होंगे, यदि वे इन का भली भान्ति अनुशीलन करें।

गीत काव्य

गीत काव्य के बिना भाषा अधूरी ही रहती है। मनोभाव को रंगस्थली गीत-काव्य का ही क्षेत्र है। पाठकों को प्राचीन काव्य कान्त की इस कथावी का भी निरीक्षण कर लेना ही योग्य है। गीत काव्य का सौन्दर्य है, विशाल भावों को कुछ एक शब्दों में बन्द कर देना। कवि इस काव्य में बहुत कुछ पाठकों पर भी छोड़ देता है और स्वयं इशारा कर आगे बढ़ जाता है। अस्तु गीत काव्यों की समुन्नति साहित्य सम्पन्नता की निशानी है। महाकवि जयदेव का गीत गोविन्द संस्कृति साहित्य का एक प्रतिष्ठित एवं सुप्रसिद्ध गीतकाव्य (Lyric Poetry) है। इसकी कोमल कान्त पदावली और रमणीयता अद्वितीय है। इसका यथार्थ आनन्द संस्कृतज्ञ ही लूट सकते हैं। विद्वान् ग्रीफथ की सम्मति पढ़िये—गीतों के उत्कृष्ट स्वरमाधुर्य की दाद वही दे सकते हैं जो मूल में उसका आनन्द लूट सकते हैं।¹²³ संस्कृतज्ञ साहित्य के मर्मज्ञ भारिया ब्राह्म के मुंह से सुन लीजिए—“हिन्दू कवियों में बहुत से, गीत काव्यों के भी लेखक हैं किन्तु मैं केवल जयदेव का ही नाम लेता हूँ जिसकी रचनाएं धार्मिक और नैतिक दृष्टि से उत्तम हैं। जैसे हाफिज की फारसी में।’ प्रोफेसर हीरेन का भी अनुभव सुनिए—‘गीत गोविन्द को पढ़कर सम्मोहित न होना असम्भव है!’ मैक्डानल महोदय इसके माधुर्य और रंगीनी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं—जयदेव के काव्य को

123 *Ancients and medineval India* Vol II Page 263.

124, *Letters on India*.

इंगलिश का जामा पहिनाता असम्भव हैं १२५ असर कवि जय-
देव के काव्य निकुञ्ज में कैसा आनन्द थिरक रहा है जरा अन्दर
वढ़कर अनुभव कीजिये ।

निमृत् निकुञ्ज गुहं गतया निशि रहमि निनीय वगन्तं ।

चकित विनोक्ति सकल दिशा रतिरभम भरेण हृमन् ॥१॥

सखि हे ! केशी मुदरं ।

रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया सविकारं ।

भृतृहरि शतक—

डाक्टर होपकिन्स पाठकों को इस ग्रन्थ रत्न के सम्बन्ध में
परामर्श देते हैं—‘यह अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ है, मैंने इसे
पढ़ा है और मुझे विश्वास है कि आप भी पढ़ेंगे । . . इस माधु
दार्शनिक ने प्रेम, नैतिकता और धार्मिक गीतों को बड़ी सुन्दरता
से संवारा है ।’ १२६ लेखक ने प्रेमियों की आशा निराशा, क्रोध,
उपासना आदि भावों का बड़ी कुशलता से चित्रण किया है ।
मैकडानल महोदय के शब्दों में—यह बात बड़े मार्के की है कि
एक ही सीमित विषय को जिसकी अवस्था परिमित और मनो-
भावनाएं समान है, कवि ने विल्कुल नये ढंग से उनका चित्रण
किया है । १२७ प्रोफेसर वाशबर्न बतलाते हैं कि वह प्रेम और
हृदय के परिणाम में विश्वास करता है । १२८ स्त्रियां अबला
नहीं सबल हैं, भृतृहरि के मुंह से सुनिए—

नून हि ते कविवरा विपरित बोधा,

ये नित्यमाहुरवना इति कामिनी नाम् ।

125. Sanskrit Literature Page, 345

126. India old and new,

127. See Sanskrit Literature, Page 342.

128. Separation still is union if the hearts united be, but if
hearts are separated then divorce should set them free,

यामिर्विजोक्तं तारक दष्टि पार्तः,

शक्रा द्यौरपि विजितास्त्वय्याः कथं ताः ॥

The fruits of love on earth is this

One single thought of two souls wed.

If those made one have two fold thought

Its but the union of the dead

India old and new, Page, 61

ऋतु संहार—

कालिदास के गीत काव्य की ऋतु संहार श्रीमती मेनिंग के ग्रन्थों में भारतीयों द्वारा ही नहीं समस्त संस्कृत साहित्य के विश्वार्थियों द्वारा सराहना की गई है। सर जॉन ईसकी भूमिभूमि प्रशंसा करते हुए कहते हैं शोक का विषय है कि समस्त पुस्तक का अनुवाद करना ही असम्भव है। १९२६

कथा कहानियां



संस्कृत साहित्य में केवल, दर्शन, काव्य, तत्त्वज्ञान भगवद्गीता, कर्मकाण्ड आदि का विवेचन नहीं, उसमें सर्व साधारण नर नारी बालक-बालिकाओं की शिक्षा सामग्री भी प्रचुर परिमाण में मौजूद है। भूमण्डल पर सब से पहला देश भारतवर्ष ही है जिसने कथा कहानी आख्यायिका, उपाख्यान का आविष्कार किया है। योरूपियन विद्वान एम० ब्राह्म बतलाता है कि कथाओं द्वारा शिक्षा

देने की प्रणाली के आविष्कार होने का श्रेय भारतीयों को ही प्राप्त है।^{१३०} प्रोफेसर विल्मन का कथन है कि हिन्दुओं की कथा कहानियों में क्रियात्मक विधान है। सुन्दर शासन के नियमों तथा धार्मिक एवं सामाजिक व्यवहारों का सुन्दर विवेचन है।^{१३१}

वृहत्कथा—

इस ग्रन्थ को गुणाक्ष ने पैशाचिक भाषा में लिखा था। छठी शताब्दी में इस ग्रन्थ की धूम थी। इसके दो संस्कृत अनुवाद मिलते हैं, एक काश्मीर और दूसरा नेपाल का। सर स्टेनली रीड और पी० आर० गाडेल जी० एस० आई० एक स्वर में स्वीकार करते हैं कि इसाप (Æsop's Fables) और अरेबियन नाइट्स (Arabian Nights) के किसमें जो अगणित पीढ़ियों से योज्य को प्रसन्नता प्राप्त करा रहे हैं उनका मूल भारत में है। + + + कदाचित् यूनान के दर्शन की नींव से भी ये अपना आस्तित्व रखते हैं।^{१३२}

कांट जर्नास्टजर्ना कहते हैं कि योरूप में सुप्रसिद्ध अरेबियन नाइट्स का मूल स्तोत्र हिन्दू है। पहले इसका अनुवाद पर्शियन में (अलिफ लला) हुआ और फिर अन्य भाषाओं में संस्कृत में इसका नाम वृहत्कथा सागर है।^{१३३}

पञ्चतन्त्र—

इसका इतिहास काफी रहस्यपूर्ण है पहले थ्योडर विनफे ने इसका अनुवाद किया। फिर जिन जिन भाषाओं और देशों में

130 Letters on India Page, 88

1 1, Essay's on Sanskrit Literature, Vol II Page 85

132 India: The new phase, Page, 2-3,

133. Theogony of the Hindus Page, 85

इसका अनुवाद हुआ उसका पता लगाया विद्वान् जे० हर्टेल ने । प्रसिद्ध इतिहासकार फरिश्ता लिखता है कि इस पुस्तक को भारत सम्राट ने पर्शियन सम्राट नौशेरवां के पास एक शतरंज बोर्ड के साथ भेजा था । उनके वजीर ने इसका पहलवी भाषा में अनुवाद किया और नाम रखा 'कलीलादमना' । ये दोनों नाम पंचतंत्र के प्रथम अध्याय में वर्णित दो शृगाल चकटंक और दमनक है । मुलतान मिर्जा ने परिकुप्त फार्सी में इसका अनुवाद 'अनुवार नहेली' नाम से कराया । कलीला दमना से इसका अनुवाद ४० और पञ्चतंत्र से १५ भाषाओं में हुआ है । संसारकी इतनी भाषाओं में कदाचित ही किसी अन्य ग्रन्थ का अनुवाद हुआ हो ।

प्रोफेसर विल्सन इसके अरबी में अनुवादित होने का एक प्रमाण बड़े मार्के का पेश करते हैं । अरबी में एक पक्षी का नाम टिटवी (Titawi) आया है । यह अरबी के किसी धातु से नहीं निकलता । यह नाम एक भारतीय पक्षी का है जिसे संस्कृत में 'टिटिभा' बंगला में टिटभि और हिन्दी में 'टिटहरी' कहते हैं ।^{१३५} इसका रचना काल पाश्चात्य पण्डित ३ से ५ वीं शताब्दी का अनुमान करते हैं ।

हितोपदेश —

इसका काल १००० और १३०० ई० के बीच में है । मिस्टर भारियाप्राह्ल लिखते हैं—'इसमें संदेह का स्थान नहीं कि एक प्राचीन कहानियों का संग्रह योरूप में बहुत दिनों से प्रचलित है जिसे पिल्पेज फेबुलज (Pilpays Fables) कहते हैं । मिस्टर विन्किंस ने इसका मौलिक नाम ढूँढ कर हितोपदेश बतलाया है

¹³⁴ Briggs' Frishta Vol I Page, 149- 150

¹³⁵ See Essays on Sanskrit Literature

इसमें एक ब्राह्मण शिष्यक द्वारा शान्तव्यवस्था के सिद्धान्त, गृहस्थ एवं वैयक्तिक चरित्र सम्बन्धी बहुत सी कथायें कही गई हैं।^{१३६}

शुक समुत्थान—

इसमें तोते की सत्तर कहानियां हैं। चांदबर्षी जनाब्दी में इसका फारसी में अनुवाद हुआ, जिसका नाम था 'तृती'। इसके आधार पर ट्रिस्टान अन इमोल्डे (Tristan un Iso de) नामक ग्रन्थ की रचना हुई है।

सिंहासन द्वित्रिंशतिका—

यह तीनों रूपों में मिलती है। एक गद्य, दूसरी पद्य और तीसरी चंपू में। १४१७ में इसका फारसी में अनुवाद हुआ था। स्याम और मंगोलिया देशों में भी यह अनुदित हुई है। सर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर की सम्मति है कि सुललित हिन्दू कल्पना न परियों की कहानियों को भी जन्म दिया था। आज प्रचलित परियों की कहानियां (Fairy tales) का आदिम स्थान संस्कृत ही है।^{१३७}

वैताल पंच विशंतिका—

ये पच्चीस कहानियां बृहत्कथा के कश्मीरी अनुवाद में मिलती हैं। ये कहानियां श्मशान निवासी वैताल की हैं। मैकडानल महोदय लिखते हैं कि क्रूसेड काल में, शुक समुत्थान सिंहासन द्वित्रिंशतिका वैताल पंचविशंतिका और कथा सगित्सागर आदि यौरूप में अनुदित हुई। श्रीमती मेनिंग का विचार है कि संस्कृत की कहानियां प्रायः सभी भाषाओं में चली गई हैं।

दण्डी का दशकुमार चरित्र, सुवन्धु का वासदत्ता, बाण की

136. Letters on Iddia Page 68

137. Imperial Gazetteer, India,

कदम्बरी और त्रिविक्रम भट्ट का नलचंपू न जाने कितनी भाषाओं में अब तक अनुवादित हो चुके हैं। इतिहासकार एल्फिन्स्टन कहते हैं कि किस्से कहानियों की रचना में हिन्दू लोग शेष मानवता के शिक्षक रहे हैं।^{१३} विद्वान लैफोन्टाइन (Lefontaine) स्वीकार करता है कि उसको कृत्यों का आधार भारतीय 'विद्यापति' हैं।^{१४} सर डब्ल्यू० हण्टर वनलाते हैं कि प्राचीनतम भारतीय पशु कथाएं आज भी इंग्लैण्ड और जर्मनी की बेशुं कहानियां हैं। अरब लेखक मसूदी ने १५६ ई० में लिखा है कि सिन्धवाद की कहानी हिन्दुस्तान से ली गई है। यह कहानी फार्सी, अरबी, हिब्रू, यूनानी, सीरीयन तथा योरुप की अन्य भाषाओं में विभिन्न नामों से प्राप्त होती है।

भारत के मुख्य तीन साहित्य हैं, आर्य, बौद्ध, और जैन। इन तीनों ही में नीति विषयक, शिक्षाप्रद एवं मनोरञ्जक कथा कहानियों की प्रचुरता है। संसार की प्रायः सभी भाषाओं ने अपने साहित्य में इनकी कथा कहानियों की समूची पुस्तकों का विसा मूल का आश्रय दिये ही अनुवाद कर लिया है। कहावतों के विषय में मिस्टर जे० पी० मिल्स लिखते हैं कि आसाम में इनका बहुमूल्य कोष है, कहा नहीं जा सकता कि संसार में इनका कहा तक विस्तार हुआ। उदाहरण रूप में प्लीनी अपनी एक कहानी में आसाम का उल्लेख करता है। एक कहानी जा आजकल आसाम में प्रचलित है, मिश्र में ईसा से १३०० वर्ष पूर्व पाई जाती है।^{१५} इन प्रमाणों के आधार पर कोई भी विद्वान यह स्वी-

13 History of India Page 156

14 Sanskrit Literature, Page 418

15 Modern review for Dec, 1911

कार किण बिना नहीं रह सकता कि संसार के साहित्य और सभ्यता का मूल स्रोत भारत है ।

इतिहास



इतिहास मनुष्य के कार्यों द्वारा समाज पर घटित होने वाले भले बुरे परिणाम के वैज्ञानिक विवेचन का शास्त्र है । यह भूत काल को स्पष्ट कर भविष्य की अदृष्टि सृष्टि पर भी प्रकाश डालने वाला एक अद्भुत आलोक है । जिन जातियों की यह ज्योति मलिन होती है उनकी भावी उन्नति आशंका से खाली नहीं ;

इतिहास राष्ट्रभिमान की शिक्षा देने का समुत्तम माध्यम समझा जाता है । भारत इसके मर्म को भली भाँति समझता था । इसी लिए यहाँ इतिहास निर्माता वीरात्माओं का अनादिकाल से आदर होता चला आ रहा है । भारत का कोई भी प्राचीन ग्रन्थ उठाकर देखिए, इतिहास की भक्तक से खाली न होगा, किसी भी मन्दिर की तरफ देखिए किसी भी मूर्ति का निरीक्षण कीजिए कोई न कोई जबरदस्त ऐतिहासिक महत्व आपको मालूम हो जायगा । विदुषी एम० ई० ने वुल (वहन निवेदिता) कहती हैं— 'प्रायः कहा जाता है कि भारतीय साहित्य में इतिहास नहीं,.... हमें स्मरण रखना चाहिये कि इस सम्बन्ध में स्वयं भारत एक विशाल लिखित प्रमाण है । वह इतिहास है जिसका पढ़ना हमें सीखना चाहिए । कुछ लोग कहते हैं राजनीतिक शक्ति ह्रास होने पर इतिहास साहित्य का एक अंग बन कर उत्तर जीवी नहीं रह सकता । यही कारण है कि भारत के पास बहुत सी वंश परिचायक पुस्तकें नहीं । जो लोग इस पर जोर देते हैं, इस बात पर

विश्राम करते हैं कि इसके इतिहास के प्रत्येक नवीन काल में विगत इतिहास नष्ट कर दिया गया । दूसरी ओर हम अपनी वंशावलियों और अन्य साहित्य के विभागों में इस कमी का पूरा बदला पाते हैं वंगाल के कुछ इतिहासज्ञों का जो इसके निर्माण की नदयारी में लगे हैं कहना है कि इतिहास की सामग्री इतनी अधिक है कि उसे सन्हाल कर रखना कठिन हो गया है । अन्त में आप कहती हैं कि यदि भारत स्वयं अपना इतिहास है तो उसके पढ़ने का उत्तम उपाय है उसका परिभ्रमण ।^१ सुविख्यात इतिहासवेत्त कर्नल जेम्स टाड भी कहते हैं—“हम यदि राजनीतिक परिवर्तनों और उन गड़बड़ियों पर दृष्टिपात करें जो महमूद और उसके अनुदार पक्षपाती आक्रमणकारियों द्वारा हुई तो हमें इसकी इतिहासिक न्यूनता का निष्कर्ष मालूम हो जायगा और हम इस गलत परिणाम पर न पहुंचेंगे कि हिन्दू लोग उस कला से अनभिज्ञ थे जो अन्य देशों में आदिम काल से ही प्रचलित था । यह विचार करने का विषय है कि हिन्दुओं जैसी सुसभ्य जाति जिसने कलाओं का ठीक २ सम्पूर्ण विकास किया, जिसने ललित कला, वस्तुकला, मन्दिर निर्माण कला, काव्य और संगीत केवल विकसित ही नहीं किए गए अपितु दूसरों को सिखाए गए और जिसके नियमों तक का महत्वपूर्ण विवेचन किया गया, वह अपने साधारण घटनाओं की चित्रण कला इतिहास से अपरिचित थी, अपने राजाओं के चरित्र चित्रण और शासन व्यवस्था के अङ्कण में कौरी थी ।^२

प्राचीन भारतीयों के लेखों से स्थान २ पर प्रकट होता है कि वे भूत के अनुभवों का भाविष्य में निर्माण में बहुत अवदस्त हाथ

1. Foot falls of Indian History Page, 6-7 and 15

2. Introduction to Tod's Rajasthan

समझते थे। मिस्टर डी० भी इस बात को स्वीकार नहीं करते कि हिन्दुओं के साहित्य में इतिहास का अभाव था और ब्राह्मणों के रचें हुए बृहद् ग्रन्थों में इतिहास नहीं।^३ मिस्टर विल्सन भी इस वे मिर पैर की बात से विल्कुल सहमत नहीं, आप कहते हैं— कि यह कहना कि हिन्दुओं ने इतिहास नहीं रचा गलत है। दक्षिण का इतिहास स्थानीय इतिहास से भरा पड़ा है जिन हिन्दुओं ने लिखा है। मिस्टर स्टर्लिंग उड़ीसा और कनल टाड को राजपूताने में पर्याप्त इतिहास मिला है।^४

हिन्दू इतिहास को 'पञ्चमवेद' के नाम से सम्बोधित करते थे। इससे अधिक आदर संसार में और कोई अपने इतिहास को दे ही क्या सकता है। भारतीय इतिहास पर कटाक्ष करने वाले दुराग्राही विद्वानों से टाड महोदय पूछते हैं—'यदि प्राचीन काल में लिखित इतिहास नहीं था तो भारत के इतिहास को लिखने का मसाला अब्दुल फजल ने कहाँ से प्राप्त किया।

पाश्चात्य पण्डितों का यह विवेचन भारतीयों की इतिहास विज्ञता का ज्वलन्त प्रमाण है। अब उन साधनों को भी मिस्टर एच० एल० ओ० गैरट आई० ई० एस० की जवानी सुन लीजिए—जिनके आधार पर भारतीय इतिहास के भव्य भवन का निर्माण हो सकता है—चारों वेद, वेदांग, आरण्यक, उपनिषद् और अन्य ग्रन्थ जो आदिम आयु के रहन सहन पर प्रकाश डालते हैं। महाकाव्य—रामायण और महाभारत, जिनमें काफी इतिहास है। बुद्धों के धार्मिक ग्रन्थ और सम्राट अशोक के शिलालेख, जो बुद्ध कालीन इतिहास के परिचायक हैं। राजपूत सम्राटों का जो वर्णन जैन ग्रन्थों और चीनी यात्रियों के यात्रा वर्णन से मिलता है।

3 History of Hindustan Preface

4. Mill's India Vol II Page, 67 foot note

यूनानी राजदूत मैगस्थनीज की पुस्तक से जो चन्द्रगुप्त के दरबार में रहा था। पुरान, यद्यपि इनमें अन्य विषय भी हैं फिर भी ये इतिहासिक घटनाओं से भरपूर हैं। इनमें दी हुई वंशावली का आधार प्रमाणित है। शिलालेख, सिक्के और ताम्रपत्र भी विभिन्न मन्त्राओं और वंशों का सन् और सम्बन्ध दर्शाने के लिए उपयुक्त हैं। इनके अतिरिक्त कलहर्ष की राजतरङ्गिणी वान का हर्ष चरित्र और चन्द्र का पृथ्वीराज रासव भी उस समय का तुलनात्मक वर्णन मिलता है।^५

इसके अतिरिक्त कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, महा-भाष्य इन्द्रविजय, शुक्रनीति, नागानन्द की रत्नावली, कालिदास की शकुन्तला, शुद्रक का मृच्छ कटिक, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, सुरमान आदि अन्य रासव आदि ग्रन्थ तथा पुरानी गुफाएँ और मन्दिरों की चित्रकारी आदि कम महत्वपूर्ण नहीं। प्राचीन काल में भारत की विस्तृत सीमाएँ वसुन्धरा से मिलती थीं। अस्तु अन्य देशों की देवमालाएँ और इतिहास निर्माण में कुछ कम सहायक न होंगे। कुछ विद्वानों ने पुराणों को जिनमें बहुत कुछ मिश्रित होने के कारण अनावश्यक समझ रखा है। किन्तु पार्सी-टर आदि पाश्चात्य विद्वानों के प्रयत्नों से वे भी इतिहास का स्रोत स्वीकृत किए जा चुके हैं। प्रसिद्ध इतिहास लेखक बी० ए० स्मिथ भी स्वीकार करते हैं—गम्भीर अध्ययन के बाद बहुत सुन्दर और बहुमूल्य ऐतिहासिक मसाला मिला। उदाहरणार्थ विष्णु पुराण में मोर्य वंश के सम्बन्ध में (कहावतें) तथा मत्स्य पुराण में अन्ध इतिहास के सम्बन्ध में अत्यन्त विश्वासनीय बातें मिली हैं।^६

5. A History of India. Page 12-13

6. See Early History of India Page, 2

परम्परागत कथा कथावर्तों भी इतिहास का एक उपयोगी अङ्ग हैं। मिस्टर जी० केर हार्डी एम० पी० के शब्दों में ये भारत के प्रत्येक भाग में प्रचुरता से प्रचलित हैं। इनके द्वारा भी इतिहास लेखन में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

भारत में भारतीय इतिहास सम्बन्धी समालोच और साधनों की एकान्त कमी नहीं है, कमी है केवल उस पुनः एक शृङ्खला में गूँथने वाले परिश्रमी निष्पेक्ष इतिहास अनुसन्धान कर्त्ताओं की।

इतिहास को नष्ट भ्रष्ट करना परले दुर्जे की वर्चस्वता है। भारतीय इतिहास पर विदेशियों के असंख्य आघात हुए हैं। भारतीय ग्रन्थों की होलियाँ जलाई गई हैं, उन्हें दूसरे देशों में लाद कर ले जाया गया है, औरङ्गजेब द्वारा तत्कालीन इतिहास लेखन की नितान्त मनाही कर दी गई थी। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आज भारत के इतिहासिक कोष में भी इतनी पुस्तकें अवशेष हैं। इतने अधिक भारत कोष विशलता की और सम्पन्नता का प्रमाण ही क्या हो सकता है।

भारत का कण कण प्रत्येक भग्नस्वरूप और टोला, खण्डहर और शिवालय अतीत इतिहास का बोलता हुआ चित्र है। स्वर्गीय डाक्टर एनीविसेन्ट भी यही कहती हैं—‘भारत का एक शृङ्खला भद्दा इतिहास है जो प्राचीन काल की ओर दौड़ता है। वह कितना प्राचीन है, किस में बतलाने का सामर्थ्य है।’ अन्त में हम सिस्टर निवेदिता के शब्दों में यही कहेंगे ‘आप उस भारतीय वातावरण में क्षणमात्र का विश्राम लीजिए, आप अपने चारों ओर के इतिहास पर विचार कीजिए।’^६

7. See India Impression and Suggestions,

8. A bird's eye view of Indians Pa-4 Page 2

9. Foot falls of Indian History Page 19

उपनिषद्

उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

जुगस्यधारा निशिता दुरत्यया दुरा पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

—कठोपनिषद्

दर्शनों का स्रोत इहि लोक एवं परलोक का समन्वय जीवन और मरण का प्रश्न, तथा आत्मा और परमात्मा की विषय व्याख्या उपनिषदों के भण्डार में मौजूद है। उपनिषदों के अगाध अनन्त सागर के एक एक बिन्दु को लेकर संसार में विविध ग्रन्थों की रचना हुई है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि बर्ड्मर्थ की टिन्टर्न अब्बे (Tintern Adbey) नामक काव्य को पढ़ लीजिए, टूहर ने मे के पोइम्स आफ फिलासिटी (Poems of Felicity) को नेरहवें पृष्ठ पर खोल कर देखिए छान्दोग्य के तत्त्वों का कितना सुन्दर निरूपण है। उपनिषद् सख्या में १०८ हैं किन्तु उनमें से प्रसिद्ध ये हैं। छान्दोग्य, बृहदारण्यक तैत्तिरीय, ऐतरेय, माण्डूक्य, मुण्डक, प्रश्न, कठ, केन ईश आदि।

जर्मन तत्त्ववेत्ता शोपनहार उपनिषदों के सम्बन्ध में लिखता है—उपनिषदों के प्रत्येक पद गम्भीर और नवीन विचार उत्पन्न होते हैं, इनमें सर्वोत्कृष्ट पवित्र और सच्चे भाव मौजूद हैं..... आगे चल कर आप कहते हैं।' इन्होंने मुझे जीवन में शान्ति प्रदान की है और मृत्योपरान्त भी शान्ति देंगे।' सर डब्ल्यू० हण्टर भी इसकी महत्ता का गुणगान करते हुए लिखते हैं—'जिन समस्याओं को रोमन ग्रीक सुलझा न सके, जिन प्रश्नों ने मध्य कालीन और आधुनिक विज्ञान वेताओं को परेशान कर रखा है उन सब का उत्तम और समुचित उत्तर दर्शनों में मौजूद है।' १०

प्रोफेसर मैक्समूलर की राय है कि कोई भी इनकी सराहना किए बिना नहीं रह सकता। गोल्डस्टक महाशय मसस्त दर्शनों के जीवाणु उपनिषदों में पाते हैं। लेडि रोनाल्डो का कथन है—
ये आदिम कालीन भारतीयों की बड़े मार्के की उत्पत्ति है, यह उनके उच्च विचारों का निदोष एवं आश्चर्यजनक प्रमाण है। इनमें महान मौलिकता के भाव हैं।¹¹

अब जरा इन उपनिषदों के ज्ञान कोप के एक जगमगाने आलोक को भी देखिये:—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥६—ईशोपनिषद् ।

बासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराण्य विहाय जीर्णानि अन्यानि सयाति नवानि देही ।

गीता—

योगेश्वर कृष्ण की अधिकार पूर्ण वाणी से निकले हुए गीता के पद विश्व साहित्य में एकदम अनूठे और अनुपम हैं। रेतों को हंसा देना, मुर्दों में जान डाल देना, व्याकुलों को सान्त्वना प्रदान करना गीता की अपनी विशेषताएं हैं।

जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान विलियम बान हम्बोल्ट बतलाते हैं—
संसार के पास सब से अधिक उत्तम और महान ग्रन्थ भगवद्गीता है। मैं अपने भाग्य को अत्यन्त धन्य समझता हूँ कि उसने गीता के अवलोकनार्थ जीवन प्रदान किया। मिस्टर एफ० टी० ब्रुक का कथन है कि भगवद्गीता राष्ट्रीय जीवन की पूंजी है। राष्ट्रीय धर्म पुस्तक बनने वाले सभी लक्षण इसमें मौजूद हैं। यह महा-
† ईश्वर का सर्वाधार, सर्वव्यापी समझने वाला किसी की घृणा का पात्र कैसे बन सकता है !

भारत के अतीत कालीन स्वर्ग पुग के सन्देश रूप में मानव जीवन को अधिकधिक उज्ज्वल बनाने के लिए प्रदान की गई थी । कय भविष्य के सावसौमिक धर्म की प्रसिद्ध धर्म पुस्तक है ।^{१२}

गीता के पाठकों की कल्पना को कई अद्भुत रम्य स्थलों का प्रवास करने की अभी मन्थि मिलती है । एलिफिन्स्टन महोदय इसे पढ़ कर अपनी सम्मति प्रकट करते हैं—‘गीता सर्वोत्तम ग्रन्थ है । इसमें मानव कर्तव्य का सुन्दर विवेचन किया गया है ।’^{१३} गीता की रमणीयता पल पल पर नवीनता धारण करती है । जितनी बार आप पढ़ेंगे कोई न कोई नूतन विचार आपको अवश्य मिलेगा । देखिए जीवन मरण की महान उलझी गुत्थी को योगेश्वर कितनी सरलता से हल करते हैं ।

पुस्तकालय



पुस्तकालयों का इतिहास मानवीय सभ्यता की समता का समझना चाहिये । क्योंकि इसका श्रीगणेश उसी समय से होता है जब से हाथ से कलम आदि पकड़ कर भावों को व्यक्त करने की कला का ज्ञान लोगों को हुआ । भारतीय आर्य जब वेदों को स्मरण न रख सके, अथवा त्रिकालदर्शी ज्ञान ने उन्हें पुस्तक बद्ध करने के लिए बाध्य किया, वहीं से पुस्तक और उसके बाद पुस्तकालयों का जन्म समझना चाहिए ।

वैदिक काल में हमें गौतम, गर्ग, शांडिल्य आदि कई ऋषियों के नामों का ज्ञान है जो जीवित जाग्रत पुस्तकालय से किसी प्रकार

12. Gospel of Life.

13 History of India Page 49 .

कम न थे । वैदिक काल में साहित्य का विकास वास्तव में आप्य-यौन्पादक हैं । वेदों की व्याख्या रूप में ही जो शाखा ग्रन्थ लिखे गये थे, उनकी गणना ११२७ की संख्या तक पहुंची थी ।

ऐतिहासिक युग में रामायण, गीता, महाभारत, उपनिषद्, ब्राह्मण, अरण्यक, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, पुराण, व्याकरण दर्शन, ज्योतिष इतिहास, कामशास्त्र, अर्थशास्त्र, स्मृति दण्ड-शास्त्र, शिल्प शास्त्र आदि । इस प्रकार पता चलता है कि वैदिक काल के पुस्तकालय पौराणिक काल में अपनी उन्नति के ऊंचे शिखर पर पहुंच गए थे ।

बौद्ध काल लगभग ईसा से ६ शताब्दी पूर्व का समय माना जाता है इस समय भारत में पुस्तकालयों की साधारण उन्नति हुई । बौद्ध काल में बुद्धों के ही सैकड़ों ग्रन्थ थे उनमें से कुछ प्रधान हैं । धम्मपद, वशिष्ट, सुत्त, धार्मिक सुत्त मोहवग्ग विनय पिटक, सुत पिटक और अविधम्म पिटक आदि । बौद्ध भिक्षुक प्रायः अपने प्रत्येक मन्दिर में एक पुस्तकालय अवश्य रखते थे । तत्कालीन सम्राटों ने भी इस प्रगति को ऊंचा उठाने में काफी सहायता दी थी । सम्राट चन्द्रगुप्त का अपना एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था, जिसमें से कितनी ही पुस्तकें सल्यूकस को भेंट दी गई थी । व्याचार्य चाणक्य के पास भी बहुत सी पुस्तक संग्रह का पता इतिहास देता है । सम्राट अशोक का भी निजी पुस्तकालय था । तत्कालीन देश देशान्तरों में बुद्ध धर्म का प्रचार भी प्राचीन ग्रन्थ प्रचुरता का परिचायक है । बौद्धकाल में प्रायः सभी विश्व-विद्यालयों के साथ एक बृहद् पुस्तकालय हुआ करता था । तिब्बती इतिवृत्ति के अनुसार नालन्दा विश्व-विद्यालय का पुस्तकालय धर्मगञ्ज नामक प्रदेश में स्थित था । इसकी तीन बड़ी २ इमारतें, थी । एक का नाम रत्नोदधि था, यह भवन नौ मंजिल का था

द्वारा दो भवन रत्नसागर और रत्नरञ्जक भी है, है मजिल के हैं। इनमें कितने ग्रन्थ रहे होंगे इसका स्वयं अनुमान लगाइये। इनके अतिरिक्त आदान्त पुरी विक्रमशिला जगदल महागंधीला आदि के भी बड़े २ पुस्तकालय थे। प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता गय बहादुर शरचन्द्र दाम लिखते हैं कि ये (अन्तिमदा) पुस्तकालय वन्यार खिलजी के सेनापति की आज्ञा से जलाकर खाक कर डाले गये थे।

कुमारगुप्त का भी विश्व-विश्रुत पुस्तकालय था। डाक्टर थावोट की सम्मति है कि प्राचीन ज्योतिष शास्त्र की अत्यन्त प्रसिद्ध पुस्तक रोमक सिद्धान्त कुमारगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुस्तकालय में पाई जाती थी। इतिहास से पता चलता है कि विक्रमादित्य का बृहद् पुस्तकालय नौ विभागों में विभक्त था। प्रत्येक विभाग तद्विषयक विद्वानों के अधिकार में था। राजा हर्षवर्धन के पास भी अपना एक अद्वितीय पुस्तकालय था। बाबा भट्ट इसके समय का माना हुआ विद्वान था। इतिहासज्ञ मैकडानल बतलाते हैं कि इसने हस्तलिखित प्रतियां पढ़ने के लिए एक पण्डित नियुक्त किया था।^{१४} इससे साफ पता चलता है कि उक्त पण्डित 'वाण' के पुस्तकालय का पुस्तकाध्यक्ष था, अन्यथा हस्तलिखित प्रतियां पढ़ने के लिए एक व्यक्ति विशेष रखने की क्या जरूरत ?

हिन्दू राजाओं के अतिरिक्त मुगल सम्राटों में अकबर ने भी पुस्तक संग्रह की ओर विशेष ध्यान दिया था। बर्नियर और टेवर नियर नामक फ्रांसीसी यात्री भी काशी विश्व-विद्यालय की एक पुस्तकालय का वर्णन करते हैं जिसमें बैठ कर उन्होंने जलपान किया था।^{१५} भारत के ग्रन्थ रत्नों से आज तक नगर का नगर

14. Hindustan review for 1906

15. History of Sanskrit Literature,

बसा होता यदि असम्भ्य विदेशी मूर्खतावश उन्हें अग्नि अर्पित न करते । सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने अनहलवाड़ा पट्टन को लायब्रेरी को जला कर स्वाहा कर दिया था । फिरोज शाह ने कोहाना के एल विशाल संस्कृत पुस्तकालय को आग लगवाकर सत्यानाश कर दिया था । सुसलमान इतिहासकार सैयद गुलाम हुसैन लिखते हैं कि औरङ्गजेब बहुत पक्षपाती बादशाह था, यह जहां कहीं हिन्दुओं की पुस्तकें पाता था जलवा देता था ।”^{१६}

संसार के कोने कोने में सम्भ्यता संस्कृत का प्रचार करने वाले भारतीयों के पास कितनी पुस्तकें और पुस्तकालय रहें होंगे इसका अनुमान लगाना भी आसान नहीं । साहित्य को संस्कृत का सुमुकर समझने वाले इनका संस्थापन स्वदेश में ही नहीं विदेशों में भी किया था क्योंकि इनका एक मात्र उद्देश्य था ज्ञान का प्रचार । इतिहास साक्षी है कि जितने भी विदेशी रात्री और दर्शक भारत आये अन्य उपहारों के साथ पुस्तकें भी ले गये । जिन भद्र फाहियान और हुएनसांग को जाने दीजिये हर्ष कालीन चीनी यात्री इत्सिङ्ग भी ६०० से ऊपर हस्तलिखित ग्रन्थ यहां से ले गया था । वर्णर बाख्तियार खिलजी के कारण न जाने कितने बौद्ध भिक्षु तिब्बत, चीन, नेपाल, और भूटान में भाग गये थे । जहां कि अब भी १५०० सौ के लगभग बौद्ध साहित्य के ग्रन्थ मौजूद हैं । योरुपियन लोग भी कुछ कम पुस्तकें नहीं ले गए ! भारत में सम्पत्ति की ही भान्ति ग्रन्थों की भी लूट और बरबादी हुई है किन्तु ऐसी अवस्था में भी किसी सुसम्पन्न देश की अपेक्षा भारत में हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या आज भी ज्यादा है । सम्भवत हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ ७ लख से भी ज्यादा होंगे । श्री जी०

15. Travels in the mugal Empire, Page 341

16. Hindu Superiority, Page 117

आर० राय ने बड़ी छान बीन के बाद विभिन्न संस्थाओं के पुस्तकालयों में रखी हुई संस्कृत की हस्तलिखित पुस्तकों की तालिका प्रकाशित करवाई है। उसके अनुसार

पञ्जाब विश्व विद्यालय में	६४००
गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज काशी	४४०००
डी० ए० बी० कालेज लाहौर	६४००
गेशियाटिक सोसायटी कलकत्ता	२५०००
कनकना संस्कृत साहित्य परिषद में	५०००
नंजोर राज्य	१२०००
त्रिवेन्द्रम राज्य	१००००
मैसूर राज्य	१६०००
भगडार कर रिसर्च इन्स्टीच्यूट पूना	३००००
आनन्दाश्रम पूना	१६०००
बड़ोदा राज्य	२००००
ऑरिएण्टल पुस्तकालय मद्रास	३००००

इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न नगरों और शहरों में न जाने कितनी पुस्तकें भोजपत्र, ताड़पत्र और कागजों पर लिखी मौजूद हैं। नेपाल की यात्रा करने वाले यामिनी कान्तसेन लिखते हैं कि नेपाल के ग्रन्थगार में ६०००० हस्तलिखित पुस्तकें, यह संग्रह समस्त एशिया में अद्वितीय है।^{१७} सम्प्रति भारत में पुस्तकालयों का विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। आशा है बहुत शीघ्र यहां भारत का विखरा हुआ साहित्य संग्रहीत होकर सामने आ जायगा।

वैद्य विद्या

संसार में जीवन से प्यारी वस्तु दूसरी नहीं। यही कारण है कि कीट पतङ्ग से लेकर, मनुष्य तक वृद्ध, जीर्ण रोगी से तन्दुरुस्त जवान तक सभी जीवन रञ्जु को अधिक लम्बी करने के उद्योग में प्रयत्नशील रहते हैं। जिस जीवन से इहि लौकिक एवं पारलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, उसे चिरकाल तक स्वस्थ एवं कार्यक्षम बनाए रखने के ही लिए प्राचीन आर्यों ने 'आयुर्वेद' का अनुसन्धान किया था। बंगाल के भूतपूर्व लेफ्टीनेन्ट गवर्नर सर जार्ज कैम्पबेल लिखते हैं कि 'वे (हिन्दू) मानवता के प्रति हृदय में दया भाव रखते हैं जो कि मानव स्वभाव का एक अंग है। उनके प्रधान कार्य मानव समाज के लाभ के लिए होते हैं। एक मत्कर्मी हिन्दू गरीबों को भोजन देने के लिए संस्थायें खोलता है, अथवा यात्रियों के लिए कुएँ और सराय बनवाता है। उन्हें धूप से बचने के लिए सायेदार वृक्ष लगवाता है।' ¹ वात अक्षरशः सत्य है। दूसरों के लिए जीना और मरना ही प्राचीन हिन्दुओं के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। उनका यह बड़ा चढ़ा चिकित्सा विज्ञान भी सेवा धर्म ही के लिए था,—धन, यश संचय के लिए नहीं।

'आयुर्वेद' चिकित्सा प्रणाली विश्व की आदि चिकित्सा पद्धति है। विश्वमान्य आचार्य, अग्निवेश चरक, धनवन्तरि, सुश्रुत, भरद्वाज, कपिश-थला, भेठ, जातुकर्ण, पाराशर, हरीत, ओदिलिक, पांचाल, वाग्भट्ट, भट्टा, हरिश्चन्द्र, चन्द्रकाकर,

1, Modern India Page 12,13

2. नागार्थं नापि कामार्थम् भूत दयां प्रति ।

वर्तते अश्चिकित्सायां स सर्व मति वर्तते ॥—चरक

कृषि, कर्मवीराचार्य, भोज, और गौतम, नागाजुन, वृद्धकाश्यप, ब्रह्माचन्द्र, तीसटाचार्य, अमर, जीवक, हिरणाक्ष, सात्यिक, जम्पाणि आदि प्राचीन भारत के प्राणाचार्य हैं।

‘आयुर्वेद’ का सम्पूर्ण साहित्य यद्यपि आज सुलभ नहीं, फिर भी अवशिष्ट सात्र ही संसार की अन्य समस्त चिकित्सा प्रणालियों के साहित्य से कहीं अधिक बड़ा है। प्रोफेसर बीवर भी स्वीकार करते हैं कि ‘साहित्य और आचार्यों की संख्या बहुत अधिक है।’^३ प्रोफेसर विल्सन भी यही कहते हैं—संस्कृत में चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी साहित्य बहुत बड़ा है। नवीं शताब्दी में अरब लेखकों ने कुछ प्रधान ग्रन्थों के नाम लिए हैं जिनका बगदाद में अनुवाद हुआ था। इनके अन्दर चिकित्सा विज्ञान की सभी शाखाओं का वर्णन है, जिसमें शल्य शास्त्र कितने ही अनुभूत गंभीर निरीक्षण और चिकित्सा प्रणाली भी सम्मिलित हैं।^४ भारतीय चिकित्सा प्रणाली कितनी सम्पूर्ण है, भारत सरकार के भूतपूर्व सर्जन जेनरल सर चार्ल्स पार्डी ल्यूकिस की जवानी सुनिये जितना अधिक मैं भारत में रहूँगा, उतना ही यहां के प्राचीन पुस्तकों के प्रति मेरा आदर सम्मान बढ़ता जायगा और अधिकाधिक यही समझूँगा कि पश्चिम को अभी पूर्व से बहुत कुछ सीखना है।

“आजकल हम लोग अपने आपको जिस चिकित्सक प्रणाली का प्रणेता कह कर गर्व करते हैं। भारतीय महर्षि हमारे आर्चि-र्भाव से पूर्व उसका विषय विवेचन कर रख गये है।”

आयुर्वेद की प्रशंसा करते हुए प्रोफेसर विल्सन लिखते हैं—
“प्राचीन हिन्दुओं ने औषधि ज्ञान और चौर फाड़ में सब से अधिक योग्यता प्राप्त कर रखी थी, जितना कि लिखित प्रमाण

३ Weder's Indian Literature Page 26५

४ Wilson's work Vol II

मिलता है। उनकी स्वभाविक एकाग्रता एवं चतुरता ने उन्हें उच्चकोटि का निरीक्षक बना रखा था। साथ ही उनको स्वदेश की उर्वरा भूमि ने उनके लिए बहुमूल्य औषधियाँ भी जुटा रखी थी। उनका निदान उच्चकोटि का और निघन्टु बहुत बृहद् था।^५ मायव निदान आज भी संसार में अपनी सानी का दूसरा ग्रन्थ नहीं रखता।

जिन अविष्कारों पर आज पश्चात्य फूले नहीं समाते वे यहां लाखों वर्ष पूर्व व्यवहृत होते थे। लेफ्टीनेण्ट कर्नल डब्ल्यू जी० किंग ने मद्रास विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते हुए स्पष्ट बतलाया था—“मनुस्मृति में इस विषय की पूर्ण रूप से व्याख्या की गई है कि शुद्ध जल का संग्रह और व्यवहार कैसे किया जाय औषधि द्वारा कुओं का पानी साफ करना, महामारी फैलने पर कृमि नाशक औषधियों द्वारा स्वच्छता रखना... आदि वैष्णव नियम मनुस्मृति में बतलाये गये हैं।”^६ मद्रास के भूतपूर्व गवर्नर लार्ड एम्पविल की सम्मति है—‘भारत वासियों को कर्नल किंग का कृतज्ञ होना चाहिये। उन्होंने पूर्ण रीति से बताया है कि जिस समय योरुप सिवासी अज्ञानता और जंगलीपन के घोर अन्धकार में थे, भारतीय चिकित्सा पद्धति के सिद्धान्तों को भली भान्ति जानते थे।

सर विलियम हण्टर ने उस विषय में क्या कुछ अनुभव किया यह भी उन्हीं के शब्दों में सुन लीजिए—‘भारतीय औषधि शास्त्र ने विज्ञान के पूर्णाङ्गों का विवेचन किया है। इसमें शरीर की बनावट, भीतरी अवयवों, मांस पेशियों, पुटों, धमनियों और नाड़ियों का भी वर्णन है। हिन्दुओं के निघन्टु में खनिज, वनस्पति और पशु सम्बन्धी औषधियों का बृहद् भण्डार है जिनमें से बहुतों का

5. Wilson's work Vol II Page 269

6. Sanitary Record 1898

व्यंग आयुर्निक योरुपियन डाक्टर भी करते हैं ।^१ भारत में आयुर्वेदशास्त्र का इतना प्रचुर प्रचार हुआ था कि यहां प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यक बातों का पूरा पता था । आज भी भारत के गांवों में बहुत से स्त्री पुरुष ऐसे निरर्तों जो बड़े २ भयानक रोगों को मरलता के साथ अच्छा कर रहे हैं । जे० केर हार्डी (Keir Hardie) एम० पी० कलकत्ते को दुकानों पर स्त्री, पुरुषों और पशुओं की मूर्तियां देख कर आश्चर्य चकित हो कहते हैं—“शरीर विज्ञान का ज्ञान भी इन्हें विरासतमें मिला है ? नहीं तो फिर जो एक दिन के लिए भी कालेज या स्कूल नहीं गए, उनमें यह कहाँ से आया ।”^२ किन्तु विचारपूर्ण दृष्टि से देखने पर मालूम हो जायगा कि यह भारती मिट्टी और पानी का ही प्रभाव है ।

आयुर्वेदकि औषधियां कितनी अच्छी रामबाण होती हैं । प्रख्यात पाश्चात्य पण्डित सर जान उडरफी का अनुभव सुन लीजिए ! ‘आयुर्वेदिक औषधियां गुणकारी हैं यह मैं उनके सम्बन्ध में कहता हूँ जिनका मैंने स्वयं व्यवहार किया है । वे कुछ ऐनोपेथिक दवाओं की भान्ति नुकसान पहुंचाने वाली नहीं होती । कोई भी आयुर्वेदिक औषधि किसी भी अवस्था में हानिकारक नहीं होती । समस्त भारतीय वस्तुओं की भान्ति वह सुन्दर लाभ पहुंचाने में स्वाभाविक होती हैं । वे सस्ती और सरलता से प्राप्त होने वाली हैं, अधिकांश मूल्य केवल उनके एकाग्रित करने का व्यय होता है । अन्त में उडरफी महोदय भारतीयों के विदेशी वस्तु प्रेम पर व्यंग करते हुए कहते हैं ‘किन्तु नहीं वे सब ऐसा कैसे कर सकता है । वे पाश्चात्य तो नहीं ।’^३

1. Imperial Indian Gazetteer 'India' Page 120

2. India Impress ons and Suggestions, Page 31

3. Bhart Shakti

शल्यचिकित्सा—

जिम चीर फाड़ को सीख कर आज अंग्रेज विद्वान गवें में फूँत उठते हैं वह इसी दानवी देश का दानव्य है । बृहत् भारत के प्राणाचार्यों ने ही संसार को वायों पर पट्टी बांधना सिखाया था । विश्वास न हो तो मिस्टर वेवर से पूछ देंगिए—“आज भी पाश्चात्य विद्वान भारतीय शल्य चिकित्सा में बहुत कुछ सीख सकते हैं । जैसे कि उन्होंने कटी हुई नाक के जोड़ने की विधि भारतीयों से सीखी थी ।”^{१०} प्रोफेसर मैकडानल भी इसी का समर्थन करते हैं ‘नाक का आपरेशन और कृत्रिम नाक बनाना अंग्रेजों ने भारतीयों से विगत शताब्दी में सीखा था ।’^{११} मर डब्ल्यू० हण्टर के कथनानुसार हिन्दू नाक कान आदि के चीर फाड़ और उनकी कृत्रिम रचना में विशेष निपुण थे । जिसे कि योलुपियन सर्जनों ने उनसे लिया है । .. प्राचीन भारतीय अंत-छेद करते थे, रुविर स्त्राव रोक सकते थे पथरी निकालते थे, अन्त्र-वृद्धि, भगंदर, नाड़ी व्रण एवं अर्श को ठीक कर देते थे । वे गर्भ एवं स्त्रियों के रोगों के सूक्ष्म से सूक्ष्म आपरेशन करते थे ।^{१२} डाक्टर सील बतलाते हैं कि यहां चिकित्सीयों को सीखाने के लिए लाशों का आपरेशन किया जाता था । इतिहासकार एल्फिन्स्टन की राय है कि भारतीयों का शल्यशास्त्र उसी कमाल का है, जैसा कि उनकी औषधियां ।^{१३} रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल भी इसका अनुमोदन करते हुए लिखते हैं—‘उनकी (हिन्दुओं) प्राचीन

10. Weder's Indian Literature, Page 260

11. History of Sanskrit Literature Page, 247

12. Indian Gazetteer, India Page, 220

13. History of India Page, 147

पुस्तकों में १२७ प्रकार के चीर फाड़ के अस्त्रों का वर्णन है ।^{१४} विदुषी मेनिंग वतलाती है कि चीर फाड़ के अस्त्र इतने तीव्र थे कि लम्बाई में बाल को चीर कर दो भाग कर देते थे ।^{१५}

सर्जन सुश्रुत और विख्यात चरक ने जो कुछ दिया था, उसे सीखने में, समझने में आधुनिक योरुप को अभी सदियां लगेंगी । इतना कुछ वतलाने पर भी डाक्टर विलियम स्टर्लिंग यही कहते हैं कि यकृत के विषय में अभी बहुत कुछ हमें सीखना है । उसकी अनेक कार्य प्रणालियां हैं कुछ स्पष्ट और कुछ अस्पष्ट ।^{१६}

रसायन शास्त्र—

मिस्टर एल्फिन्सटन कहते हैं कि उनका (भारतीय) रसायनिक ज्ञान आशा के बाहर और विस्मय कारक था । + + + वे गन्धक शोरा आदि के तेजाब (Acid), जिस्त, लोहा, सीसा आदि के आक्साइड (Oxide) तथा कार्बोनेट और साल्फाइड आदि तैयार करते थे । कभी २ उनके बनाने की विधियां विलक्षण हुआ करती थी सन् १६०६ ई० में कलकत्ते में व्याख्यान देते हुए डाक्टर एनीविसेन्ट ने कहा था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों औषधियों की दृष्टि से पाश्चात्यों से बढ़ कर हैं ।^{१७} रेवरेंड पीटर पर्सिवल भी स्वीकार करते हैं कि उनका औषधि ज्ञान विशाल था, किंग्स कालेज के प्रोफेसर रोआयल (Royal) कहते हैं कि उनकी रसायनिक निपुणता भी कुछ कम न थी ।^{१८} यात्री अलवेरनी वतलाता है कि 'वे हिन्दू कीमिया (रसायन) की

14. The Land of the Veda Page 139

15 Ancient and medaeval India, Vol II, Page, 346

16. "We have still much to learn about the liver, It has several functions— Some obvious, others not"

17. On 'National Universities in India'

18. The Land of the Vedas

भान्ति एक अन्य विद्या भी जानते हैं जिसे रसायन कहते हैं। इसका सिद्धान्त निराश रोगियों को पुनः स्वस्थ करना और बुढ़ों को जवान बनाना है। इस भान्ति वृद्ध वैसे ही हो जाते हैं जैसे कि जवानी के करीब थे। सफेद बाल काले हो जाते हैं, उनकी शक्तियाँ पुनः प्रबल हो जाती हैं यहाँ तक कि स्त्री सहवास के लिए भी पूर्ववत् शक्ति पाजाती है और इस संसार में उनकी आयु चिरकाल के लिए बढ़जाती है... इस कला का प्रसिद्ध प्रतिनिधि सोमनाथ के पास किला देहिक का रहने वाला था। यह हमारे काल से लगभग सौ वर्ष पूर्व हुआ था।”^{१९}

भारतीय रसायन शास्त्र के इन काया कल्पों को देख मुन कर अमरीका के सुप्रसिद्ध डाक्टर जी० एम० क्लार्क एम० ए० एम० डी० आधुनिक डाक्टरों को सत्पराशर देते हैं ‘यदि आधुनिक डाक्टर प्रचलित रसायन तथा औषधियों को छोड़ दें और चरक के अनुसार रोगियों की औषधि व्यवस्था करें, तो जगत् में श्व बाहकों का कार्य बहुत कम हो जाय और घट जाय जीर्ण निर्वल रोगियों की संख्या।’

धातृ शास्त्र—

धातृ विद्या (Midwifery) के सम्बन्ध में डाक्टर सर हण्टर लिखते हैं कि “वे (हिन्दू) इस शास्त्र में सिद्धहस्त थे।”^{२०} यह शास्त्र आधुनिक चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद से लिया गया है। इन्साईक्लोपीडिया मेडिका की छठी जिल्द के पृष्ठ १८२२ का चरक संहिता और भाव प्रकाश के तद् विषयक धातृ प्रकर्ण का मिलान कर देखिए आज भारत में इस विषय का ज्ञान रखने वालों

19. Aldernni's India Vol I, Page 133-139

20. Indian Gazetteer 'India' Page 220, See also, weder's Indian Literature, Page, 270

जिनमें ही अनपढ़ दाइयां मौजूदक हैं जिनकी पढ़ता की परीक्षा कर बड़ी २ लेडी डाक्टरों की बुद्धि चर्खा हो जायगी।

सूचिका भेदन—

भारतीय प्राणाचार्य सूचिका भेदन (Injection) और टीका (Vaccination) की क्रिया से संसार को कोरा छोड़ जाने यह कैसे हो सकता है। भूतपूर्व मद्रास के गवर्नर लार्ड एम्पथिल ने सन १८०५ ई० में व्याख्यान देते हुए कहा था कि कर्नल किंग ने जेनर (jenner) के आविष्कार से पूर्ण भारत में टीके और इन्जेक्शन की क्रिया का प्रचलित होना सिद्ध कर दिया है।^{१०१} विलेड पीटर पर्सिवल बतलाते हैं कि वेल्सनिज द्रव्य (अस्म और रक्त) का प्रयोग आन्तरिक रूप में करते थे। आयुर्वेद में 'सूचिका भेद रस' आज भी मिलता है जिसका नाम ही इस बात का द्योतक है कि यह इन्जेक्शन के लिए पेटेन्ट था। भारतीय प्रचलित गोदन या लीला क्रिया भी इसी की परिचायक है। मो० आर० टेबना नामक एक योरुपियन मद्रास में सुब्राह्मण्यम के मन्दिर मेले का उल्लेख करता है। यहां रोगियों के शरीर में सूइयां चुभा कर उन्हें प्रातः काल सुब्राह्मण्यम के कुण्ड में स्नान करा कर देवता आदि की पूजा कराई जाती थी। इसके बाद वह लिखता है कि सूइयां शरीर से निकाल ली जाती हैं और रोगी निरोग हो जाता है।^{१०२} क्या यह सूचिका भेदन का पूर्व अथवा विकृत रूप नहीं।

सर्प चिकित्सा—

सर्प चिकित्सा भारत की एक व्यापक चिकित्सा है इसके कमाल विदेशी अलवेरुनी के मुंह से सुनिए। 'उनका यह जादू

^{१०१} See, Hindu Superiority, Page 267, 268, 269

^{१०२} विश्वामित्र—See, Indian microburn

अधिकांश में सर्प दंशति लोगों के लिए होता है । मैंने एक आदर्मी द्वारा यह सुना कि उसने एक सांप काटे मुँह को देखा था जो कि जादू के बाद पुनः जीवित हो गया ।^{१०३} प्रो० वीवर मत्पथ ब्राह्मण और आस्वलायन का हवाला देते हुए सिद्ध करते हैं कि हिन्दू सर्प विद्या के ज्ञाता थे ।^{१०४} निमाक्स कहता है कि भारतीयों ने यूनानियों को सर्प चिकित्सा सिखलाई थी ।^{१०५}

अन्य चिकित्साएं

आधुनिक प्रचलित सभी चिकित्साओं की जननी आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली है । इसी के एक अंश को लेकर इनका अविर्भाव हुआ है । उपवास चिकित्सा जो अभी आधुनिक संसार की समझ में आई है, वह न जाने किस काल से यहां व्यवहृत होती है । सन् ६७३ ई० में भारत पधारने वाला चीनी यात्री इ-त्सिह कहता है—पश्चिमी भारत के जो लोग बीमार होते हैं कभी आधा मास और कभी २ पूरा मास उपवास करते हैं । मध्यभारत में उपवास की दीर्घतम अवधि एक सप्ताह है ।^{१०६} आधुनिक रश्मिया जिसके अविष्कार का ढोल आज पश्चिम के वैज्ञानिक पीट रहे हैं उसका वर्णन हिन्दुओं के वैदिक ग्रन्थों में प्रचुरता से प्राप्त होता है । ‘सूर्य की किरणें सात रंगों में विभक्त हैं ।’^{१०७} सूर्य राज्ञस अथवा रोगोत्पादक कीटाणुओं को नष्ट करने वाला है ।^{१०८} एल्फिन्स्टन कहते हैं कि श्वास रोग में धतूरे का धूवां पीने की

23. Alberuni, s India Vol, I, 194

24. History of Hindu chemistry Vol 1 Page 55

25. Weber's History of India Page 145

26. इत्सिह की भारत यात्रा पृ० ११८

27. स एष सप्त रश्मिः वृषभः—जै० आ० आ०

28. सूर्योद्दि—रत्नसामपहन्ता ।—अ० १।३।४।८

विधि योरुपियनों ने भारतीयों से सीखी हैं ।^{२८}

टेस्ट ट्यूब वेबीज—

हाल ही में अमेरिका के लेडी डाक्टर फान्संस सैमूर ने 'टेस्ट ट्यूब वेबीज' या 'असंगज बालक' का सिद्धान्त सामने लाकर लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया है। आपने कई स्त्रियों को पुरुष संग के बगैर ही एक यन्त्र द्वारा गर्भवती और सन्तान वाली बनाया है। इंग्लैण्ड के डाक्टर नौरसा हेल का कथन है कि सन्तान उत्पत्ति की यह प्रणाली अब से पहिले इंग्लैण्ड में प्रचलित थी। पेरिस के प्रोफेसर जीन लुईस कहते हैं यह कोई नवीन वस्तु नह है, यह विधि तो शताब्दियों पूर्वा भी थी, पम्पाई के खण्डहरों से इसी काम में प्रयुक्त होने वाली पिचकारियां मिली हैं। कहना व्यर्थ है कि इन पम्पाई की पिचकारियों का उद्गम स्थान भारतवर्ष है। लाहौर के कविराज श्री हरिकृष्ण सहगल ने एक विद्वतापूर्ण लेख में इस बात को भलि भान्ति सिद्ध कर दिया है।^{३०} आपके कथनानुसार प्राचीन भारत में भी ऐसी पिचकारियों-वस्तियों से योनि चिकित्सा होती थी। यथा—

योनि व्यापत्सु सूर्यष्टं शस्यते कर्म वातजित् ।

बस्त्यमग्नं परीषके प्रलेपाः पित्तु धारणम् ॥^{३१}

हां, यह अवश्य है कि भारत ने इस प्रणाली को काम में लाने की कभी आवश्यकता नहीं समझी, कारण उसका विश्वास है कि ऐसे बालकों में पूर्वाजों के संस्कार नहीं आ सके तो वे पूर्वाज नहीं हो सकते।

28. History of India, Page 154

30 'विश्ववन्धु' ५ अगस्त १९३४

31. चक्रदत्त

कीमिया (ALCHYMY)

भारत ने अपने शिष्यों में कोई बात छिपा कर नहीं रखी। हां प्रमाद वश उन्होंने कुछ भुला दिया हो, यह दूसरी बात है। आज जिस सोने के पीछे संसार गरीबों की आंखों की गठगियां सिर पर लाद रहा है, भारत ने कभी उससे प्रेम सूत्र जोड़ा ही नहीं। वे यद्यपि उसका बनाना तक जानते थे। सूक्ष्मदर्शी पर्यटक अलबेरूनी अपनी आंखों देखी कहता है—‘उनकी (हिन्दुओं) की जादूगरी की एक किस्म रसायन (कीमिया) है। एक मनुष्य रुई का एक टुकड़ा लेकर एक सोने के टुकड़े में बदल देता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक मनुष्य चादी के टुकड़े को लेकर सोने में बदल दे ... हिन्दू कीमिया की ओर विशेष ध्यान नहीं देते।’^{३२} क्या भारत के अतिरिक्त रसायन के इस उंचे रहस्य को किसी देश ने समझा है ?

पशु चिकित्सा—

मानवीय चिकित्सा को छोड़िये, दयामूर्ति भारतीय पशु चिकित्सा में भी पूर्णरूप से पारांगत थे। डाक्टर हण्टर कहते हैं कि, हाथी घोड़े आदि पशुओं की चिकित्सा में भी उन्होंने आश्चर्यजनक उन्नति की थी।^{३३} सर जान उडरुफी की शिक्षा भी इस विषय में मानने योग्य है—‘पुरानी बातों को नई कंफर में आकर भुलाइये नहीं, देखिए क्या कुछ पूर्वजों ने किया और कहा है। अन्ततः देश ने इस सम्बन्ध में भी सुन्दर किया है। यदि ऐसा है तो इसका कारण है उन लोगों का ज्ञान, उदाहरणार्थ वारामि-हरकृत बृहत्संहिता को देखिए ! आज भी यहां ऐसे लोग हैं गो

चिकित्सा में निपुण हैं ।^{३४} मिस्टर ईलियट सूचित करते हैं कि लन्डन के शाही पुस्तकालय में पशु चिकित्सा सम्बन्धी एक पुस्तक है जिसे १३२१ में गयासुद्दीन मोहम्मदशाह खिलजी ने संस्कृत में अनुवाद कराया था ।^{३५} देखिए इतिहासज्ञ वीयर किन्ती पुरानी रिपोर्ट पेश करते हैं—‘वैदिक काल में लोग पशु गरीर रचना से पूर्णतया परिचित थे । उन्होंने ने उनके प्रत्येक अंग के नामों तक का वर्णन किया है ।’^{३६}

यह है भारतीय ‘आयुर्वेद’ की आदिम चिकित्सा प्रणाली का आदर्श इतिहास ! दुनिया ने इसका सबक (पाठ) किस भान्ति पढ़ा, यह दास्तान भी सुन लीजिए ? भारत के ही धन से सांसार धनी बना है और इसी के साहित्य का अनुशीलन कर विद्वान सेन फ्रांसिस्को, अमरीका के सुप्रसिद्ध डाक्टर कार्पेण्टर लिखते हैं कि अग्निवेध, चरक, सुश्रुत एवं अन्यान्य प्राचीन महर्षियों की अवि-कृत चिकित्सा प्रणाली को अवलोकन करने से हमको भी आज उनकी दिव्य स्मृति का स्मरण हो आता है । कारण अनेक शता-ब्दियों पूर्व उक्त महर्षियों के आयुर्वेदिक ग्रन्थों का अर्बो लैटिन और ग्रीक आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद होकर योरोप और अमरीका में प्रचार हो चुका है । इस से हमारे ग्रन्थों में भी उनकी विभूति विद्यमान है । प्रोफेसर मैकडानल का कहना है कि हिन्दू आयुर्वेद-विज्ञान का अर्बो पर ७०० ई० के लगभग प्रभाव पड़ा यह विचारणीय है, क्योंकि बगदाद के खलीफा ने कितने ही ग्रन्थों का अनुवाद कराया था ।^{३७} विदुषी मेनिंग के शब्दों में

34 Bhart Shakti, Page, 24

35 अथर्व चिकित्सा सम्बन्ध में ‘शलहोत्र’ में भी देखने योग्य है ।

36 Weber's Indian Literature, Page, 263-264

37. Sanskrit Literature Page, 427

‘भारतीय आयुर्वेद साहित्य ने समस्त संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। जब बगदाद के खलीफा ने उसके बृहद् ग्रन्थों को एकत्रित कर उसी क्षेत्र के योगतम विद्वान वैज्ञानिकों को बुलाकर बगदाद को विद्या का केन्द्र प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया।³⁸ अल-वेहनी की गय भी इस सम्बन्ध में माननीय है “जो कुछ भारत ने दिया वह दो रास्तों से बगदाद पहुंचा।” उस क्षेत्र में संस्कृत से अनूदित होकर तथा हिन्दू विद्वानों को बगदाद के हस्पतालों का अध्यक्ष नियुक्त कर और उनके द्वारा अनुवाद करके यह अवी भाषा में यहां आया।³⁹ श्रीमती मेनिंग बतलाती है कि यूनानी बगदाद में हिन्दुओं के इस साहित्य से परिचित हुए। सर हय्दर कहते हैं कि १७ वीं शताब्दी में योरुप ने यह ज्ञान अरब बालो से लिया। इस तरह समस्त संसार ने भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थों से स्वास्थ्य की शिक्षा प्राप्त की। डाक्टर जैकोलेट एक दूसरा ही सम्वाद सुनाते हैं। ‘प्राचीन कालीन तत्व ज्ञानी और महात्मा जीवन विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत जाते थे।’⁴⁰

काम-विज्ञान

समुन्नत राष्ट्र हमारे सुख शान्ति सम्पन्न घरों का परिमाण है। घर की समस्त व्यवस्था और गृहस्थाश्रम का पूरा आनन्द स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम का प्रतिफल है। इस विज्ञान में भारतीय महात्माओं ने उसी का विवेचन किया है। आज यदि भारत में इसका यथेष्ट प्रचार नहीं किन्तु विदेशियों ने इस भारतीय विज्ञानसे पर्याप्त लाभ उठाया है। भारत में इसका प्रचार कब से शुरू हुआ,

38. Ancient and medaeval India Vol. 1, Page 353-354

39. Alberuni's India Vol. 1. Prep. XXXI

40. “All the philosophers and Sages of antiquity went to India to study the Science of life.”

इतिहास चुप है। मिस्टर टी० डब्ल्यू० रॉस डेविड्स बतलाते हैं कि 'ईसा से ६ शताब्दी पूर्व केवल हिन्दू ही दाम्पत्य जीवन के मुकुटालतार्थ नयनों का निर्माण कर चुके थे।' मगर जान डब्ल्यू० रूफा भारत की भौतिकता का वर्णन करते हुए लिखते हैं— "भारत के कठोर तपस्वी जिन्होंने न स्त्रियों की जी भर कर क्रिश्चियन पूर्वा पुरुषों की भान्ति निन्दा की थी, काम विषयक धर्म पुस्तक, काम शास्त्र की भी वैज्ञानिक रचना कर डाली, विषय सम्बन्धी साहित्य लिख डाला.....वही भान्त जो सन्यासी के रूप में जंगलों की ओर निकल गया था, इस बहुमूल्य कला द्वारा विश्व को आलोकित कर गया।" ४१

निसन्देह भारत के ज्ञानियों ने संसार की महान से महानतम वस्तु से लेकर छोटी से छोटी चीज को भी अछूता नहीं छोड़ा। भारतीयों की उपेक्षा के कारण यद्यपि यह अंग आज लुप्त प्रायः से हो गया है किन्तु फिर भी कामसूत्र अनंग रंग पंचशर, रतिमंजरी रतिरहस्य, आदि अनेक ग्रन्थ अब भी ऐसे मौजूद हैं, जिनकी वैज्ञानिक गुत्थियों को अभी आधुनिक वैज्ञानिक सुलझा नहीं सके।

हस्पताल—

मानवता का कल्याणार्थ हस्पतालों की स्थापना करने वाली हिन्दू दुनिया में सब से पहली जाति है। इतिहासकार गैरट बतलाते हैं कि 'अशोक ने अपनी प्रजा को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने के लिए अपनी शक्ति अनुसार सब कुछ किया। उन्होंने ने बड़े २ हस्पताल खोले जिनका खर्च राज्य की ओर से दिया जाता था। उनमें अस्वस्थ एवं रुग्ण व्यक्तियों का मुफ्त इलाज होता था।' ४२ इन में से एक हस्पताल का वर्णन ४१३ ई० में आने वाला चीनी

41, Is India Civilised ?

42, A History of India Page 60

यात्री फाहिनान उस भान्ति कहता है—यहां समस्त गरीब और अनाथ सभी रोगों के रोगी आते थे। उनकी भलि भान्ति परिचय होती थी। एक डाक्टर उनकी देखभाल किया करता था। आवश्यकतानुसार उन्हें भोजन और औषधि दी जाती थी। उस तरह उनके आराम का सब कुछ प्रबन्ध था। अच्छे हो जाने पर वे चले जा सकते थे।^{४३} प्राचीन भारत में रोगियों की व्यवस्था का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध था। चीनी पर्यटक हुआनसांग ने भी तक्षिला, मनिपुर, मथुरा, सुलतान आदि की पुण्यशालाओं के नाम दिये हैं जिनमें गरीब और विधवाओं को भोजन और वस्त्र सुफ्त दिये जाते थे।^{४४} अब मे एक सदी पूर्व की आंखों देखा बात लेफ्टीनेण्ट कर्नल मांनियर विलियम्स ने दक्षिण के सम्बन्ध में लिखा है कि यहां प्रत्येक गांव की ओर से अनाथों और बीमारों के लिए हर प्रकार का प्रबन्ध किया जाता था।^{४५}

43. A bird's eye view of Indians past Page 51

44. Modern India and the Indians, Page 51

इतिहासकार बी० ए० स्मिथ का कहना है कि सब से पहला हास्पिटल योरोप के अन्दर दशवीं शताब्दी में खुला था।

Early History of India, Page 259



गणित

विख्यात चीनी विद्वान लियांग चिचाव के शब्दों में 'वर्तमान मध्य जातियों ने जब हाथ पैर हिलाना भी प्रारम्भ नहीं किया था तभी हम दोनों भाइयों ने (चीन और भारत) मानव मध्यम्यी समस्याओं को सुलझाना आरम्भ कर दिया था ।'^१ मेनिग महोदय भी कहती हैं कि हिन्दुओं का मस्तिष्क उतना ही विशाल था जितना मानवों में धारणा करने की क्षमता है । ज्ञान का स्थान मस्तिष्क है फिर त्रिकालज्ञ ऋषियों की दृष्टि से वच कर किमी सूक्ष्म अंश का भी निकल जाना असम्भव था । प्रोफेसर कनिंघम ने स्वीकार करते हैं कि विज्ञान में भी योरूप भारतवर्ष का बहुत ऋणी है ।

सत्य बात तो यह है कि भूमण्डल में हिन्दुओं की विशाल बुद्धि और मस्तिष्क की विलक्षणाता पर विमुग्ध होकर प्रकृति ने इन सूक्ष्म विज्ञानों के लिए उन्हें निर्वाचित किया था । ३०० वर्ष के लम्बे चौड़े अनुभव के आधार पर सर टामस सुनरों प्रमानित करते हैं—'वे (हिन्दु) यूरुपियनों की अपेक्षा अच्छे सुनीम (Accountant) होते हैं ।'^२

अङ्कगणित—

विज्ञान की शाखाओं में अङ्क गणित ऐकान्त निर्दोष है । सर डेव्यू० हण्टर महोदय बतलाते हैं कि हिन्दुओं ने अङ्क गणित और बीजगणित में स्वतन्त्रा पूर्वक बहुत ऊंची योग्यता

1 Ancient and medaeval India Vol I, Page 114

2. In his: Impressions and Suggestions Page, 34

प्राप्त करली थी। प्रोफेसर मैकुडानल लिखते हैं कि 'विज्ञान में भी भारतवर्ष का योगदान बहुत ऋणी है। प्रथम सबसे बड़ी बात यह है कि भारतवासियों ने गणितके अङ्कों का आविष्कार किया जिनका प्रयोग समस्त संसार में हो रहा है इन अङ्कों पर निर्भर रहने वाले दशक सिद्धान्त का गणित ही नहीं परन्तु सभ्यता के उत्कर्ष पर जो प्रभाव पड़ा वह अमूल्य है।'^३ मिस्टर केजोरी (Cejori) भी बतलाते हैं—“यह ध्यान देने की बात है कि भारतीय गणित ने हमारे वर्तमान विज्ञान में किस हद तक प्रवेश किया है। आधुनिक बीज गणित और अङ्कगणित दोनों ही आत्मा तथा रूप में भारतीय है, यूनान के नहीं। सब से अधिक उन पूर्ण गणित चिन्हों को देखिए, वे भारतीय हैं। उनकी बीज गणित प्रथाओं को देखिए वे हमारी प्रथाओं के बराबर पूर्ण हैं। फिर सोचिये कि गंगातट वासी ब्राह्मणों को इसका कुछ न कुछ श्रेय मिलना चाहिए दुर्भाग्य वश हिन्दुओं के कितने ही अमूल्य आविष्कार योग्य में बहुत पीछे पहुँचे, जिनका प्रभाव यदि वे दो तीन सदी पहले पहुँचते तो बहुत पड़ता।”^४ सुप्रसिद्ध जर्मन आलोचक शैलगल के अनुमानानुसार हिन्दुओं ने ही दशमलव के चिन्हों (Cyphers) का आविष्कार किया है।^५

डी० मार्गन (De Margan) भी स्वीकार करता है कि ‘हिन्दुओं का अङ्कगणित यूनान के किसी भी अङ्कगणित से बहुत बड़ा है। जिस आज कल हम व्यवहृत करते हैं यह भारतीय अङ्कगणित है। ओमता मेनिंग के शब्दों में कोई भी निबन्ध, पत्रिका

3. History of the Sanskrit Literature

4. History of mathematics, see also, Hindu Achievements in exact Science Page 8

5. Schalgel's History of Literature Page, 123

को कोय देविय, हमारी गिनतियां हिन्दुओं की हैं अरब लोग ना उन्हें भाग में लाते बाले एक मध्यस्थ थे ।”^३

अब एक दूसरे पाश्चात्य पण्डित की अवानी गणित के भारती अविष्कृत होने की दास्तात सुनिये इसमें सन्देह नहीं कि हमारे वर्तमान अंक-क्रम दशगुणोत्तर की उत्पत्ति भारतीय है । सम्भवतः खगोल सम्बन्धी उन के साथ जिनको एक भारतीय गणित सन् ७७ ई० में बगदाद ले गया, इन अङ्कों का प्रवेश हुआ । फिर नवीं शताब्दी के प्रारम्भ काल में अवूत्रफर मोहम्मद ने अरबों में उक्तक्रम का विवेचन किया और उसी समय से अरबों में उसका प्रचार बढ़ने लगा ।

शोरूप में शून्य सहित यह अङ्कक्रम बारहवीं शताब्दि में अरबों से लिया गया । + + + जीरो शब्द की उत्पत्ति अरबी के मिफर से लियों नाडों के प्रयुक्त किये हुए ‘जिफिरो’ शब्द द्वारा प्रतीत होती है ।

हिन्दू लोगों ने दर्शक चिन्हों (Decimal Notation) का अविष्कार दुनिया में सब से पहले किया था ।^४ व्यास स्मृति इस विषय में स्पष्ट बतलाती है ।

“यस्मिं तत्रण वस्था परिणामः न द्रव्यान्तरतः यथा एका रेखा शत स्थाने शत दशस्थाने दश एकचैकस्थाने ।”

पर्यटक अलवेगुनी भी मुक्तकण्ठ से स्वीकार करता है कि ‘जित अङ्कों को हम काम में लाते हैं वे हिन्दुओं के सब से सुन्दर अङ्कों से लिए गए हैं । जिन जातियों से मेरा सम्पर्क रहा है उन सब की भाषाओं के संख्या सूचक अङ्कों (इकाई दहाई आदि) का मैंने अध्ययन किया है ! इससे मालूम हुआ है कि कोई जाति

6. Ancient and medaeval India Vol 1, Page 374

7. Encyclopaedia Britannica Vol II, Page 626

एक हजार से आगे गिनना ही नहीं जानती। अरब लोग भी एक हजार तक जानते हैं। अपने अंक क्रम में जो एक हजार से अधिक जानते हैं वे हिन्दू हैं।^८

भारत में इस विज्ञान में पुरुषों ही ने नहीं स्त्रियों ने भी अद्भुत उन्नति की थी श्रीमती लूसी और सुप्रसिद्ध अंग्रेज गणितज्ञ प्रोफेसर वेल्स तक लीलावती का लोहा मानते हैं लीलावती में विज्ञान के केवल साधारण नियम ही नहीं किन्तु—अनेक प्रकार के मिति काटा, व्याज, आदि में उनका प्रयोग भी किया गया है। इसके नियम विल्कुल ठीक हैं।^९

इसका निष्कर्ष भी विद्वान मैकडानल के शब्दों में सुन लीजिए—“आठवीं तथा नवीं शताब्दी में अङ्कगणित तथा बीज गणित अरबों के शिक्षक थे। उनके अरब वालों के द्वारा इसका प्रचार योरूप में हुआ। ‘हम यद्यपि इस शास्त्र का अरबी नामकरण करते हैं, तो भी इस प्रसाद को हम लोगों ने भारतीयों द्वारा प्राप्त किया।’^८

बीजगणित—

अङ्कगणित और बीज गणित का बहुत गहरा सम्बन्ध है। हिन्दू लोग एक शाखा अङ्कगणित के विधाता थे और हंक्ल साहब के शब्दों में बीजगणित के वास्तविक आविष्कर्ता में इसका बहुत बड़ा श्रेय विद्वान आम्बिद को है। डी० मार्गन के कथनानुसार योरूप के मशहूर गणितज्ञ डायो फैंट्स का समस्त गणित हिन्दुओं के बीज गणित के सामने कुछ भी नहीं।

प्रोफेसर वेल्स सहोदय ने प्लेफसर साहब की कुछ पंक्तियां उद्धृत की हैं जिनका आशय है कि ज्योतिष ज्ञान के बिना बीज

गणित 'की रचना एकान्त कठिन है।' विद्वान विल्सन कहते हैं कि यह हिन्दुओं के गणित विज्ञान की प्राचीनता, मौलिकता और विकास का अकाट्य उत्तर है। ११० सर मोनियर विलियम्स का भी कथन है—बीज गणित, और रेखा गणित के आविष्कार और चोनिष में उनके प्रयोग का श्रेय हिन्दुओं को है। १११

ऋण राशि (Negative Quantity) का भाव तथा वर्ग समीकरण की व्याख्या का आविष्कार ब्रह्मगुप्त ने ६६० ई० पूर्व (Quadratic equation) किया था। हिन्दुओं ने सर्व प्रथम अक्षरपंथ (Permutation) तथा संयोग (Combination) तथा अज्ञात निर्धारित समीकरण (Undetermined equation) का पता हिन्दुओं ने लगाया था।

विद्वान गणितज्ञ भास्कराचार्य जिसे डफ्फेस्टन महोदय 'सिद्धान्त शिरोमणि' पुस्तक का कर्त्ता वतलाते हैं भिन्नों को गणित क्षेत्र में जन्म दिया था उन्होंने ने यह सिद्ध किया है कि:—

$$\frac{a}{b} + \frac{c}{d} = \frac{ad+bc}{bd}, \quad \frac{a}{b} - \frac{c}{d} = \frac{ad-bc}{bd}$$

इन्हीं समस्त प्रमाणाओं के आधार पर मिस्टर कालब्रुक वतलाते हैं कि हिन्दू साहित्य अपनी इस अवनतावस्था में भी, जब कि उनके बहुत थोड़े ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनको गणित सम्बन्धी रचनाओं में प्रकट होता है कि वे आधुनिक योरोपियों से इस सिद्धान्त में पीछे नहीं।

रेखागणित—

हिन्दुओं ने इस विज्ञान में कहां तक उन्नति की थी प्रोफेसर

वेलस की जवानी सुनिए—‘रेखागणित भारत में ‘सूर्य सिद्धान्त के निर्माण से भी लोग बहुत पहले जानते थे ।’^{१२} सूर्य सिद्धान्त का काल योर्कपयन विद्वानों ने २००० वर्ष ईसा पूर्व अनुमान किया है ।’^{१३}

मिस्टर एल्फिन्स्टन बतललाते हैं कि सूर्य सिद्धान्त में त्रिकोणमिति (Trigonometry) का वर्णन है और साथ ही (Theorem) का भी है समावेश ! इनका भी अनुसन्धान योरोप में विगत दो शताब्दि पूर्व तक नहीं हो सका था ।^{१४} स्वीडिश काट जर्नास्टजर्नी ने अकबर कालीन अब्दुल फजल की आईना अकबरी में यह पता लगाया है कि जब अरब और यूनान वालों को कुछ भी पता नहीं था, उस समय भी हिन्दू परिधि वृत्त अष्टभुज मूल (Square Root) आदि सभी रेखा गणित सम्बन्धी बातों का पूर्ण ज्ञान था ।^{१५}

रेखागणित के अनेकों सिद्धान्तों के यूनान पहुंचने की सूचना देते हुए प्रोफेसर वेलस बतलाते हैं कि तीन भुजाएं ज्ञात होने पर भी त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालने की विधि प्राचीन यूनानी रेखा गणितज्ञों को ज्ञात न थी ।

ग्रीस के रेखा गणितज्ञ और सुल्व सूत्र में अत्याधिक समानता पाई जाती है । इस सूत्र का काल ईसा के जन्म से आठ शताब्दी पूर्व माना गया है । डाक्टर थो वोट ने दर्शाया है कि रेखागणित के अन्तर्गत प्रथम पुस्तकें ४७ वें सिद्धान्त को, जिसे लोग पैथागोरस द्वारा प्रतिपादित समझते हैं । हिन्दुओं ने उसे कम से कम

12. Mill's India Vol II, Page 160

13. Mill's India Vol II, Page 3 foot note

14. History of India Page 129

15. See Theogony of the Hindus Page 37,

ने प्रतापदी पूर्ण मिट्ट किया था ! विद्वान स्कॉडर भी उसे भारत का ऋणी समझता है ।^{१६}

यही नहीं हिन्दुओं ने ज्यासागिणी (Table of Sines) तथा अभ्यन्तर ज्यासागिणी (Table of Versed Sines) का भी निर्माण किया था । 'जिन नियमों का प्रचार पहले पहले योन्निपियन गणितज्ञ त्रिग ने १६वीं शताब्दी में किया था वे भारतीयों द्वारा अनेक सहस्राब्दियों पूर्व खोजे जा चुके थे ।'^{१७}

रेखागणित का नाम अबौ ने 'इल्म हिन्दुस्त' रखा है, जो मफ इसके भारतीय होने का प्रमाण है । विज्ञान की इस शाखा को वैदिक काल के पश्चात् विकसित करने में बड़ा श्रेय आर्य भट्ट और भास्कराचार्य को है । डाक्टर थी वोट नत मस्तक हो कर भारत का यह आभार स्वीकार करते हुए कहता है कि रेखा-गणित के लिए संसार यूनान का नहीं भारत का ऋणी है ।

आधुनिक संसार के ज्ञान-विज्ञान हिन्दू सन्तिदकों की ही उपज है विद्वान रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल वतलाते हैं-हिन्दू दिमागों ने बीजगणित रेखागणित, त्रिकोणमिति आदि विज्ञान की शाखाओं में महान तम योग्यता दिखलाई थी । उन्होंने अत्यन्त प्राचीन काल में ही काफी उन्नति कर ली थी जैसा कि इन के इस विषय के ग्रन्थों को विशेषज्ञ विद्वानों से उंचा ठहराया है ।^{१८}

16. Hindu chemistry Vol I chapl, 11

17. Ibid, Page 20.

18. The land of the Vedas, Page 47.

ज्योतिष

ज्योतिष विज्ञान प्रकृति के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों के अध्ययन का परिणाम है उसका विकास उन्हीं जातियों में होता है जिनकी सभ्यता एवं संस्कृति बहुत ऊँची हो। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि ज्योतिष विज्ञान सभ्यता को मापने का उत्तम माप-दण्ड है। भारत की जलवायु, प्राकृतिक सुपमा सभी कुछ सभ्यता के विकास के लिए उत्तम साधन हैं। गर्मी और रत्ताबी जीवन पढ़ने के कारण यहां के निवासी सदैव से बाहर विचरने और सोने के आदि हैं। संसार की रंगस्थली में यही एक ऐसा देश है जिसे प्रकृति सुन्दरी के साहचर्य में अधिकाधिक समय व्यतीत करने का सुअवसर प्राप्त होता है। यही कारण है कि इन्होंने नक्षत्रों की वनावट और उन की गति का सब से पहले निरीक्षण किया, चन्द्रग्रहण सूर्यग्रहण सम्बन्धी भविष्यद्वाणियों में प्रथम रहे। डाक्टर मर्ग विलियम हण्टर कहते हैं कि 'हिन्दुओं का ज्योतिष-विज्ञान अतीव प्रशंसनीय है। कारण, मिस्टर एल्फिन्स्टन के शब्दों में सुनिये 'उन के ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थों में मिलता है।' १ विद्वान जैकोबी अपने अनुसन्धान के आधार पर बतलाते हैं कि ईसा से ५००० वर्ष पूर्व भारत वासियों ने ज्योतिष शास्त्र में अच्छी गति प्राप्त कर ली थी। कांट जर्नास्टर्जना भी ऐसा ही बतलाते हैं कि कलियुग के प्रारम्भ में (५००० वर्ष) हिन्दू इस क्षेत्र में काफी उन्नति कर चुके थे। वे यह भी कहते हैं—'हिन्दुओं की ज्योतिष गणना के अनुसार

वर्तमान कलियुग का श्रीगणेश ईशा से ३१०२ वर्ष पहले ० वज्र का २५ मिनट ३० सेकण्ड पर हुआ था । ग्रहों का संयोग भी उन्होंने ठीक दिखाया है । ग्रहगणों की गणना हमारे ज्योतिषियों ने मिलान करने पर ठीक उतरी ।^२ भारतीय ज्योतिष शास्त्र का जन्म वेदों के साथ साथ हुआ है । यही उस की प्राचीनता का प्रमाण है । अथर्व वेद में युगोंकी गणना का कितना सुन्दर गुण निश्चित किया गया है : युग के १२००० दिव्य वर्षों के दशवें भाग को ४, ३, २, १ से गुणा करने पर क्रम से मतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के दिव्य वर्ष की संख्या होगी ।^३ महाराज मनु ने भी इस गणना का कितना सरल और सुन्दर उपाय बतलाया है ।^४

१ दिव्य वर्ष =	३६० माध्याह्निक वर्ष
कलियुग =	१००० वर्ष
मतयुग =	१००० × ३६० = १,०००,००० वर्ष
त्रेता =	३६०० × ३६० = १,२९६,००० ,,
द्वापर =	२४०० × ३६० = ८६४,००० ,,
कलियुग =	१२०० × ३६० = ४३२,००० ,,

एक चतुर्युगी = ४३२०,००० वर्ष

स्टेंज सहोदय हैरान होकर कहते हैं कि 'प्राचीन आर्य यह ज्ञान कहाँ उपलब्ध करते थे । इसका अवधारण करना

2. Theogony of the Hindus,

3. 'शतं ते अयुतं हायनान्द्वयुगे त्रीणि चत्वारिक्रामः ।' -अथर्ववेद ८-२-२१

4. मनु० अ० १ श्लोक ६६, ७०

कठिन है।^{१४} श्रीमति मेनिंग इस परेशानी को अपने शब्दों में दूर करती है 'हिन्दुओं के पास उतना ही विशाल मस्तिष्क था जितना कि मनुष्य को धारण करने की शक्ति होनी है।'^{१५} मुलेमान सौदागर तत्कालीन राष्ट्रों में भारत और चीन को उन्नत समझता है किन्तु ज्योतिष के मस्त्रन्ध में उस की सम्झति है कि 'भारतीय पण्डित ज्योतिष में चीनियों से अधिक योग्यता रखते हैं।'^{१६} चीनी विद्वान लियांग चिचाव स्वयं स्वीकार करते हैं— इस शास्त्र के अध्ययन चीन में पुरातन काल में ही होता रहा है किन्तु इनका विशेष विकास टंग राजाओं के समय में हुआ। इस का कारण यह था कि उस समय 'जू ट्यू सई' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिस से भारत के गहरे प्रभाव का स्पष्ट पता लगता है।^{१७}

हिन्दुओं ने अत्यन्त पुरातन काल में ही इस विज्ञान में कितनी आश्चर्य जनक उन्नति की थी, इतिहासज्ञ प्रो० विल्सन महोदय के मुंह से सुनिए 'भारत में मिलने वाली क्रांति वृत्त का विभाग सौर और चन्द्रमाओं का निरूपण, ग्रहगति का निर्णय, सौर राशि मण्डल, पृथ्वी की निराधार स्थिति, अपने अक्ष पर उसकी दैनिक गति, चन्द्र का भ्रमण और पृथ्वी से उस का अन्तर, ग्रह कक्षा का मान आदि ऐसी बातें हैं जो अशिक्षित जातियों में नहीं पाई जाती।'^{१८} तभी तो स्वीडिश कांट वेली के

5. Remand Page 23.

6. Ancient and mediaeval India Vol, II Page 145.

7. मुलेमान सौदागर पृ० ८४

† सातवीं शताब्दी।

8. 'विशाल भारत' अगस्त १९३३ ई०

9. Mill's History of India Vol, II Page 107.

गणानुसार हिन्दुओं के ज्योतिष और रेखा गणितज्ञान का इंसान ३००० वर्ष पूर्व मानते हुए पूछते हैं कि उनकी संस्कृत का आरम्भ कितनी शताब्दियों पहले हुआ होगा, क्योंकि ज्ञान पथ पर मानव मस्तिक क्रमशः अग्रसर होता है।^{१०}

मिस्टर मारिया ग्राह्म की सम्मति है समस्त मानवीय परिष्कृत विज्ञानों में, ज्योतिष मनुष्य को उंचा उठा देती है।.....इसके आरम्भिक विकास का इतिहास संसार की मानवता के उत्थान का इतिहास है। भारत में इसके आदिम अस्तित्व के बहुत से प्रमाण मौजूद हैं।^{११} हिन्दुओं का ज्योतिष साहित्य संसार में सम्पन्नतम है। इस के प्रसिद्ध ६ सिद्धान्त हैं—ब्रह्म, सूर्य, मास, ब्रह्मर्षि, पाराशर, गार्ग्य, नारद, पुलस्त्य और विशिष्ट सिद्धान्त। योनूपियन विद्वान सूर्य सिद्धान्त ही से अधिक परिचित हैं।^{१२}

मिस्टर डेविस के अनुसार पाराशर काल ईसा से १३६१ वर्ष पूर्व है।^{१३} पाराशर के बाद आर्यभट्ट हुआ है। योनूपियन विद्वानों के अनुसार यह पहला व्यक्ति है जिस ने पृथ्वी का अपनी कीली पर घूमना, सूर्य और चन्द्र ग्रहण आदि के सब सिद्धान्तों

10 Theology of the Hindus, Page 37.

11 Letters on India Page 109-111,

12 Indian wisdom Page 184-185.

13 Asiatic Researches Vol. II Page 33-34

‘आमदत्यर्कं सिन्दु विद्यां भूमिभाः।’ अर्थात् जब पृथ्वी घूम कर सूर्य और चन्द्र के मध्य में आ जाती है और उस की छाया चन्द्र पर पड़ती है तो चन्द्र ग्रहण होता है। जब चन्द्र और सूर्य पृथ्वी के बीच में आजाता है तो सूर्य ग्रहण होते हैं। ब्रह्म पुराण में भी देखिये—

पूर्व काले तु सम्प्राप्ते चन्द्राकीं छादाभिष्यसि,

भूमिच्छाया गतश्चन्द्र चन्द्रगौर्ऽर्कं कदाचन ॥

को बतलाया है।^{१४} कालत्रुक महोदय भी इस सम्बन्ध में आर्य-भट्ट का सिद्धा मानते हैं।

फ्रांसीसी पर्यटक फ्राक्वीस वर्नियर भी भारतीयों की ज्योतिष-ज्ञान की प्रशंसा करता हुआ लिखता है कि वे 'अपने गणना द्वारा चन्द्र और सूर्य ग्रहण की विलकुल ठीक भविष्यवाणी करने हैं।'^{१५} यात्री अलवेन्ना भी आर्यभट्ट को उच्च कोटी का वैज्ञानिक मानता हुआ उन के सिद्धान्तों की सत्यता पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट करता है।^{१६}

आर्यभट्ट के पश्चात् सबसे योग्य ज्योतिष विज्ञान का आचार्य वारामिहिर था, मिसेज मेनिंग के शब्दों में वह गणित और फलित ज्योतिष की दोनों शाखाओं का प्रमुख पण्डित था।^{१७} अन्तिम ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य हुआ है जिसका काल योर्कपिन द्वारा बारहवीं शताब्दी बतलाया जाता है इसने आकर्षण-विकर्षण नियमों का बड़ी विद्वता से विवेचन किया है। यह ससार का सर्वोपरि गणितज्ञ था।

अधुनिक भूगोल जिन्हें हमारे विद्यार्थी स्कूल और कालेजों में पढ़ते हैं। उनके गम्भीर सिद्धान्तों का निश्चय करने वाले भारतीय ज्योतिषी ही थे। कुछ मोटी २ बातों का यहां उल्लेख किया जाता है।

पृथ्वी गोल है !

हांग (Hang) महोदय आन्नेय ब्राह्मण द्वारा सिद्ध करते हैं

14. Chambers Encyclopaedia also, Cole brooke's essays Appendix 9 Page 467.

15. Travels in the Mugal Empire Page 329.

16. See, Alberuni's India Vol I Page 227,

17. Ancient and medizeval India Vol I Page 363, 369.

कि पृथ्वी गोल है ।^{१८} आर्यभट्टभी इसी का प्रतिपादन करते हैं अलवरुनी कहता है—उनके (हिन्दुओं के) अनुसार दुनिया गोल है और पृथ्वीकी शकल गोलाकार (Globular Shape) है ।^{१९}

स्थिति—

पृथ्वी बिना आधार के स्थित है भास्कराचार्य के शब्दों में सुनिये—

‘नान्याधार स्वयमन्या विधातं च निधनं निष्पत्ती हास्यास्पदे ।’

व्यास और परिधि—

पृथ्वी का परिधि ४६६७ योजन और व्यास १५८११ योजन है ।

‘गोल्की योजन संख्यमा कुपरिधेः समांगं नन्दाध्यस्तद्यतः ।

कुमुजस्य सायक भुवः सिद्ध्याशं के नाधिकाः ॥’

पृथ्वी की आकाश की कोई ऐसी बात नहीं छूटी जिसका वर्णन प्राचीन हिन्दुओं ने न किया हो । मिस्टर सी० बी० क्लार्क एफ० जी० एफ० कहते हैं कि अभी बहुत वर्ष पीछे तक हम मृदुर स्थानों के अक्षांश (Longitudes) के विषय में निश्चयान्तरक रूप से ज्ञान नहीं रखते थे किन्तु प्राचीन हिन्दुओं ने ग्रहण ज्ञान (Eclp) के समय से ही इन्हें जानते थे । उनके तर्गके वैज्ञानिक नहीं अचूक भी थे ।^{२०} अलवरुनी बतलाता है कि ‘हिन्दुओं की भाषा में Pole को ध्रुव और Axis शलाका को (कील) कहते हैं ।..... वैष्णव धर्म में मार्कण्डेय ने बतलाया है कि जब

in Laing's Astronomy of Brahma Vol II Page 242.

[9, Alberuni's India Vol I Page 23.] ‘कपिश फत’ । वदश्च
अक्षांतर्याः समम् ।’

20 Hindu Superiority Page 296,

परमात्मा ने सृष्टि उत्पन्न की तो ध्रुव अन्धकारमय और ऊन-शून्य थे २१ कब कहा दिन होता है और कहा रात, संसार का यहाँ पता प्राचीन हिन्दू ज्योतिषियों की जवान में सुन लीजिये। लंका में सूर्योदय के समय, जावा में मध्याह्न, अमरीका में सूर्यास्त और रोम में अर्द्धरात्री होती है।^{२२} २ फ्रांसीसी यात्री टर्ग्वीनियर भी भारतीयों के इस विशाल ज्ञान से प्रभावित हो कर कहता है ब्राह्मण ज्योतिष ज्ञान में अतीव निपुण हैं।^{२३} ३

गति शास्त्र—

यह भी हिन्दुओं की सूक्ष्म बुद्धि ने न जाने अतीत की किम घड़ी में अनुभव कर लिया था। कणाद किसी वस्तु के पृथ्वी पर गिरने का कारण मध्याकर्षण बतलाते हैं। वे मध्याकर्षण गति (Kinetic) और शक्य शक्ति (Potential energy) आदि का न जाने कब स्पष्टीकरण कर चुके थे। उदयनाचार्य आदि विद्वानों ने इनका इतना गम्भीर विवेचन किया है कि योरूपयन आज तक वहाँ पहुँच ही नहीं सके। न्यूटन का गति शास्त्र (Dynamics) तो हिन्दू सिद्धान्तों का प्रतिबिम्ब है।

आकृष्ट शक्तिश्च महीतयायत् ।

त्वत्थं गुरु स्वामि मुख स्वशक्त्या ॥

आकष्यते न च पततीव भाति ।

समे समन्तात् क्व पतित्वयरेव ॥

—सिद्धान्त शिरोमणि

21. Alberuni's India Vol I Page 239 and 241.

22. 'लङ्कापुरे ऋक्षे यदादयः स्यात्तद्दिनाद्धं यमकोटिगुणमि ।

भवेत्तदा सिद्धिपुरे स्तकावः स्याद्रोम के रात्रिदत्तं तदैव ॥

23. Terveners travels in India Page, 433.

मूर्यास्त कभी होता ही नहीं।' वह चलता ही नहीं किन्तु चलता सा प्रतीत होता है।^{१२४} चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्य से ग्रहण करता है।^{१२५} सूर्य ऋतुओं का नियमन करता है।^{१२६} सूर्य जल का स्थान है।^{१२७} वह रश्मियों द्वारा वृष्टि को धारण करता है।^{१२८} और सिद्धान्त जिन्हें दुनिया ने आज सीखा है। भारत में कब से इनके आधार पर काम किया जा रहा है— दुनिया को इसका स्मरण ही नहीं। रेवरेंडर पीटर पर्स्विल सूचित करते हैं। 'उस बात को सिद्ध करने के लिए प्रचुरप्रमाण मौजूद है कि जब हिन्दुओं ने इस विज्ञान में काफी उन्नति कर ली थी, उस समय यूनान को इसका पता न था।'^{१२९}

विद्वान् मारिया ग्राज़ योरुप भर के सम्बन्ध में अपने यही भाव व्यक्त करता है।^{१३०} मैकडानल महोदय स्वीकार करते हैं कि 'वेदों में ज्योतिष के बहुत ऊँचे सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है।'^{१३१} ऐसी अवस्था में दुनिया भारतीय ज्योतिष की जन्म कुण्डली का सिरा कैसे ढूँढ सकती है। वैदिक काल संसार के इतिहास का वह पृष्ठ है जब भारत को छोड़ कर समस्त मानवता गिरि कन्दराओं में सोती थी।

२४. 'म वा एष न कदाचिनास्तमेति तो देति ।'

ऐ० ब्रा ३।४४

'ग्रयो वाव मर्थं यतीव ।'

ऐ० ब्रा० ४।१०

२५. 'दिवि सोमो अधिश्रितः ।'

—अथर्व वेद

२६. 'पूर्वामनु प्रादेशं पार्थिवानामृतन् प्रशसद्विद धावनुष्ट ॥'

२७. 'वृत्त भाजना ह्यादियाः ।'

श० ब्रा०

२८. 'सविता रश्मिभिः वर्षं समद धात् ॥'

रा० ब्रा०

२९. The Land of the Vedas Page 73.

३०. See, Letters on India Page 110, 111.

३१. Indias past Page 181.

आज के सभ्य देशों ने अपने गुरु भारत से प्रकृतिज्ञान का पाठ कब और कैसे पढ़ा, यह भी सुन लीजिए। सर० डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर बतलाते हैं कि आठवीं शताब्दी में अरब के लोग हिन्दुओं के शिष्य बने और संस्कृत ग्रन्थ सिद्धान्तों का 'मिन्द हिन्द' नाम से अनुवाद किया था।^{३२} प्रोफेसर विल्सन कहते हैं कि भारतीय ज्योतिषियों को प्राचीन खलीफाओं विशेष कर हारुन-रशीद के भली भान्ति प्रोत्साहित किया। वे बगदाद आमंत्रित किये गए और वहां उनके ग्रन्थोंका अनुवाद किया गया।^{३३}

भारत भूमि अनादि काल से वैज्ञानिकों, शूरवीरों और शिक्षकों का जन्म देती आ रही है। दो शताब्दी से भी कम समय बीता जब राजपूताने की वीर भूमि में एक नक्षत्र-विद्या विशारद ज्योतिषी ने जन्म लिया था। उन्हीं जयपुर नरेश के सम्बन्ध में सर हण्टर लिखते हैं कि राजा जयसिंह विद्वान ने जयपुर मथुरा बनारस, देहली और उज्जैन में ग्रह-निरीक्षण गृह (सान्-मन्दिर) निर्माण कराये थे। राजा ने अपनी विलक्षण बुद्धि स्मृति स्वरूप में अपने निरीक्षण किये हुए ग्रहों की एक सूची छोड़ गये हैं।^{३४} भारत समस्त कला कौशल, विज्ञान की भान्ति ज्योतिष का जन्म स्थान है, प्रतिष्ठित पाश्चात्य पण्डित ने चिर अन्वेषण के पश्चात् इसे स्वीकार भी किया है। ईश्वर करे विश्व में भारत-ज्ञान का अलोक फैलाने वाले लालों से भारत मां की गौदी सदैव भरपूर रहे।

32. Indian Gazatteer India Page 211.

33. Mill's History of India Vol II.

युद्ध-विज्ञान

भद्रं मनः कृणुष्व वृजतुर्ये ।—ऋ० ५-२६-३४

जिस जाति के हुंकार से वसुधरा कांप उठती थी, जिस के घोंमें की धमक को सुन कर बड़े बड़े महावलियों के पेट का पानी हिल उठता था. जिस के महावलियों ने अपने भुज बल की छाया में संसार को अभय-दान दे रखा था । उस विश्रुत-वीर जाति के युद्ध विज्ञान का अङ्कन, लौह-लेखनी कहाँ कर सकती है ? जिस विशाल जाति ने स्वार्थ के वशीभूत हो कर दूसरों की स्वाधीनता को हड़प करने की कभी कल्पना तक नहीं की, जिस की तलवारों के पीछे रक्षमा दौड़ती रही उस के युद्ध-कुशल वं कर्मियों का जिक्र ही कैसा ।

सेना-सङ्गठन—

युद्ध-वास्तव में एक विज्ञान, और साथ ही है कला, जिसकी बारीकियों को प्राचीन भारतियों ने भली भाँति अध्ययन किया और सीखा था ! रामायण और महाभारत काल के सेना सङ्गठन को देख कर आज भी दुनिया दंग रह जाती है व्यूह रचना, प्राचीन हिन्दुओं की युद्ध कुशलता और सेना संगठन का अद्वितीय नमूना है । व्यूह बनाने की निपुणता पर ही जय पराजय बहुत अंशों में अवलम्बित है । किसी भी सेना को विस्तृत या संकुचित कर देना, व्यूह रचना विशारदों के बायें हाथ का खेल था, महात्मा

* Keep thy mind pure even when vanquishing thy foes in the battlefield.

शुक्राचार्य ने प्रधान व्यूह ये बतलाते हैं—कौंच, श्यन, भकर, सूची, सर्वतोभद्र, शकट, और सर्प व्यूह ।^१ अल्प योद्धा हो तो उन को एकत्रित कर के और बहुत हां तो उन को विभूत कर सूक्ष्मकार और वज्राकार व्यूह का संगठन कर युद्ध करावे यह है महाराज मनु का आदेश ।^२ इतिहासकार एलिफन्टन बतलाते हैं कि हिन्दुओं के सम्मुख और पार्श्व भाग से आक्रमण करने की नीति और प्रणाली की बहुत दिनों तक योरापयन सराहना करते रहे ।^३ मनु महाराज ने यहां तक बतलाया है कि कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाण्ड्याल और शूरसेन देश के निवासी नाटे और ऊंचे मनुष्यों को आगे करे ! ... और युद्ध के समय उनकी चेष्टाओं पर दृष्टि रखे ।^४ किस देश के निवासी, किस स्थान पर ठीक तौर से लड़ सकते हैं और उस समय उनकी मनोभावना क्या होती है, यह बात प्राचीन हिन्दुओं की युद्ध-निपुणता का नमूना है इसी लिए कैप्टन ट्रुवायर (Troyer) कहते हैं कि हिन्दुओं की परम्परा गत गाथायें लड़ाइयों से भरी पड़ी है । जिनमें धर्म का भी हिस्सा है । मैंने इस विषय में बहुत कुछ बतलाया है अब दूर जाने की भी आवश्यकता नहीं, सुर और असुरों का युद्ध ही देख लीजिए ।^५ महाभारत की १८ अक्षोहिणी सेना का सुचारु संगठन और सुसज्जित भारतियों की अपनी योग्यता थी । अलबेहनी एक अक्षोहिणी की गणना इस भान्ति करता है—२१,८७० रथ, २१,४७० हाथी, ६५,६१० सवार और

१. शुक्र नीतिअ० ४.

२. मनुस्मृति अ० १ श्लोक १६१

३. History of India, Page 82.

४. मनु स्मृति अ० ७ श्लो० १६३, १६४

५. Asiatic Journal Oct. 1844 Page 514

१,०६,३५० पैदल सैनिकों के समूह को एक अक्षोहिणी कहने हैं। हाथी, घोड़े और मनुष्यों (केवल जीवधारी) की कुल संख्या एक अक्षोहिणी में ६३४,२४३१८११४१६ होती थी।^१ महाभारत में इसी का वर्णन इस भान्ति किया गया है।

ऐसी सुव्यवस्थित विशाल सेनाओं की क्या संसार ने महाभारत काल के बाद फिर कभी कल्पना की है। प्राचीन इतिहास का परिचय लिखता है कि मेगस्थनीज, चन्द्रगुप्त की उस प्रसिद्ध सेना का सम्पूर्ण विवरण देता है जिस ने सल्यूकस को हराया था।^२ उसमें सवार, पैदल, रथ, हाथी आदि सभी थे।

अब जरा दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध हिन्दू सम्राट विजय नगर के टिड्डी दल को भी देख लीजिए। कमाल उद्दीन रज्जाक इसकी संख्या ७ लाख बतलाता है। इससे कुछ काल पहले विजयनगर का दर्शन करने वाला पहला योर्कपयन इटालियन यात्री निकोलो काण्टी कहता है कि सेना १० लाख से भी अधिक थी। १६वीं शताब्दी के प्रथम चरण का लेखक डी० पेस लिखता है—‘मैं आप को बतलाना चाहता हूँ कि सम्राट के पास १० लाख सेना है, जिस में १५००० सवार भी शामिल हैं। न्यूनिज भी इसी सेना का सविस्तार वर्णन करते हुए संख्या १० लाख से ऊपर बतलाता है।^३

यह है प्राचीन हिन्दू सम्राटों की सेना का एक धुंधला चित्र, जो कि अन्य तत्कालीन भारत के चक्रवर्ती सम्राटों की सेना-संगठन का अनुमान लगाने में बहुत कुछ सहायक बन सकता है।

इतिहासवेत्ता गैरट बतलाते हैं कि उन के (चन्द्रगुप्त) के

6. Alberuni's India Vol. 1

7. Arian, India XV, Strabo XVII 50.

8. Scenes and characters from Indian history Page 56, 57

है।^{१६} यहाँ पर चरित्र और राष्ट्रीय भावों को भी दूसरों की दृष्टि में देखना आवश्यक प्रतीत होता है। इतिहासकार प्लफ़न्डर बनलाते हैं कि हिन्दू परतों दर्जे की लडाकू जातियों से पीछे नहीं। वे धर्म और सम्मान के लिए बिना आगा-पीछा किये ही प्रान दे देते हैं। मेजर जनरल सर ओ० टी० ब्यूरीक (Bureau) की राय है कि 'भारतियों ने शत्रु और मित्र दोनों प्रकार से अपने को बहादुर सिपाही प्रमाणित कर दिया है।'^{१७} विलियम सी० बेनेट (Bennett) सेंटिलमेंट कमिश्नर ने १८५६ ई० में लिखा था—गजपत और ब्राह्मणों का साहस और सम्मान भाव कुर्मियों की मित्तव्यता एवं परिश्रम साधारण दर्शक की दृष्टि में भी पेटेंट (Patent) है।^{१८} चार्ल्स सीथिंग सरीखे व्यक्तियों ने भी स्वीकार किया है—'संयम में सर्वश्रेष्ठ, साहस में समान केवल शारीरिक शक्ति में हमारे देशवासियों से कम, —मैं ने ऐसे अच्छे सैनिक और बहादुर मनुष्य कभी नहीं देखे'^{१९} दम्बरू के भूतपूर्व गवर्नर रिचार्ड टेम्पुल वार्ट के उद्गार देखिए—'भारतियों के चरित्र में व्यक्तिगत कृपा और दातव्य लदेव की प्रिय-तम विशेषता है।..... उनके स्वभाव में प्रसन्नता, साहस और धैर्य राष्ट्रीय-क्लेस के मध्य में पोषित होता है।'^{२०} विद्वान जेम्स सामलसून की दृष्टि से—'वे प्रसन्न वदन, कृतज्ञ और सब से अधिक अपमान की अपेक्षा आपत्ति का सामना करना अच्छा समझते हैं।'^{२१} सर जान लारेंस तक ने स्वीकार किया था कि

16 Field service Regulation 1824 part 11 See 1 Page 2.

17. Olyde and strath narius (R. 9 series)

18. the oudh Gazetteer 1877.

19, The Indian review Nov 1835,

20, The People of India,

21, Indian past and present,

‘भारतियों ने अपनी शानदार बहादुरी और वीरता पूर्णव्यवहार के कारण ख्याति पाई है। मिस्टर आरुक्विथ (A-quinth) के शब्दों में फ्रांस के युद्धक्षेत्र में उन्होंने अपनी बफानारी और वीरता का असर यश कमाया था।¹² शक्ति और साहस भारतियों की अपनी चीज है। देखिए सर जान उडरफी इस विषय में क्या कहते हैं? ‘भारत एक भावना है। यह एक विशेष शक्ति है। भारत शक्ति समस्त अन्य शक्तियों की अपेक्षा अपनी विद्वत्ता प्रकृति और गुणों के लिए प्रसिद्ध है। वह घर सच्चा भारतीय घर नहीं जहां इसका व्यक्ति करण न हो।’¹³

मैतिक योग्यता के पश्चात् सेना नायकों का निर्वाह करना भी आवश्यक है। प्राचीन भारत में प्रत्येक व्यक्ति नियमित रूप से मैतिक शिक्षा ग्रहण करता था। प्रत्येक राजा के लिए तो इस विषय का पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त करना एकान्त अनिवार्य था। कहां तक कहा जाय यह ज्ञान विवाह संस्कार तक के लिए जरूरी मां हो गया था। परशुराम, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, विश्वामित्र अर्जुन आदि की मौजूदगी में अधिक सेनाशिल्पियों की खोज करना होवेकार है। हां, सेनाध्यक्षों पर विचार करना आवश्यक है। क्योंकि हार जीत का पांसा उन्हीं के हाथों से उलटना-पुलटना है। युद्ध-कला-विज्ञ आर्थर लिली निष्पन्न होकर दत्ततांते हैं कि ‘शस्त्रास्त्र सज्जित राम विश्व के इतिहास में अपना कानी ही नहीं रखते!’¹⁴ लक्ष्मण, इन्द्रजीत, पितामह भीष्म, धृष्टधुम्र जैसे सेनानी दुनिया ने आज तक दुबारा देखा ही नहीं, उनके हस्त लावण और युद्ध कौशल आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए एक कल्पना

12. What India wants.

13. Beatah Shukti.

24. Rama and Homer Page 51.

कष्ट बात है। सर डाक्टर हण्टर मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हुए कहते हैं कि सेनासंगठन और संचालन सिद्धान्तों आदि के सम्बन्ध में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं, इन का वर्णन महाभारत में कई बार हो चुका है।^{२५} वीरता और दया का घनिष्ठ सम्बन्ध है, दयालु सेनानी अशोक का कलिग विजय आज़ की एक ऐतिहासिक घटना है। गैरट के अनुसार जिसने, चीन खोतान काशगर यारकन्ध तक विजय किया उस कनिष्क के सेना नायकत्व के प्रमाण की आवश्यकता ही क्या है। वीसेन्ट स्मिथ कहते हैं कि 'कदाचित् भारत विक्रमान्त्य शासन के बाद प्राच्य ढंग से फिर इतना सुन्दर शासित नहीं हुआ।' इतिहासज्ञ जी०-ए० वाथेन कहते हैं कि चन्द्रगुप्त द्वितीय और समुद्रगुप्त ये शासक और महान योद्धा थे।^{२६} पौरुष के पराक्रम पर मुग्ध हो कर ही सिकन्दर ने उसकी सराहना की थी।^{२७} शत्रु भी जिस पर सौ जान से निष्ठावर हों ऐसे सेना नायकों के लिए दुनिया को हिन्दुस्तान की ओर ही आखें घुमाना पड़ता है। ऐनीविसेन्ट महोदय ने ईशा से २०३५ वर्ष पहले की तारीख पलव कर बताया है कि नाह्वह (Niueh) सेमीरामिस (Semiramis) भारत में घंसे आया जिसे भारतीय राजकुमार (Strabrobates) ने भगा दिया था।^{२८}

यह तो है बहुत पुरानी बातें, अब महाराणा संग्रामसिंह सम्बन्ध में कर्नल टाड की जवान से सुनिए—'इस लड़ाके वीर की एक आंख भाई के साथ भगड़े में विदा हो गई, देहली के

26, Indian Gazetteer India Page 223.

26. A history of India Page 71,

27 A history of India Page 71.

28, A bird's eye view of India's past,

लोधी सम्राट के साथ युद्ध करने में एक बाजू जाता रहा, और अन्यत्र तोप के गोले से अंग टूटने के कारण लंग हो गया। इसके शरीर के विभिन्न भागों पर तलवार और बर्छों के ८० घाव थे।^{२८} इतिहासज्ञ पाइन लिखता है 'कि यह वीर पराजित होकर मदैव के लिए भारत के साम्राज्य को अन्तिम नमस्कार कर पहाड़ों की ओर चला गया और लोगों को बतला दिया कि वह चित्तौड़ में पुनः प्रवेश न करेगा, करेगा तो विजय... ..।'^{२९} मुग़ल भर राजपूतों को ले कर टिड्डी दल मुगलों को हलदी घाटी का रणाङ्गण में लोहे के चने चबवाना संग्रामसिंह के वंशज महाराणा प्रताप का ही काम था। राजस्थान का इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स-टाड बड़े गर्व से बतलाता है कि 'मां के दूध की लाज रखने के लिए प्रताप चौथाई शताब्दी तक साम्राज्य का मुकाबला करता रहा। वह कभी मैदानों की खाक छानता था तो कभी चट्टानों की किन्तु वापल रावल का वंशज माथा कैसे झुकावे-यह विचार सदैव उसके मस्तिष्क में विराजमान रहता था। संयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर सर हार्ट कोर्ट बटलर तक शिवा जी को 'राष्ट्रीय मरहूठा महान पुरुष बतलाते हैं।' जिस ने हिन्दुओं द्वारा स्वर्गीय सम्मान प्राप्त किया।^{३०} एक, दो, नहीं भारत भूमि ने असंख्य सेनानियों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया है, जिन के दम से आज भी इसका मस्तक ऊंचा है। मिस्टर वार्ड इस के साक्षी हैं—'हिन्दू सम्राटों को सैनिक शिक्षा दी जाती थी और वे अपनी

28 Tod's Rajasthan Vol. 1 Page 37.

30 Scenes and Characters from Indian History. महाराणा की खानवह (Khanwah) की पराजय का प्रमुख कारण था हावेल विश्वासघात

31. India Insistent Page 63,

सेना के साथ युद्ध क्षेत्र को जाते थे । इनमें से बहुत सम्राट् अपना आदर्श वीरता और युद्ध कौशल के लिए प्रसिद्ध थे ।^{१००}

युद्ध नियम—

युद्ध के नियम शूरता वीरता ही के नहीं प्रत्युता सभ्यता के भी परिचायक हैं । आधुनिक काल में यद्यपि 'प्रेम और युद्ध में कुछ भी असंगत नहीं'^{१०१} का वाक्य बड़े गर्व से व्यवहार किया जाता है किन्तु प्राचीन भारत में जघन्य अपराध माना जाता था, और आज भी भारतीय ऐसी बातों पर घृणा से मुंह मोड़ लेते हैं, हिन्दू जाति की नीति, युद्ध में सदा-उदार और रक्षात्मक रही है । वे जहां दूसरों की सम्पन्नता पर लार टपकाना नहीं जानते थे, वहीं शत्रुओं की लाल पीली आंखें देखना भी उन्हें वर्दाशत न था । स्वाभिमान के दांव पर वे सदैव प्राणों की बाजी लगाया करते थे । चन्द्रगुप्त ने मल्ल्यूक्स को वीर की भांति पराजित कर दिया एवं उदार की भांति मुक्त कर दिया । पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को पकड़ा और दया का आंचल फैलाने पर क्षमा की भिक्षा डाल दी । महाराणा भीम ने विश्वास घाती अलाउद्दीन को घर बुला कर भी सकुशल वापिस लौटा दिया । कतिपय राज्य नीतिज्ञ इन असंख्य घटनाओं को राजनीति की भूलें भूलें ही बता दें किन्तु इनकी ओट में तत्कालीन भारतीय हृदय की उदारता एवं अलौकिक शक्ति का अद्भुत चमत्कार छिपा है । प्रोफेसर विल्मन बतलाते हैं कि हिन्दुओं के युद्ध नियम वीरता-पूर्ण और दयालु हैं वे वृद्ध स्त्री, निःशस्त्र और पराजित को वध करने की आज्ञा नहीं देते ।^{१०२} सुलेमान सौदागर भी इस सम्बन्ध

82, The Theosophist, March 81,

83, Nothing is unfair in war and love,

१००. देखिये मनुस्मृति अ० ७ श्लोक० ६०, ६१, ६२, ६३, ६४

सम्बन्ध में एक बड़े सार्क की बात कहता है—‘भारतवर्ष में एक राजा दूसरे से युद्ध ठानता है तो उसका यह विचार बहुत ही कम होता है कि वह दूसरों के राज्य पर अपना अधिकार जमावे। जब कोई राजा अन्य पर विजयी होता है तो पराजित राजा के कुटुम्ब में से किसी को जीते हुए राज्य का राजा बना देता है।’^१ यूनानी राजदूत मेगस्थनीज लिखता है—युद्ध के समय विपक्षी एक दूसरे का संहार करते हैं किन्तु कृषकों को बाधा नहीं देते। शत्रु के देश को अग्नि से सत्यनाश नहीं करते और न काटते हैं उन के वृक्ष।’

वीरता और उदारता के इतने सुन्दर सम्बन्ध का आदर्श अर्थ जाति के अतिरिक्त और किसके इतिहास में मौजूद है ?

गुप्तचर—

सैनिक संगठन और जासूसी प्रथा (Spionage) का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत ने यदि छलछद्म को किसी भी क्षेत्र में बढ़ने नहीं दिया किन्तु शत्रु-परिस्थिति एवं प्रजा के प्रति अधिकारियों के व्यवहार का परिज्ञान प्राप्त करने के लिए उस चक्र को ऐसे ताने बाने का जाल में गूँथा था कि आधुनिक गुप्तचर विभाग (C. I. D.) उस के सामने कुछ भी नहीं टहरता। रामायण में एक नहीं अनेकों स्थानों पर इसका विवेचन मिलता है। रावण का ‘शुक्र’ नामक दूत राम के शिबिर में आया, वानरों ने उसे बन्दी बनाकर राम के सामने पेश किया। चालाक भेदिया ने ‘दूत’ का बहाना कर क्षमा चाही किन्तु अंगद ने तुरन्त राम को सावधान कर दिया ‘हे महाप्राज्ञ ! यह दूत नहीं जासूस मालूम होता है’^२ महाभारत से बर्देशिक राजाओं के अठारह विभागों

^१ सुलेमान सैदागर पृ० १८, १९

^२ ‘नागम दूतों महाप्राज्ञ चारकः प्रति भाति में।’

में गुप्तचरों की नियुक्ति का उल्लेख किया गया है। कर्णिक अन्य राष्ट्रों में पाखण्डियों, तापसों आदि की नियुक्ति का परामर्श देता है।^{३७} महाभारत काल में तो गुप्तचरों की अलग भाषा थी जिस की संज्ञा 'म्लेच्छ' बतलाई गई है।

आचार्य शुक्र ने भी इस का सुन्दर विवेचन किया है।^{३८} मनुस्मृति, मृच्छ कटिक नाटक, मुद्राराक्षस, उत्तर राम चरित्र और किरातार्जुनीय आदि पुस्तकों में भी प्राचीन गुप्तचर प्रथा का उल्लेख किया गया है। गुप्तचर विभाग ने चन्द्रगुप्त काल में काफी उन्नति की थी। इस विभाग के पुनः निर्दिष्टा के लिए ही पांच विभाग थे। जिस के आचार्य थे चाणक्य। आपने विदेशी शासकों के यहां कुवड़े, बौने, दिजड़े कलाकागिरी स्त्रियां, गूंगे तथा म्लेच्छ जाति के व्यक्तियों को उनके घरों में गुप्तचर बनाकर रखा था।^{३९} आपका नियम था कि इन मामलों में 'विश्वासपात्र' का भी पर्याप्त प्रमाण के बिना विश्वास न किया जाय।^{४०} रहस्य को गुप्त रखना ही गुप्तचरों की योग्यता की एक कसौटी है। इस सम्बन्ध में आचार्य चाणक्य का कितना सुन्दर आदेश है—
'मनसा चिन्तित कर्म वचसा न प्रकाशयेत्।'

अर्थात् मन में जो कुछ सोचो और की बात क्या अपनी जवान को भी उसकी खबर न होने दे। विश्व-इतिहास के पन्ने चन्द्रगुप्त के गुप्तचर विभाग की चालुरी के सामने विलकुल कोरं
३७. चरा सुविहिता कार्य आत्मनश्च परस्यवा पाखण्डा स्तापसादीश्च परराष्ट्रेषु योजयेत्। आदि० प्र०

३८. शुक्र अ० १ श्लोक० १३०—१३६

३९. अन्तगृह चराश्लेषां कुब्ज बामन पण्डकाः,

शिल्पकृत्याः स्त्रियो मूकाश्चित्राश्च म्लेच्छ जातयः।—अर्थशास्त्र

४०. 'वश्वस्तेष्वपि न विश्वसेत्।'

जीवते हैं। यही कारण है कि आचार्य उपगुप्त को पाश्चात्य इतिहास लेखक भारत का Machivalli कहते हैं।

वैद्य—

सेना संगठन में सेना के डाक्टर का आसन बहुत महत्वपूर्ण है। गमायण काल में हम सेना के एक ऐसे पीयूष पाणि निपुण चिकित्सक पाते हैं जो 'शक्ति सगीखे घातक अस्त्र के आघात को शल्य विद्या (Surgery) की सहायता के बिना ही, केवल मर्जीवनी बूटी से अच्छा कर देता है। विद्वान् आर्थ लिली उस सुयोग्य चिकित्सक का नाम जम्बवान बतला कर यह भी कहते हैं कि उस वक्त बूटी को मेरुपर्वत की चोटी गन्धमादन से किसी को भेज कर मंगवाने का परामर्श दिया था।^{४१}

महाभारत में युद्ध क्षेत्र में लगे हुए कैम्पों के वर्णन में स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि 'वहां पर सैकड़ों शल्य विशारद वैद्य उपस्थित थे जिन के पास सज्जी और औषधी का समस्त सामान मौजूद था। इन्हें नियमित रूप से वेतन भी मिला करता था।'^{४२} भीष्मपितामह के शर शैयासीन होने पर भी अनेक चिकित्सक इन की सेवा के लिए उपस्थित हुए थे।^{४३} प्राचीन भारतीय इतिहास को राई-रत्ती खोज डालिये, कहीं भी आपको यह कहने की आवश्यकता न पड़ेगी कि अमुक वस्तु का उस काल में अभाव था।

41 Rama and Homer Page 161,

42. 'त्रासन् शिल्पिनः प्राज्ञः शतशो दत्त वेतनः।

सर्वापकरणैषुक्ता वैद्याः शास्त्र विशारदाः॥'—उ०, अ० १५१

43 देखिए भीष्म पर्व, अ० १२२

शस्त्रास्त्र

प्राक्ताद प्राक्ताद धरादुत्कृष्टं भूमिं जहि रज्जमः पर्वतं ॥

ऋ० ७-१०४-१९^१

युद्ध विज्ञान का निरीक्षण करते समय उस के अस्त्र शस्त्र को भी देखना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इनकी योग्यता और संचालन पर ही हार जीत का फैसला होता है। जिस ज्ञानिने दुनिया को अस्त्रशस्त्रों का प्रयोग बतला कर संरक्षण का पाठ पढ़ाया था, जो राष्ट्र एक दिन संसार के लिए हथियार तैयार करता था, उसी के निवासी आज अस्त्र पकड़ना तो क्या उनके नामों से भी अपरिचित है। उस विषय का विवेचन करने से पूर्व 'अस्त्र' और 'शस्त्र' इन दो शब्दों पर विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। शुक्राचार्य की व्याख्यानुसार—'यंत्रमंत्र और अग्नि इन तीनों द्वारा चलाये जाने वाले, 'अस्त्र' हैं। अस्त्र दो प्रकार के होते हैं, नालिक और यान्त्रिक। यंत्र और अग्नि द्वारा जलाये जाने वाले नालिकास्त्र तोप बन्दूक आदि हैं, किन्तु मंत्र द्वारा सञ्चालित अस्त्रों का अन्वेषण अथवा प्रयोग आज तक वैज्ञानिक की बुद्धि में नहीं टकराया। इन का वर्णन अथर्ववेद के तीसरे और आठवें मन्त्रों में मिलता है इन का प्रयोग रामायण काल में प्रचुरता में होता था। इन के अतिरिक्त अन्य तलवारें और भालों आदि की गणना शस्त्रों

१. 'Forward behind and from above and under, smites down the demons (looters) with thy rocky weapons'

में है।^१ अन्य शास्त्रकारों के मत से भी यही सिद्ध होता है। साहस कर के भी जिस से बचाव न हो सके, वह अस्त्र है, (‘माह्वेन येन त्राणां न भयति स अस्त्रः’) और साहस के द्वारा जिस से रक्षा हो सके वह शस्त्र है। (‘माह्वे येन त्राणं भवति स शस्त्रः’)

भारतीय युद्ध-शस्त्र के अन्दर अस्त्र शस्त्रों के अनेक भेद उपभेद पाये जाते हैं। जैसे यंत्र मुक्ता हस्त मुक्ता मुक्ता-मुक्ता प्राकृतिक इत्यादि... विल्सन महोदय, तलवार, तीर कमान, मंगीन कटार फरसा, गदा गुर्ज, छुरी, मिंदयाल, कुहकवान आदि के नाम गिनते हैं।^२ भारत में ‘अस्त्र’ संज्ञा धारी हथियार महा विकसल होते थे, निशाना चूकना तो इनके लिए कठिन ही था। किसी कवि के शब्दों में—

हस्ती दन्त कमान-मर ममथ बचन प्रवीन,

जुग चाहे पलटन रहै ये न पलटें तीन।

धनुष—

किस्मत की भांति न पलटने वाले कमान के तीर भारतीयों के हाथों का अपना जौहर था। अर्जुन, कर्ण, एकलव्य आदि का शर संचालन, चौहान पृथ्वीराज का शब्द बेधी बाण आज भी भारतीय शत्रुओं के हृदयों को प्रकम्पित कर देता है विल्सन महोदय विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दू धनुर्विद्या के आचार्य थे। उनकी शर संचालन कुशलता आश्चर्यजनक थी। वे एक साथ ‘चार से नौ बाण तक मारते थे।’ युद्ध कला-निपुण आर्थर लिली बतलाते हैं कि इन्द्रजीत (रावण के पुत्र मेघनाद) के जादू भरे

^१ ‘अस्यने विप्ते यत्त मन्त्र मन्त्राग्निभिश्च तत्।

अस्त्र मदन्त्यतः शस्त्रमसि कुन्तादिकश्च यत्॥

अस्त्रतु द्विविधं ज्ञेयं तालिकं भान्त्रिकं तथा।’—शुकनीति

बाण बर्छियों के रूप में सांप की भांति होते थे।^१ प्राचीन भारतीय बाण चलाने वालों के हाथ में पुनः वापस आ जाते थे, दुनिया आज तक इसे कवियों की कल्पना समझती थी किन्तु जब से आस्ट्रेलिया में इनका पता चला है उस समय से वैज्ञानिकों की आंखें खुल गई हैं और संसार भारतीयों के पुराने कमालान पर आश्चर्य से दान्तों तले उंगली दवाने ने लिए विवश हुआ है।

सन १८५१ और १८६२ की अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्राचीन विश्व-विजेता भारत के कुछ शस्त्रास्त्र पेश किये गये थे। उनके सम्बन्ध में विदुषी मेनिंग की सम्मति है—‘भारतीय जड़ाऊ-अलंकारों की भांति वे सुन्दर थे, उनका लोहा बहुत ऊंची कोटी का था, और वे भली भांति पुरस्कृत भी किये गये थे।’^२ वास्तव में प्राचीन हिन्दूओं के धनुष से निकले हुये बाण में जो कगमात थी वह आधुनिक बन्दूक की गोली में कहां !

तलवार—

सर हेनरी काटन कहते हैं कि ‘समस्त योरोपियन, यहां तक कि अरमानियन, यहूदी और योरोपियन बिना लाइसेंस के हथियार रख सकते हैं पर भारतवासी नहीं।’^३ किन्तु यहां हाथ छड़ी लेना तक गुनाह नहीं जुर्म समझा जाता है। एक शताब्दी पहले भारतीय किसान तक कमर में तलवार लटका कर खेतों में काम किया करते थे। यात्री अब्दुर्रज्जाक लिखता है कि ‘मैंने कालीकट के बन्दरगाह पर उतर कर देखा कि एक कबीले के लोग एक हाथ में जल की भांति उज्ज्वल हिन्दी तलवारें और

^१ Rama & Homer Page 173.

^३ Ancient and mediaveal India Vol, II Page 365.

^४ New India.

दूरमें में बादल के टुकड़ों की भांति ढालें लिए हुये थे ।^५ यात्री अलबेरुनी भी कहता है कि 'वे (हिन्दू) दाईं तरफ कमर ने तलवार लटकाने रहते थे ।'

अपना छाया में मौत को लेकर चलने वाली हिन्दू तलवारों का लोहा दुनिया के बड़े बड़े शूरमाओं ने माना था । इस की शहादत विदेशी आक्रमणकारी थे किन्तु उनकी आत्मायें तो कब्रों की तह में सिसकियाँ भर रही हैं । विवश होकर इतिहास के पन्नों पर ही सन्तोष कर लीजिए । अरबी भाषा का सुकवि लिखता है— 'निकटतम सम्बन्धी के अत्याचार का धाव हिन्दुओं की तलवार ने भी अधिक भयानक होता है ।'^६ फारसी का मशहूर शायर फ़िरोसी भी भारतीय सम्पत्ति और तलवार का राग गाता है ।^७ स्ट्रेसियास (Stesias) बतलाता है कि भारतीय तलवारें संसार में सब से अच्छी थीं । "बहादुर राजपूत किस कमालकी तलवारें चलाते थे विलियम वाटरफील्ड महोदय की जबान से सुन लीजिए । बारह-बारह कोस तक तलवार झाड़ना, यह दुनिया में केवल हिन्दुओं का ही सामर्थ्य है ।

'Twelve Kos their swords their path did hew.'

Three long kos night furiously;

Stout Dhewas sword made play;

Two kos brave malkhan slew his foes.'

5 Scenes and Characters from Idnian History Page 49.

! Alberuni's India Vol. I

6. Sabaa moalaqa, 'तफसीर अजीजी में भी पढ़िये—'तेग हिन्दी व खंजरे

रुमी—नकुनन्द आंकि इन्तिजार कुनन्द ।'

7. 'जियाकूनो अल्मासो जितेगे हिन्द, हमी तेग हिन्दी सरासर परन्द ।'

—शाहनामा

8, History of antiquity, Vol, IV Page 436,

आग्नेयास्त्र—

आधुनिक युद्ध में आग्नेयास्त्रों का ही महत्व है। संसार ने यद्यपि इनका प्रयोग अभी सीखा और जाना है परन्तु भारत में इन का व्यवहार बहुत प्राचीन काल से होता है। अथर्ववेद में कहा है ... वानक हम तुम्हें सीसे (Bullet) से वीथते हैं^{११} अन्यत्र यह भी बतलाया गया है कि 'आग्नेयास्त्र हमारे शत्रुओं और उन की सेनाओं को जलाता और मूर्छित करता हुआ हमारे पास लौट आवे'^{१२} रामायण काल में विश्वामित्र ने राम को अन्य अस्त्रों के साथ साथ आग्ने अस्त्र (Fire Arms) भी दिये थे। श्रीमती ग्लावास्टकी स्वीकार करती हैं कि आग्नेयास्त्रों का व्यवहार प्राचीन हिन्दू लोग किया करते थे।^{१३} ग्रीक लोगों ने ब्राह्मणों के सम्बन्ध में लिखा है कि वे लोग फासले पर खड़े होकर बिजली और प्रकाश (Fire-Arms) से युद्ध करते हैं^{१४} ऐतिहासकार मफी कहता है कि 'भारतीय आग्नेयास्त्र के युद्ध में पुर्तगीजों से बहुत बड़े चढ़े थे'^{१५} सिकन्दर अरस्तू को एक पत्र द्वारा सूचित करता है कि 'उस ने स्वयं देखा है, भारत में उस की सेना पर अग्नि लपटों की वर्षा हुई है'^{१६} महाभारत के युद्ध में ऐसे अस्त्रों का प्रयोग हुआ था, जिनको सोचने और समझने में वैज्ञानिकों की कल्पना कुण्ठित हो जाती है। द्रोण पर्व में लिखा

११. 'तत्त्वा सोसेन विध्यामो यथा तोऽसा अवारहा ।'

१२. 'अग्निं शत्रून् प्रयेतु विद्वान् प्रति दहन्मभिशस्तिभरानिम स सेनां मोहयुत

परे पां निहन्तांश्च कृणां वज्जात वेदाः ॥ नृ० का० प्र० सू० १ श्लोक०

11. Isis Unveiled.

12. Orat XXVII Page 337,

13. Indica Page 25,

14. Dantes Inferno XIV.,

है—'लोहे के बने हुए चक्र, भुशुण्डि, पट्टिश और शतत्रियां बगावत चल रही थीं।' १५ अन्यत्र इसी ग्रन्थ में अशनि अस्त्र का वर्णन इस प्रकार किया गया है—'उस में एक मन का गोला डाला जाता था, उसके नीचे चक्र लगे रहते थे। गोले वायुमें ही फूट जाते थे और बड़ा भारी धक्का पहुंचाते थे, उस में बादलों की तरह घोर नाद होता है।' १६ तोपों और मशीनगनों के सम्बन्ध में प्रख्यात पाश्चात्य पण्डित स्वीकार करते हैं कि ब्राह्मणों के पास इस प्रकार की मशीनें थीं। प्रोफेसर विल्सन की राय है कि आग्नेयास्त्रों में प्राचीन भारतीय अत्यन्त पुरातन काल से ही हुशियार थे। इतिहासकार एलिफिन्स्टन बहुत काल की बीती बातों का स्मरण दिलाते हैं कि विजय दशमी के दिन आग्नेयास्त्रों के आलोक में लड़का बर्बाद हुई थी। १७ शुक्राचार्य ने भी गोले गोलियों के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से बतलाया है कि—ये दो प्रकार के होते हैं। एक में बारूद भरा जाता है और दूसरे केवल लोहे के ही होते हैं, बन्दूक की गोलियां सीसे की बनाई जाती है। १८

१. आग्नेयानी च चक्राणि भुशुण्डयः शक्ति तोमराः ।

पुनन्थ विरताः शूलाः शतघ्नयः पट्टि शास्तथा ॥ द्रो० अ० १५६

शस्त्रों—Which Colonel Yule belived to have a prehistoric

Rocket to Tarpedo (विजली की मछली से भिजता जुलता अस्त्र)

Rama & Homer Page 55

16. द्रोण पूर्व अ० २०० श्लोक १७ से २१ तक

17. Elphinstons history of India Page 178,

18. रामो लोहभयो गर्म घुटिकः केवलोऽपि वा,

सांसस्य लघु नात्तार्थे हयन्तर्धातु भवोपि वा ।—शु० २०४

शत-नी का अर्थ होता है, एक बार में सौ को नष्ट करने वाली। संस्कृत कोषों के अनुसार वह मैशीन जो लोहे के टुकड़ों आदि को गोले के रूप में फेंक कर बहुसंख्या में प्राणोपहरण करे। मिस्टर हालहेड भी इस का अनुमोदन करते हैं।¹⁹ आग्नेयास्त्रों के विषय में आप बतलाते हैं कि इस का अन्य विशेषताओं में एक विशेषता यह भी होती थी कि यह जब अस्त्र निकल कर शत्रु की ओर चलता था तो इस की लपटें कितने ही भागों में विभाजित हो जाती थीं और सभी प्रभावपूर्ण होती थीं। एक बार लग जाने पर यह शान्त नहीं किया जा सकता था। किन्तु इस प्रकार का अस्त्र अब लुप्त हो गया है।¹ ब्रह्मास्त्र को रेवरेण्ड के० एम० बनर्जी आधुनिक तोड़ेंदार बन्दूक से मिलता जुलता एक अस्त्र मानते हैं।²⁰

मध्यकाल में भी तोपों बन्दूकों का प्रयोग भारतमें बड़ी प्रचुरता से किया जाता था। पृथ्वीराज चौहान के समय का प्रमाणिक ग्रन्थ 'रासौ' जो उन के सखा चन्द्र वरदाई द्वारा रचा गया था, ऐसी तोपों को बतलाता है जिन के गोले १० कोस तक जाते थे।²¹ भारतीय इतिहासज्ञ लाला कुन्दनलाल जोकि नवाब अवध के यहां रहे हैं, एक तोप 'लखिमा' के सम्बन्ध में बतलाते हैं कि वह पहले चौहान पृथ्वीराज के पास रही और फिर नवाब के पास थी।²² १५वीं शताब्दी में गुजरातियों के नौका पर बैठ कर बन्दूक चलाने की रिपोर्ट 'एफ-सौज' (Faria-Souzo) देता

19. Code of Gour. law introduction Page 52.

20. Encyclopaedia Beugal Vol. III Page 21.

21. चम्पू तोप छूटई फनविक-दस कांस जाप गोला भन्नकि। पृथ्वीराज रासौ

22. मुन्खाव तकासीउल अखबार पृ० १४६-१५०

है।^{२३} कर्नलटाड महाराणा संग्रामसिंह का भी एक बट्टिया बन्दूक से लंगड़ा होने की दास्तान लिखते हैं।^{२४}

इस समस्त उद्धरणों द्वारा यह भली भांति प्रमाणित हो गई कि संसार के हाथों में अस्त्रशस्त्र पकड़ने की शिक्षा भागतियों ही ने दी है क्योंकि अत्यन्त प्राचीन काल से ही ये तोप-बन्दूक और मशीनगनों के प्रयोग ही में नहीं प्रत्युत अस्त्र-निर्माण काल में भी अत्यन्त निपुण थे। डाक्टर आर० डी० ब्रुक एम० डी० ब्रुम्है का वर्णन करते हुये लिखते हैं कि यहां से जंगी जहाज निकल कर बाहर जाते थे, इनका निर्माण पार्सियों की देख रेख में होता था।^{२५} १६५६ ई० में भारत यात्रा करने वाला फ्रांसीसी बर्नियर फ्राक्वीस कहता है—‘अन्य चीजों के साथ साथ यहां सब से अच्छी बन्दूकें तैयार होती हैं।’^{२६}

आग्नेयास्त्रों के चलाने का प्रयोग करने में यहां के लोग कितने कमाल के हाथ दिखाते थे, यह भी प्रसिद्ध ऐतिहासिक जनरल चासने (Casney) की जवानी सुन लीजिए ‘ग्रीक लोग भारतीय वीरों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते थे। आठ सालों तक निरन्तर युद्ध में, वीरता, चतुराई तथा बल में यूनानियों ने भारतीय सिपाहियों को ही सब से बढ़ चढ़ कर पाया था।’^{२७} किसी भारतीय कवि ने बन्दूक विद्या के बीजमंत्र को इस अमित्राक्षर छन्द में किसी खूबी से बन्द किया है।

२३ Ibid VII,

२४ Tod's Rajasthan Vol I Page 307,

२५ General Gazetteer and Geographical Dictionary Page 117.

२६ Travels in the Mogul Empire Page 254,

२७ Ancient India its invasion by Alexander the great as described by the Arrian Page 405,

‘नजर निमान जात बन्द

मक्खी सुध रक्खी ।

करके मम्हार जायगी रक्खी

।’

बहुत दिन नहीं हुए, केवल १८५७ की बात है। फील्ड-मार्शल फ्रेड रावर्ट्स भारतीयों के विषय में अपने घर वालों को सूचित करते हैं—‘साधारणतः गणना में शत्रु ४०००० होंगे जिन के पास अर्गाण्ड बन्दूकें थीं। निश्चय रूप से वे इन का प्रयोग अच्छा करते हैं। उन की पैदल सेना भी अच्छा युद्ध करती।’ १०८

वारुद—

वारुद आग्नेयास्त्रों के प्रयोग के लिए एक अत्यन्तावश्यक वस्तु है। लुक-छिप कर, फर्लाङ्ग और मीलों के अन्तर से शक्ति का प्रदर्शन करने वाले अधुनिक सैन्य-समाज को इसके अभाव में मिट्टी का शेर ही समझिए। अस्तु प्राचीन हिन्दू विज्ञान के विवेचन को सम्पूर्ण करने के लिए वारुद पर विचार करना भी जरूरी है। ऐतिहासवेता टाड ने कृष्ण के वंशज यदु भानु तक ‘वारुद’ का प्रयोग होना खोजा है। १०९ मिस्टर हाल-हेड (Hal-hed) कहते हैं कि अन्वेषण काल में भी पूर्व भारत और चीन में इस का प्रयोग होता था। विद्वान प्रोफेसर विल्सन लिखते

क वक्क ग्रन्था द्वारा पता चलता कि वे वारुद (Gun-Powder) की चीजों से भली भांति परिचित थे—
गन्धक, चारकोल (Charcoal) शोरा-यह सब प्रचुर परिमाण

28, Letter written during the Mutiny Page 34

29, Tod's Rajasthan Vol, II Page 220,

30. Wilson's essays Vol, II Page 303,

में उन के पास मौजूद था...। वारुद बनाना भारतीयों ने कब सीखा, इसकी तिथि खोजना कठिन है। आचार्य शुक्र ३१ ने न जाने कब इस का वर्णन किया था आप लिखते हैं—‘वारुद बनाने के लिए वस्तुओं को इस अनुपात से एकत्रित करना चाहिए। सुवर्ण निमक ५ भाग गन्धक १ भाग, आक, स्नुह या किसी ऐसे पेड़ की लकड़ी के कोयले १ भाग। (कोयले बनाने में उसका धुवां न निकलना चाहिए)। इन तीनों वस्तुओं को अलग २ साफ वर्तनों में खूब बारीक पीस लेना चाहिए। फिर इन्हें मिला देना चाहिए। इस चूर्ण में स्नुही या आक का दूध डाल कर धूप में सुखाना चाहिए। फिर इसे खांड की भांति चूर्ण कर लेना चाहिए। इस से अधिक अग्नेयास्त्रों के प्रयोग और उन के ज्ञान का प्रमाण और हो ही क्या सकता है ! प्रोफेसर विल्सन भी स्वीकार करते हैं कि इसके आविष्कारक भारतीय ही मालूम होते हैं। एक दो नहीं सभी विद्वान वारुद का आदिम स्थान भारत ही बतलाते हैं यहीं से चीन, ग्रीस और समस्त संसार में इसका प्रचार हुआ।^{३२} मिस्टर लैंगले ने फ्रांस की साहित्य परिषद के सामने एक निबन्ध पढ़ा था कि अरब लोगों ने

^{३१} सुवर्चि लवणात् पञ्चपलानि गन्धकात् पलम्।

अन्नधूमं विपक्वाकं स्नुह्याद्यङ्गारतः दलम् ॥ २०१

शुद्धात्सांघ्राह्यं संचूर्णम् सम्मोक्ष्य प्रपुटे द्रसेः।

स्नुद्यर्काणां रस्तोनस्य शोषये दात पेन च ॥

पिष्ट्या शर्कर दैनदग्नि चूर्णा भवेत् खलु ॥ २०२

सुवर्चि लवणात् भागाः खड्ग्व चत्वारि एव वा।

नाज्ञास्त्रार्थाग्नि चूर्णोत्तु गन्धाङ्गरौतु ॥ २०३

शुक्र नीति अध्याय ४

भारत वासियों से बारूद बनाना सीखा और फिर उन से योरूप के अन्य देशों ने ।†

अन्यास्त्र (Other Arms)

अब प्राचीन काल में व्यवहृत होने वाले अस्त्र शास्त्रों का भी निरीक्षण कर लेना चाहिये । क्यों, रावण और दुर्योधन सरीखे मगरूरों का मद भाड़ने के लिए इन तोपों बन्दूकों का ही चलाना तो प्रयत्न न था । महाभारत में 'अन्तर्धानास्त्र' का प्रयोग हुआ था जिस के सम्बन्ध में कुवेर बतलाते हैं कि 'यह शत्रु को सुलाने और नाश करने वाला है ।'^{३३} क्या आधुनिक विज्ञान आज ऐसी विपैली सम्मोहक गैस का अविष्कार कर सका है ! 'वज्र' की गगना प्रोफेसर विल्सन एक बिस्फोटक अस्त्र की श्रेणी में करते हैं ।'^{३४} विद्वान ईलियट इस से आगे बढ़ कर बतलाते हैं कि यहां केवल धड़ाके वाले अस्त्रों का ही नहीं बल्कि बहुत कुछ ठीक एक फ्यूज (Fuze) के समान था जिस से धड़ाका (Explosion) एक निश्चित समय पर होता था ।'^{३५} इतिहास वेत्ता लौसन (Lassen) भारत में व्यवहृत होने वाले एक ऐसे तेल को बतलाता है जो कि शत्रुओं के कस्बों और किलों को बिनष्ट करने के काम में प्रयोग किया जाता था ।'^{३६} इलियन बतलाता है कि यह अस्त्रों और सैनिकों को भी जला कर स्वाहा कर देता था ।'^{३७}

† History of Inventions and discoveries

33, तदिदं प्रति गृहीष्व अन्तर्धाने प्रियमम् ।

ओजस्तेजो, धुतिकरं प्रस्वापुरातिचुत ॥ ३६

बन पर्व

34, Willson's essays Vol II

35, Elliotts History of India Vol I Page 265.

36, Lassen's India Alt II Page 641.

37, Hindu superiority Page 310.

प्राचीन भारत में आधुनिक बमों (Bomb) और विषाक्त गैसों का व्यवहार युद्धों में होता था किन्तु कम क्योंकि यह शक्ति प्रदर्शन के अत्यन्त अच्छे प्रयोग समझे जाते थे ! कर्नल आल्काट कहते हैं कि 'वे समस्त विज्ञान, गैसों और कलाओं को जानते थे ।' = भारत सरकार के भूतपूर्व वैदेशिक मंत्री एच० एच० इलियट स्वीकार करते हैं कि भारत के आदिम ऐतिहासिक काल में कुछ प्रकार के अग्नेयास्त्रों का प्रयोग होता था, उन में फैंके जाने वाले विस्फोटक भी थे । उन के फटने अथवा जलने का समय इच्छानुकूल होता था । प्रक्षिप्त वस्तुएं (Frojectiles) इमारतों और दरवाजों को नष्ट करने में व्यवहार की जाती थी और काफी दूर से आग लगाने के लिए मशीनें होती थीं ।^{१३६} प्राचीन आयु इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे अस्त्रों का उपयोग करते थे जिन को समझने के लिए कदाचित आधुनिक संसार को अभी शताब्दियों माथा पच्ची करना पड़ेगा । उदाहरणार्थ असुर विद्या को ही लीजिये, इसके द्वारा वे विद्युत एवं विषाक्त गैसों का प्रयोग कर नाना भांति के कृत्रिम सर्प आदि ऐसे छोड़ा करते थे जो अनायास ही शत्रु सेना का संहार कर डालते थे । महाभारत के युद्ध में पुत्रशोकोन्मत्त अर्जुन की प्रतीज्ञा पूर्ति के लिये दिन रहते सूर्य को छिपा देना क्या था ? कुण्ड की एक साधारण गैस (Gas) का प्रयोग । कर्नल आल्काट के शब्दों में 'वर्तमान प्रोफेसर इस विज्ञान (Science) का संकेत भी नहीं समझते । इसके द्वारा आक्रमणकारी सेना को विषाक्त गैसों और भयानक बाया रूपी आकृतियों एवं आवाजों से वायुमण्डल को दूषित कर

38, Theopnist March 1881. '

39. Bibliographical index to the Historian of modern India.

पूर्ण रूप से तहस नहस कर डालते थे ।^{१४०} अर्थात् लिली रामायण के युद्ध का वर्णन करते हुये भी ऐसी ही प्रणाली का उल्लेख करने हैं कि वह आक्रमण करते और जीवन रक्षा के लिए आश्चर्य-जनक उपायों से गायब हो जाते थे ।^{४१}

युद्धक्षेत्र और वाहन—

प्राचीन काल में भारतीय युद्धों का क्षेत्र केवल स्थल ही नहीं जल और आकाश भी था । महाराज मनु ने भी तीनों मार्गों का उल्लेख किया है ।^{४२} पृथ्वी पर ये रथों, घोड़ों हाथियों आदि पर सवार होकर तथा पैदल युद्ध किया करते थे । रथों के सम्बन्ध में पर्यटक अलबेर्नी लिखता है कि जंगी रथों का आविष्कार एक हिन्दू (Aphrodisios) ने किया था जब कि प्रलय के ६०० वर्ष बाद वह मिश्र पर शासन करता था ।^{१४३} हाथी का तो कहना ही क्या है ? वह अतीत काल में युद्ध के लिये एकान्त उपयुक्त समझा जाता है । आज भी बनराज शेर का शिकार लोग इसी पर सवार होकर करते हैं । प्रोफेसर मेक्सूडकर सूचित करते हैं कि भारतीय सम्राट १० हजार हाथी ले कर युद्ध के लिये चला था ।^{४४} यूनानी लेखक प्लेटो बतलाता है कि युद्ध में पोरस की सवारी का अषना हाथी जख्मों से छलनी हो गया था, विवश होकर बैठ कर वह स्वयं अपने घावों से तीरों आदि को निकाल रहा था ।^{४५} भारतीय घोड़ों की बफादारी भारतीय वीरों ही की

40 Theosophist for March 1831.

41. Rama and Homer Page 137.

42. संयोध्य त्रिविधं मार्गं पञ्चविधं च बलं स्वक्तम् । मनु, अ. १ श्लोक १८१

43, Alberuni's India Vol I Page 407,

44, History of antiquity,

45 See, Scenes and Characters from Indian History,

भांति विख्यात है। सब कुछ स्वाधीनता की वेदी में समर्पण कर भी मलिन मुख न होने वाला प्रताप 'चेतक' को चलते देख कर रो पड़ा था। असवेरुनी लिखता है कि वे बिना काठी कसे भी बाँड़ों की सवारी करते हैं। ४६

आकाश युद्ध भारतीय युद्ध-विज्ञान का एक उत्कृष्ट नमूना है। सन् १८८१ में इलाहबाद में व्याख्यान देते हुए कर्नल अल्काट महोदय ने बतलाया था कि 'प्राचीन हिन्दू केवल वायु में चलना ही नहीं अपितु पक्षियों की भांति आकाश में युद्ध करने की कला में निपुण थे।' ४७ जिस देशके तीन ओर अगाध समुद्र लहरा रहा हो वहाँ के नौका नयन का पूछना ही क्या ! इतिहास लेखक एच० जी० एली० विन्सन कहते हैं 'पुरातन कालीन भारतीय अत्यन्त अनुभवी मल्लाह थे उनका प्राचीन साहित्य उनके बुद्धिमान और साहसी जहाजी ज्ञान के प्रचुर प्रमाण पेश करता है।' ४८ कर्नल टाड भी इसी का अनुमोदन करते हुए लिखते हैं कि प्राचीन हिन्दुओं की जहाजी शक्ति जबरदस्त थी। ४९ इतिहास वंत्ता स्मिथ भी चन्द्रगुप्त और अशोक के जहाजी वेड़े की महत्ता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करता है। ५०

पाश्चात्य पण्डितों और ऐतिहासज्ञों की यह साक्षियां प्राचीन भारतीयों के युद्ध विज्ञान की सर्वाङ्गपूर्णता, और कुशलता का ज्वलन्त प्रमाण हैं। उनका अतीत कालीन दिग्विजय भी इस पर कम प्रकाश नहीं डालता जल, थल और आकाश, सर्वत्र उनका

46, Alberuni's India Vol I Page 131.

47, Theosophist march 1881.

48, Intercourse between India and the western world Page 18-19

49, Tod's Rajasthan Vol II,

50, Edicts of Asoka Introduction VIII.

साम्राज्य विस्तृत था । एक पाश्चात्य परिचित मेघनाद की विचित्र गाड़ी की सूचना देता है 'इन्द्रजीत की गाड़ी' उसके इच्छानुकूल जहाँ चाहे जाती थी ।^{५१}

यह भारत के वैभव से जगमगाते दिनों की शक्ति की, विज्ञान की एक सुन्दर भांकी है । अधिक जानने के लिए रामायण महा-भारत आदि लोकमान्य ग्रन्थों का अवलोकन कर लीजिए । उन्हें का ऊँचा विज्ञान समझ कर आक्षेप के लिए तुरन्त कमर कस कर तैयार मत हो जाइये किन्तु विद्वान ईलियट के शब्दों पर विचार कर लीजिये—'इन में से कुछ अस्त्र काल्पनिक खयाल किये जाते थे किन्तु ५० वर्ष पूर्व ग्रामोफोन, सिनीमेटोग्राफ और बेतार व तारों को कौन केवल काल्पनिक नहीं समझता था ।'



विद्युत-विज्ञान

अगन्म ज्योतिरमृता अभूः ॥—यजुर्वेदः ८, ५२

अतीत-कालीन आर्यों ने विजली को वशवर्तिनी बना कर कितने आश्चर्य जनक काम किए थे, इसे देखना चाहते हैं तो गौरव पूर्ण अतीत से आधुनिक अन्धकार का परदा उठा दीजिए— सब कुछ साफ नजर आजायगा। हमारे प्रकर्म का इतिहास प्राचीन पुस्तकों के पन्नों में बन्द है, उनका स्वाध्याय कीजिए, सारा रहस्य खुल जायगा। ऋग्वेद को उठा कर देखिए—

त्वमग्ने यमिस्त्वमाशुशुक्लि सवमदद्भ्यस्त्वमश्मनस्वरि।

त्वं वनेभ्य स्त्रं चृणां चृणां चृपते जायमे शुचिः ॥

ऋ० २, १, १.

अर्थात्—‘हे अग्ने तू दिव्य पदार्थों से उत्पन्न होती है, तू सीघ्र शुष्क कर देती है। तू पत्थर और जल से उत्पन्न होती है। तू मनुष्यों के लिए सब प्रकार से शोधक है।’ आज कल के वैज्ञानिकों को जल द्वारा विद्युत निकालने का प्रयोग प्राचीन आर्य ग्रन्थों ही ने सिखाया था। विद्वान ई० साल्वेस्टे अपनी ‘अकल्ट साईं सेज’ में लिखते हैं कि ‘वह अग्नी जो लहरों की छाती में भर भर किया करती है, उस पानी की अग्नी से भारतीय प्राचीन काल ही में, बाड़व नाम से परिचित थे।’

विजली के केवल नामही से हिन्दू भिन्न न थे प्रत्युत आये दिन के कामों में उसका उपयोग भी करते थे। वेद में एक स्थान पर

कहा गया है 'हे अग्ने ! तुम्हें तो त्वष्टा शिल्पी अधिक बल वाला बनाता है तू शीघ्रगामी होकर उत्तम घोड़े का काम देती है ।'^{१०} अमरीकन महिला ह्वीलर विलाक्स बतलाती हैं कि वेदों के महर्षि विद्युत (Electricity) रेडियो (Radium) ऐलक्ट्रॉन (Electron) और हवाई जहाजों आदि से परिचित थे ।^{११} निरुक्तिकार यास्तक ने ताल या लैम द्वारा सूर्य राशियों को एकत्रित कर के अग्नि उत्पन्न करने की विधि का निर्देश किया है ।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ऐतिहासिक अन्वेषण द्वारा बतलाया था कि इस देश के अतीत काल में एक ऐसे पंखे का आविष्कार हुआ था जो एक बार चक्की देने से एक मास तक बराबर चला करता था । एक अमरीक आलोचक स्वीकार करते हैं कि प्राचीन भारत में वाष्पयंत्र (Steam) हुआ करते थे जो अग्नि-रथ के नाम से प्रसिद्ध थे ।^४

तार और वेतार—

तार प्राचीनकाल में भली भाँति प्रचलित थे । महाराज शुक्राचार्य ने राजा को इस बात का आदेश दिया है कि वह दस हजार कोस तक का समाचार एक ही दिन में जान ले !

'अयुत कांशजां वार्तां हरेक देन दिनेन वै ।'^५

तार और वेतार की बात जाने दोजिए यहाँ तो लोग मन शक्ति द्वारा ही सन्देश भेजा करते थे । अभी १८५७ ई० के आस

२. त्वामग्ने त्वष्टा विधे सुवीर्यम् । त्वमाशु हेमा रीरषे स्वश्वर्यम् ॥

ऋ० २।१।१।५

g. Sublimity of the Vedas P. 83.

4. Hindu Superiority,

5. शुक्र नीति अ० १ श्लोक ३६१

यह बात है कि योरीपियन विद्वानों ने भारतीयों की इस अलौकिक शक्ति का अनुभव किया था। वेनार यंत्र का आविष्कारक मार्कोनी भी इस बात को सहर्ष स्वीकार करता है कि भारत में मानसिक सन्देश भेजने वाली कोई गुप्त विद्या उस समय लोगों को ज्ञात थी।^६

मिस्टर ले० के० हार्डी एम० पी० कहते हैं कि भारत से कला कौशल और ज्ञान विज्ञान की ज्योति योरोप में पहुंची थी।^७ आज का हमारा स्वप्न अतीत भारत में सत्य था। संसार के आधुनिक वैज्ञानिक चमत्कार इसी भव्य भूमि के कण थे। मर जान सीले के शब्दों में—हमारी साईंस का कोई विरला ही सिद्धान्त ऐसा होगा जो उन के लिए नवीन हो।^८ फ्रांस के सुविख्यात योगी भी स्वीकार करते हैं कि ‘+++ वर्तमान विज्ञान केवल उन्हीं सिद्धान्तों को पुनः प्रस्तुत करता है जो वेद में वर्णित हैं।’



६. See wireless Telegraphy, introduction,

७. See India impressions and Suggestions, Page

८. Expansion of England.

कला

साहित्य मर्द्दीन कला विहीनः, नाञ्जापयशु पुच्छ विषागु हीनः ।

— सर्गर्हीः

किसी भी जाति की सम्भवता का महत्व उसकी कला सम्बन्धी वैज्ञानिक कृत्यों से ही जाना जाता है । आर्य संस्कृति में कला का उतना ही उंचा स्थान रहा है जितना कि अध्यात्म विद्या का । जिस प्रकार ऋषियों ने अध्यात्म ज्ञान के आलोक में उस अतन्त्र सत्ता के सान्निध्य को प्राप्त किया, ठीक उसी भांति कलाकारों ने हृदय की प्रस्फुटित भावनाओं की ज्योति में उसी का चित्रण एवं दर्शन किया । भारतीय कला का विवेचन करते हुए मिस्टर काडरल जी० ई० वंट लिखते हैं 'कला' प्रकाश है, विचारों, भावनाओं अथवा आत्मानुभव का । राष्ट्रीयता, संस्कृति आदि संसारिक बातों से प्रभावित होकर आत्मानुभव का बाह्य भौतिक स्वरूप ही कला है ।¹ वास्तव में योगियों का सत्य, भक्तों का शिव ही कलावन्तों का सुन्दर है । इसी के पाद पद्मों में वह आत्मसमर्पण करता है ।

ई० बी० हेवेल के विचार से 'भारतीय कला ही विशुद्ध कला है, यह अतिशयोक्त और अश्लालता से, जो अशिद्धिता के नेत्र रञ्जित करती है,—रहित है । योरूप की श्रेष्ठ कला से यह अधिक गूढ़ एवं गम्भीर है, इसी लिए इसको समझने के लिए कला के

1. Modern review for January 1919.

2. Indian Sculpture and painting Page 60.

3. Modern review for June 1924.

उच्च ज्ञान की आवश्यकता है। प्रोफेसर क्लेण्ड बटले भारतीय कला का विवेचन करते हुए लिखते हैं कि इस ने नगरों की सौन्दर्य वृद्धि में काफी भाग लिया है।^३ डंकन प्रीनलेस एम० ए० (Oxen) दक्षिण के सम्बन्ध में कहते हैं कि यहाँ कला प्रेमियों की एक बहुत बड़ी संस्था थी, क्योंकि इस प्राचीन भूमि में टहलते समय भी इसकी प्राचीनता का हमें बहुत कुछ ज्ञान हो जाता है।^४ भारतीय कला एक प्रकार के अध्यात्मिक अनुभव का नाम है। इनका कुछ विवेचन भारतीय पुरातत्व विभाग के संचालक जान मार्शल के शब्दों में सुनिए—‘यह कला उन लोगों के अध्यात्मिक विश्वास और प्रकृति के गहरे ज्ञान और बोलते हुये प्रमाण के समान है। कृत्रिमता और आदर्शवाद से परे इसका उद्देश्य था, धर्म को उज्ज्वल करना सो भी भारत के अध्यात्मिक काल की कला के समान अध्यात्मिक भावनाओं को शारीरिक स्वरूप के द्वारा अंकित किये बिना केवल सीधी सादी पर प्रभावोत्पादक ‘भाषा’ में, जिस पर उस समय के कारीगरों की छेनी का अधिकार था, बौद्ध धर्म की ‘अष्टायायिकाएँ’ कह कर निर्मित किया। यह उन लोगों के प्रेम और आत्म विश्वास का ही फल है कि नक्काली के ये काम बड़ी सच्चाई के साथ उनकी आत्मा का प्रतिबिम्ब प्रदर्शित कर रहे हैं और हमारी भावनाओं को भली भाँति जागृत करने में अब भी समर्थ हैं।’ भारतीय कला की उत्कृष्टता का वर्णन करते हुये कलाविद् हेवल महोदय कहते हैं कि भारत ने यदि बाहर वालों से सीखा है तो उस का सौ गुना बाहर वालों को सिखाया है। $\times 88 \div =$ इस सम्बन्ध में भाग्यमानवता के सम्मान का अधिकारी है।^४

लार्ड रोनाल्डो भी हिन्दू कला के प्रति अपनी अद्भुत जली

समर्पित करते हुए कहते हैं—‘वह एक चीज है, सांसारिक नहीं पृथ्वी पर होते हुए भी उसका सम्बन्ध आत्मा से है।’^५ आर्य जाति अनादि काल से ही उस ‘केवल’ की खोज में लगी रही है, जिस की अलौकिक प्रभा से प्रकृति का कण-कण अभूतपूर्व ज्योति धारण किया करता है। अस्तु इस प्राचीनतम जाति की समस्त विचार्य और कलाओं की भी दौड़ उसी ओर रही है। यही कारण है कि भारत की कला का आनन्द लूटने के लिए उसे कलाकार की उंगली से छूना और कलावन्त की निगाह से देखना चाहिए। विद्वान मिस्टर बंट नत मस्तक हो कर स्वीकार करते हैं—‘भारतीय कला के सुविस्तृत सिद्धान्त का निर्माण हम जैसा के लिए नहीं। मैं उसके आश्चर्यों (अजायबात) के बीच में एक रास्ते के पक्षी के समान हूँ। किन्तु कोई कभी जरूर इसे करेगा, और स्वयं भारतीय लालों द्वारा होना चाहिए। मेरा काम तो केवल एक अनुभवी तरीके से बटन दबा देना है, (जैसे बच्चा बिजली के बटन को दबाता है) केवल इस आशा पर कि ऐसा करने से आप को मालूम होगा कि भारत के स्पर्शिकरण से कितनी विशाल प्राप्ति हा सकती है।’^६

वस्तु कला—

कला का उद्गम स्रोत, विश्व के कलाकार की क्रीड़ा भूमि यही स्वर्ग भूमि भारत है। विशाल मन्दिरों से ले कर भूगर्भ से निकलने वाले सहस्राब्दियों के पुराने प्रदीपों तक, इस भूमि को कला-कौशल पीठ प्रमाणित कर रहे हैं। मि० हैवल बतलाते हैं—‘भारतीय शिल्प कला का स्थान एशिया में सर्वोच्च है।’ श्रीमती मेनिंग का कथन है कि यह इतनी विस्मय विमुग्धकारी है कि

5. Indian a birds eye view Page 16.

6. Modern review for January 1919.

गोरोपियन दर्शक प्रथम बार अपने आश्चर्य एवं प्रशंसात्मक भावों को अभिव्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं पाता ।^७ चीनी पर्यटक राजप्रसादके मानव कृत्य होने में सन्देह करता है, मंगस्थ-नोज चन्द्रगुप्त के महल को देख कर दंग रह जाता है, यात्री कर्मातुहीन विजय नगर को देख कर दान्तों तले अंगुली दबा कर कहता है कि न आंखों ने ऐसा देखा है न कानों ने सुना । विस्का-उंटेस काकलैण्ड महाराष्ट्र के छोटे महल में ही पहुंच कर चौकशी हो उठता है, आप ही के शब्दों में 'मैंने विचार करना शुद्ध किया कि मैं जादू के महल में हूँ ।'^८ हेनरी आक्सिएडन रामगढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में कहता है कि इसे कला और उस से अधिक प्रकृति ने सुदृढ़ बना रखा था ।^९ संसार के यात्रियों ने दुनिया देख कर, उसके अज्ञायवात को इसी भूमि में देखा है । सर फ्रेडरिक टेवज की भूपकती निगाह, भारत से क्या कुछ हृदय पर अङ्कित कर ले गई, सुनिष्ट 'हरे भरे' और बादामी मैदानों के बीच में कीच है, उन की छायादार छोटी सड़कें, सफेद दीवारें और चमकती बुर्जियां बड़ी सुन्दर हैं ।^{१०} १८४२ में भारत आया हुआ अंग्रेज चार्ल्सट्रे यहां के निवासियों के घरों की कुशादगी पर ही लट्टू हो गया ।^{११}

सचमुच भारतीय प्राचीन प्रसादों और महलों को देखकर आंखों की तद्विषयक पिपासा बहुत कुछ शान्त हो जाती है । प्राचीन भारतीय इमारतों के सम्बन्ध में विद्वान थार्टन का भी राय

7. Ancient and mediaeval India Vol, 1 Page 391,

८ Chow Chow P. 40.

9 Scenes and characters from Indian history P, 215.

10 The other Side of the Lantern P. 37.

11, Scenes and thoughts in foreign lands P. 27.

है—‘हजारों वर्षों के उथल पुथल का भी इनकी दृढ़ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।’^{१२}

मन्दिर और मूर्तियां—

एक पश्चात्त्य विद्वान के शब्दों में ‘भारत मन्दिरों की भूमि कहलाती है।’^{१३} भारतीय शिल्पियों ने उन अभूतपूर्व अलौकिक विचारों को मन्दिरों और भावमयी मूर्तियों द्वारा साकार बनाकर सर्व साधारण के सामने रख दिया है, जिसको समझने के लिए एकान्त उदारता की आवश्यकता है।

जगन्नाथ पुरी—

लार्ड रोनाल्डशे का कथन है कि ‘पुरी में जगन्नाथ का विशाल मन्दिर है। ६५० फीट के अच्छे घेरे में मन्दिरों का एक समूह स्थित है। इसका एक बड़ा स्तूप (Tower) १६० फीट उंचा है इसकी अलौकिक मूर्ति के सम्बन्ध में वहां पर कुछ किंवदन्तियां प्रचलित हैं जिस के सम्बन्ध में योग्य जुबोइस लिखते हैं ‘सुविख्यात कलाकार ने पदार्पण कर एक ही रात्रि में कृष्ण की प्रतिमा तैयार की थी।’^{१४} विशप हीवर कर्माक और पुरी की मूर्तियों पर अपनी सम्भति इन शब्दों में प्रकट करते हैं ‘भारतीयों ने टिटान (Titan) की भांति निर्माण कर जोहरियों की भान्ति समाप्त किया।’ कर्माक के मन्दिरकी प्रतिष्ठा नरसिंहदेव के राजत्व काल में हुई थी। प्रसिद्ध भारतीय इतिहासज्ञ अब्बुल-फजल इस के निर्माण व्यय का व्योरा बतलाते हुए लिखते हैं। उड़ीसा की ६ वर्ष की मालगुजारी इस पर व्यय की गई थी।

12, British history of India ‘Thorton’s Chapter’

13. The great temples.

14, India, a birds eye view. Page 259,

उड़ीसा की वार्षिक आय भी उन्हीं के शब्दों में २२८५८१८ रुपया है फर्गुसन माधव की दृष्टि में यह मन्दिर संसार में सब से अधिक सुन्दर एवं मनोरम है ।^{१५}

मथुरा—

मथुरा के प्राचीन मन्दिरों के सम्बन्ध में सहस्रद गजपती अपने स्वदेशवासियों को सूचित करता है 'यहां असंख्य मन्दिरों के अतिरिक्त १००० प्रासाद मुसलमानों के ईमान की भाँति हड़ है। उन में कितने ही संगमरमर के बने हैं, जिन के बनाने में करोड़ों दीनार खर्च हुए होंगे। ऐसी इमारतें तो दो शताब्दी में भी बन कर तैयार न हो सकेंगी।' ^{१६} मुगल कालीन यात्री एफ० मांसरेट कहता है कि यहां की लाठे (Columns) और प्राचीन मूर्तियाँ कला, और बुद्धि कुशलता की परिचायक हैं।^{१७}

ईसा से १५०० वर्ष पूर्व पश्चिमी योरुप में सभ्यता की प्रथम किरण चमकी थी, उस समय, कला विज्ञान, धर्म और ज्ञान प्राचीन हिन्दू राज्य में लहरा रहा था, जिस की राजधानी इटली थी ^{१८} यह हैं विद्वान हार्डी एम० पी० के विचार। अब दिग्गज के बृहद्मान-मन्दिर के ध्वंसावशेषों को देख कर वॉन वॉनरलिसेट (Vonarliset) के उद्गार सुनिए—'अब तक यह जीर्ण, कीर्ति, भग्न, सौंद, अतीत के अनुपम निर्माण कौशल की गवाही दे रहा है। यह विशाल सूर्य घड़ी और तुरीय यंत्र

15 Ancient architecture of Hindustan P. 22,

16, Brig fatishata Vol

17, Commentry of father Monserrate P. 93,

18, Indian impressions and Sugestions P. 56.

प्रकाण्ड वृत्तखण्ड के ऊपर अवस्थित लाल रंग के पत्थरों से बना है ।'

बद्रीनाथ—

विष्णु का यह मन्दिर पर्वत माला के स्कन्ध पर १०४०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है । कहा जाता है इसका निर्माण शङ्कर स्वामी द्वारा हुआ था ।

वनारस—

‘वनारस स्वर्ग द्वार है ।’ डब्ल्यू० एस० केने कहते हैं । दुर्गाकुण्ड का सुन्दर नक्काशी किया हुआ पत्थर का देवालय महाराष्ट्र की रानी भवानी द्वारा बनाया गया था और विश्वनाथ का मन्दिर इन्दौर की रानी अहिल्याबाई ने निर्माण कराया था, जिसे स्वर्ण मन्दिर कहते हैं । १६

आबू के मन्दिर—

विद्वान फ़र्गुसन की सम्मति है कि आबू के बने संगमरमर के मन्दिरों में जैसी बारीकी के साथ मनोहर आकृतियां बनाई गई गई हैं, १० उनकी नकल कागज पर उतारने में भी परिश्रम और समय व्यय से सफलता नहीं मिल सकती । ११

बड़ौली—

यहां के मन्दिर की तक्षणकला की प्रशंसा करते हुए टाड महोदय लिखते हैं कि ‘इसकी विचित्र और भव्य रचना का

19, The Great temples P. 24,

20, A trip round the world P, 12,

21 The Great temples P, 15.

वर्णन वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है। यहां मानो कला का कोष ही रिक्त कर दिया गया है। इसके स्तम्भ छत और जिवर का एक एक पत्थर मन्दिर के रूप का परिचय करता है। प्रत्येक स्तम्भ पर खुदाई का काम इतनी सुन्दरता और बारीकी से किया गया है कि उम का वर्णन नहीं किया जा सकता।"❧

हेनरिड—

यहां के मन्दिर के सम्बन्ध में वीमेन्टस्मिथ का कथन है—
"यह मन्दिर धर्मशील मानव जाति के श्रम का अत्यन्त आश्चर्य जनक नमूना है इसके कला-कौशल का देख कर आगे तृप्त नहीं होती।" मिस्टर ए० ए० मंकडूनल की भी सम्मति सुनिष्ट—
"संसार भर में कोई ऐसा दूसरा मन्दिर न होगा जिस में खुदाई का काम इतना सुन्दर किया गया हो। दो हजार हार्थों की आकृतियों में कोई भी एक दूसरे से नहीं मिलता।"

तंजौर—

इस सुन्दर मन्दिर में दो बगमदे हैं बाहरी २५० वर्ग फीट और अन्दरूनी ५०० वर्ग फीट है। इस में २५० देवालय हैं। इसका निर्माण चौदहवीं शताब्दी है। मध्य-निर्मित स्तम्भ भारत में अपने ढंग का अनोखा है। दूसरी विशेषता यह है कि इस का कुछ भाग विष्णु और शिव समर्पित है। यह फूल की भान्ति चमचमाता है।"

काजा वरम—

लेफ्टीनेन्ट कर्नल एच० ए० हीवल एफ० आर० जी० एच

* Tod's Rajasthan Vol III.

History of fine art in India P 42.

India's Past P. 83,

बतलाते हैं कि पवित्रता के दृष्टिकोण से काशी के बाद इसका दूसरा स्थान है। यहां मन्दिरों का समूह है, कितने ही ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्व के हैं। कांजीपुरम के कैलाशानन्द मंदिर और सुब्राह्मण्यम, चोला सम्राट् निर्मित विद्वान् दंत के शब्दों में दक्षिण भारत के सुन्दरतम मन्दिर हैं। इसकी खुदाई बड़ी बारीकी और सुन्दरता से की गई है।

देवगढ़

जाखमौन (G. I. P. Ry) स्टेशन के निकट देवगढ़ के मन्दिर की मूर्तियां कला का जीता जागता नमूना है। मिस्टर स्मिथ के मतानुसार ये मूर्तियाँ उस समय की निर्मित हैं जब हिन्दू शिल्प विद्या उन्नति के उच्चतम शिखर पर थी। मन्दिर के विषय में आपका कथन है कि यह गुप्त काल का सर्वोत्तम मन्दिर है। दीवारों पर अङ्कित कला भारतीय शिल्प कला के उत्तम नमूनों में से है।

पाटन--

नेपाल का महा महा बुद्ध मन्दिर संसार की एक आश्चर्यजनक सृष्टि है। यह एक शताब्दी से अधिक समय में बन कर तैयार हुआ था। इसमें ६००० बुद्ध मूर्तियां हैं। यात्री ओल्ड फील्ड कहता है कि “नेपाल की उपत्यका का यह अत्यन्त शानदार मन्दिर है।”

सुन्दर नारायण मन्दिर--

नासिक का यह मन्दिर अत्यन्त सुन्दर है। यह चौकोर है।

इसकी लम्बाई २६० और चौड़ाई १०० फीट है। इस मन्दिर के निर्माण में ७ लाख रुपया व्यय हुआ था।

कला मर्मज्ञ काइरिल जी० ई० वंट बुद्ध गया और अनूपपुरा लङ्का के मन्दिरोंका विवेचन करते हुए लिखते हैं “इनकी बक्काशी बड़े आश्चर्यजनक ढङ्ग से की गई है इनकी महत्ता का रहस्य मूक पत्थरों द्वारा अद्भुत षाटित रह जाता है। + + + सोमनाथ पुरका केशव मन्दिर, मदौवरा का मीनाक्षी मन्दिर और विरुमान् देवालय कला के उत्तम नमूने हैं।” २२

अन्त में आप कहते हैं। “मन्दिर चाहें बौद्धों जैनियों या हिन्दुओं, किसी के भी हों, सभी उसी भावना से अलंकृत हैं। वे भारतीय महानतम कला के स्मारक हैं। इस थोड़े से स्थान में प्राचीन भारत के प्रतिष्ठित कार्यों का विवरण देना कठिन है।” २३

भारतीय कला और सभ्यता का गौरव आज ईंट पत्थरों में वन्द है। कला की यह धारा इसी के जन्मसे कितनी सहस्राब्दियां पूर्व भारत में अठखेलियां कर रही थी, मोहंजो दाहो में जाकर आंखों से देखिये, मथरा अजायब घर की ‘परखम और कलकत्ते में ‘यक्षिणी’ की मूर्ति का निरीक्षण कीजिये, बहुत कुछ आभास मिल जायगा। कॉटनमैन और इतिहासज्ञ स्मिथ कहते हैं कि हिन्दुओं की प्राचीन मूर्तिकला हमारी प्रशंसात्मक भावनाओं को जागृत कर देती है। दक्षिण किनारा के जैन मन्दिरों का वर्णन करते हुए बेलगोला (मैसूर) की मूर्तियों के विषय में कहते हैं—

उद्यन आश्वनि १३४० (वंग)

The great temples P. 27

22. Modern review for January, 1919

23. Vide introduction to Indian art. Pages 4-8

“यहां दुनियां की सर्व महान मूर्ति है।”^{२०}

भारत की शासन पद्धति कितनी उज्ज्वल थी, इसका कुछ आभास वही जान सकते हैं जिन्होंने इसके प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया है।

दुर्गा की प्रतिमा का वर्णन करते हुए मिस्टर एच० ई० हैबल बतलाते हैं कि हिन्दुओं की कला में भावों का उत्तम निदर्शन है। इसे किसी भी कसौटी पर कस कर कला का आश्चर्य जनक कार्य कहा जा सकता है।” हिन्दू मूर्तिकला का यह चमत्कार पूर्ण निदर्शन चिगकाल तक भारत को सम्भ्रता की दौड़ में उन्नत रखेगा। चीनी विद्वान लियांगचिचाव भी स्वीकार करते हैं कि “मूर्ति भण्डार हमारा अमूल्य कोष है भारत की कृपा के बिना यह हमें कदापि प्राप्त नहीं हो सकता था।”^{२१}

गुफाएँ—

विद्वान् वंट कं शब्दों में ये पूर्ण इतिहासिक काल की स्मृतियां हैं। इनके अन्दर्शनी अन्वकार की समता हम रात के समय जंगलों के अस्पष्ट रहस्य से कर सकते हैं। + + + किसी लकड़ी के टुकड़े पर नक्काशी कीजिये देखिये कैसा कठिन कार्य है। फिर भी ऐलोरा में महान् खुदाई, उत्कृष्ट सौन्दर्य और आश्चर्य-जनक कौशल पाते हैं। एक ही पत्थर (Block) पर इतना बड़ा जबरदस्त नक्काशी का काम,—सांसार में अद्वितीय है।”^{२२}

प्रोफेसर हीनर सूचित करते हैं कि जो कुछ महान, शानदार और शिल्प कला में अलंकृत है वह यहां पृथिवी के ऊपर और अन्दर पाया जाता है।”^{२३} मिस्टर ग्रिफथका कथन है कि दीर्घकाल तक

24- Calcutta review for, 1919

25, Indian Sculpture and Painting.

26, Modern review for Jan. 1919

27, Historical Researches Vol II P. P. 60-70

मनक निर्गतिग के पश्चान् भी मुके कोई पत्थर ऐसा नहीं मिला जिसे कारीगरों ने आवश्यकता से कहीं भी अधिक काटा हो ।^{२७}

“भारतीय शिल्प कला के प्राचीनतम अवशेष” मिस्टर मारिया ग्राह्म के शब्दों में ‘सम्भवतः एलौरा, एलीफेन्टा और मालमठ की आश्चर्य जनक गुफायें हैं, जिनमें मूर्ति तत्काल कला मौजूद हैं ।’^{२८} विश्वयात्री कने मूचित करते हैं कि एलौरा के गुफा मन्दिर ठोस चट्टान से तय्यार किये गये हैं । छत की रोकने वाले विशाल स्तम्भ बड़ी सुन्दरता से लगाये गये हैं ।^{२९}

स्तम्भ-स्तूप—

विलम्बन महोदय भारतीय स्तम्भ कला की वाद देते हुए लिखते हैं—‘ये मिस्र रोम और यूनानी स्तूपों से अधिक सुन्दर हैं ।’ पुर्गे के सामने वाले अरुण स्तम्भ के चरम सौन्दर्य में प्रभावित हो मिस्टर ब्राडन को कहना ही पड़ा—‘यह दुनिया का एक सबसे बड़ा सुन्दर स्तम्भ है ।’^{३०}

‘लिङ्गराज शिखर (भुवनेश्वर) भारतीय कारीगरों का एक महानतम कौशल है । + + + निश्चय रूप से यह अभूत पूर्व सुन्दर है ।’ यह हैं लार्ड रोनाल्डशे के विचार अब सूक्ष्मदर्शक फोटोग्राफ की भी सम्मति सुन लीजिए—‘उदाहरणार्थ कल्पना कीजिए कि ऐसी इमारत के बनाने में एक लाख रुपया खर्च होगा तो इसकी नक्कासी में तीन लाख लगेगा ।’ हँवल के कथन को भी ऐसा ही समझिए ।^{३१}

23. The paintings in the Buddhist Cave temples of Agharta

29. Letters on India P. 58, *

30. A trip round the world P. 389

13 उदयन, कार्तिक, १३४० (बङ्ग)

32. See India. a bird's eye view P. 256

जैन स्तम्भ (कनारा) के सम्बन्ध में मिस्टर वाल्हाइम कहते हैं कि समस्त राजधानी एक आलोक, सौन्दर्य, और उच्च श्रेणी के पाषाण कौशल का आश्चर्यजनक नमूना है। इन सुन्दर स्तम्भों की राजसी प्रतिष्ठा से कोई भी बाजी नहीं ले जा सकता।^{३३}

डब्ल्यू० एस० केन, एम० पी० की विश्व यात्रा की दास्तान भी सुनिए। देहली के लौह स्तम्भ के सम्बन्ध में आप लिखते हैं—‘इसकी लम्बाई २४ इंच, घेरा १६ इंच और वजन १७ टन है। इस पर एक लेख भी खुदा है जो राजा देव का विजय स्मारक है। यह बड़े मार्के की बात है कि इतने समय पूर्व, इतना बड़ा और वजनी लोहे का स्तम्भ बनाने में समर्थ थे जिसे योरोप अभी बहुत दिनों बाद तक नहीं बना सका। यह १७०० वर्ष का पुराना है।^{३४} एक बात जिसे योग्य यात्री भूल गया है दूरदर्शी फार्गुसन के मुंह से सुनिए ‘हिन्दू लोग धातु के काम में इतने निपुण थे ! यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि इतने दिन तक हवा पानी में रहने के बाद भी इस में रोचा (जंग) तक नहीं लगा।’

सारनाथ के स्तम्भ का उल्लेख करते हुए बी० ए०. स्मिथ कहते हैं कि किसी भी देश में प्राचीन पशु मूर्ति कला का उदाहरण इस से श्रेष्ठ अथवा इस सुन्दर कला के समान पाना कठिन है।^{३५}

पार्लियामेंट के भूत पूर्व सदस्य कने बतलाते हैं कि बनारस से ४ मील की दूरी पर उसकी सीमाओं के अन्दर सारनाथ का

33. Indian antiquity Vol V P. 39.

34. A trip round the world, P 354

35. History of fine art in India P. 60

स्तम्भ है। इसका निर्माण बुद्ध के आठ शताब्दी बाद हुआ था। इस स्तूप का आधार पत्थरों पर है। इसका घेरा ६३ फीट है। और ४३ फीट की ऊंचाई तक पत्थर लोहे से जुड़े हैं। पत्थर के काम के ऊपर इमारत ईंटों की है। कुल ऊंचाई १२८ फीट है। इस स्तूप के चारों तरफ कला का सर्वोत्कृष्ट निदर्शन है। इसका अवशेष ही देख कर पता चलता है कि समस्त स्तूप कितना सुन्दर रहा होगा यह एक अत्यन्त सुन्दर और चत्तरंजक स्तूप है।^{३६}

सांची का स्तूप दुनिया के अन्दर भारतीय कला का अद्वितीय नमूना है। मिस्टर जान मार्शल के शब्दों में 'जिस कला को सांची के कलाकारों ने जन्म दिया है वह निस्सन्देह उस समय की राष्ट्रीय कला का प्रमाण स्वरूप है।' एक दो नहीं जनरल टेलर कनिंघम और मेसी सरीखे विद्वान भी इसे देखकर किर्तव्य विमूढ़ बन गये। किसी ने उसे महान कहा तो किसी ने बतलाया आकर्षक।

केने अशोक की दिल्ली वाली लाठ की प्रशंसा करता हुआ लिखता है कि यह लाठ कुछ हल्के गुलाबी रंग का बना हुआ है इस की लम्बाई ४० फीट है और २२०० वर्ष पूर्व बना है।^{३७} भारतीयों की इस कला ने योरोप के लिए एक आदर्श का निर्माण कर दिया है। प्रोफेसर वीवर इसे स्वीकार करते हुए लिखते हैं— 'वास्तव में यह असंगत नहीं कि हमारी पश्चिमी मीनारें बुद्धों के स्तम्भों की नकल हैं।^{३८}

‘एलीफैंटा और उसके मन्दिर भारती नक्काशी-कटाई के

36 A trip round the world P.P, 313-314.

37. A trip round the world Page 35,

* Ancient and mediaeval India Vol Page 240.

शानदार नमूने हैं ।' लार्ड रोनाल्डशे का कथन है कि यह गुफा मन्दिर, इनके शानदार स्तम्भ और टिटानिक कौशल (Titanic) जो एक दर्जन शताब्दियों से भी पुराना है ज़रा भी अपना प्रभाव उत्पन्न करने में असफल नहीं । मिस्टर निवेदिता एलीफेंटा का स्मरण कर कहती है कि यह हिन्दुओं के संयोजन भाव को आज तक चिरस्थायी बनाये हुए है ।'

गुफा एवं मन्दिरों का निर्माण प्राचीन हिन्दुओं के कुशल कर्मों का अपना काम है । प्राचीन अथवा अर्वाचीन संसार आज तक इस कला का एक भी नमूना पेश करने में समर्थ नहीं हो सका । अन्त में हम विद्वान वंट के शब्दों में यही कहेंगे । 'मुझे आश्चर्य है कि हमारे आधुनिक पाठकों में कितनों ने इस आवश्यक सत्य को अनुभव किया है कि वह भावना जिसे एलौरा और एजन्टा की गुफाओं का निर्माण किया था अब भी भारतीयों में सुप्त है ।' ^{३८}

दुर्ग-निर्माण—

जिस हिन्दू जाति ने अपने बाहुबल द्वारा अनेकों बार पृथ्वी को विजय किया था, जिनके सैन्य सङ्गठन की धाक दुनिया में जमी थी, उनके दुर्ग-निर्माण कौशल का भी कुछ हाल सुन लीजिए । महाराज मनु ने, धनुर्दुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग सेनादुर्ग और गिरिदुर्ग का वर्णन किया है और सब प्रकार के दुर्गों में गिरि दुर्ग को श्रेष्ठ बतलाया है । ^{३९} अन्य ग्रन्थ कारों

†6. India, a bird's eye view P. 16.

†. Foot falls of India history P, 176.

38. Modern review for Jan. 1919.

39 धनुर्दुर्गं महदुर्गं महदुर्गामन्दुर्गवर्च-मेव वा । आ० ७ श्लोक ७०

गिरिदुर्गं चतुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्परम् ॥

ने भी गिरिदुर्ग जलदुर्ग गहरदुर्ग और भूमिदुर्ग का प्लेन कर पहाड़ी किले को ही प्रधानता दी है। इस विवेचन में स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय इंजीनियर इस कला में भी पूर्ण रूपेण कुशल थे। प्रोफेसर क्लाइड बटेले (Cland Bately) प्राचीन नगर निर्माण व्यवस्था की उत्तमता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि उन दिनों की गढ़-निर्माणा कला इतनी सफल थी कि कभी कभी दीवारों के गोली चलाने वाले छेदों और नुकीले फाटकों के द्वारा शत्रुओं को टक्कर मार कर लौटना पड़ा था।

सोलहवीं शताब्दी का यात्री एफ० मांसरेट ग्वालियर के किले का वर्णन करता हुआ लिखता है कि एक पहाड़ी चट्टान की चोटी पर यह बहुत मजबूत किला बना हुआ है।^{४०}

पंद्रहवीं शताब्दी के आदि में भारत आने वाला यात्री कमालुद्दीन अब्दुल रज्जाक हिन्दू सम्राट विजयनगर के किले का वर्णन इस भांति करता है—‘किला एक पहाड़ी चोटी पर पत्थर और सीमेंट का बना हुआ था। उस का फाटक बहुत मजबूत था। सातवें दुर्ग का निर्माण केन्द्र में था। वह द्वार के बाजार से दस गुनी भूमि घेरे हुए थे।’ स्वेल (Swell) कहता है—‘वास्तव में यदि दक्षिण की पहिली दीवार से यह नापा जाय तो आठ मील होगा।’ इस विशाल किले के ध्वंसावशेष अब तक देखे जा सकते हैं।^{४१}

‘रामगढ़ का किला लगभग ३००० फीट की ढलवान ऊंची चट्टान पर बना था। यह जिवरालटर की ही भांति अजय

सर्वेण तु प्रयत्नेन गिरिदुर्गं समाश्रयेत् ।

” ७१

ऐष हि बाहुगुण्येन गिरिदुर्गं विशिष्येत् ॥

40. Commentary of Father Monseprate P. 23.

41. Scenes and Characters from Indian History P. 56.

था । + + + कला की अपेक्षा प्रकृति ने ही इसे अधिक मुहूर्त बनाया था ।'—यह है ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शिवाजी की सेवा में प्रेषित हेनरी आफ सिएडन नामक दूत का चित्रण !^{४२}

भारतीय इञ्जीनियर दुर्ग-निर्माण कला में कितने निपुण थे, अधिक इतिहास को पलटने की आवश्यकता नहीं, भारत के प्रधान नगरों में जाकर देख लीजिए ।

अब थोड़े ही दिन पहले लिखे गये भरतपुर के किले का भी विवेचन कर्नल मैलसेन की जवानी सुन लीजिए—

‘उनकी राजधानी का दुर्ग भारतवर्ष में ऐसा था, जिसकी दीवारों के सामने ब्रिटिश सैन्य दल को हटना पड़ा ।’ भारत-दुर्भाग्य, फूट ने इस दुर्ग को भी अधिक काल तक अजेय न रखा । वेल्स की जवानी इस का भी हाल सुनि—‘भरतपुर दुर्ग पर विजय प्राप्त कर लेने पर भी कोई हिन्दुस्तानी इसका विश्वास नहीं करता कि भूतपूर्व दुर्ग जीता गया है । वे हिन्दुस्तान में भेरे रहने के अन्तिम समय तक यही कहते रहे कि भरतपुर दुर्ग जीता नहीं मोल ले लिया गया है !’^{४३}

यह है हिन्दुओं की कला का आश्चर्यजनक नमूना । भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड इरविन महोदय ने सन् १९२० ई० में व्याख्यान देते हुए कहा था—जोधपुर का लाल किला अभूत पूर्व और चित्रवत् रङ्ग की भान्ति मारवाड़ के मैदान में खड़ा है । इसकी शिल्प कला इसके निर्माण कर्ता की दृढ़भावनाओं

42. Scenes and Characters from Indian history P. 216

*दक्षिणी दुर्गों के विषय में विसकाउंटेस फाकलैण्ड का कथन है पहाड़ों की श्रृंखला के सम्बन्ध में दक्षिण के अन्दर कहावतें प्रचलित हैं कि उनका निर्माण

मानवीय बलिदान-वेदी पर हुआ है । Chow-Chow P. 24.

43, Native State of India,

का प्रतिबिम्ब है। इसका प्रत्येक पत्थर आपके महाराजा के पूर्व पुरुषों के युद्ध वीरता को बतला रहा है, जिस से इस देश के इतिहास के किनारे पृष्ठ भरे हैं।^{४४} मिस्टर एस० ब्राह्म० आश्चर्यचकित होकर कहते हैं कि भारत का पूर्व सैनिक-शिल्प कितना स्वाभाविक रहा होगा।^{४५}

कुर्वा-तालाब—

यह भी भारतीय कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। मानवता को अधिकाधिक आराम पहुंचाने के लिए प्राचीन हिन्दू जो कुछ कर गए हैं, आधुनिक संसार उनका सहस्रांश भी तो नहीं कर सका। हिन्दुओं के पवित्र स्थानों के तालाबों का वर्णन करने हुए अलबेरुनी लिखता है—‘इस कला में उन्होंने कमाल हासिल किया था। हमारे लोग (मुसलमान) जब उसे देखते हैं आश्चर्यचकित रह जाते हैं। वे इसका विवेचन करने में भी असमर्थ हैं।’^{४६} इतिहासज्ञ एल्फिंस्टन बतलाते हैं कि हिन्दुओं का महानतम-कार्य है उन के तालाब, और उनके कुएँ भी बहुत सुन्दर होते हैं।^{४७} चीनी यात्री हुआनसांग की जवानी कन्नौज का भी वर्णन सुनिए—‘चारों तरफ कुँज, फूल, भील और तालाब दर्पण की भांति चमकते मालूम होते थे।’

‘मैंने स्वयं कुँए देखे हैं, वे बढ़िया गोल और धारीदार और स्वच्छ होते हैं।’ यह है लार्ड रोनाल्डशे के हिन्दुओं के कुओं के प्रति विचार। सर एफ० बी० वार्ट की सम्मति है कि इटली कीलों का देश मशहूर है किन्तु वहाँ एक भील भी उदयपुर के

44. Military Reminiscences. Vol. II P. P. 240, 241

45. Letters on India

46. Alberuni's India Vol II P. 144,

47. History of India.

समान सर्वोत्कृष्ट नहीं ।^{४८} इतिहासवेत्ता मारियाग्राह्म भी यहां कहते हैं कि हिन्दुओं के सब में अधिक प्रशंसनीय काम हैं उनके सुन्दर तालाव ।^{४९} रेवेण्डर पर्सिवल भी सूचित करते हैं कि भारतीय शानदार तालाव कृत्रिम कला के सुन्दर नमूने और अपरचितों को प्रभावित करने वाले हैं ।^{५०}

लङ्का के सरोवर का वर्णन करते हुए हेनरी डब्ल्यू केंव एस० ए० एफ० आर० लिखते हैं—संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां न्यूरेलिया के जी० एस० सभी चित्ता-कर्षक सामान एकत्र हों ।^{५१}

भारतीय कलाकारों ने पुनीत भावों की कूची ले कर 'सुन्दर' के श्री चरणों में जो कुछ समर्पित किया है वह केवल लोगों की आंखों के लिए संसार का एक आश्चर्य और हृदय के अनुभव की चीज है । आज तक संसार ने हिन्दू कला की समता न अन्यत्र कहीं पाई है और न भविष्य में पाने की कोई आशा ही है । दुनिया की कलाएं इसी हिन्दू कला का प्रातिदिम्ब हैं । कई दुराग्रही पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि यूनानी कला का प्रभाव भारतीय कला पर पड़ा है किन्तु ऐसे महानुभावों से प्रो० एच० जी० राली विन्सन आई० ई० एस० कहते हैं—'इस कल्पना का कोई कारण नहीं कि भारत यूनानी शिल्प कला से प्रभावित हुआ ।'^{५२} ई० बी० हैबल का विचार है कि भारत ने अपने शिल्पी प्रचारक आदि समस्त दक्षिण एशिया, सीलोन, स्याम और कम्बोदिया को भेजे थे उनके द्वारा विदेशों में भारतीय

48. The other Side of the Lantern.

49. Letters on India P. 63

50. The Land of the Vedas P. 132.

51. Intercourse between India & the western world P. 168.

कला का प्रचार हुआ। चीन और कोरिया द्वारा इसका प्रवेश जापान में हुआ। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि इसका प्रभाव योरोप पर भी पड़ा।^{५२} मिस्टर कालमैन का विश्वास है कि भारती वस्तु कला अवशेष सम्भव है योरोपियन कला को नये भाव देकर उसे उत्तम और सुन्दर बना दें।^{५३}

भारतीय प्राचीन हिन्दू कला के सन्दर्भ में कला के पाश्चात्य पण्डित वंट की भविष्य वाणी भी सुन लीजिए—‘मैं यह विचार करने का साहस करता हूँ कि समय के साथ भारतीय अपनी इस पैतृक सम्पत्ति के महान मूल्य को समझेंगे। निकट भविष्य में कोई महान आत्मा उत्पन्न होगी, और एक पल मात्र में, कला भवन के सहस्रों प्रभा सम्पन्न शिखरों को जादू की छड़ी से छु देगा ! उस समय पाश्चात्य जगत इस कहावत की सत्यता को समझेगा—‘यह है भारत की आवरण हीन आत्मा भारतीय इतिहास—भारतीय प्रेम।’^{५४}

भारत के कण-कण में उसकी अतीत कला का चमत्कार भरा है, उसके खण्डरों, टीलों, स्तूपों और मन्दिरों किसी को भी देखिए महत्वपूर्ण इतिहास का, भारतीय भावनाओं का बोलता चित्र आंखों के आगे आजायगा। पुरातन शिला लेखों, भूगर्भ से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की भित्ति पर जिस दिन भारतीय कला का इतिहास लिखा जायगा, उस दिन संसार समझेगा कि यदि प्राचीन हिन्दू कलाबन्त उन्हें यह पाठ न पढ़ाते तो कदाचित् ही वह कन्दरा निवासी जंगलों से अभिन्न होते। के० हैवल

52. See, Indian Sculpture and Painting,

53, Hindu mythology Preface P, 1X,

54, The modern review for January 1919

साहब की सम्मति है कि सिखाने की बजाय आज भी योगेपियन भारतीय कला से बहुत कुछ सीख सकते हैं।^{५५}

प्राचीन इञ्जीनियर—

जिस भारतीय कला को देख कर विदेशी दर्शक किर्तव्य विमूढ़ बन गये, उसके कलाकारों इञ्जीनियरों के सम्बन्ध में भी कुछ न कुछ जान लेना आवश्यक है। बहुत दूर तक जा कर क्या कीजिएगा। रामायण कालीन कुशल इञ्जीनियर नल और नील को ही देख लीजिए नदी नालों पर पुल बांधते हुए आधुनिक इञ्जीनियरों को वर्षों बीत जाते हैं फिर समुद्र की छाती पर आदम का पुल खड़ा कर देना कोई मखौल तो नहीं।

महाभारत काल के यम की कगमात देखने ही से तो युधिष्ठिर की सभा का स्मरण कर लीजिए। अमरीकन आलोचक तो इस की चातुरीक चित्र पढ़ कर चकित हो जाता है। अब जरा मौर्य कालीन कला की कुशलता से तत्कालीन इञ्जीनियरों की योग्यता का अन्दाजा लगाइये। इतिहास लेखक वी० ए० स्मिथ तो कहते हैं—‘इनती बड़ी ५० टन वजनी लाठों का बनाना, ले जाना और उन को स्थापित करना, यही इस बात का प्रमाण है कि अशोक कालीन पापाण कार और इञ्जीनियर किसी देश-काल के इञ्जीनियरों से कम नहीं थे।’^{५६}

तलित कलाएं

मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियों का आदिम मूल स्रोत है उस की आत्मा। भाव (Feeling), विचार (Thinking) और वृत्ति

55 Havells Indian Sculpture and Painting P, 130

56 History of fine art in India and cylon P. 22.

(willing) उन तीनों व्यवहारों का समावेश आत्मा में होता है। अन्तु इन शक्तियों के ही विकास की मंज्ञा सम्भवना है। भावों के समुत्तम विस्तार से ही ललित कलाओं का विकास उन्नत-सम्भवना की एक सर्वमान्य कसौटी है।

ललित कला के अन्तर्गत वास्तु-कला, मूर्ति-कला काव्य-कला चित्र-कला, और संगीत-कला, इन पाँच कलाओं की गणना की जाती है। इन से मानसिक विकास द्वारा अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है। मनुष्य एक सौन्दर्योपासक प्राणी है। वह अपनी उपयोगी वस्तुओं को यथा शक्ति सुन्दर बनाने की चेष्टा करता है। सौन्दर्य की यह बढ़ती हुई शौकीनी ही कलाओं के विकास का कारण है अन्य कलाओं के विवेचन अन्यत्र पुस्तक में किया गया है यहाँ केवल अन्तिम दो कलाओं पर विचार किया जायगा।

सङ्गीत—

संसार में रोना और गाना सभी जानते हैं किन्तु भारतीयों की सङ्गीत-साधना के इतिहास का अध्याय कहाँ से शुरू होता है इस का पता लगाना कठिन है। ईश्वरोपासना में तल्लीन सामगान पृथ्वी और आकाश को पुलकित करने वाले ऋषियों की सङ्गीत-प्रियता एवं कुशलता की साक्षी सन-सन करती हुई समाज आज भी दे रही है। इस कला का भारत भूमि में कितना सुन्दर विकास हुआ, गन्धर्व वेद को उठा कर देख लेना ही पर्याप्त है। रेबरेण्डर पीटर पर्सिवल कहते हैं कि प्रत्येक अन्य वस्तुओं की भांति सङ्गीत भी भारत के साथ सम्बन्धित है, वह एक स्वर्गीय व्यवस्था का आविर्भाव करती है। पवित्र वेदों में मे एक उपवेद गन्धर्व भी है। भारतीय ललित कलाओं में इसका विशेष स्थान है। इसका संवर्धन यद्यपि कम

हो गया है किन्तु फिर भी आनन्दोत्पादक इस अद्वितीय कला या विज्ञान में काफी कमाल हासिल कर रखा है। आज हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य लोगों में इस के सम्मोहन को गृहण करने की कुशलता नहीं है।^{५७} श्रीमती एनी (Anne) सी० विल्सन बतलाती हैं कि प्रसिद्ध प्राचीन सुकवि हिन्दू प्रख्यात सङ्गीतज्ञ भी रहे हैं। भारत के अस्तित्व में सङ्गीत का सम्मिश्रण है। दिन के प्रत्येक घण्टे और वर्ष की प्रत्येक ऋतु में इसी का स्वरमाधुर्य व्याप्त रहता है।^{५८} सर डब्ल्यू विलियम हार्टर की सम्मति है कि यूनानी सङ्गीत-विद्यार्थियों को आश्चर्यचकित करने वाला प्राचीन भारतीय सङ्गीत अब भी जीवित एवं सुरक्षित है।^{५९} मिस्टर कालमैन सर डब्ल्यू जोंस का हवाला दे कर कहते हैं कि हिन्दू सङ्गीत हमारी अपेक्षा अच्छे सिद्धान्तों पर निर्मित किया गया है। मिस्टर आर्थर व्हिटन (Arthur whitten) अंग्रेजी और भारतीय सरगम की तुलना कर इसे प्रशंसनीय बतलाते हैं—

भारतीय	सा रे गा मा पा धा नी
यूरोपियन	Doh Ray Me Fat Sol La Te &c.

कुछ पाश्चात्य विद्वानों का विचार है कि आधुनिक शब्द गम्यूट (Gamut) भारती सरगामा 'गा, मा' से लिया गया है।

57. The Land of the Vedas P. P 132, 133, 134

58, Short account of the Hindu System of music,

59. Imperial gazetteer P, P. 224.

60. Hindu mythology Preface P. 1X

हिन्दुओं के प्रसिद्ध राग हिन्दोल, श्रीराग, मेघमलार दीपक मैग्वी और मातकोस है। इसके अतिरिक्त ३६ रागनियां भी इन्हीं ने सम्बन्धित हैं प्रोफेसर विल्सन की राय है कि हिन्दू संगीत निर्माण वैज्ञानिक आधार पर हुआ है। सर डब्ल्यू जॉन्स और काल ब्रक के वर्णनों ने पता चलता है कि कि हिन्दू लोगों ने इस के लिपि-तन्त्र समय विभाग आदि का वर्गीकरण बड़ी सूक्ष्मता से किया है जैसा कि योरोप में नहीं मिलता ^{६१} मिस्टर ह्विटन भी इसी का समर्थन करने हुए कहते हैं ये राग एक प्रकार की प्रेम भावना का संचार करते हैं ^{६२} ये स्थान, ऋतु और काल के अनुसार गाये जाते हैं। १८७८ से १८८२ तक भारत में निवास करने वाली श्रीमती रावर्ट मास किंग यद्यपि इस सम्बन्ध में कोरी ही रही फिर भी आप लिखती हैं कि 'मैंने सुना है कि बड़े बड़े योरोपियन संगीतज्ञ इसे अत्यन्त मनोरंजक, सुन्दर और अतीव वैज्ञानिक ख्याल करते हैं।' ^{६३}

वीवर महोदय कुछ प्राचीन संगीतज्ञों के नाम भारत, ईश्वर प्राण और नारद बतलाते हैं। ^{६४} नायक गोपाल, वैद्यनाथ, और तानसेन विश्वदिगम्बर आदि भारत के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ हो गये हैं। नायक गोपाल के सम्बन्ध में मिस्टर ह्विटन बतलाते हैं कि उनका संगीत जादू का प्रभाव उत्पन्न करता था। आप तानसेन के सम्बन्ध में भी कहते हैं कि उन्हें श्रीराग (रात्रिगायन) को अकबर की ओर से दिन के दोपहर में गाने की आज्ञा हुई। फलतः जहां तक रागी का स्वर पहुंचा वहां तक वायुमण्डल में

61. The music of the Ancients P. P. 21, 22,

62. Mill's India Vol II P. 153,

63. Acivilians wife of India Vol I P. P. 278, 279

64. Webers Indian Literature P. 279

रात्री का अंधकार छा गया । ^{६५} भारत के गायकों के करिशमे निराले थे । निर्दय लंगड़े तैमूर की सभा में निवृत्तर करने वाला भी भारत का प्रजाचक्षु गायक दौलत था !

वाद्य यंत्र—

संगीत कला और वाद्य यंत्रों का चोली दामन का साथ है । भारतीय साहित्य में इनके विवेचन अलग २ ग्रन्थों में किये गए हैं । प्राचीन संगीतज्ञों ने वाज्यों को चार भागों में विभाजित किया है । (१) तत (तंत्रीगत) (२) आनद्ध (चर्मवद्ध) (३) शुपिर (रध्रंयुक्त) (४) धन (धातुनिर्मित)

संगीत दामोदर ग्रन्थ में केवल २६ प्रकार की वीणाओं का उल्लेख किया गया है । इसी भान्ति आनद्ध वाद्ययंत्रों के अनेक भेद हैं जिस में से ३० प्रसिद्ध है । ^{६६} प्राचीन हिन्दुओं के वाद्ययंत्रों का भी निर्माण वैज्ञानिक रीति से किया गया था । विरक्त हृदयों में प्रेम के दरया बहा देना, कायरों को वीरत्व से भर देना—हिन्दू वाद्ययंत्रों का सामूली काम था । डाक्टर टिनेट की राय है कि 'यदि हम केवल वाद्ययंत्रों की संख्या को ले कर हिन्दू संगीत विद्या का निरीक्षण करें तो भी हिन्दू कुशल संगीतज्ञ ठहरेंगे !' ^{६७} मनुष्य का तो कहना ही क्या है, भारतीय वाद्यनाद को सुन कर कुरंग भी जाल में अपने आप को फंसा देता है, विषधर व्याल मुग्ध हो कर स्वयं सपेरे की भोली में पहुंच जाता है ।

मिस्टर क्लीमेंट भारतीय संगीत की इन शब्दों में दाद देते

65 Music of the ancients P, 21

66, विशेष जानने के लिए 'संगीत शास्त्र' 'संगीत मकरन्द' देखिए ।

67, Hindu Siperious P, 321 foot note

हैं। 'स्वरैक्य के विद्यार्थी के लिए भारतीय सङ्गीत एक नये संसार का उद्घाटन करता है।' ६८

गायक की स्वर लहरी के साथ मन मयूर का नाचने लग जाना, सब कुछ भूल कर आनन्द की अनन्त तरङ्गों में थिरकने लगना—यह है भारतीय सङ्गीत का प्रभाव ! कागम, विदुषी शिरोमणी मैनिंग के मुंह से सुनिये—'हिन्दू गायक केवल सङ्गीत सम्बन्धी बातों का ही ज्ञान नहीं रखते अपितु उस कला में भी कुशल होते हैं।' ६९

सर हण्टर इस सम्बन्ध में खोज करते करते पाणिन काल तक पहुंचे हैं। आप बतलाते हैं कि सङ्गीत लिपि का नियमन पाणिन काल से पूर्व हुआ था यह सङ्गीत लिपि भारत में ईरान फिर अरब और वहां से गाइडो डी अरेजो द्वारा इसी की ग्याहर्वी शताब्दी में योरोप पहुंची। ७० भारत में जन्म लेकर इन सङ्गीत विद्या ने विश्व के कोने कोने को मुखरित कर दिया। प्रोफेसर बीवर आदि कितने ही पारचात्य पण्डित भी इसे मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं।

अभी थोड़े दिनों की बात है १९०७ ई० में पार्लियामेन्ट के प्रसिद्ध सदस्य के केरहार्डी महोदय भारत पधारे थे। आप ने यहां का प्रसिद्ध 'वन्द मातरम् गायन' सुना और विमुग्ध हो गये। ७१ आप ने अपनी पुस्तक में उसका अनुवाद भी दिया है जो पाठकों के अवलोकनार्थ उसका कुछ अंश यहां उद्धृत किया जाता है।

68. Ibid P, 78

69. *Ancients and medieval India* Vol II P, 141.

70. *Indian Gazetteer* P. 223,

71. *India Impressions and Suggestions* P, 15

वन्दे मातरम् !

सुजनाम् सुफनाम् मलयज-शीतलाम्

शस्य-श्यामलाम् मातरम् ।

शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकन-यामिनीम्

कुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्

मुहासिनीम्-सुमधुर-भाषिणीम्

सुखदाम वरदाम मातरम् ।

त्रिंश-कोटी-कण्ठ कतकत निनाद कराते,

द्वित्रिंश-कोटी-भुजैर्वृत खरकरवाले

के बोले मां ? तुमी अगले,

पहुचत धारिणीम्, नमामि तारणीम् ।

रिपुदल धारिणीम् मातरम् ।

वन्दे मातरम् !

My motherland I sing.

Her Splendid Streams, her glorious trees,

The Zephyr from off Vidyan heights,

Her field of weaving Corn

The rapturous radiance of her Moon lit nights,

The trees in flower that flame a far,

The Smiling days that Sweetly vocal are,

The happy blessed Mother land !

चित्र कला

चक्रावयः कृत्रिम पत्रिपङ्क्तैः कपोत पात्रीषु निकेतनानाम् ।

मार्जरनप्यायन निश्चलाङ्गं, यस्यां जनः कृत्रिममेव मेने ॥ शिशुपाल वध ।

चित्रकला, भारत की अपनी प्राचीन चीज है। प्रेमी जनों के आकुल हृदयों को सान्त्वना प्रदान करने की इसमें बहुत कुछ शक्ति मौजूद है। पुरुषों ही ने नहीं प्रत्युत चित्र लेखा और रत्नावली सरीखी भारतीय ललनाओं ने अपनी कोमल अंगुलिओं में तूलिका ले कर कला के कमाल दिखलाये हैं। साहित्य और शिल्प सर्वत्र ही चित्रकला की प्रभा जगमगा रही है। महामुनी वात्स्यायन ने इसके छै भेद बतलाये हैं—रूपभेद, प्रमाण, भाव लावण्य योजना, सादृश्य और वर्णिका भंग !

प्राचीन भारतीय कला की प्रशंसा करते हुए रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल लिखते हैं—‘चित्रकला की दृष्टि से हिन्दू प्राचीन मिस्रियों (Egyptians) से बढ़कर है।’⁷² एजन्ता की चित्रकला का निरीक्षण कर मिस्टर ग्रिफ़िथ्स (Griffiths) कहते हैं—‘चित्रकार जिन्होंने ये चित्र खींचे हैं, देव थे।’⁷³ इतिहासकार अब्बुल फजल की राय है कि ‘उनकी (हिन्दुओं) चित्रकला हमारी कल्पना से भी ऊंची है। समस्त संसार में शायद ही कोई उनकी समता कर सके।’⁷⁴ चीनी विद्वान लियांग चिचाव मुककण्ठ से स्वीकार करते हैं कि भारतीय प्रभाव ही चीनी कला का आधार-भूत है।

72 The Land of the Vedas P. 137

73, Indian Antiquary Vol III P. 24.

74 Bloch man's Ain Akbary Vol I P. 108

चित्रपट पर चित्र प्रस्तुत कर कुछ काल के लिए आंग्लों को हैरत में डाल देना हिन्दू चित्रकारों की ही कलम का करिश्मा था। मिस्टर मिल ने बिल्कुल ठीक कहा है—‘हिन्दू बड़ी कुशलता के साथ चित्रण करते हैं। ... वे व्यक्ति और समूह दोनों ही के चित्र खींचते हैं और बड़ी बारीकी से। इतिहास गैरट दक्षिण का वर्णन करता हुए लिखते हैं कि यहाँ लोगों में ललित कलाओं का अच्छा विकास हुआ था। मिस्टर विसेन्ट स्मिथ भी मुककंठ से स्वीकार करते हैं कि हिन्दुओं ने इस क्षेत्र में आश्चर्य जनक सफलता प्राप्त की थी।’^{७५}

पाश्चात्य प्रभाव से भारतीय चित्रकला को कितना दक्का पहुँचा है सर जान स्ट्रेकली के शब्दों में सुनिए—‘भारतवर्ष को हम (पाश्चात्य) लोग चित्र कला और वस्तु कला आदि कुछ नहीं सिखा सकते। हमने भारत के सद्यः जीवित सुन्दर कलाओं को पतित कर दिया है। जो कुछ पाश्चात्य प्रभाव भारत की कला पर पड़ा है उसका फल हितकर नहीं हुआ।’^{७६}

‘ग्यालिथर राज्य ने अमफेरा जिले में वाघ गांव के पास की पहाड़ी गुफा में बहुत से रंगीन चित्र हैं, उनका काल अनुमानतः ईसा की छठी और सातवीं शताब्दी माना जाता है। लन्दन के ‘टाइम्स’ पत्र में उनकी समालोचना करते हुए लिखा है कि योरोप के चित्र उत्तमता में इनकी समता नहीं कर सकते। डेली टेली-ग्राफ ने लिखा है कि कला की दृष्टि से ये चित्र इतने उत्कृष्ट हैं कि इनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती।

योरोपियन और भारतीय चित्र कला की तुलना करते हुए मि० ई० वी० हैबल लिखते हैं, योरोपिय चित्रों के पंख कटे होते

75. History of India arts in India and Cylon, P. 6

76 India and its administration

हैं, कारण यहाँ लोग केवल पार्थिव सौन्दर्य का करना ही जानते थे, और भारतीय चित्र कला अन्तर्गृही में उंचे उठे हुए दृश्यों को धर्मधाम पर लाने का भाव और सौन्दर्य को प्रकट करती । ५०

नृत्य कला

जिस नृत्यकला को विद्वान वेताओं ने स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता का एक माधन समझ रखा है, जिसका आज पाश्चात्य देशों में बोल वाला है । उस नृत्यकला का जन्म स्थान यही पुरातन भूमि है । अस्तु इस के सम्बन्ध में भी कुछ लिख देना असंगत न होगा मेघमाला का दर्शन कर जिस भान्ति मयूर उन्मत्त होकर नाचने लग जाता है ठीक उस भान्ति उस सर्वव्यापी सच्चिदानन्द के साथ अपना स्नेहमूत्र जोड़ कर भक्तजन थिरकने लग जाते थे । भारत वर्ष में इस कला के जन्म का यही इतिहास है ।

हाथ पैर पटक कर नृत्य की नकल करना दूसरी बात है किन्तु कला को समझना कठिन है । आज भी एक दो नहीं आनेकों योरोपियन महिलाओं ने इस पर मुग्ध होकर अपने नाम तक भारतीय रखे हैं । उदयशङ्कर जैसे नृत्यकला निपुण ने संसार को हैरान कर रखा है । भारतीय इतिहास की राई रत्ती खोजने वाले कर्नल टड कहते हैं—‘अतिशय देव भक्ति से उन्मत्त नृत्क, रासमण्डल, आज भी कृष्ण के पवित्र त्योहारों में होता है । वह (कृष्ण) मुकट धारण कर नृत्य करने की शैलीसे उपस्थित होते हैं और चारों ओर कुलांगनाओं के मध्य में खड़े हो कर बंशी बजाते हैं, उन के भी हाथों में वाद्ययंत्र होते हैं । ये

कुलांगनायें ही नव रागनियां कहलाती हैं, गायन में प्रत्येक स्वर माधुर्य द्वारा नव रसों की जागृत करती हैं। क्या हम इस के अन्दर अपोलो (Apollo) और पवित्र नाइन (Nine) का आदि स्रोत नहीं पाते !'^५

वस्त्र कला

छन्नेष्वपि स्वप्नरेषु यत्र, स्वच्छानो नारी कुज मगडलेषु ।

आकाश साम्यं दधुरस्वराणि न नामतः केवल मर्थनोपि ॥ माघ

पुण्य-पावन भारतवर्ष कला कौशल के शिखर पर बैठ कर कितना समृद्धिशाली था, सन् १९१६ ई० के औद्योगिक कमीशन की रिपोर्ट खोलिये, यहां प्रथम पृष्ठ पर आपको उसका यत्किंचित आभास मिल जायगा 'जब पश्चिमीय योरोप जहां वर्तमान औद्योगिक संगठन का जन्म हुआ है, जंगली जातियों का निवास स्थान था। उस समय भारतवर्ष अपने शासकों की सम्पत्ति एवं उन्नत कारीगरी के लिए प्रसिद्ध था।'

कताई-बुनाई की कला इल अग्रचेता देश में वैदिक काल से ही प्रचलित थी। वेदों में अनेक स्थानों पर ताना तनना और भरना का जिक्र आया है। एक स्थान पर लिखा है कि यज्ञ के वस्त्र को पूर्ण करने के लिए दिनों को ताना और रात को भरनी होती रहती है। महाराज मनु ने इस सम्बन्ध में नियमों तक का निर्माण कर डाला था। मनुस्मृति में १० पल सूत देकर ११ पल कपड़ा वसूल करने का विधान बतलाया गया है। क्योंकि कपड़े

में एक पल माड़ी लगती है। सुविख्यात भारतीय अर्थशास्त्री चाणक्य ने पांच पल कपास और पांच पल पटसन से एक पल सूत निकलना बतलाया है। शुक्राचार्य ने तो अपने समय के एक कर्मचारी का उल्लेख किया है जिसे वस्त्रार्प कहते थे।

इन उद्धरणों से मिथ्य होता है कि प्राचीन भारतीय इस कला से परिचित ही न थे प्रत्युत इसका वैज्ञानिक विकास भी इस आदिम काल ही में हो चुका था और शासन व्यवस्था में उसके नियम भी बन चुके थे। इसका समर्थन पाश्चात्य इतिहासज्ञ की जवानी सुनिष्ट—‘बुनने वालों का समाज विश्वस्त और सम्पन्न था। वह लेने देने का काम करने के अतिरिक्त जनता का रुपया भी जमा करता था।’^{७८} बुनकरों की यह सम्पन्नावस्था और सामाजिक सम्मान तत्कालीन भारतीय वस्त्र-कला विकास और व्यापार का उत्तम प्रमाण है।

भारतीय कताई, बुनाई कला के सम्बन्ध में इतिहास वेत्ता मिल लिखते हैं कि ‘हिन्दुओं के कोमल ढांचे (Weaving frame) उनकी वाह्य चातुरी और गान के परिचायक हैं। इस सम्बन्ध में उनका स्पर्श अद्वितीय और उंगलियों की लचक आश्चर्यजनक थी।’^{७९} सूत कालने की कलामें भारतीय नारियों ने कमाल हासिल कर रखा था। आज भी आसाम और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में नववधूओं से चर्खा कतवाने के अतिरिक्त साल

79. Cambridge History of India Vol I

80. Mill's India Vol II P. 17

१९४८ में ३३०४२६, शाहाबाद में ११६०० और गोरखपुर में १७१६०० स्त्रियां चरखों पर सूत कात कर ३५ लाख रुपये वार्षिक कमाती थीं। दीनाजपुर की स्त्रियां ६ लाख, और पूरनियां जिले की स्त्रियों की आन १० लाख वार्षिक इसी काम से होती थी, —निबन्ध संग्रह पृ० १०

भर तक दूसरा काम नहीं लिया जाता। मिस्टर ओर्मी कहते हैं 'भारतीय स्त्रियां कच्ची रेशम ढोढे (Pod) से निकालती हैं। एक ढोढी रेशम उत्तमता की दृष्टि से २० डिग्रियों में विभक्त की जाती है। कातने समय की भावना इतनी उत्कृष्ट होती है कि जब धागा मुलायमत्व के साथ उनकी उंगलियों से निकलता जाता है उस समय इस काम में उन्हें आंखों की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। वे उसको ठीक उसी समय तोड़ती हैं, जब उसके पृथक् करण की आवश्यकता होती है।'^{५१}

वस्त्रकला भारत की प्रधान घरेलू कारीगरी थी। प्रत्येक घर में कम से कम अपने उपयोग के लिए वस्त्र तैयार करना एकान्त आवश्यक समझा जाता था। आज भी विवाह संस्कार में परिणत मण्डप के नाचे वर अपनी बधू को वस्त्र देते समय कहता है कि ये सुन्दर वस्त्र हमारे घर की स्त्रियों ने काते और बुने हैं! इन्हें तुम जीवन पर्यन्त धारण करो।^{५२}

किन्तु आज कहाँ है वह भारत और उसकी देवोपम कलाएँ? मणिधर तिरोहित हो गया है, केवल लकीर पीटने से क्या लाभ! डाक्टर वाटसन भारतीय धागे के समान सुन्दर सूत आज भी योरोप में नहीं पाते !

वस्त्र—

आज से ठीक सौ वर्ष पहले संसार के शौकीन चर्खों के कते और करघे के बुने जिन भारतीय वस्त्रों पर निछावर हुआ करते थे, आज का मैशीन-युग भी उनकी समता करने में असमर्थ है। रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल उन्हीं का गुणगाण इस भान्ति करते

81. People and government of Hindustan Page 409 and 413,

82. ओं या अकृतज्ञ वयं या अतन्वत याश्च देवी स्तन्तु नमितां ततन्ध ।

तारत्वा देवीर्जर से संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ मं. ब्र. १।१।६॥

हैं। भारतीय कला कौशल की सुन्दरता और सम्पूर्णता अत्यन्त प्राचीन काल से ही प्रशंसनीय है। + + + मिश्र फारस अरब पुरातन काल से ही अपनी सुख-सामग्रियां इस असाधारण देश से प्राप्त करते रहे हैं। आधुनिक मैशीनरी भी उसकी समता नहीं कर सकती। उसकी बनावट की सुबुभारता नफासत और चमक अजीब थी। मानचेस्टर की कृत्रिम अला ढाके के मलमल के सामने तुच्छ है।^{१५}

ढाके की मल-मल पाश्चात्य शौकीनों के लिए एक विलक्षण कौतुक था, जिसके लिए आज तक आखें तरसती हैं। महात्मा बुद्ध ने धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियों के लिए उसके पहनने का निषेध कर दिया था। क्योंकि उन्होंने एक बार मल-मल पहने हुए स्त्री को देखा था जो बाहर से बिल्कुल नंगी दिखाई देती थी।^{१४} इतिहासज्ञ थार्टन कहते हैं कि कोमलता और सौन्दर्य में भारतीय मल-मल अद्वितीय है।^{१५} सम्राट अकबर को एक बार मल-मल का पूरा थान पंखे की नली में रख कर भेंट किया गया था। औरंगजेब की लड़की ने एक बार ढाके की मल-मल पहनी थी यह इतनी अधिक बारीक थी कि उसके सारे अंग बाहर से दिखाई देते थे। यह देख कर औरंगजेब नाराज हुआ। राजकुमारी ने बतलाया कि उसने सात तहें कर कपड़े को पहना है। पाठकों की कल्पना क्या उस कला के कमाल तक पहुँच सकती है? अच्छा विद्वान मरे से ही पूछ लीजिये—इसके वस्त्र, अत्यन्त सुन्दर थे, जिसको कहीं मानुषीय कला ने उत्पन्न किया था।^{१६} ढाका के रेजीडेंट महोदय के

83 The Laud of the Vedas P 15

84 Journal of the Royal Asiatic Society of Bengal Vol VI 1837

85 British History of India

86. Murray's History of India Page 27

लेखानुसार आध सेर रई से २५० मील लम्बा सूत तैयार किया गया था। डाक्टर वाट्स बतलाते हैं कि ऐसे थानों का मूल्य सन् १७७६ ई० में ५६ पौंड तक पहुँच गया था।^{८७} सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक एलिफिन्स्टन स्वीकार करते हैं कि भारतीय सूती वस्त्रों का सौन्दर्य और सुकुमारता बहुत काल तक प्रशंसित होती रही है। + + + चुन बट की उस नफासत को अब तक कोई देश नहीं पहुँच सका।^{८८} अभी हाल ही बात है कि भारत का परिभ्रमण करने वाले पार्लिमेंट के सदस्य जे० के० हार्डी ने लिखा था—मैंने निरीक्षण कर देखा है कि स्वदेशी माल अच्छे ही किस्म का नहीं होता किन्तु कुछ विशेष कपड़ा जैसे धोती—कीमत में भी विदेशी माल की अपेक्षा सस्ती होती है।^{८९} धोतियों की कच्ची बनाना अंग्रेजों ने भारतीयों ही से सीखा था, किन्तु शिष्य आज तक भी बुड्डे गुरु का मुकाबला न कर सके। डाक्टर वेंस ने ढाँके की मल-मल की प्रशंसा करते हुए कहा था कि इसे देखकर कुछ नहीं मालूम होता कि मनुष्यों की बनाई है।

रेशमी वस्त्र—

सच बात तो यह है कि आधुनिक काल की उभरी हुई जातियाँ जिस समय तन ढाकने के लिए वृक्षों की पत्तियों और छालें खोजा करती थी, भारतवासी रेशमी कस्त्र पहन कर बड़े तमाक से जहाजों पर संसार की गति विधि का निरीक्षण किया करते थे। पुराना इतिहास लेखक प्लीनी सूचित करता है कि रोम सम्राट क्लोडियस के शासन काल में भारतीय रेशम की चमक और सुन्दरताने रोमन महिलाओंको पागल बना दिया था।

87 Textile Manufacture P. 79

88. Elphinstone's History of India p. 163, 164

89. India Impressions and Suggestions

कलतः वहां इतना पतला वस्त्र पहनने की मनाही कर दी गई थी।
औरंगजेब काल में फ्रांसीसी यात्री का हवाला देती हर्ड डाक्टर
जैन्सिसेन्ट लिखती हैं कि अकेले बंगाल के कासिम बाजार नामक
गांव में २२ लाख पौंड रेशम विदेशों को जाता था।^{१०}

आज से केवल २०० वर्ष पहले की बात है। इंगलैण्ड के
एक कवि ने एक कविता लिख कर वहां की शौकीन महिलाओं
को यह सलाह दी थी—‘भारती कर्घों के बने वस्त्र यद्यपि
तुम्हारी सुषमा वृद्धि कर रहे हैं, फिर भी यहां के निवासियों की
निगाहों से तुम्हें अपने को छिपा कर रखना चाहिए कहीं ऐसा न
हो कि अजीबिका के लिए तरसने वाले यहां के कारीगर ईर्ष्या और
क्रोध से तुम्हारे शरीर के इन वस्त्रों को छीन कर नष्ट कर दें।’^{११}
पाठक अनुमान कर सकते हैं कि उस समय भारतीय वस्त्रकला
और व्यापार कितना बढ़ा चढ़ा रहा होगा। क्योंकि समाज के
मर्मस्थान महिला मण्डल पर ऐसे असभ्य आक्रमण की कल्पना
ही असभ्यता की द्योतक है। यह विचार कदाचित् इंगलैण्ड में
उसी समय उठा होगा, जब वहां के दस्तकारों की कल्पना भारत
के वस्त्र निर्माण तक न पहुंच सकी होगी और देश में ‘भरता
क्या न करता का प्रश्न उपस्थित हुआ होगा।

शाल-दुशाले—

सर टामसरो महोदय बतलाते हैं कि एक भारतीय शाल
को हम सात वर्षों से काम में ला रहे हैं। इतने दिनों तक उपयोग
में लाने पर भी उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। सच बात
तो यह है कि मुफ्त मिलने पर भी हम योरोपियन शाल का
व्यवहार करना नहीं चाहते। एफ वर्नियर लिखता है कि कश्मीर

को मालामाल करने वाली विलक्षण दस्तकारी, उसके शाल हैं।^{९२} मिसेज मेनिंग कहती हैं कि कश्मीरी शाल आज भी अद्वितीय है।

कालीन—

जे० बी० टेवरनियर मुगल काल की बातें बतलाना है कि यहां रेशमी और सुनहरे, रेशमी रूपहले और खाली रेशम के भी कालीन तैयार किए जाते हैं किन्तु सब से घटिया कालीन आगरा के निकट वेलापुर (Vella Pour) में तैयार होते हैं।^{९३} श्रीमती मेनिंग भारतीय कालीनों को देख कर कहती हैं—हमें भारत का कला की शिक्षा देने का प्रयत्न न करना चाहिए।^{९४}

जरवफ्त कमखाव—

मिस्टर एल्फिंस्टन स्वीकार करते हैं कि रूपहले कमखाव और जरवफ्त भारत की अपनी कला हैं।^{९५} टेवरनियर बतलाता है कि सोने और चांदी के तारों से वे सुन्दर वस्त्र तैयार करते हैं और वाफ्ता भी बुनते हैं।^{९६} विश्व-यात्री काहन बतलाते हैं कि अहमदाबाद में कपड़ों पर सोने चांदी के तारों से काम होता है।^{९७} भारतीय इतिहासज्ञ रमेशचन्द्रदत्त ने एक पाश्चात्य कवि का हवाला देकर बतलाया है कि पश्चात्य लोग भारतीय रेशमी कारचोबी के वस्त्रों को बाजार में आंखें फाड़ फाड़ कर देखा करते थे।

92. Travels in the Mogul Empire P. 439

93. Taverniers travels in India P 299

94. Ancients and Mediaeval India Vol II P 363

95. Cole broke ' Asiatic Researches Vol V P. 61

96 Taverniers travels in India

97 A trip round the world

भारतीय पुरातन काल से ही विविध प्रकार के वस्त्रों के लिए विख्यात है दुनिया के बाजारों में इसी देश के शाल का बोलबाला था। असीरिया देश के सम्बन्ध में इतिहासिक खोज करने वाले डाक्टर सेंस कहते हैं कि प्राचीन काल में सिन्धु के आस पास रहने वाली जातियों के साथ काबुल का व्यापार रहा होगा। वहां की एक पुरानी वस्त्र सूची में मल-मल के लिए सिन्धु शब्द आया है। यूनानी भाषा में भी मिलने वाला 'सिन्दोन' इसी का षिगड़ा रूप है।

रोम और अरब के साथ भारत का व्यापार ईसा की पहली शताब्दी में बहुत बढ़ा चढ़ा था, इसका पता अरब की कहावतों में भी चलता है। 'भारतीय रेशम वहां सोने के साथ तुलती थी। मिश्र को भी भारतीय वस्त्र प्रचुर परिणाम में जाते थे। २००० वर्ष पूर्व भारतीय मल-मल में लिपटे हुए ममी (मुर्दे) इसका प्रमाण हैं। खलीफा उमर के मिश्र पर विजय प्राप्त कर लेने पर यह व्यापार शिथिल पड़ा था। पुरातन व्यापार का प्रमाणिक लेखक पेरिप्लस ने 'कार्यासास' शब्द द्वारा भारतीय वस्त्रों का वर्गीकरण किया है।

ईसा की प्रथम शताब्दी का इतिहासकार एरियन लिखता है कि सभी देशों से कहीं उजले कपड़े अरब के लोग भड़ौच से लाल समुद्र को ले जाते थे और अपूली में उतारते थे। मछली पट्टम की छींट का व्यापार धूम धाम से चल रहा था।

जुष्टियन की विधान माला (५वीं शताब्दी) में भी भारतीय वस्त्र व्यापार का पता चलता है। हारूरशीद भारतीय वस्त्र ही पहना करते थे।

आठवीं शताब्दी का सब से पहला मुसलमान यात्री सुलेमान सौदागर भारत के किसी तत्कालीन रोहमी राज्य का बयान करता

हुआ लिखता है कि इस राज्य में एक ऐसा कपड़ा होता है जो दूसरी जगह कहीं नहीं होता। वह कपड़ा (थान) छोटी आंगूठों के घेरे से गुजर सकता है। पशम के वस्त्र भी होते हैं।^{६५}

चौदहवीं शताब्दी का यात्री सर जान १६वीं शताब्दी के कादर मी० डी० जेगिश इवन वत्ता, वर्नियर और टेवरनियर आदि सभी ने भारतीय वस्त्र व्यापार को बहुत बड़ा चढ़ा बतलाया है। १७५७ ई० के लगभग इंग्लैण्ड और भारत का वस्त्र व्यवसाय शिथिल पड़ गया, क्योंकि वहां भारतीय वस्त्र बेचने वालों को ३००) रुपया और पहनने वालों को १५) रुपया जुमाने का नियम बन गया। धीरे २ ये नियम और भी कड़े हो गए।

एक पाश्चात्य विद्वान के शब्दों में 'भारतीय करघों ने कपड़ों में इतनी सफलता प्राप्त कर ली थी जो आधुनिक योरोप अपनी मशीनों की सहायता से भी नहीं पा सका।^{६६} भारत का वह वस्त्र व्यवसाय किसी न किसी रूप में १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक चलता रहा! श्रीमती हिल्डाड के शब्दों में 'भारत कला-कौशल में दुनिया में सब से बड़ा देश था १००

अन्य कलाएं

प्राचीन भारत की समृद्धि का मुख्य कारण उसकी विभिन्न कलाएं और विशाल मस्तिष्क था। जिस ओर इसकी विचारधारा दौड़ी अमूल्य रत्न ढूँढ लाई। दुनिया मशीनवाद को सराहती है किन्तु आज के दिन भी भारतीय अपने हस्तकौशल से उसकी धज्जियां उड़ाया करते हैं! भारतीय एक दो नहीं ६४ कलाएं

११ सुलेमान सौदागर पृष्ठ ५४

११, Encyclopaedia Britannica P. 416.

100- Modern review, Sept. 1930

मीव कर कलाविद कहलाने के अधिकारी बनते थे । यात्री स्टावरनस लिखता है 'इतने कम औजारों में इतना कलापूर्ण कौशल, इसे देख कर कोई भी पश्चात्य विस्मय हो सकता है ।' १०१

अलङ्कार निर्माण कला--

भारत के प्रत्येक भाग में कला-कुशल व्यक्ति हैं । वे थोड़े औजारों की सहायता से कारीगरी की विविध बटिया वस्तुएं तैयार करते हैं । + + + सोने के आभूषण तो वे इतने सुन्दर बनाते हैं कि कदाचित ही कोई योगोपियन सुनार उन में वाजी ले जा सके । १०२ यह है १६५६ में भारत पधारने वाले फ्रांसीसी डाक्टर बर्नियर के शब्द । इतिहास वेत्ता एलिफ़स्टन भी इस भारतीय कला की पूरी पूरी प्रशंसा करते हैं । १०३ सच बात तो यह है कि अतीतकाल में भारत ही एक ऐसा सुसम्पन्न देश था जहां सोने चांदी और हीरों के ढेर लगे रहते थे । आवश्यकता से अधिक होने ही के कारण लोगों के जेवर गढ़ाने की सूझा करती थी । अस्तु प्राचीन भारती ही, इस कला के अविष्कारक हैं ।

रंगाई--

डाक्टर टीनेन्ट और जेम्सनिल स्वाकार करते हैं कि भारतीय रंग भूमण्डल में सब से अधिक चमकदार होते हैं । हिन्दू लोग सर्व प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने पौदों से रंग निकालने की कला का अविष्कार किया था । पौदों के नाम जिन से कि वे विदेशों में विख्यात हैं इस बात का प्रमाण है । नील अन्य देशों

101. Stavorinus Vyage P. 412

102, Travels in the Mogul Empire P 251,

103. See, Elphinstone's History of India P 164.

में Indigo अथवा Indies के नाम से मशहूर है। १८८७ ई० में भारत दर्शन करने वाला विश्वयात्री भारती वस्त्र रंगाई की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि एक रंगरेज की दुकान में दो आदमी कपड़े को इन्द्र धनुष की भान्ति रंग डालते हैं। १०४ एल्फिन्स्टन महोदय की सम्मति है कि रंगाई की कला और पायदारी में आज भी योगोपयन भारतियों की बराबरी नहीं कर सकते। १०५

छपाई—

‘हिन्दू कलाओं में कपड़े की छपाई और रंगाई मशहूर है। इसमें जो सुन्दरता, चमक और पायदारी वे उत्पन्न करते हैं वह विशेष प्रशंसनीय हैं।’ १०६ यह हैं विद्वान मिल के विचार। अब सन् १६७६ ई० के यात्री टेवरनियर की भी जवानी सुनिए—‘मसूलीपटम और कालीकट की छपी छोट बहुत सुन्दर और बढ़िया होती है।’ १०७

परिधान—

कपड़े पहनना भी कला है, इसमें भी भारतियों ने कमाल हासिल किया है, उपयोगिता और आगम की दृष्टि से भारतियों की पोशाक संसार के अन्य लोगों से बहुत अच्छी हैं। श्रीमती मेनिंग धोती के पहनाव की सराहना करती हुई स्वीकार करती हैं—‘कोई भी पोशाक जो चलने, फिरने, और बैठने में आराम दह हो सके, इससे अच्छी आविष्कृत होनी असंभव है।’ १०८

103. A trip round the world P. 364

104. History of the India P. 164

106. Mill's India Vol II P. 21.

107. Taverniers travels in India P. 102.

108. Ancient and mediæval India Vol II P. 358

जमन यात्री आस्ट्रिजर कहता है—‘भारती पोशाक साड़ी, मम्मी और बहुत आराम देने वाली है।’ लार्ड डफरिन ने एक दिन कहा था कि पोशाक के सम्बन्ध में अभी पश्चिम को पूर्व से बहुत कुछ सीखना है।

अब भारतीय ललनाओं की परिधान-धारण कला के सम्बन्ध में फ्रांस की प्रसिद्ध प्यानिष्ट ओमती फ्रेगिना की जवानी सुनिए—‘दुनिया भर में स्त्रियों के लिए साड़ी सब से सुन्दर पोशाक है। ‘भारती स्त्रियां वैसे ही सुन्दर हैं, पर उनकी पोशाक (साड़ी) उन्हें अन्य देशों की स्त्रियों से और भी अधिक सुन्दर बना देती है।’ सर फ्रिस्किनपेरे का कथन है कि साड़ी हिन्दू महिलाओं की विश्व-प्रसिद्ध पोशाक है। जब एक हिन्दू लड़की सुन्दर साड़ी पहन कर कुएं से जल भरा घड़ा रख कर चलती है तो वह अत्यन्त प्राचीन काल की स्मृति दर्शक के हृदय में जागृत कर देती है। १०६ यात्री जेम्स फोर्ब्स भी हिन्दू ललनाओं की रेशमी पोशाक की जी भर का सराहना करता है। १०७

कढ़ाई—

जरबपत, सल्मा सतारा, चिकन और जरी आदि की कलाएं इसी देश की उपज हैं। मिस्टर केने इस कला में बनारस, अहमदाबाद और दिल्ली की बहुत प्रशंसा करता है।

शीशे का काम—

शीशे की खिड़किबां लगवाना सभ्यता के विकास का एक उत्तम प्रमाण है किन्तु इसमें भी रोम और यूनान वाले भारत को नहीं पासके, यह प्रोफेसर विल्सन का विचार है। १०८ प्लीनी

109 Bird's eye view of India

110. See Memoirs—1765 A. D.

111, Mill's India Vol. II, Page 46

इतिहासकार कहता है कि सब से बढ़िया शीशे भारतीय होते हैं। दर्पण और खुर्दबीन दूरबीन (Lenses) आदि भान्ति २ के शीशे भारत में तैयार होते थे।^{११२} शीशे का उपयोग सब से पहले भारत ने ही किया था। महाभारत काल में भी यहां बहुत सुन्दर सुन्दर दूरबीनें तैयार होती थीं। व्यास जी ने सञ्जय को एक टेलिस्कोप (Telescopes) दिया था जिसकी सहायता से वह घर बैठे कुरुक्षेत्र का युद्ध देखा करता था।^{११३}

वार्निश--

लुक फेरना अथवा वार्निश द्वारा वस्तुओं को चमकाना यह भारत की अत्यन्त प्राचीन कला है। मौर्यकाल में इसका उत्तम विकास हुआ था। फ्रान्कीस वार्नियर बतलाता है कि—वे वार्निश (Varnish) कला को पूर्णरूप से जानते थे।^{११४} मिल महोदय कहते हैं—‘हिन्दू हीरो को तलाश कर उन पर बहुत चमकदार पालिश करते हैं और बड़ी सफाई से उन्हें सोने चांदी पर जड़ते हैं।’^{११५}

अस्त्र शस्त्र—

जिस देश के निवासी युद्ध क्षेत्र में प्राण समर्पण करना धर्म समझते हों, वहां की अस्त्र शस्त्र निर्माण कला का कहना ही क्या ! एफ० बर्नियर एम० डी० १७वीं शताब्दी की बात कहता है कि भारतीय बहुत बढ़िया बन्दूकें और फेंक कर मारने वाले औजार (Fowling Pieces) बनाते हैं। लार्ड रोनाल्डशे

112 See, History of Hindu Chemistry Vol. II,

113. देखिए, महाभारत भीष्म पर्व ।

114 Travels in the Mogal Empire Page 439

115, History of India Vol II Page 30

बड़े बड़े भोंकने वाले चाकुओं की तारीफ करने हैं। तीर और बलवारों तो भारत से विदेशों को जाया करती थीं। ११३

कृषिकला—

कृषि प्रधान देश भारत की यह अत्यन्त प्राचीन कला है। यहीं से दुनिया ने पेट भरने वाले अन्न को उत्पन्न करना सीखा है। भारतीयों की इस कला को सर टामस मुनरो उत्तम प्रणाली बतलाते हैं। डाक्टर रायले (Royle) की राय है—फसलों के उगाने का ज्ञान भारत से लिया गया है। हिन्दू किसान जमीन की उत्पादक शक्ति को सुगृहीत रखना भली भाँति जानते हैं। अथ प्रसिद्ध पण्डित ब्लाक मैन् के भी इतिहासिक अनुसन्धान का निष्कर्ष सुन लोजिए—‘शिल्प से लेकर खेती वाड़ी तक में सुत्तममानों को हिन्दुओं पर निर्भर रहना पड़ता था। हिन्दू उन को बहुत सी बातें जैसे जोतने, बोने, सींचने, मिक्के बनाने, औचधि तैयार करने, मकान बनाने भिन्न भिन्न ऋतुओं में पहनने योग्य कपड़े बुनने आदि की शिक्षाएँ देते थे। ११४



जहाज

सृष्टि के प्रारम्भ काल में सोते हुए समुद्रों में खलबली मचाने वाले, वायु के चञ्चल अञ्चल को चीर कर आकाश मण्डल में मण्डराने वाले हिन्दू जहाजों का भी वर्णन सुनिए । प्रोफेसर एच. जी० रात्नीर्विसन आई० सी० एस० बतलाते हैं कि 'भारतीय अत्यन्त प्राचीन काल में अनुभवी मज्जाह्वं । आदि कालीन भारतीय साहित्य में जहाज और समुद्र यात्रा के प्रचुर हवाने और प्रमाण मिलते हैं ।^१ ऋग्वेद में कई स्थानों पर समुद्र यात्रा का वर्णन मिलता है इन में सुन्दर द्वीपों में १०० पतवारों वाले जहाजों के जाने का उल्लेख किया गया है ।^२ पूर्वकाल ही में भारतीय बड़े बड़े जहाज बनाते थे जो कि उन जहाजों में अपेक्षाकृत अधिक बड़े होते थे जो कुछ काल पूर्व रूम सागर में चला करते थे ।^३

वैदिक काल के बाद मनुस्मृति^४ और सूत्रों द्वारा भी हिन्दुओं की समुद्र यात्रा का प्रमाण मिलता है । स्वर्गीय प्रोफेसर बुइलर

1. Rigveda; I, 25, 7, 56, 2, 97-7 1163, Buhler's origin of the
Brahma alphabets Page 64.

2. Rigveda I 116, 3,

3. 'अरित्रं वा दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युपुत्र इन्दवः ।'

ऋ० अ० ३ सू० ४६, ऋक्०

4. समुद्रयान कुशला देश कालार्थ दर्शिनः ।

स्थापयन्ति तु मां वृत्ते स तत्राधिगमं प्रति ॥ —मनु० अ० ८, १५१

कहते हैं कि दो बहुत प्राचीन धर्म सूत्रों में समुद्र यात्रा का वर्णन मिलता है ।

रामायण काल में जावा सुमात्रा (यवा म्वर्ग द्वीप) आदि विदेशों को जाने का पता लगता है ।^५ महाभारत काल में सहदेव ने समुद्र मध्यवर्ती कितने ही द्वीपों में जा कर वहाँ के अधिपतों म्लेच्छों को पराजित किया था ।^६ इनके अतिरिक्त शकुन्तला, रत्नावली, शिशुपालवध, हितोपदेश, दशकुमार चरित्र, कथा मरित्नागर, वायुपुराण, बाराहापुराण, हरिवंश आदि अनेक ग्रन्थों से भारतीयों की समुद्रयात्रा का समर्थन होता है । सर डब्ल्यू० जोंस स्वीकार करते हैं कि मनु काल में हिन्दू लोग अवश्य ही जहाज चढ़ाना जानते थे क्योंकि उनमें जहाज बन्यक रख कर रुपया लेने का जिक्र किया है ।^७ एल्फिन्स्टन भी इसी का समर्थन करते हुए कहते हैं सभी लोग समुद्र यात्रा से परिचित थे । "

मिस्टर ए० एम० टी० जैक्सन आई० सी० एस० बुद्ध जात का और संस्कृत के अन्यान्य ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध करते थे कि ईसा की आठवीं शताब्दी से छटा शताब्दी पूर्व तक मड़ौच और सिप्रा से जहाज बेबीलोनिया के साथ व्यापार करते थे ।^८

५. 'श्रवन्ता यवद्वीप सप्तसज्योप शोभितम् ।

स्वर्णहयक द्वीपं सुवर्णाकर मण्डितम् ।'

'नमुदमन्नाडांश्च पर्वतान् पतनानिच । —कि० स० ४० श्लोक २५

६. सागर द्वीप वासांश्च नृपतीन् म्लेच्छ योनिजान् ।

... .. :

द्वीप ताम्राह्वयञ्च वशे कृत्वा महिःतिः ॥'

7, Asiatic researches Vol II, P. 284

8 History of India Page 166

9 Bombay city Gazetteer Vol. 11. Chap. IV Page 30.

ईसा की प्रथम शताब्दी का इतिहासकार प्लीनी वनलाना कि छठी शताब्दी तक भारत के व्यापारी समुद्र पार कर फारस तक पहुँचते थे। म्यक फर्सन कहता है कि भारत वासी अपना व्यापार दूरदेशों से करते थे, उनके जहाज मिश्र तक जाया करते थे।^{१०}

रालीविन्सन महोदय वन्दरगुप्त काल की समुद्र यात्रा के सुप्रबन्ध का इस भान्ति उल्लेख करते हैं—‘पोर्ट कर्मिश्नर समुद्री एवं दरियायी व्यापार का निरीक्षण करता था। वन्दरगाह के अध्यक्ष (Harber master) का कर्तव्य था कि वह मुसीबत में फंसे हुए जहाजों की सहायता करें।^{११} फाहियान नामक चीनी यात्री ने भारतीय कर्मचारियों द्वारा परिचालित जहाज पर सवार होकर चीन को प्रस्थान किया था उस जहाज पर कितने ही ब्राह्मण भी सवार थे।^{१२} यह तो हुई शताब्दियों पूर्व की बातें अभी कुछ काल पहले की बात है कि भारतीय जहाज अपना सामान लेकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजों के साथ विदेशों को जाया करते थे।

समुद्र यात्री भारतीयों का व्यापार इतना बढ़ा चढ़ा था कि उन्होंने एक दो नहीं भारत में अनेकों जहाज बनाने के कारखाने खोल रखे थे और विदेशियों के लिए जहाज बनाया करते थे। तेहरवीं शताब्दी का यात्री मार्को पोलो तत्कालीन भारत में बनने वाले जहाजों का इस भान्ति चित्रण करता है—‘इस व्यापारियों द्वारा व्यवहार किये जाने वाले जहाजों का विदेचन करेंगे जो (Fritiuler) के बनते हैं और एक डेक (Deck)

10. Macpherson's Annals of commerce,

11. Intercourse between India and the Western world

12. See, Journal of the Royal Asiatic Society Vol V

वाले होते हैं इनके नीचे का स्थान जहाज के आकार के अनुसार ६० दड़ कमरों (Cabin) में बंटा होता है। हर एक में एक व्यापारी के लिए स्थान होता था। उनको (Helm) भी दिये जाते हैं। उनके पास चार मम्नूल और इतने ही (Sail) होते हैं। कुछ बड़े जहाजों में कमरों के अनिश्चित अन्य विभाजन भी होता है। सभी जहाज दोहरे तख्तों वाले होते हैं। बड़े आकार के जहाजों को ३००, कुछ को २०० और कुछ जहाजों को केवल १५० मल्लाहों की आवश्यकता होती है। वे ५-६ हजार टोकियां ले जाते हैं।^{१३}

सूरत के जहाजी कारखानों का वर्णन भी ग्रोसे (Gosse) के शब्दों में सुनिप—‘वे जहाज निर्माण की कला में सब से बढ़ कर हैं। उनके पेंदे और चारों किनारे एक दूसरे से जुड़े हुए तख्तों से बने होते हैं। वे पेंदों (Bottom) को सुरक्षित रखने के लिए विलक्षण उपाय वर्तते हैं। वे इन पर कभी कभी एक प्रकार का तेल मलते हैं जो लकड़ी के तेल या पिघलाये हुए कोलटार के नाम से भारत में मशहूर है। ग्रोसे कहता है यह कहने में जरा भी अकिशयान्ति नहीं कि भारतीय तुलनात्मक दृष्टि से संसार में सब से अच्छे जहाज बनाते हैं। वे मजबूत और विभिन्न आकारों के होते हैं, जिन में १००० टन और इससे भी अधिक बोझ जा सकता है।^{१४}

समस्त भूमण्डल में अपनी सम्यता और व्यापार का किका जमाने वाले हिन्दु कितने सुन्दर जहाज तैयार करते थे। फ्रांसीसी लेखक एफ. वी. सालोवाइस (SALOIS) की जवानी सुनिये— प्राचीन काल से हिन्दू जहाज-निर्माण कला में सब से अधिक

13. The travels of Marco Polo Page 21, 322

14. Voyage to the East Indies Vol I Page 107, 103.

निपुण थे। आधुनिक कालीन हिन्दू अब भी योरुप को सांचे (Models) देते हैं। अंग्रेजों की सामुद्रिक शिल्पकला की सावधानता जिसको उन्होंने अपनी जहाज-संचालन कला में बड़ी सफलता के साथ व्यवहार किया है, हिन्दुओं से उधार ली हुई है। भारतीय जहाज उपयोगिता, सुन्दरता, धैर्य और कलानिपुणता के उत्तम नमूने हैं।^{१५}

इन जहाजों पर सवार होकर हिन्दू लोग कितनी लम्बीयात्रा किया करते थे रोमके इतिहासज्ञ टोसिटसके शब्दोंमें पढ़िये मसीह से ६० वर्ष पूर्व कुछ हिन्दू व्यापारियों के जहाज तुफान में पड़कर जर्मनी के किनारे आलगे। सालवियंस (Sulvians) के राजाने उपहारस्वरूप उन्हें गाल (Gaul) के गवर्नर मीटेलस (Metellus) को दे दिया। कार्नीलियस नेपोस के लेख आज हमें उपलब्ध नहीं किन्तु प्लीनी ने इस सम्बन्ध में लिखा है यह समस्त घटना जहाजी यात्रा के इतिहास में बड़े मार्के की है। प्लीनी कहता है वर्तमान समय में हमें यह विचार करने के लिये छोड़ दिया गया है कि आया भारती साहसी एटलाण्टिक महासागर से कैप आफ गुड होप (Cape of good Hope) होकर उत्तरी सागर में पहुंचे थे अथवा उस से भी विलक्षण ढंग से जापान और साइदेरिया के किनारे कामस चाट्सका (Kamschatska) जम्बाला होते हुए लीपलैण्ड और नार्वे के मार्ग से बाल्टिक या जर्मन सागर में पहुंचे।^{१६}

हिन्दू लोग उस समय भी कितनी साहसी सामुद्रिक यात्राएं किया करते थे जब आधुनिक अंग्रेजों के इतिहास का श्रीगणेश

15. Les Hindus (1831) see also, National in the Hindu culture

भी नहीं हुआ था। भारत को पानी पी कर कोसने वाले मि० मार्समैन के शब्दों में—‘राजा सागर बड़ा बली था कि उसी के नाम पर समुद्र सागर कहा गया और उसने अपने जहाजों द्वारा समुद्र में अनेक अद्भुत कार्य किये।’^{१७} अब भारत के जहाजी कारखाने वालासोर के सम्बन्ध में १६ दिसम्बर सन १६७० ई० में एक अंग्रेज ने लन्दन कम्पनी के प्रभुओं को जो चिट्ठी लिखी थी उसका भी भाव पढ़ लीजिए—वहूँ ने अंग्रेज साँदागर और दूसरे लोग अपने जहाज और नौकायें हर साल यहां बनवाते हैं यहां पर सर्वोत्तम सीभी हुई लकड़ी बहुतायत से मिलती है और समुद्री तट पर उत्तम प्रकार का लोहा भी प्राप्त होता है। यहां के रहने वाले कारीगर मेखें, वोल्डू, लंगर आदि भान्ति भान्ति की चीजें और हर तरह के लोहे का काम बड़ी होशियारी और बुद्धिमता से बना सकते हैं यहां पर बहुत से ऐसे कुशल कारीगर जहाज बनाने वाले उस्ताद मौजूद हैं जो सर्वोत्कृष्ट जहाज बनाते हैं और ससार में सब से सुन्दर जहाज चलाने वालों की भान्ति उन्हें समुद्र में चलाते हैं। यही नहीं पालखम्भे और रस्से भी वह उत्तम बनाते हैं।^{१८}

प्रतिष्ठित अंग्रेज सर जान मात्कम भी कहते हैं—‘भारतीय जहाज प्रशसनीय हैं अपने उच्चविज्ञान के बावजूद भी योरुपियन भारतीयों के संसर्ग में आने के दो शताब्दियों बाद तक भी कोई एक सुचारु सफलता पूर्वक कार्यरूप में परिणित न कर सके।’^{१९} अभी १३८ वर्ष पहले की बात है कि इंग्लैण्ड के लिए साधारण और जंगी जहाज भारतवासियों ने बनाये थे। यही नहीं जहाजों

17. Marsh man's History of India.

18. A History of Indian maritime shipping. Page 233

19. Journal of the Royal Asiatic Society London Vol. I.

के नक्शे और योजनायें भी भारतीयों ने अंग्रेजों को मांगने पर दी थीं २० इससे भी वाद दम्बई में जंगी जहाज बनने की सूचना डाक्टर ब्रूक्स एम० डी० देते हैं। २१

जब जब दुनिया के शेष देशों ने आंखें खोल कर समुद्रों पर निगाह दौड़ाई है उनकी छाती को चीर कर इधर उधर दौड़ने वाले हिन्दू जहाज दिखाई पड़े हैं। इन भारतीय जहाजों ने सर्व प्रथम किस शुभ-वेला में समुद्र के तन्हा तोड़ी थी— किसी को भी इसका ज्ञान नहीं। हिन्दू मल्लाहों, हिन्दू जहाजों लम्बी लम्बी समुद्र यात्राओं और संसार के जहाज बनाने वाले हिन्दू कारखानों की साक्षी आज भी पाश्चात्य इतिहासकार दे रहे हैं।

हिन्दुओं ने इस कला में कितना कमाल हासिल किया था, जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर एजन्ता और बुगेवेंदर (जावा) के मन्दिरों की दीवारों पर बने हुए जहाजों के चित्र आज भी यात्रियों को अतीत भारत के स्वर्ण युग का सन्देश सुना रहे हैं।

हवाई जहाज—

सृष्टि के आदि ज्ञान का परम-पावन सन्देश सुनाने वाले भारतीय क्या कभी पृथ्वी प्रदक्षिणा करने में समर्थ हो सकते थे यदि उनके पास वायु-वेग से होड़ लगा कर आकाश में दौड़ने वाले विमान न होते ! आर्यों के विश्व मान्य ज्ञानकोष वेदों में पढ़िये, कल्पनातीत वायुयानों का विस्तृत विवेचन मिलेगा। देखिये 'जिन्होंने प्रचण्ड समुन्नत आकाश और पृथ्वी को दृढ़रूप से स्थापित किया है, जिन्होंने स्वर्ग और देवलोक को स्तम्भ

20 A History of Indian maritime and shipping page 214, and 250

21. See, The General gazetteer and geographical dictionary
'Bombay'

किया है, जिन्होंने चित्रित विमान पर गमन किया है, हवा द्वारा हम लोग उस सुखदायक परग्रह की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ।^{२२} विश्व प्राचीनतम ज्ञान के भण्डार ऋग्वेद में भी हवाई जहाज की बहार देखिए—

निलः जपस्त्रिरहाति व्रजद्विर्नामत्वा भुज्युमर्धुः पतंगैः ।

समुद्रस्य धन्वन्नादस्य पारं त्रिभी रथैः शतपाद्भिः पद्वरैः ॥

ऋ० १।१।११।४

अर्थात्—‘(नासत्या) सदा सत्यरूप में या तत्त्वरूप में अथवा शक्तिरूप में विद्यमान अग्नि और जल तत्व (तिस्रःक्षयः) तीन गत (त्रिःअहा) तीन दिन तक (अति व्रजद्विः पतंगैः) अत्यन्त वेग से गति करने वाले (शतपाद्भिः) सौ पर या चक्रों और (पद्व-अश्वैः) छः अश्वों अर्थात् इन्जनों ने युक्त (त्रिभिःरथैः) तीन याना या रथों से (भुज्युम) भोग ऐश्वर्यवान् पुरुष को (समुद्रस्य धन्वन् आदस्य पारं) समुद्र मरुस्थल और गीले देशों के भी पार (ऊर्ध्वैः) पहुँचा देने में समर्थ हैं ।’

आधुनिक वैज्ञानिकों ने ३८४ मील प्रति घण्टा की गति चलने वाले वायुयानों का निर्माण कर डाला है किन्तु १२ घण्टे में इतनी लम्बी यात्रा करने वाला हवाई जहाज वेदक काल के अतिरिक्त आज तक लोगों की आखों के सामने नहीं आया ।

प्रसिद्ध इतिहासकार रालीविन्सन् ने भी जिन वेद मन्त्रों का हवाला देकर प्राचीन भारत के जहाजी वेड़े का परिचय दिया है उन में से एक अपने स्वयं बल से चलने वाला अन्नरिक्त्त में गति

22. येन वायुना पृथ्वी च ददा, येन स्यः स्तभितं येन नाकः ।

या अन्तरिक्षं रजसा विमानः कस्मैः देवाय हविषा विधेम ॥

य० अ० ३० न० ३

करने वाला जहाज है ।^{२३}

प्राचीन भारत में एरोप्लेन, जेप्लिन आदि सभी कुछ व्यवहृत होते थे ।^{२४} रामायण काल में भी बड़ा प्रचुरता के साथ इनका व्यवहार होता था । आर्थर लिंली लिखता है कि मेघनाद के पास एक ऐसी गाड़ी (Car) थी जिसको वह अपनी इच्छानुकूल जहाँ चाहे ले जा सकता था ।^{२५}

आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण में, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में, कविशिरोमणि कालिदास ने शकुन्तला में हवाई जहाजों और आकाश यात्रा का विवेचन किया है । इस के अतिरिक्त अन्य कितने ही ग्रन्थों में भी उल्लेख मिलता है । सन् १८८१ ई० में इलाहाबाद में व्याख्यान देते हुए कर्नल अल्काट महोदय ने भी स्वीकार किया था कि प्राचीन हिन्दू लोग आकाश मार्ग से यात्रा करना ही नहीं प्रत्युत पक्षियों की भान्ति युद्ध करना भी जानते थे ।^{२६} महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने एक व्याख्यान में प्रवक्त प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया था कि महाराज भोज के समय में लगभग १४०० वर्ष पूर्व ऐसे विमान थे जिन में नगरों के वतुसंख्यक व्यक्ति अपनी आवश्यक सामग्री के साथ विदेशों की यात्रा किया करते थे ।

यह तो हुई हवाई जहाजों द्वारा हवा में, आकाश में उड़ने की बातें किन्तु भारत तो वह भव्य भूमि है जहाँ कि प्रत्येक

23. तुयो ह भुञ्जुमश्विनोदमेघे रयिं न काश्चिन्ममृवां अवाहः ।

तमूहथर्नाभिरात्मन्वती मिरन्तरिक्त प्रदिभरपोदकाभिः ऋ० १।१।१।३

See Intercourse between India and the western world Page 4.

42 देखिये ऋग्वेद

25. Rama and Homer Page 137,

26. See, The theosophical for March 1881.

वानें लोगो की कल्पना से भी परे होती थीं । यहां के महाशयगण बिना किसी वस्तु का सहारा लिए ही आकाश में उड़ा करते थे । आज से ठीक एक शताब्दी पूर्व एक पाश्चात्य अपनी आंखों देवी घटना का वर्णन करते हुए लिखता है कि मद्रास प्रान्त के कड़य्या नामक स्थान का निवासी शेषल ब्राह्मण बिना किसी सहारे के वायु में (अथर) बैठा रहता था । उसके इस चमत्कार को देखने के लिए तत्कालीन मद्रास गवर्नर ने भी आमंत्रित किया था । २७

इस स्वर्ग भूमि भारत में आधुनिक काल की अपेक्षा अधिक अद्भुत और सुन्दर हवाई जहाज मौजूद थे । जिन की कल्पना भी आधुनिक अधोगति में मलिन पड़ गई है ।



वाणिज्य-उयापार

न मन्ये वाणिज्यान् किमपि परमं वदेनमिह ।—पञ्चतन्त्र

सर्वं परमं: ससन्निधन ।—अथर्ववेद

प्राचीन भारतीय साहित्यों ने धनवरत उद्योग और ऋथन परिश्रम से दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेश बसाये, अन्ततः अगाध समुद्र की छाती पर मूंग दल कर, वीहड़ दनों के अञ्चल को चाक कर, पर्वत मालाओं के सिरों पर पथ बकाकर अपने व्यापार को उदय अस्त तक विस्तृत किया था । किन्तु किनी राष्ट्र की व्यापारिक उन्नति पर विचार करने से पूर्व उस के व्यापार केन्द्रों वन्दरगाहों और सड़कों का निरीक्षण कर लेना नितान्त आश्चर्य है । यही ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा राष्ट्र अपने व्यापार के समुन्नत होने का प्रमाण दे सकता है ।

सड़कें

सड़कें जहां व्यापार के विकास की परिचायक हैं वहां सभ्यता की सूचक भी हैं । भारत की आदिम सड़कों का इतिहास बहुत पुराना है । संसार का आदिम ग्रन्थ ऋग्वेद है उस में कहा गया है—हमारे रथों के चक्रों के हाल, छोड़े मजबूत हों और बागडोर जो रथ को बराबर कावू में रखे, वह उत्तम रीति से स्वच्छ और सुन्दर रीति से बनी हो ।^१ पर्यटक अलवरुनी भी सृष्टि के ६०० वर्ष बाद हिन्दुओं के रथ अविष्कार करने की

1. 'स्थिराः वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एवाम् सुस्कृता अभी शवः ।'

वात बतलाता है। घोड़े जुने रथ सड़कों के बिना जंगलों अथवा गलियों में चल ही नहीं सकते। प्रोफेसर ग्रिन्थ, कीथ और रंगोजी भी वैदिक काल में 'महापथ' (देश एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाली) सड़कों तक का अस्तित्व स्वीकार करते हैं।^२ महाकाव्यकाल में सड़कों और गलियों का विपद वर्णन मिलता है। राजपथ, महाकाल, वामन, मंगल बीथ आदि इनके भेद थे।^३ रामायण में इन के जल से ही महीं सुगन्धित द्रव्यों द्वारा छिड़के जाने का विवरण मिलता है।^४ बौद्ध कालीन भारत में भी प्रोफेसर रीम डेविड सड़कों और पुलों का जिक्र करते हैं।^५

प्राचीन इतिहास का अनुसन्धान कर्ता प्लीनी लिखता है कि भारत में प्रवेश करते ही मैगस्थनीज के मस्तिष्क में जो पहली वस्तु चुभी, वह थी सीमाप्रान्त (Frontier) से पाटलीपुत्र जाने वाली सड़क। इस पर राजदूत ने अवश्य यात्रा की होगी।^६ इतिहासज्ञ रालीबिसन बतलाता है कि यह गान्धार की राजधानी पुष्कलावती से तक्षशिला तक्षशिला से सिन्धु को पारकर भेलम, व्यास, सतलुज, जमुना और कदाचित् हस्तिनापुर होती हुई गंगा तक पहुँचती थी। गंगा से यह सड़क अनूपशहर के निकट ढवाई कस्बे को जाती थी। यहाँ से कन्नौज, कन्नोज से शक्तिशाली शहर प्रयाग और वहाँ से पाटलीपुत्र को चली जाती थी। लेखक रामायण में बतलाई गई एक अन्य सड़क का भी वर्णन करता है जो अयोध्या से हस्तिनापुर होती हुई राजगृह को जाती थी। इन

2, See, Vedio India Rigveda Vo I and II—edited by Griffith,

3 See, History of Aryan rule in India Page 26.

4. रामायण वालकाण्ड

5, Budhist, India Page 98.

6, Pliny, N. H. VI Page 21.

सड़कों के किनारे दूरी दर्शक पत्थर और छायादार वृक्ष होते थे ।^७ चीनी यात्री ह्वानच्वांग और फ्राहियान भी यहां की सड़कों का अपनी यात्रा में विस्तृत वर्णन करते हैं ।^८

सिन्धसे उज्जैन, ब्रोचसे उज्जैन, कौशुम्बी से बनारस और बनारस से पटना आदि स्थानों को जाने वाली अनेक सड़कों का वर्णन भारत के पूर्वकाल में मिलता है ।^९ हिन्दू नीति ग्रन्थों में भी सड़कों का विस्तृत विवेचन मिलता है । शुक्राचार्य ने चार प्रकार की सड़कों का खल्लेख किया है—पथ, वीथि, मार्ग और राजमार्ग ।^{१०} चाणक्य ने भी राजपथ, हस्तिपथ, रथपथ आदि कितने ही प्रकार की सड़कों और मार्गों का वर्णन किया है ।^{११} आदिकाल से लेकर विगत शताब्दी तक पधारने वाले सभी विदेशी दर्शकों ने भारतीय सड़कों का वर्णन किया है । भारत में सदैव ही सड़कों का जाल बिछा रहा है, स्ट्रावो, प्लेटो, अपालो डोरस, हेबलस्मिथ आदि सभी इतिहास लेखक इसे स्वीकार करते हैं ।^{१२}

इतिहासवेत्ता स्मिथ तो यहां तक लिखते हैं कि छाये के लिए सड़कों के किनारे वट और आम के वृक्ष थे, हर आधे कोस पर कुंए और विश्रामालय और कितने ही मनुष्यों और पशुओं के आराम के लिए बावड़ियां (Watering place) बनी थीं ।^{१३}

7. Inter Course between India and the Western world Page 42

8. See water travels of Yawan Ohwang and Fabian travels.

9. See town planing in Ancient India

10. देखिये शुक्र नीति

11. देखिये अर्थशास्त्र अधिकरण ७ अध्याय १२ प्र० ११३

12. See, strabo, Chapt. XV. History of Aryan rule in India P 36 etc

13. Early History of India Page 162

हीरन महोदय बतलाते हैं उन के किनारे फूल भी थे ।^{१४} क्या आधुनिक सभ्य संसार ने अतीत भारत के अतिरिक्त फिर और कहीं ऐसी सड़कें देखी हैं ?

यह तो हुए देश के आन्तरिक व्यापार के स्थलीय मार्ग अब जलीय मार्ग का भी निरीक्षण करना चाहिए । पेरिप्लस (Periplus) बतलाता है कि उत्तरी भारत में गंगा और उसकी सहायक नदियां व्यापार का विशाल मार्ग है + + + दक्षिण की नदियों में भी नावें चला करती हैं ।^{१५} डाक्टर विन्सेट आईन अकवगी का हवाला दे कर बतलाते हैं कि सिन्धु के व्यापार में ४० हजार नावें लगी रहती थीं । ऐरीयन के कथनानुसार पूर्वी और पश्चिमी किनारों का व्यापार स्वदेशी जहाजों द्वारा होता था ।^{१६}

भारत का आन्तरिक व्यापार जल और थल दोनों मार्गों से होता था । भारत के प्रत्येक भाग में होने वाले मेले सामाजिक और राष्ट्रीयता के अतिरिक्त स्वदेशी व्यापार के केन्द्र भी थे । प्रोफेसर हीरन बतलाते हैं कि प्रति वर्ष जगन्नाथ काशी और अन्य स्थानों पर एकत्रित होने वाले लाखों ग्राह्य व्यापार को अवश्य ही प्रोत्साहित करते हैं ।^{१७}

किसी राष्ट्र की व्यापारिक अवस्था को जानने के लिए नगरों और व्यापारिक मंडियों पर दृष्टि डालना भी जरूरी होता है अस्तु विदेशी यात्रियों एवं इतिहास लेखकों की कलम से निकला हुआ भारतीय नगरों का कुछ वर्णन यहां पर दिया जाता है ।

14. Historical researches Vol II. Page 279

15. Periplus Page 29

16. Commerce of the Ancients Vol I. Page 12.

17. Historical researches Vol. VI Page 279,

पाटलीपुत्रः—(३०५ ई० पू.) यह मजबूत लम्बी चौड़ी दीवारों से घिरा अत्यन्त सुरक्षित नगर गङ्गा और सोन के सङ्गम पर स्थित है। इस में ६४ फाटक और ५७० घुर्ज हैं।^{१८} स्वर्ण प्रायः द्वीप (भारत) का माल, रेशम और बढ़िया मल-मल तथा अरब और अन्य पश्चिमी देशों का माल इसके बाजारों में आ कर जमा होता है। गङ्गा के काफिले बिना रोक टोक खैबर के मार्ग से चले जाते हैं। चन्द्रगुप्त के शानदार कानूनों द्वारा विदेशी व्यापार की सम्पन्नता की साख है।^{१९}

कल्याण तथा नासिकः—(२३० ई०) गैरेट लिखते हैं कि ये दोनों नगर बहुत मालदार और शानदार थे और व्यापार खूब जोरों पर था।^{२०}

कोरकाईः—(४ श०) गैरेट बतलाते हैं कि पाण्ड्य राज्य में यह एक विशाल और सम्पन्न बन्दरगाह था। इसका व्यापार जोरों पर चमक रहा था। इसका मुख्य व्यापार भारीयों का था।

कोलमः—(६ श०) सुलेमान यात्री मालाबार के किनारे पर इस स्थान को बतलाता है जिस की आबादी १५००० थी। यह बन्दरगाह पन्द्रवीं शताब्दी तक चीन और फारस के साथ व्यापार करता रहा।^{२१} चौहदवीं शताब्दी के मध्य में इसी नगर के सम्बन्ध में इन्न बतलाता है कि यहां के सौदागर धनाढ्य

18. A, History of India Page 55

19. Megasthenes apud Strabo XV, Page 51

20. A History of India Page 86

21. सुलेमान सौदागर पृ० ११६

श्रेष्ठ माल के जहाज के जहाज खरीद लेते थे। उन्नतवृत्ता इन्ने राज्य कहता और राजा का नाम निनरी बतलाना है जो बड़ा न्याय प्रिय था ।

कालीकटः—(१५ श०) इतिहासकार पाइन एक यात्री के शब्दों में इस सुप्रसिद्ध बन्दरगाह की व्यापारिक महत्ता का वर्णन करता है—‘प्रत्येक शहर और देश के व्यापारी यहां पर मिलते हैं । यहां समुद्री देशों में विशेष कर अबीसेनिया, जीरवाद जेजीवार से Korities आती है जो यहां बहुतात से मिलती है । यहां समय समय पर खुदा के घर (मक्का) और हज्जाज की ओर भी जहाज आते रहते हैं और जब तक इच्छा होती है ठहरते हैं । यहां पर विदेशी व्यापारी अपना माल डाल कर चले जाते हैं जो सड़कों पर चुंगी अफसरों की निगरानी में पड़ा रहता है ! विकने पर वे २३ प्रांत सैंकड़ा चुंगी ले लेते हैं नतह वे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करते । २२

विजयानगरः—पेनी लिखता है कि इसके बाजार बहुत लम्बे चौड़े हैं । हर किस्म के व्यापारी अलग अलग बैठते हैं । जौहरी लोग खुले आम बाजारों में हीरे जवाहिरात और मणिष्य मुक्ताओं का व्यापार करते हैं ।

सूरतः—अकबर कालीन यात्री फादर मान्सरेट लिखते हैं कि स्वभाविक रूप से ही इस बन्दरगाह की स्थिति सुदृढ़ और सुरक्षित है । यह व्यापारियों और जहाजों से भरा रहता है । २३

दिल्ली:—डब्ल्यू० एस० केन नामक विश्व-यात्री बतलाता है—देहली संसार के प्राचीन नगरों में से है। भारत की राजनीति पर इसका नियन्त्रक प्रभाव अत्यन्त पूर्वकाल से ही रहा है। ईशा से १५०० वर्ष पूर्व का इसका इतिहास विल्कुल स्पष्ट है। उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों का यह व्यापारिक केन्द्र है, विशेषता काश्मीरी शाल, चादर, जरीवस्त्र, आश्चर्य जनक कन्धे के कपड़े, सोना, चांदी जवाहरात, धातु के वर्तन, अस्त्र शस्त्र, जिरावस्त्र, चिकन और अन्य कलापूर्ण वस्तुएं यहां बहुत होती हैं, जिन के लिए भारत प्रसिद्ध है।^{२४}

बनारस:—यहां जुलाहों के झुण्ड के झुण्ड कपड़ों पर सोने चांदी का काम करने के लिए बड़े बड़े दुकानदारों की प्रतीक्षा किया करते हैं जिस के लिए बनारस प्रसिद्ध है। भारत दर्शक जो० के० हार्डी एम० पी० बतलाते हैं कि यह अपनी सिल्क और पीतल के वर्तन के लिए प्रसिद्ध है जिसका मुकाबला जर्मनी वर्तन नहीं कर सकते।^{२५}

जयपुर:—संसार की यात्रा करने वाले पार्लियामेण्ट के मेम्बर मिस्टर केन लिखते हैं, कपास चुकने, गेहूँ पीसने, वस्त्र रंगने, मिट्टी और पीतल के वर्तन बनाने, चर्खा कातने, जवाहिरात खरादने, जूता बनाने, जेवर गढ़ने और पचास प्रकार के अन्य दूसरे उद्योग, यहां साथ साथ होते रहते हैं। बाजारों में मचने वाला शोर यहां के व्यापार का परिचायक है मैंने ऐसा शहर अपने समस्त सफर में नहीं देखा।

24, A trip round the world Page 352 and 357

25. India, impressions and suggestion Page 46

अहमदाबादः—यह पश्चिम भारत का महान्तम और अत्यन्त प्रतिष्ठित नगर रहा है यहां की लकड़ी की नक्कासी बहुत प्रसिद्ध है। यहां एक कहावत मशहूर है कि—‘अहमदाबाद सूत, रेशम और सोने के बागों में भूमता है’ आज यही इसके मुख्य व्यापारिक व्यवसाय हैं। यह सुन्दर इमारतों से भरपूर है। इसकी वस्तुकला एक विशेषता रखती है।^{२६} टेवरनीर सूचित करता है कि यहां रेशमी पट्टू बहुत सुन्दर बनते हैं जिनका दाम ८) रुपये से ४०) रुपये तक होता है ये फिलपाइन, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा आदि देशों में भेजे जाते हैं।^{२७}

बम्बईः—मिस्टर आर ब्रूक्स एम० डी० लिखते हैं कि बाम्बे में अत्युत्तम व्यापारिक जहाज तैयार होते हैं। समस्त लकड़ी आस पास के स्थानों से आती है जो अंग्रेजी और पश्चिमी लकड़ी की अपेक्षा अधिक पायदार होती है। जंगी जहाज भी यहां पार्सियों की निगरानी में तयार हुआ था। समस्त भारत में व्यापारिक दृष्टिकोण से कलकत्ता के बाद बम्बई का दूसरा नम्बर है। यह फारस, अरब, अवीसीनिया, आर्मीनिया और समस्त पश्चिमी एशिया और पूर्वी एशिया और हिन्दमहासागर के अधिकांश द्वीपों के व्यापारियों से भरा रहता है।^{२८}

कश्मीरः—१७वीं शताब्दी के मध्य में भारत पधारने वाले डाक्टर फ्रान्क्वीस वर्नियर एम० डी० की जवानी कश्मीर का भी जिक्र सुनिए—कश्मीरी भारतीयों की अपेक्षा अधिक कला-

26 A trip round the world Page 364, 370

27 Tavernier's travels in India Page -99, 300.

23 General Gazetteer and Geographical dictionary Page 117

कार निपुण और गुणी होते हैं। उनकी पालकी, पलंग, टूंक, कलमदान, बक्स, चम्मच की सुन्दरता और कारीगरी कमाल की होती है। किन्तु कश्मीरकी उस विलक्षण और प्रधान व्यापारिक वस्तु के लिए क्या कहा जाय जो कि उस प्रान्त के व्यापार का विकास कर उसे सम्पत्ति से मलामाल कर देती है। वह है शालों की प्रचुर संख्या, जिन्हें वे लोग तैयार करते हैं जिस के द्वारा छोटे छोटे बच्चों तक को काम मिल जाता है।^{२९}

केरला (ट्रावनकूर):--मिस्टर गैरेंट कहते हैं कि यहां पर कभी मुसलमान आक्रमणकारी राजाओं का प्रभाव नहीं पड़ा, अस्तु भारत साम्राज्य में इसका विशेष स्थान रहा है। यहां के चेर सम्राट सदैव पश्चिमी देशों के साथ व्यापार करते रहे हैं। दूसरी वस्तुओं के अतिरिक्त अरब के साथ चेर लोग मोती का व्यापार करते थे। इनके समुद्री व्यापार का प्रमाण रोम और यूनानियों द्वारा भी मिलता है !

चोला राज्य:--यह मैसूर, नीलौर और कूर्ग तक फैला था। इसकी राजधानी पुरानी तिरचनापली थी इनके पास जहाजी बंदर था, जिसके द्वारा ये भारतीय उपद्वीप समूह (Archipelago) मलाया और मिश्र तक पहुंचते थे। पूर्व पश्चिम दोनों ओर इन का बढ़ा चढ़ा व्यापार था। कावेरी नदी के मुहाने पर उस का प्रधान बन्दरगाह था। ७वीं शताब्दी में हुआनत्सांग यात्री ने इस राज्य के सम्बन्ध में भी लिखा है।^{३०}

कामिम बाजारः—जीन वेण्टाइस्ट टेवर नियर बतलाता है कि बंगाल राज्य के अकेले इस गांव में विदेशों को रेशम की २२ हजार गांठें भेजी जाती हैं। प्रत्येक गांठ १०० पौण्ड होती है। केवल हालैण्ड ६-७ हजार गांठें ले जाते हैं। यहां सुनेहरे रूपहरें कालीन भी बनते हैं।

फ्रांसीसी पर्यटक टेवर नियर कहता है कालीकट और ससूलीपटन की छोट बहुत सुन्दर होती है किन्तु लाहौर की मही और सस्ती होती है। + + + सफेद आगरा, लहौर, भड़ौच, रेनसूर, बंगाल बड़ौदा से आती है। १८

एक दो नहीं प्राचीन भारत के व्यापारों की अगणित मण्डियां थीं आगरा, मथुरा, लखनऊ, जालन्धर, लुधियाना, अमृतसर, चन्द्र नगर, चन्द्र कोना, पालमा, वर्दवान, दीनापुर, मऊ, हुशियागपुर, पटियाला, टाण्डा, यवला, अहमदनगर, खानदेश शोलापुर, शान्तिपुर, नदिया, आजमगढ़, भावर्ती, आसन्दी, कराची, हैदराबाद, काबली, अलीगढ़, मिर्जापुर, राजशाही मुर्शिदाबाद, भागलपुर, बिलासपुर, सम्भल, मुजफ्फरनगर आदि। इन स्थानों में बराबर माल तैयार होकर विदेशों को जाता था।

आज भारत के दुर्भाग्य और भारतीयों की आकर्मण्यता से इस हरी भरी भूमि का सब कुछ उजड़ कर भाड़ भखंड बन चुका है और का तो कहना ही क्या है वे बन्दरगाह तक नहीं रह गए जिनके ऐश्वर्य का विदेशी यात्री राग गा गए हैं। आज हमारे भूगोल के विद्यार्थी बड़े गर्व से अधुनिक भूगोलों में भारत की स्वाभाविक व्यापारिक अयोग्यता का पाठ पढ़ते हुए बड़े गर्व से कहते हैं—‘इस देश का समुद्रो कनारा कटा फटा-दनदानेदार

नहीं, इसी लिए यहां उत्तम व्यापारिक बन्दरगाहों का अभाव है।, ऐसे विद्यार्थियों को उपरोक्त भारतीय बन्दरगाह 'कालीकट' की ओर ध्यान देना चाहिए। क्या संसार के पटों में ऐसा दूसरा बन्दरगाह आज कहीं मिल सकता है? आज से केवल ५०० वर्ष पूर्व फारस से भारत आने वाला मुसलमान यात्री कसालुद्दीन अब्दुलरजाक सूचित करता है कि केवल 'विजयनगर के सम्राट के राज्य में ३०० बन्दरगाह थे और हर एक कालीकट के बराबर था।'^{३२} इतिहासज्ञ रालीबिन्सन आई० ई० १७० ईसा से ७३७ वर्ष पूर्व पटाला (जिहलम) बन्दरगाह का उल्लेख करता है जो कि उत्तर पश्चिमी भारत का प्रधान बन्दरगाह था।^{३३} यूनानियों ने लिखा था कि केवल सतलज और सिन्ध नदियों के बीच १५०० शहर आबाद थे ^{३४}

जिस देश के पूर्वकाल में इतनी सुन्दर सड़कें बन्दरगाह, शहर मण्डियां आदि मौजूद हों वहां की व्यापारिक अवस्था कितनी अच्छी होगी, साधारण में ही अनुमान लगाया जा सकता है।

विदेशी-व्यापार—

यह तो हुई देश की आन्तरिक अवस्था। अब इस के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर भी दृष्टि डालनी चाहिए। प्राचीनकाल में भारत का खुशकी Land) के रास्ते से व्यापार बड़े बड़े काफिलों द्वारा हुआ करता था।

मिस्टर आर० सीवल इसी का समर्थन करते हैं कि—'(भारत का) पश्चिमी एशिया, यूनान, रोम, मिश्र और चीन के साथ

32. Scenes and Characters of Indian history Page 64

33. Intercourse between India and Western world Page 35

34. See, Poverty and the British Rule in India

जल थल दोनों मार्गों में व्यापार होता था ।^{३५}

अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग—

मिस्टर रालीविन्सन चिर अनुसन्धान के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—‘इतिहासकाल में भी पूर्वकाल में भारत के साथ पश्चिम के बड़े व्यापारी मार्ग मिले हुए थे ।’ खुशकी के गमते का उल्लेख आपने इस भान्ति किया है—‘भारत में दरों द्वारा बलख व्यापारी बलख पहुँचते थे । बलख में दर्या के गमते कस्पियन होकर इयूक्साइयन (Euxine) पहुँचते थे, अथवा थल मार्ग से काफिलों को उस सड़क से ले जाने थे जो कार्तानियन रेगिस्तान के उत्तर से होकर कैस्पियन गेट ऐन्टियोक्ट (Antioct) पहुँचती थी । गलीविन्सन महोदय गान्धार और पाटलीपुत्र को मिलाने वाली सड़क का सम्बन्ध फारस की सड़क से भी बतलाते हैं ।^{३६} मिस्टर रीस डेविड्स कहते हैं कि पटना और बनारस काफिलों के केन्द्र थे । इन काफिलों में ५०० बैल गाड़ियाँ होती थीं । ये पूर्व और पश्चिम दोनों ओर जाया करते थे ।^{३७}

समुद्री मार्ग—

एच० जी० रालीविन्सन बतलाते हैं कि सर्व प्रथम और सम्भवतः प्राचीनतम मार्ग फारस की खाड़ी है जो कि सिन्ध के मुहाने से शुरू होकर रोहप तक पहुँचती है । + + + इस मार्ग का उल्लेख मिटानी सम्राट (Mittani) हिटीटे (Hittite) के लेखों में मिलता है जो ईसा के १४, १५ शताब्दी पूर्व हुए थे । इन सम्राटों के नाम आयों के थे और इतका सम्बन्ध भी वैदिक

35. Imperial Gazetteer Vol II Page 825

36. Inter-course between India the Western world Page 1. 2

37. The Journal of Royal Asiatic Society for 1901

कालीन आयों से था।³⁸ रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल भी प्राचीन भारत के जल थल व्यापार का विवेचन करते हुए बतलाते हैं कि 'वह देश जहां भान्ति २ की जल वायु और सुख की इतनी सामग्री हो प्राचीन और नवीन जातियों को अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ कैसे हो सकता है। अरब और फारस की स्वाभाविक व्यापारिक स्थिति भारत के अनुकूल थी। हमें इतिहास से यह भी पता चला है कि उसके साहसी मल्लाह अत्यन्त प्राचीन काल में बहुत दूर के मार्ग तय कर फोनोंशिया तक पहुंचे थे। उन्होंने अरब मरुभूमि के साथ साथ पेट्रा (Petra) और पालमीर होकर लाल सागर (Red Sea) में जहाजी बड़ा डालकर प्राचीन टायरे (Tyre) और भारत का सीधा सम्बन्ध स्थापित किया था।³⁹

इस विवेचन को यह निष्कर्ष निकला कि जिस समय आधुनिक पश्चिम की अनेकों जातियां पशुओं के साथ कन्दराओं में खरादें लिया करती थीं, उस समय भारतीय कार्पले और जहाज थल और जल दोनों ही मार्गों से भूप्रदक्षिणा कर संसार में भारतीय व्यापार का बीज बो रहे थे! देखिए, डाक्टर मैनी-विसेन्ट महोदय बतलाती हैं कि भारत का बैबिलोनिया के साथ ईशा से ३०० वर्ष पूर्व व्यापार सम्बन्ध था। आप कहती हैं कि २००० ईशा पूर्व तो मिश्र के मुर्दे (Mummies) भारतीय मल-मल में लिपटे पाए गए हैं।⁴⁰

व्यापार का जीवन है उसकी साख (Credit) साख की उत्पत्ति, शुद्ध व्यापार और नीयत से होती है व्यापार का जितना काम

38. See, Intercourse between India and the Western world P. 1,2

39 See, the Land of the Vedas Page 15

40 See, A Bird's eye view of India's Past

नकदी से नहीं चलता उतना उधार पर चला करता है जिनकी साख व्यापार में से ही सलामत रहती है, वे लोग आधी रात को पम्पपर आख मीच कर बिना लिखे पड़े लाखों रुपये का निन देन कर लेते हैं। मारवाड़ियों में आज तक यह कहावत प्रचलित है 'जाजो लाख पर गीजो साख।' उद्योग के भूतपूर्व से 'टलसेट कमिश्नर डब्ल्यू० सी० वीन्टेड लिखते हैं कि यहा लोग बड़े बड़े कर्जे केवल जवानी ही ले लेते हैं। परस्पर मनोमालिन्य होने पर भी कर्जादार कभी कर्जे से इन्कार नहीं करते। लोग अपने पूर्व पुरुषों द्वारा जवानी किए गए कर्जों को सो-मो वर्ष बाद तक चुकाते हैं।' १६१४ में भारत आने वाले इंग्लैण्ड के राजदूत सर टामसो के भी भारतीयों की साख के सम्बन्ध में उद्गार देखिए—, 'ये लोग कुशल कलाकार और अपने कामों में बहुत हाशियार होते हैं इनका विश्वास है कि 'पसीने की कमाई में बरकत होती है।' ११ प्रसिद्ध पाश्चात्य पण्डित विलियम डिग्वी सी० आई० ई० की जवानी सुनिए! 'भारतीयों का साधारणतः और व्यापारियों का सद्चरित्र और व्यापारिक सम्बन्ध विशेषतः बड़े मार्के का होता है।' १२ यह है भारतीयों की पर्वत सी अचल व्यापारिक साख। स्वर्गीय देशदशु चितरञ्जन-दास ने अपना पैतृक ऋण जो कानून की दृष्टि से नाजायज हो चुका था, चुकाया था। आपका यह कार्य बीसवीं शताब्दी में भी भारतीयों की साख का प्रमाण है।

अब व्यापार का भी थोड़ा सा दिग्दर्शन कीजिए। संसार के साथ भारत की व्यापारिक सम्बन्ध किस शुभ मुहूर्त में शुरू

41. The Oudha Gazetteer 1837 Page 7,8

42 The People of India

43. Indian for the Indians and for England

हुआ उसका पता आज तक कोई भी इतिहास का अनुसन्धान कर्त्ता नहीं लगा सका। फिर भी पाश्चात्य विद्वान सुक्क्रेण्ट से इसकी प्राचीनता को स्वीकार करते हैं। श्रीमति ऐनी विसेन्ट पाश्चात्य देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों को ३००० वर्ष ईसा पूर्व से भी प्राचीन स्वीकार करती हुई लिखती हैं कि हिब्रो बाइबिल में भारतीय वस्तुओं के तामिल नाम अब तक मिलते हैं। टू (Tyre) के हिराम ने अरब की खाड़ी के बन्दरगाहों द्वारा भारत से व्यापार किया था।^{४४} हिराम तथा सोलेमान ईसा से दस शताब्दी पूर्व अपने जहाज-भेजकर भारत से चन्दन, मोर, हाथी दान्त, सोना, चाँदी आफिर साम्प्रदाय के लोगों से खरीद कर लेजाया करते थे। इतिहासवेत्ता पटोल्मी आफिर सम्प्रदाय (Ophir Tribe) के सम्बन्ध में लिखते हैं सिन्धु के मुहाने पर अ मीरिया नाम एक नगर था। आहीर जाति के लोग आज भी भारत के विभिन्न प्रान्तों में 'अहीर' नाम से विख्यात हैं। मिस्टर केनेडी पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करते हैं—

६-७ शताब्दी पहलें भारत और बेबीलोनिया में जबरदस्त व्यापारिक सम्बन्ध था।^{४५} जेटकाक्यूम्यू विश्वस्त चीनी ग्रन्थों के आधार पर बतलाते हैं कि ७५० ई० पू० तक ब्राह्मणों के जहाज केन्टन में आया करते थे।^{४६} सौदागर सुलेमान ने लिखा है कि नवीं शताब्दी में अरब, चीन और भारत का व्यापारिक सम्बन्ध जोरों पर था, 'इण्डियन शिपिंग' के विद्वान लेखक ने सिद्ध किया है कि पूरी ३० शताब्दियों तक भारत विश्व देश का प्रधान केन्द्र रहा है। उत्तरी चीन, मलाया, अरब, फारस, अफ्रीका पूर्वी

44 A Bird's eye view of India's Past; See also Indian Shipping Pg

45. Royal Asiatic Society Journal 1899

46 Periplus Page 34

वाणिज्य-व्यापार

१०। २। नापाग शतक। सवत्ता प्लॉनी लिखता है कि अकेले भारत के १०४ जहाज एक समय रोम के किनारे लगे थे।

चौहदवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में दुनिया भारत के प्रति क्या विचार रखती थी। विश्वयात्री सगुन मान्दिविले के० टी० से सुनिए—‘इथोपिया से विभिन्न देशों में होकर लोग भारत जाते हैं और उसे विशाल भारत कहते हैं।’^{४७} इतिहासकार पेंरीप्लस बतलाता है कि भारत, अरब और ग्रीक के हिन्दू व्यापारी सक्रोत्रा में जाकर ठहरते हैं। मिस्टर माण्टेर लिखते हैं कि सम्राट स्लीस्यूडा के समय असीरिया के साथ भारत का व्यापार जोंगों से चल रहा था।^{४८} अभी केवल ढाई सौ वर्ष पहले भारत दर्शक फ्रांसीसी टेवरनियर बतलाता है कि बङ्गाल की खाड़ी से जहाज अराकान, पिंगू, स्याम, सुमात्रा, कोचीन, मनीलास, हुमुंज, मक्का और मुद्गास्कर के लिए रवाना हुआ करते थे।^{४९}

उससे बाद की दास्तान इङ्गलैण्ड के अनुदार दल के प्रमुख भारत की राष्ट्रीय उन्नति के कट्टर विरोधी लार्ड रादर-मिडर के मुख से सुनलीजिए—कुछ वर्ष पूर्व आपने अपने पत्र डेली मेल में लिखा था—बड़े २ जहाजी बड़े जो पहले भारतवर्ष के मसालों रेशमी वस्त्रों, सोने और हीरों से लदे टेगस में लंगर डाला करते थे बाद को लिजबिन के मार्ग से दूसरे भण्ड के तन्चे आकर टेम्स में लंगर डालने लगे।

47. Voyages and travels of Sir John Page 102

48. Treasury of History Page 776

49. Tavernier's travelsly Ball

वस्त्र व्यापार—

भारतीय करघे की सब से आश्चर्य जनक वस्तु रेशम थी जिसकी सब से अधिक खपत फारस और रोम में हुआ करती थी। कहा जाता है कि वहां इसका विनियम सोने से होता था।^{५०} रेवण्टर पीटर पर्मिवल रोम के प्राचीन इतिहासकार के एक पत्र का उल्लेख करते हैं जिसमें वह शिकायत करता है कि भारतीय व्यापार ने इटली को सोने से ग्वाली कर दिया।^{५१} रोम और उसके अन्य प्रान्तों से भारत आने वाले सोने की वार्षिक रकम लगभग ४० लाख रुपया थी।^{५२} प्रोफेसर रालीविन्सन बतलाते हैं कि ग्रीक लोग भारत के रेशमी वस्त्र पहनते थे जिसे सिन्धोन कहते थे। प्रोफेसर रालीविन्सन बतलाते हैं कि सिन्धु शब्द असुर वाणी पाल (६६८-६२६ ई० पू०) के पुस्तकालय में पाया गया है। इन्हीं समस्त आधारों पर आप कहते हैं कि पश्चिमी भारत की रुई का व्यापार बहुत पुराना है।^{५३}

अरब की सभ्यता भी एशिया में बहुत पुरानी है। प्रोफेसर हीरन प्राचीनतम काल से ही उसके साथ भारत का व्यापारिक सम्बन्ध बतलाते हैं। हजरत अली तो सदैव भारतीय मल-मल का अंगरखा ही पहनते थे। इतिहास के माने हुए विद्वान अलिकर्जेदिया पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष भी यमन और पट्टाला बन्दरगाहों में बहुत पुराना व्यापारिक सम्बन्ध बतलाते हैं।

मुसलमान यात्री इब्न बतूता बतलाता है कि योरोपियन लोगों,

50. Encyclopedia Britannica Vol XI Page 459. See also, Indian Shipping Page 83

51. The Land of Vedis Page 16

52. Encyclopedia Britannica XI 400

53. Intercourse between India and the Western world Page 3

का भारत से सीमे माल खरीदने और बेचने का व्यापार अरब वालों को नागवार मालूम होता है ।^{५४} भारतीय वस्त्र व्यवसाय का विवेचन करने हुए फ्रांसीसी यात्री बर्नियर लिखता है—बंगाल से मुगल साम्राज्य, काबुल और समस्त बाहर के देशों को कितना कपड़ा प्रति वर्ष भेजा जाता है, वह बतलाना सम्भव नहीं ।^{५५} देवरनियर यात्री कहता है कालीकट और मसूलीपटम की छींटों के बुर्के समस्त ऐशिया की स्त्रियां प्रयोग करती हैं ।^{५६}

समस्त दुनिया के शौकीन भारतीय वस्त्रों का ही प्रयोग करते थे । भारतीय कुशल व्यापारी भी दुनिया की नब्ज टटोलना अच्छी तरह से जानते थे । वे कच्चे माल को विदेशों में प्रायः बहुत ही कम भेजा करते थे । जीन वपटाइस्ट देवर नियर कहता है गुजरात और ब्रह्मपुर से आने वाली कच्ची रुई को भारतीय कभी योरोप नहीं भेजते थे क्योंकि उसका दास बहुत सस्ता पड़ता है हां, वे इसे आरमीनीया, बालमरा और कभी फिलिपाइन द्वीपों को भी भेज देते हैं ।^{५७}

लोहा—

श्रीमती मेनिंग बतलाती हैं कि भारतवर्ष से रंगीन कपड़ा और लोहा भारतीय जहाजों पर लद कर वेबीलोन और टू (Tyre) को जाया करता था ।^{५८} दमिश्क के लिए तलवारें भा भारत से ही बनकर जाया करती थीं । लार्ड रोनाल्डसे भी इसका समर्थन करते हैं ।

54 Scenes and Characters from Indian History Page 104

55. Travels in the Mogul Empire Page 439

56 Tarverniers Travels in India Page 302

57 Turverniers Travels in India Page 304

58, Ancient and Mediaeval India Vol II Page 364

मसाले—

प्रोफेसर हीरन बतलाते हैं कि मसालों की जन्मभूमि भारत है। यह पूर्वकाल से ही पश्चिम संसार को मसाले पहुंचाता रहा है।^{५९} विद्वान डिग्वी कहते हैं कि भारतीय मसाले लोगों की जबान पर कहावतों की भांति चढ़ गये थे।^{६०} श्रीमती मेनिंग भारतीय मसालों का वर्णन करती हुई इत्रों की भी प्रशंसा करती हैं।^{६१}

हाथीदान्त—

हाथीदान्त और लकड़ी के काम में भारतीय संसार के माने हुए कारीगरों में हैं। पोलीटीकल एजेंट विलियम डिग्वी लिखते हैं—‘रत्नजटित और हाथीदान्त की बनी भारतीय वस्तुओं की योरोप में बहुत बड़ी मांग थी।^{६२} हाथीदान्त इस देश की अपनी चीज है। मिश्र, यूनान, पैलेस्टाइन और फारस के साथ प्राचीन काल में इसका भी भारत से व्यापार होता था।

शर्करा—

शर्करा के सुस्वादु से भी दुनिया को परिचित कराने वाले भारतीय ही हैं। मिसेज़ मेनिंग कहती हैं कि सर्व प्रथम भारत में यूनानियों ने इसको चक्खा।^{६३} ‘शर्करा’ शब्द संस्कृत है इसीसे बिगड़ कर अंग्रेजी शुगर (Sugar) बना है जो इस के भारतीय होने का परिचायक है। वर्नियर भी विदेशी व्यापारियों को

59. Historical researches Vol II Page 274

60 Prosperous India Page 90

61 Ancient and Mediaeval India Vol, II

62. Ancient and Mediaeval India Vol. II Page 353

63. Ancient and mediaeval India Vol II Page 353

आकर्षित करने वाली चीजों में शकर की गणना बड़ी प्रशंसा के साथ करता है।

रत्न—

इसका भी भारतमें जन्म होकर दूरदेशों में प्रचार हुआ है। एक पाश्चात्य पण्डित बतलाते हैं कि नील भी भारत से रोम और यूनान को भेजा जाता था।^{६४} टेवर नियर भी भारत से नील के बाहर जाने का उल्लेख करता है।

सुगन्धित द्रव्य—

सुरभित-सुमन भारत के अतिरिक्त प्राचीन काल में प्रायः अन्यत्र नहीं ही पाये जाते थे और आज भी इनका दूसरे देशों में आभाव सा ही है। कोई भी अंग्रेजी फूल देखिए रङ्गरूप बाहरी तड़क भड़क बहुत होगी किन्तु सुगन्धि का नाम तक भी न होगा। यही कारण है कि सुगन्धित इत्र तैल तैयार करने की कला ने सब से पहिले भारत में ही जन्म लिया था। भारतीय इत्र और तैल बड़ी चाह से फारस और अरब के बाजारों में विकते थे।

इतिहासकार पेरिप्लस के कथनानुसार अन्य चीजों के अतिरिक्त भारत से सूती और रेशमी वस्त्र, मोती, जमरूद तथा अन्य बहु मूल्य पत्थर भेजे जाते थे। विद्वान् स्टीसियास (Ctesias) इस सूची में गोटा, फौलाद, औषधियां, सुगन्धित पदार्थ तथा अन्य कितनी वस्तुएं शामिल है^{६५}

लङ्का

भारतीय व्यापार वर्णन में लङ्का का भी उल्लेख करना अप्रामाणिक न होगा, क्योंकि यह रामायण काल से लेकर आज तक भारत के साथ बन्धा है। उसकी सभ्यता धर्म सब कुछ भारत का है और वह स्वयं इस विशाल राष्ट्र का एक अंग है। प्रोफेसर हीरेन के कथनानुसार ईसा के जन्म काल से ५०० वर्ष पहले ही यह अपने समुद्री व्यापार के लिए विश्व-विश्रुत था। यही नहीं, भारत का भी व्यापारिक इतिहास बहुत कुछ इस पर निर्भर है। पटोलमी सूचित करते हैं कि इसका समुद्री किनारा बन्दरगाहों से भरपूर था और इसमें कितने ही व्यापारिक नगर थे। पूर्वकालीन इतिहासकार ऐरियन कहता है कि उत्तरी लङ्का सुसभ्य जाति से बसा था। यह बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था।^{६६} उत्तर में चीन से आगे और पश्चिम में इटली तक इसका व्यापार विस्तृत था। प्रोफेसर हीरेन इसे आस्ट्रेलिया का भी व्यापारिक बाजार बतलाते हैं।^{६७}

लङ्का के व्यापार की विस्तृत विवेचना करते हुए पाश्चात्य इतिहास लेखक स्वीकार करता है कि 'यहां समस्त संसार का माल आता और जाता था।'^{६८}

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि भारत विस्तृत काल से ही विगत शताब्दी तक संसार को जीवन की सुख सामग्रियां पहुंचाता रहा है। उसका व्यापार भी सभ्यता की भान्ति असीम था। श्रीमती मेनिंग कहती है कि भारतीय वैदिक काल से ही

66 Historical Researches Vol II Page 432

67 Historical Researches Vol II Page 426

68 Historical Researches Vol III Page 293

व्यापार करते थे । ६६ रेवरेंडर पीटर पर्मिबल की राय है कि व्यापारिक दृष्टि कोण में कोई भी प्राचीन अथवा अर्वाचीन, राष्ट्र उपयोगिता में इससे टकर नहीं ले सकता ! ६७

वास्तव में यदि न्याय की गम्भीर दृष्टि से देखा जाय तो अध्यात्मिक भारत की भौतिक उन्नति जगत का जीवन-रमझ बनाने के लिए ही थी । यदि तत्कालीन भारतीय अपनी कला के नमूने और प्रकृति प्रदत्त नायाब तोहफे, जहाज और काफिले द्वारा दुनिया को न बांटने, तो संसार कब तक उन पदार्थों से बञ्चित रहता—कौन कह सकता है !



सम्पत्ति

मानव जीवन-यात्रा को चलाने के लिए जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है और जिनकी प्राप्ति के लिए पर्याप्त परिश्रम करना पड़ता है, उनकी गणना सम्पत्ति में होती है। दूसरे शब्दों में आवश्यकता, अप्रचुरता और परिश्रम ये तीनों मिलकर वस्तु को सम्पत्ति का रूप देते हैं।

सम्पत्ति का प्रथम लक्षण है उसका 'विनियम साध्य' होना। जिसके बदले में दूसरी आवश्यक वस्तुएँ नहीं मिल सकती, उनके प्राप्त करने में कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़ा हो, सम्पत्ति नहीं कही जा सकती। उदाहरणार्थ आधुनिक भारतीय विश्व विद्यालयों की डिग्रियाँ ! बहुत से लोग केवल रुपये पैसे ही को सम्पत्ति समझ बैठते हैं किन्तु ऐसा नहीं। सिका तो केवल विनियम के सुभीते के लिए बनाया है। अन्न वस्त्र आदि को छोड़ कर लोग केवल सोना चाँदी आदि को ही सम्पत्ति मान लेते हैं। वास्तव में सम्पत्ति इन सब के समुच्चय की संज्ञा है। सम्पत्ति के दो विभाग हैं स्थावर (Immoveable) जङ्गम (Moveable) लार्ड रोनाल्डशे का कथन है कि प्रारम्भिक सम्पत्ति उत्पादन के लिए मनुष्य, शक्ति और कच्चे द्रव्य (Raw materials) आवश्यक है, भारत का यह चीजें उदारता से मिलती हैं, मिसेज पी० केन्डाल जैसी चान्दी सोने के टुकड़ों पर फिसलने वाली अमरीकन महिला भी यह कहने पर विवश है 'भारत

के पास तुम्हारे लिए बहुमूल्य उपहार है, वह अपने अजायबघात और रहस्यों को उन्हीं की भेंट करता है जो उसे खोजने हैं।^{१२} 'भारत की प्राचीन सम्पत्ति की पुरानी कहावतें अब भी प्रसिद्ध हैं।'^{१३} यह है भारत के वैभव-सम्पन्नता के सम्बन्ध में कॅर हार्डी महोदय का विचार। इस रत्नगर्भभूमि के जगमगाते जवाहिरात, झिलमिलाते सोने और चमचमाती चांदी की कहानियां दुनिया के कोने कोने में आज तक कही जाती हैं। इतिहासकार एलिफिन्स्टन कुछ पाश्चात्य यात्रियों के शब्दों में कहता है—'यह (प्रान्त) चांदी सोने और अमूल्य रत्नों से भरा है।'^{१४} डाक्टर वाईज सूचित करते हैं कि भारत की विशालता और सम्पन्नता ने सिकन्दर के मस्तिष्क पर अपना सिका जमा रखा था। पर्शिया से प्रस्थान करते समय वह अपने सैनिकों को सम्बोधित कर कहता है 'हम उस स्वर्ण भारत को चल रहे हैं। जहां अपरिमेय सम्पत्ति है। फारस घनधान्य में उसके सामने कुछ भी नहीं।' डब्ल्यू० एस० केने (Caine) मेम्बर पार्लिमेन्ट कहते हैं 'अंग्रेजों का विचार है कि भारत अनन्त सम्पत्ति का देश है।'^{१५}

लार्ड रोनाल्डशे के शब्दों में 'भारत गुप्त सम्पत्ति का विशाल भण्डार है।'^{१६} भारत वसुन्धरा की छाती चांक करके ही आज संसार मालामाल हो रहा है। जिन हीरक मणियों को पाकर आज पाश्चात्य देश अपने में नहीं रहते वे इसी की गोद के अमूल्य

२ 'India and the British "

३ India Impressions and Suggestions Page 1

४ Elphinstone's India Vol II Page 10

५ A trip round the world Page 382

लाल हैं। इस सर्वोपम भूमि में कितना जवरदस्त सम्पत्ति कोप छुपा था, उसका निर्गन्तव्य ही इस लेख का उद्देश्य है।

हीरा जवाहिरात—

खानिज वस्तुओं में हीरा सब से अधिक मूल्यवान है। वह किसी समय इस देशों की खानों से निकलता था और काफी परिमाण में, अथवा यह कह लीजिए कि इस देश को छोड़कर अन्यत्र पाया ही नहीं जाता था। अतीत का इतिहासकार प्लाती भारत को 'बहुमूल्य हीरे जवाहिरात की 'मां' वह कर सम्बोधित करता है। विश्व-यात्री सरजान माण्डविले के० टी० कहता है भारतीय हीरे बहुत सुन्दर और अत्यन्त मूल्यवान होते हैं। वे सख्त और तिरङ्गे होते हैं।^६ हीरे के सम्बन्ध में आचार्यों ने संस्कृत साहित्य में अनेकों ग्रन्थ तक लिखे हैं। सन् १६५६ में भारत आने वाला फ्रांसीसी यात्री टेवरनियर लिखता है—'हीरा समस्त पत्थरों से अधिक मूल्यवान होता है। कर्नाटक प्रान्त में सबसे पहले हीरे की खान जो मैंने देखी वह गोलकुण्डा से ५ दिन की यात्रा कर पहुँचने वाला रोलकुण्डा है। यहाँ बहुत से हीरा तराशने वाले हैं किन्तु किसी के पास भी एक मशीन से अधिक नहीं। दूसरी हीरे की खान गोलकुण्डा से पूर्व की ओर (Mill) गनी (Gam) है यहाँ जितना ही अधिक पहाड़ों के निकट वे खोदते हैं उतने ही अधिक बड़े हीरे पाते हैं। यहाँ लड़कें, स्त्रियाँ और मनुष्य कुल मिलाकर ६०००० आदमी काम करते हैं। तीसरी प्राचीनतम हीरे की खान बंगाल प्रान्त में सोमलपुर है।'^७ प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार भातङ्ग (गोलकुण्डा) सौराष्ट्र

6. India a bird's eye view Page 169

7. Voyage and travels Page 102, 103

8. Tavernier's travels in India Page 319, 436

(गुजरात) पौण्ड्र (छाटा नागपुर) कोशल (अवध) मौवीर (पञ्जाब) वेणुगङ्गा (अज्ञात) और हैम अर्थात् हिमालय के आसपास के स्थानों में हीरे की खानों का पता चलता है । इसके अतिरिक्त मद्रास पन्ना और बुन्देलखण्ड में भी हीरे पाये जाने थे । चैम्बरलैन् इन साईकलोपीडिया के ग्रन्थकार का कहना है कि भारत स्वाभाविक रूप से अपने ऐश्वर्य के लिए सुविख्यात था ।^९

आधुनिक संसार के बहुमूल्य हीरे भारत मां के ही अलङ्कार हैं । फ्रांस की शोभा बढ़ाने वाला पिट (Pitt) जिसका मूल्य आज १४०००० पौण्ड हैं, और भारत सम्राट के मस्तक को अलंकृत करने वाला कोहनूर जिसकी कीमन ४८०,००० पौण्ड आंकी जाती है, इसी देश की सम्पत्ति हैं । भारत का परिचय देने समय डाक्टर आर० डी० ब्रूक्स आज भी सर्व प्रथम यहाँ पैदा होने वाले बहुमूल्य हीरे जवाहिरातों को बतलाकर अतीत की स्मृति को ताजा करना नहीं भूलते ।

मोती-मणि-माणिक्य—

मणि-माणिक्य-मुक्ता, पन्ना, पुष्कराज, नीलम आदि सभी के भारत में मिलने का टेवरनियर पता देता है ।^{१०} वेनर और स्पेन्सर (Spencier) की राय है कि पीत, नील, लाल आदि रंगों के मणि-माणिक्य पैदा करने का केवल भारत ही दावा कर सकता है । ब्रूटस की माता सरवीलिया (Servilia) को जूलियस सीज़र द्वारा उपहार दिये गए मोती और सिल्वोपाट्रा (Cleopatra) के कान के लटकन, इसी कमला कोप के

9 Encyclohaedia Britannica Vol XI Page 446

10. See, The General Gazetteer and Geographical Dictionary

"Hindustan" Page 431

11. See, Taverniers travels in India

बहुमूल्य रत्न थे ।^{१२} जियालोजिकल सर्वे आफ इण्डिया के डाइरेक्टर जनरल टी० एच० हाल्लैण्ड मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि प्रकृति ने इस देश को सब कुछ दिया है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मोल्स वर्थ भी कहते हैं—‘भारत भूमि धन की खान है।’ मोरिसन लाल मणिक्मय और जाड़े (jade) का प्राप्ति स्थान ब्रह्मा बताता है ।^{१३} कालीकट के निकट नीलकण्ठा नामक एक वन्दरगाह था। इतिहासियों के कथनानुसार दुनिया भर में मोतियों के व्यापार की यह अकेली मण्डी थी। जिन मणि मुक्ताओं और हीरे जवाहिरातों का गुणगान फिर्दौसी^{१४} किया करता था, शेकस्पियर^{१५} की कविता के जो अलङ्कार थे, वही बहुमूल्य पन्ना पुखराज और हीरे आज पाश्चात्य देशों का आश्रम ले रहे हैं, आधुनिक भारत के लिए तो उनका नाम कथा व शेष हो गया है।

सोना-चान्दी—

भारत का अतीत धन-धान्य-सम्पन्नता की एक सजीव कहानी था। इसका ‘कण-कण कमला का घर था। भारतीय आज भी सतयुग की वे कहानियां सुनया करते हैं जिन प्रत्येक हिन्दू घर में सोने के बर्तन बर्त जाते थे। हीरोडोट्स कहता था

12. Hindu Superiority Page 389

13. A New Geography Page 222

14. ‘जियाकूनों अन्नमासो जितेगहिन्द।’—शाहनामा

15. My crown lies in heart not on head,

Not decked with Indian stones and diamonds,

Not to be seen it is called Contents,

A Crown it is that seldom Kings enjoy,

‘भारत सोने से मालामाल है ।’^{१६} यात्री टेवरनियर उसका पता बतलाता है—‘सोना कश्मीर राज्य से आता है । वहां तीन पहाड़ियां एक दूसरे के सन्निकट स्थित हैं, जो अत्युत्तम सोना उत्पन्न करती हैं । टेपरा (आसाम) राज्य से भी सोना आता है ।’^{१७} पेरिप्लस (Periplus) गङ्गा के निचले मैदान में सोने की खानें बतलाता है । हीरन इतिहासकार सोने और चांदी के लिए भारतीय पर्वतमालाओं का पता देता है ।^{१८} अन्य इतिहासकार दक्षिण और मालाबार के किनारे की चांदी सोने से भरपूर देखते थे तो हीरोडोटस ने नदियों से भी स्वर्ण संग्रह की पुरानी दास्तान सुना दी । चांदी के लिए जावर (मेवाड़) की खान मशहूर थी । सुलेमान सौदागर बतलाता है कि बेलहरा राज्य में द्रव्य बहुत है और चांदी की खानें हैं । यहां के लोग सोने के साथ चांदी का व्यापार करते हैं ।^{१९} सरजान एम० के भी अनुसन्धान को सुन लीजिए—‘सुन्दर जवाहिरात साधारण समुद्री चट्टानों और पहाड़ियों पर पाये जाते हैं जहां सोने की खानें हैं ।’^{२०} कोलार (मैसूर की खान से अब तक सोना निकलता है) बहुत थोड़े दिन हुए क्लारमांडर जे० डेनिमल ने दुनिया को बतलाया था । ‘सन् १८८६ के शुरु में अमुद्रित सोना भारत में काफी (Stock) परिमाण में बिल्कुल बेकार पड़ा था ।’ जिसका

16. Herodotus 111 Page 106

17 Tavernier's travels in Indian Page 366

18. Sec. Heeren's Historical Researches Vol II

19. सुलेमान सौदागर पृ० ५१, ५२

20 Voyage and Travels of Sir John Page 102

† सन् १६०५ ई० में इस खान से २४,००,०० पौण्ड का सोना प्राप्त हुआ था ।—सी० मोरिसन

व्यापार में कोई उपयोग नहीं होता था और प्रति वर्ष लगभग ३० लाख की गति से बढ़ रहा था, जिसकी बाजारी कीमत २७,००,००,००० पौण्ड से कम नहीं थी। यह सोना संयुक्त राज्य अमरीका में प्रचलित सोने का ढाई गुना था।^{२१} टेवरनियर ने भी यही शिकायत की थी कि 'भारतीयों ने काफी सोना, चांदी और जवाहिगत जमीन के अन्दर दबे रखे हैं।'^{२२} सर आर० टेम्पुल तो यहां तक कहते हैं कि 'प्राचीन काल में हिन्दू करेंसी सोने में थी जिसका स्टैंडर्ड (Standard) हमेशा एक रहता था।'^{२३} अभी मोगल शासन में हुमायूँ के समय भिश्ती ने एक दिन के लिए चमड़े का सिक्का चलाया था। उसमें भी सवा सत्तरह आने के मूल्य का सुनहरा छुएडा लगा था। प्राचीन भारत वसुन्धरा का कौन सा कोना सोने चांदी से खाली था, यह बतलाना भी बहुत कठिन है। फ्रांसीसी यात्री वर्नियर अपने साथी कालवर्ट को सूचित करता है—'यह भारत एक (Abyss) है, जिसमें विश्व के एक बहुत बड़े भूभाग का सोना चांदी चारों ओर से अनेकों उपायों द्वारा प्राप्त होता है।'^{२४} पेरिप्लस यह भी बतलाता है कि यूनान भारत से सोना खरीदा करता था। यात्री अलबेरुनी तो यहां तक कहता है कि भारती अन्य धातुओं से सोना बनाने की रसायण विधि भी जानते थे किन्तु फिर भी वे अपना ध्यान इस ओर न देते थे।^{२५} ध्यान भी कैसे देते

21. Travels in the Mogul Empire Foot Note

22. Travels Vol II Page 204, 205. See also Travels in the Mogul Empire Page 473

23. The Indian Review for Sept 1930

24. A Bird's eye view of Indias past..... I Page 33

25. Alberuni's India Vol I

उनके पास तो इतनी अपरिमेय सम्पत्ति थी कि ये अर्थ को अन्तश्च और कमला को चञ्चला कह कर उपेक्षा की दृष्टि से देखा करते थे। फिर भी उनमें कभी उनके सहचरों से दूर होने की कल्पना नहीं की। प्रोफेसर हीरन की गवाही सुन लीजिए—भारत अतीत काल में ही सुसम्पन्न था।^{२६}

विगत कितने ही शताब्दियों तक निरन्तर यहां बर्बरों के आक्रमण होते रहे। महमूद गजनवी ने केवल सोमनाथ के मन्दिर से इतने हीरे जवाहिरात और सोना लूटा था कि लूट के माल की कीमत का अन्दाजा लगाना कठिन नहीं—विल्कुल असम्भव था। लङ्कड़ा तैमूर, गङ्गिया नादिर और दासीपुत्र गौरी कितना कुछ यहां में ले गये, अनुमान लगाना आसान नहीं। फिर भी सौ वर्ष पूर्व भारत की सन्धिता को स्वीकार करते हुए के० जी० हार्डी एम० पी० कहते हैं कि भारतीय इतिहास में कोई भी ऐसा समय जब कि उसके निवासियों की चूसने की ऐसी नियमित नली लगी हो, नहीं था जैसा कि अब है।^{२७}

भारत के साम्राज्य ने ही एक दिन उसे संसार के सुंह से 'सोने की चिड़िया' कहलवाया। प्राचीन हिन्दुओं ने इस सोने पर ग्रन्थ के ग्रन्थ रच डाले थे।^{२८} मिल्टन की कविता का विषय,

26. Hueron's Historical Researches Vol II Page 266

27. See Lethbridge's History of India

28. India; Impressions and Suggestion Page 1

† सुवर्ण पञ्चथा ख्यातं, श्रुतं सहजं परम् ।

वह्निं खनिजं तद्रूपेन्द्रेवेषं भवम् ॥

29. "High on a throne of Royal State which for
Out shone the wealth of ornany and of Ind
Or where the gorgeous east with richest hand
'Showers on her kings barbarous pearls' and gold"

'Paradise lost' Vol II

नैपोलियन का भाग्य निर्णायक और इंग्लैण्ड एवं योगोप का रक्षक—यह भारतीय सोना है। भारत का यह सोना उसके सपूतों के लिए अम्पष्ट रेखा मात्र है जो सम्प्रति अमरीका और योरोप की गलियों में ठोकरें खा रहा है।

लोहा-फौलाद—

जिस जाति ने अपनी वीरता का सिकता संसार पर जमा दिया हों, जिसके अस्त्रों के बल पर कराल काल की डायरी (Diary) भरी जाती हो, जिसने जहाज और हवाई जहाज की कला में कमाल हासिल कर लिया हो, उस देश में लोहे और फौलाद जैसी आवश्यकीय वस्तुओं का क्या घाटा? प्रोफेसर विल्सन बतलाते हैं कि लोहे को गलाने, साफ करने और फौलाद तैयार करने की कला में हिन्दू आदि काल ही से कुशल थे। इंग्लैण्ड को तो कुछ ही वर्षों पूर्व कला का ज्ञान हुआ है।^{३०} दिल्ली के लोहस्तम्भ को देख कर डाक्टर फर्गुन महोदय कहते हैं—‘हमको विश्वास करना चाहिए कि वे लोग इस धातु का काम बनाने में अपने पश्चात होने वाले कारीगरों की अपेक्षा अधिक दक्ष थे। यह बात कम आश्चर्य की नहीं है कि १४०० वर्ष हवा और पानी में रह कर अब तक भी उसमें जंग नहीं लगा। डाक्टर मुरे और पर्सी भी इसके लोहे का निरीक्षण कर मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं। एडनवग विश्वविद्यालय के मिस्टर कैमर्सन मोरिसन बतलाते हैं कि भारत में लोहे के प्रधान प्राप्ति स्थान, सलीम (मद्रास) चांदा (मध्य भारत) रानीगंज (बंगाल) हैं। अन्य स्थानों पर अभी कोई कोयले और चूने का निकट प्रबन्ध न होने के कारण लोहा निकालने का काम नहीं होता।^{३१}

30. Mills History of India Vol II Page 47

31 A new geography of the India Empire and Cylon Page 221

श्रीमती मेनिंग का कहना है 'ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारत में लोहा उसकी आवश्यकता से अधिक होता था। क्योंकि फोनिशिया वाले दूसरी वस्तुओं के साथ यहां से लोहा भी ले जाते थे।^{३२}

कोयला—

खानिज द्रव्यों में कोयले का भी बहुत महत्व है। मोरीसन बङ्गाल में रानीगंज, किरिया, गिरीडीह, आसाम, बागौरा (म० प्रा०), सिंगरेनी (हैदराबाद) और उमारिया (रीवा) कोयला मिलने के स्थान बतलाते हैं।^{३३} लार्ड रोनाल्डो का कथन है कि सन् १९१६ ई० में इस महाद्वीप में २,२५,००,००० टन कोयला निकला और भविष्य में अभी और गुंजाइश है।^{३४}

नमक—

मिस्टर मोरीसन के शब्दों में नमक यहां बहुत पैदा होता है और बाहर विदेशों से भी भेजा जाता है। पंजाब में भी नमक की खानें हैं। कच्छ, सांभर, खेवड़ा पिंडदादनखां और ससुद्र से भी नमक निकाला जाता है, बङ्गाल में भी नमक बनता है और मिट्टी द्वारा तो भारत के प्रायः सभी स्थानों में तैयार किया जाता है।

मिट्टी का तैल—

ब्रह्मा और आसाम में काफी मिट्टी का तैल निकलता है। मोरिसन महोदय के कथनानुसार ब्रह्मा में ६८ प्रति शत तैल

32, Ancient and mediaeval India Vol II Page 364

33 A new geography Page 221

34. India A bird's eye view

फसल खेतों में खड़ी है वह निहायत अच्छी है। कपास की फसल यद्यपि समाप्त हो चुकी है, परन्तु देखने से पता चलता है कि वर्षा बहुत अच्छी हुई होगी। सम्पर्क के निश्चित चिन्ह भी यहां मुझे देखने को मिले हैं। मैं खांड के कई कारखाने देखे हैं।^{१८}

अन्न—

विभिन्न प्रकार की जल वायु और उर्वरा भूमि ने भारत के अन्दर उने सभी पदार्थों को प्रचुर परिमाण में एकात्रित कर दिया है जिनकी कि जीवन में कभी आवश्यकता पड़ सकती है। मि० मोरिसन लिखते हैं कि 'चावल, गेहूँ, चना, मक्की, मोठ, मसू, जुवार, धाजरा, अरहर, उड़द, शकर, मसाले, सब्जियाँ, तिलहन सब कुछ यहां पाये जाते हैं। चाय और काफी, तम्बाकू अफीम सिनकोना आदि भी खूब पैदा होते हैं।^{१९} लार्ड रोनाल्ड्स बतलाते हैं कि सन् १६१६-१७ के साल में ३४७५०००० टन चावल, १०२५०००० टन गेहूँ, ३७००००००० पौण्ड चाय, ५००००० टन अलसी और लगभग १२००००० टन राई एवं (Rape) तथा इतने ही परिणाम में मूंग फलियां ब्रिटिश भारत में उत्पन्न हुई थीं।

भारत निरामिष भोजी देश है अस्तु भारत के से शाक फल फूल प्रकृति ने दूसरे देशों को दिये ही नहीं। मिसेज रावर्ट्स मास किंग कहती हैं 'भारत में पुष्पों की प्रचुरता है। अधिकांश लोग जिनके पास कोई वाटिका नहीं, वे लोग भी साली नियुक्त करते हैं, जिसका काम प्रति दिन फूल लाना और उन्हें सजा कर

रखना है। प्रत्येक घर में आपको फूलों से भरी टोक़रियां और गुल्दस्ते मिलेंगे जिसका दाम लन्दन में गिन्नियां हैं।^{४१} सी० मेरिसन का कथन है कि भारत में अनेकों प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं। फ्रांसीसी यात्री डाक्टर फ्रांक्वीस वर्नियर लिखता है— 'मैंने आज तक ऐसा देश देखा ही नहीं जहां पर भान्नि २ की चीजें उत्पन्न होती हों।'^{४२} आगे चल कर आप कहते हैं कि १६१६-१७ ई० में ब्रिटिश भारत के अन्दर २७५०००० टन कच्ची शकर पैदा हुई। टेवरनियर फ्रांसीसी ने यात्रा वर्णन में लिखा है कि नील, अदरक, पीपली, दारचीनी आदि मसाले भी यहां से बाहर भेजे जाते हैं।^{४३}

केसर भारत भूमि के विस्तृत अख़्तल की अपनी अनोखी वस्तु है। संसार भर का चक्र लगा आइए कश्मीरी केसर की क्यारियों का आनन्द कहीं भी नसीब न होगा। लेफ्टीनेंट कर्नल एच० ए० नेवल लिखते हैं कि नवीं शताब्दी में प्रधान आभात्य पद्म द्वारा बसाया गया पद्मपुर अपने केसर के खेतों के लिए सुविख्यात है।^{४४} टेवरनियर सूचित करता है कि फारस में बिकने वाला सुरक बहुत बड़ी मात्रा में भूटान से पटना को आता है।^{४५}

रूई—

अब भारत की उस रूई पर भी विचार करना आवश्यक है। जिसने संसार के अन्य देश वासियों को उनके वल्कल परिधान से

41. A civilians wife in India Vol I Page 94, 95

42 Travels in the Mogul Empire

43, Taverniers travels in India

44 Topce and Turban Page 42

45. Taverniers travels in India Page 300

मुक्त कर के सभ्यता का सार्टीफिकेट दिया था। रूई की जन्म भूमि भारत है। इसका प्रमाण एच० जी० रालीविन्सन आइ० ई० एम० की जवानी सुनिए—‘आसुर बागी पाल (असीरिया) ने रूई और ऊन के वृक्षों के लिए भारत को आदमी भेजा था, जैसा कि इसने सुन रखा था। इसने ई० ई० ६६८ से ई० ई० ६१६ ई० पूर्व तक राज्य किया था।’^{४६} योरोप के रंगमंच पर खड़े होकर सभ्यता की प्राचीनता का ढोल पीटने वाले यूनानियों का हाल भी देखिए! सिकन्दर का सेनापति अरिष्ट बुजुंसे कहता है कि ‘कपास ऊन का पेड़ होता है।’ उसीका सेना नायक अमीराल नियर्डस अपने देशवासियों को सूचित करता है—‘भारतवर्ष में ऐसे पेड़ होते हैं, जिन से भेड़ों के रोंये के समान ऊन निकलती है।

अब प्रश्न यह है कि पाश्चात्य देशों ने इस पहेली को समझा कब? श्रीमती मेनिंग के शब्दों में भारतीय कपास से अब्बो ने ‘कुटा’ (Quta) बनाया और कुटा योरोप में पवित्रित होकर काटन (Cotton) बन गया काटन (रूई) क्लूमेंड काल में अब्बो द्वारा योरोप पहुंची।^{४७} मिस्टर मिल मानते हैं कि प्रकृति ने भारत को एक दूसरा सुभीता और दे रखा था। उनकी जल वायु और भूमि कला के लिए उत्कृष्ट साधन इकट्ठा करती थी और वह संसार भर से सुन्दरतम हुई।^{४८} आज भी संसार में पायदारी के खयाल से कोई भी रूई भारती रूई से टकर नहीं ले सकती। श्रीमती मेनिंग भी इसका समर्थन करती हैं। प्राचीन भारत बुनने के लिए सर्वोत्तम रूई एकत्रित करता था।^{४९}

46 Intercourse between India and the western world Page 3

47 Ancient and Mediaeval India Vol II 356

48. History of India Vol II Page 17

49. India; a bird's eye view Page 171-172

लार्ड रोनाल्डो के कथनानुसार मन् १६१६-१७ ई० में ब्रिटिश भारत ने ४५०००००४०० पौण्ड स्टर्लिंग की गांठ तैयार की।^{५०}

रेशम—

इतिहास के प्रसिद्ध अन्वेषक विद्वान कालत्रुक बतलाते हैं—सिल्क Silk शब्द की व्युत्पत्ति कदाचित् संस्कृत के 'मूत्र' शब्द से हुई है। जो रेशम के भारतीय होने का द्योतक है।^{५१} सी० मोरिसन एम० ए० बंगाल और आसाम की रेशम और टसर को अच्छी बतलाते हैं। डाक्टर एफ० वर्नियर कहता है कि केवल बंगाल ही में कपास और रेशम इतनी मात्रा में पैदा होती है कि वह इन दो चीजों का गुदाम (Store House) कहलाता है। यह केवल भारत के लिए ही नहीं प्रत्युत आस पास के राज्यों और योरोप को भी जाती है।

जूट—

सर्व प्रथम पाश्चात्यों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करने का श्रेय डाक्टर राक्सवर्ग को है। इन्होंने १७६५ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डाइरेक्टरों के पास जूट की एक गांठ भेजी थी। यह जूट शब्द का सम्भवतः सर्वप्रथम लिखित प्रयोग था। पूर्वी बंगाल में इसे पाट और कुछ काल पूर्व फाट कहते थे। यह वहां के लोगों का घरेलू व्यवसाय था। उन दिनों कलकत्ते के व्यापारी हेनली के कथनानुसार इस दस्तकारी में लड़के, स्त्रियों और मनुष्यों को काफी काम मिल जाता था। मलाह, कृपक, कहार, घरेलू नौकर अपने अवकाश समय में इसे कातने में व्यय किया

करते थे। यह हिन्दू विधवाओं को परिवार पर भारस्वरूप होने के बजाय उन्हें अपना स्वर्च चलाने में सहायता देता था।^{५०} एक वर्ष (१६१६-१७) में ब्रिटिश भारत ने ४३००,००० जूट की गांठें उत्पन्न कीं। जूट गंगा और ब्रह्मपुत्र की निचली बाढ़ियों, बम्बई और मद्रास में पैदा होता है।

इसके अतिरिक्त बम्बई में बाम्बे हेम्प (Bombay Hemp) नाम का एक दूसरा पौदा होता है। मोरिसन साहब कहते हैं कि इसके रेशे से बने हुए वेग का मूल्य साधारण जूट की अपेक्षा छे गुना अधिक होता है।^{५३}

जङ्गल—

लार्ड रोनाल्डश लिखते हैं—‘यहां प्रकृति अपने को एक मित्रता के परिधान में प्रकट करती है। + + + ये हमें फल फूल आश्रय, छाया, ईंधन और चारा देते हैं। यहीं भारत के आदिम वैदिक साहित्य का निर्माण हुआ था। उस की एक शाखा ‘आरण्यक’ कहलाती है। जिस के दार्शनिक विचार अत्यन्त ऊंचे हैं। समय के साथ साथ बन निवासियों के लिए बानप्रस्थ शब्द का प्रयोग हुआ। तत्पश्चात् समस्त द्विजातियों के जीवन का इसी सम्बन्ध से वर्गीकरण भी हुआ^{५४} वास्तव में भारत के जङ्गल उस के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। जलवृष्टि, वायु शुद्धि गोचर भूमि के अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि कोण से भी इनका उपयोग कुछ कम नहीं, अनेकों औषधियों, कस्तूरिया हीरन, रेशम, चन्दन और भान्ति २ की लकड़ी इन से प्राप्त होती हैं कितने ही पशु पक्षी जिन

52 India; A bird's eye view Page 157

53. A new geography of India and Ceylon Page 81

54. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और सन्यास। See India; a bird's eye view Page 187-188

का व्यापार और उपयोग आज संसार कर रहा है, भारतीय वनों की ही सम्पत्ति थे। सी० मोरिसन का कथन है कि भारतीय जल वायु की विभिन्नता के कारण यहां अनेकों प्रकार के वृक्ष उत्पन्न होते हैं।^{५५} किन्तु काल चक्र ने भारत के भाग्य के साथ ही इनकी किम्मत को भी पलट दिया। लार्ड महोदय बड़े दुःख के साथ कहते हैं—भारतीय जङ्गल आज शिकारगाहें बन गई हैं। + + + अमङ्गल का आक्रमण हुआ है कि राज्य की ओर से उनके पशु नाश के उपहार दिये जाते हैं।

पशु—

पशु राष्ट्र की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। सर जान उडरुफी कहते हैं कि 'जहां पशुओं की अवस्था अच्छी है, वह देश सुसम्पन्न है।' यही कारण है कि पूर्वकाल में भारत के अन्दर पशु पालन का बहुत बड़ा महत्व था। इनके चरने के लिए राज्य की ओर से गोचर भूमि छोड़ दी जाती थी। आनरेबल जस्टिस उडरुफी बतलाते हैं कि 'प्राचीन पौराणिक कथाओं के अनुसार वह घर जिस में गो (Cow) नहीं है श्मशान तुल्य है।'^{५६} गाय को प्राचीन हिन्दुओं ने इतना महत्व क्यों दिया था? इस प्रश्न का उत्तर संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रिन्सिपल जान एच० मेहर्स की जवानी सुनिए 'गडएँ केवल दूध दही मक्खन आदि ही नहीं देती, वे पृथ्वी की उत्पादक शक्ति को भी कायम रखती हैं। दूसरे कृष्टि कला विशेषज्ञ सी० डब्ल्यु० वर्कट की राय सुनिए—'लगातार २० वर्ष तक एक खेत में गेहूँ बोने से वह निस्तत्त्व हो जाता है। गेहूँ की उपज जमीन को चनजर बना डालती है। उसकी उत्पादन शक्ति की रक्षा केवल गायों द्वारा ही हो सकती है।'^{५७}

55. A new geography Page 83

56. Bharat Shakti

57. The Soil Page 258

उपयोगिता की दृष्टि से कृषि प्रधान देश भारत में गाय का बहुत बड़ा महत्व है। इसका घी दूध मानव शरीर का पोषक है मिस्टर गेहर्स के शब्दों में गाय के दूध में सभी पोषक तत्व मौजूद हैं जिनकी शरीर की आवश्यकता है। 'मल-मूत्र खाद के रूप में काम देता है, इनके बछड़े घरती को जोतते और रथों में चलते हैं। यही कारण था कि प्राचीन भारत भूमि में दूध घी की कमी न थी, कृषि कर्म में भी बाधा उपस्थित न होती थी। सर जे० उडरुफी कहते हैं 'अतीत और वर्तमान की तुलना करो। अतीत से मेरा आशय किसी स्वर्ण काल से नहीं प्रत्युत उस विगत काल से है जिसका कि आज के लोगों को स्मरण हो। पचास वर्ष की अवस्था का मनुष्य भी उस समय को याद कर सकता है, जब गाय का दूध रुपये का ३२ सेर विकता था और एक दो सेर तो केवल कहने-मात्र से ही मिल जाता था। अब उसका मूल्य बासों बढ़ गया है और किसी भी कीमत पर शुद्ध दूध मिलना कठिन है।' १५५

भारत के अतीत और वर्तमान में इतना बेपम्प क्यों? यह कि तब राजा की ओर से उनकी रक्षा होती थी और अब बंध। उस समय पशु बेचना अपराध था और अब न बेचना। देखिए सर जान उडरुफी क्या कहते हैं—'इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय पशु विदेशों को भेजे जाते हैं। + + + भारत सरकार के अण्डर सेक्रेटरी मिस्टर ह्यूम की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक पशुओं की एक बहुत बड़ी संख्या की भारत में हत्या होती है। खालों के बाहर भेजने के व्यापार में बढ़ती बतलाई जाती है। १८६५ में यह ६० लाख की थी और १९१४ में १३ करोड़। मिस्टर जासवाल कहते हैं कि लगभग १ लाख

५० हजार पशु योरोपियन सैनिकों के लिए बध किए जाते हैं। रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि एक वर्ष में १ करोड़ पशु बीमारियों में मर गए।^१

लार्ड रोनाल्डशे पशुओं की उपयोगिता पर विचार करते हुए लिखता है कि किसी दूसरे राष्ट्र का नाम बतलाना जो भारत में चमड़े के व्यापार में बढ़ा चढ़ा हो कठिन है। + ÷ ÷ युद्ध में पहले १६०६६३१ हण्डरवेट चमड़ा और खाल विदेशों को गई जिन का मूल्य १०६०६००० पौण्ड था।^२

हाथी भी भारत मां की गोद में पला हुआ अपना पशु है। प्राचीन काल में यह भारत के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं पाया जाता था। भारत में आदि काल से ही ऐसी किसी सेना का वर्णन नहीं मिलता जिसमें हाथी का इल्लेख न किया गया हो। मोरिसन महोदय बतलाते हैं कि आधुनिक काल में ब्रह्मा में हाथी को लकड़ी के बड़े २ लट्टे खींचना और एकाग्रत करना सिखाया जाता है। राजपूताना और सिन्धु के ऊँट, काठियावाड़ के घोड़े ब्रह्मा के पेंघन (Poney) मद्रास की भैंसें, हरियाणा की गायें और हिमालय के अर्नेभेंसें, खच्चर, भेड़ वगैरी आदि पशु आज भी इस देश में प्रचुरता से पाये जाते हैं।^३

भारत के विशाल उद्यान में आनन्द का राग अलापने वाले पक्षी, आज तक विश्व के बड़े बड़े यात्रियों ने अन्यत्र देखे ही नहीं। परीहे की पुकार, कोयल की कूक, शुक्रमारिकाओं का गान, मयूर का नृत्य, मराल की मन्द-मन्थर गति दुनिया के कौन से एक देश को नसीब है। विदेशी शाकीनों ने भारतीय मोर के लिए रकमें खर्च की हैं।

59. India a bird's eye view

60. A new geography Page 85

संस्कृत में मोर को 'केकी,' प्राचीन तामिल काव्यों में 'टोकी' और हिब्रू में 'टुकी' (Tuki) कहा गया है। प्रोफेसर लेसेन भी बतलाते हैं कि यह शब्द संस्कृत से लिया गया है।^{६१} कहने का आशय यह है कि मोर भी भारत से ही अन्य देशों को पहुंचा है।

पशु-पक्षियों का पालन कर 'अहिंसा परमो धर्मः' को जीवन का आदर्श मानकर ही भारत स्मृद्धिशाली बना था। लार्ड रोनाल्डशे बतलाते हैं कि औद्योगिक कमीशन के अनुसार भारत में (१६१६-१७ ई०) १८००००००० पशु और ८७०००००० भेड़ वकरियां थीं।^{६२}

भारत का वैभव बहुत कुछ इन पशुओं की ही दबोलत सुरक्षित था। इसी लिए सम्राट अकबर ने गोवध बन्द करने का बड़ा कड़ा कानून बना रक्खा था। विदेशी यात्री कमालुद्दीन अबदुल रज्जाक भी कालीकट के ऐश्वर्य का चित्रण करते हुए कहता है कि 'इस बन्दरगाह पर हर एक वस्तु मिल सकती है, केवल एक गाय का तुम बध नहीं कर सकते और न ही खा सकते हो उसका मांस।' ^{६३} प्राचीन भारत की चतुर्दिक् उन्नति के मूल में थे ऐसे राज्यकीय नियम !

भारत पूर्व काल में पूर्ण रूप से सम्पन्न था। यहां हीरे-जवाहिरात, मणि-मणिक्य, सोना-चांदी, लोहा-तांबा कोयला आदि की बड़ी बड़ी खानें थीं, पशु पालन धर्म का अंग समझा जाता था 'घी-दूध के स्रोत उमड़ते थे और धन धान्य से भरपूर था। इतिहास वेत्ताओं के मतानुसार ईसा की १८वीं शताब्दी के

अन्त तक इस विशाल देश की गणना विश्व के सम्पन्न-तम देशों में की जाती थी। धन-धान्य की प्रचुरता के कारण बहुत थोड़े खर्च में लोग आगम की जिन्दगी दिताते थे। अभी १८७७ ई० में अपने पति के साथ भारत-पहारने वाली अंग्रेज महिला श्रीमती राबर्ट मास किंग लिखती हैं—'निश्चयात्मक रूप से किसी दूसरे देश में नहीं प्रत्युत भारत में आप बहुत थोड़े खर्च पर गुज़ारा कर सकते हैं। आप बतलानी हैं कि १२ पौण्ड (१८० रुपये) वार्षिक काफी हैं।' १६४ योरोपिय-शासक जाति की महिला के रूढ़न सहन को सोचिये और १५) रुपये मासिक खर्च !!

मृग अपने मद (कस्तूरी) के कारण मृत्यु-मुख में प्रवेश करता है, तुमने अपने सौरभ एवं सौन्दर्य के कारण लोलुपों का शिकार बनता है, पक्षी अपनी सुरीली सदा के कारण बन्दी बनता है और भारत भी ठीक उसी भान्ति अपनी अमित सम्पत्ति राशि के कारण विपन्न बना ! ब्रह्मा के भूतपूर्व गवर्नर सर हार्-कोर्ट वदलर के ये शब्द इस उक्ति का समर्थन करते हैं—'भारत की काल्पनिक और वास्तविक सम्पत्ति ने पुर्तगैज, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजों को अपनी ओर आकर्षित किया।' ६५

जिस भारत के उत्कर्ष की कहानियां संसार के लिए अलादीन के चिराग से कम आश्चर्य जनक न थीं। जिसके असाधारण धन को मिस्टर एफ० ए० स्टील प्राचीन काल में सर्वत्र दिखरा हुआ बतलाते हैं। ६६ लार्ड रोनाल्डशे के शब्दों में उसी 'भारत भूमि के पौदे पर आज भी पाश्चात्य जगत् का औद्योगिकवाद बहुत कुछ टिका हुआ है।' ६७

64. A civilian's wife in India Page 20

65. India Insistent Page 63

66. See, India through the ages

97. India; A bird's eye view Page 161

प्राच्य और प्रतीच्य

कुछ समय से हम धर्म, समाज, साहित्य, शिल्प और इतिहास आदि की अलोचना में 'प्राच्य' एवं 'प्रतीच्य' इन दो शब्दों का व्यवहार करते आ रहे हैं। भारतीय सभ्यता को केवल भारतीय सभ्यता कह कर ही हमें सन्तोष नहीं होता, हम कहते हैं प्राच्य सभ्यता। प्राच्य शब्द की प्राचीन काल में कोई भी व्युत्पत्ति क्यों न रही हो, आधुनिक काल में यह अंग्रेजी के 'ओरियण्टल' (Oriental) शब्द के प्रतिरूप में ही व्यवहृत होता है। विभिन्न समयों में पश्चिम या योरोप की दृष्टि में प्राच्य जगत के जो चित्र प्रतिभासित हुए, 'ओरियण्टल' शब्द में वे सब विविध द्योतनाएँ निहित हैं।

पाश्चात्य योरोप ने प्राच्य एशिया का परिचय पाया है खण्ड-खण्ड में, आंशिक रूप में। प्रारम्भ में ही एक समय सम्पूर्ण परिचय ले कर, उसके प्रतीक स्वरूप 'ओरियण्टल' शब्द की सृष्टि नहीं हुई। युग-युग में परिचय जितना व्यापक और घनिष्ठ होता रहा, शब्द की व्याप्ति और तात्पर्य भी उतना ही रूपान्तरित हो गया। हेरोडोरस का प्राच्य-जगत्, रोमन साम्राज्य का प्राच्य जगत्, क्रूसेडार का प्राच्य जगत्, मार्कोपोलो का प्राच्य जगत्, अठारहवीं शताब्दी का प्राच्य जगत् उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी का प्राच्य जगत्—यह सब परस्पर विभिन्न हैं योरोप ने जब से अपना एक विशिष्ट सत्त्व उपलब्ध करना आरम्भ किया, तब से उसे जो कुछ अपने से स्वतंत्र, और विषम प्रकृति का

मिला, उसी के प्रतीक स्वरूप वह प्राच्य संज्ञा का व्यवहार करना आरम्भ है। प्रतीच्य की कल्पना से प्राच्य उस के निकट 'Not-Self' अर्थात् 'जो मैं नहीं' वह प्राच्य है।

इस 'Not-Self' का परिचय यदा-कदा बदलता अवश्य रहा है, परन्तु 'East & West' 'प्राच्य और प्रतीच्य' इस 'Dichotomy' मूलगत द्वैत भावना से आज तक कोई अन्तर नहीं पड़ा। एक समय था जब प्राच्य कतिपय बड़े बड़े यथेच्छाचारी सम्राटों की लीला भूमि था, ग्रीस में जब पौर राष्ट्र समूह में गणतन्त्र का बोलवाला था, तब प्रतीच्य के चित्र पर प्राच्य का यही चित्र प्रतिभासित हुआ और जब रोमन साम्राज्य का गौरवमय युग आया, तो रोम के धनी समाज की आँखों में प्राच्य मणि-मुक्ता, धन-रत्न, गन्ध-द्रव्यादि विलास सामग्री का भण्डार-ऐश्वर्य विलासियों का भूस्वर्ग बन गया।

क्रिश्चियन धर्म के अभ्युदय काल में प्राच्य से प्रतीच्य देश तक धर्मोन्साद का स्रोत बहा, उस धर्म प्लावन युग में प्राच्य आध्यात्मा-साधन का देश, योग रहस्य का देश, संसार वैराग्य का देश मान लिया गया।

मुसलमान धर्म की उद्दीपना में जब अरब और तातार ने आधी की तरह उठ कर क्रिश्चियन योरोप के दो प्रान्त विध्वस्त कर डाले, तब प्राच्य वर्वर, धर्म विध्वंसी, क्रिश्चियन द्वेषी देश के रूप में बदल गया।

क्रमेण युद्ध के उपलक्ष में जब प्राच्य प्रतीच्य के साक्षात् सम्पर्ग में आया तब उस चित्र का रङ्ग फिर पलटा, प्रतीच्य जिसे कोरे शैतानों का राज्य समझता था, वहीं अब उसे एक मार्जित सभ्यता की प्रतिष्ठा देख पड़ी, जो उस की तत्कालीन सभ्यता से श्रेष्ठ थी।

मार्कोपोलो जब सुन्दर चीन से मंगोल सम्राट के गौरव सज्जित दरबार का समाचार ले गया, तब प्रतीच्य की आंखों में प्राच्य की सभ्यता और बढ़ गई। भारत के मुगल और पारस के साकाविदीय साम्राज्य ने इस चित्र पर और भी नया रङ्ग चढ़ा दिया।

सन्तुष्ट में जो चित्र बना, उस में प्राच्य जगत् की भाषा सम्पदा के स्थान पर इसकी अप्रतिहत राज शक्ति की महिमा, मणि-मणिमय की समुज्ज्वल द्युति, शिल्प-संसार का ऐश्वर्य और प्रासादों एवं मन्दिरों के गगन चुम्बी शिखरों ने योरोप की आंखों में चका चौंढ़ बैठा दी। लोगों की विल्ली सी आंखें ललचाई, परन्तु नैपोलियन ने सहमते-सकुचते कह ही डाला—सोते सिंह को सोने ही दो, जगाने से लाभ नहीं।

जब वारन हेम्टिंग्स के जमाने में विलीयम जोन्स ने कलकत्ते में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की, तब योरोप में प्राच्य परिचय का एक नया अध्याय खुला, संस्कृत और फारसी साहित्य के ज्ञान-भण्डार और भाव-सम्पदा योरोपियन पण्डितों के सामने आते ही उन में प्राच्य सम्बन्धी कुछ विशेष धारणाएं उत्पन्न होगई।

पहली धारणा है प्राच्य सभ्यता की प्राचीनत्व सम्बन्धी। पूर्व देश ही संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं की जन्म भूमि है, इसकी अति वृद्ध स्थविरता में न जाने कितने युगों की अभिज्ञता का रहस्य संचित है, वाङ्मय के गौरव और सम्मान का ज्वलन्त प्रमाण है प्राच्य ! रोमान्टिक युग के भावुक हृदयों में प्राच्य के प्राचीनत्व ने कितने ही भावों की सृष्टि की। मनस्वी एण्डमण्ड बर्क ने हेम्टिंग्स के कार्यकलापों के विरुद्ध जो अभियोग उपस्थित

किया था, उसकी उद्दीपना की जड़ में भारत की प्राचीनत्व सर्गादा ही थी ।

इसके साथ ही साथ एक और धारणा उठी—प्राच्य की स्थावरता । एशिया के कार्य्य जीवन की कहानी क्रमशः उन्मुक्त हुई, जिस में शायद जीवन की चञ्चलगति न थी, था पुनरावृत्ति की, पुनरावृत्ति गतानुगतिका का प्रवाह । किसी ने कहा इस महादेश के रक्त प्रवाह की गति इतनी मंथर है कि यह बहुत दिन पहले ही चुढ़ापे के पल्ले पड़ा प्रतीत होता है, इसे जिन अवसाद ने घेर रखा है वह मृत्यु का ही पूर्व लक्षण है । कुछ ने कहा नहीं जी, मृत्यु तो बहुत पहले ही हो चुकी है, अब जो कुछ शेष है वह है 'मर्मा' मात्र । विधाता के जिस उद्देश्य से प्राच्य का उद्भव हुआ था, उसे समाप्त कर यह न जाने कब अपनी जीवन लीला सांग कर चुका है । वस्तुतः यह क्लासिकल सभ्यता की सड़क कूटने आया था, और अब अपना काम खतम कर रङ्गमंच से विदा हो चुका है । इसके बाद आया क्लासिकल और वह भी रोमाण्टिक अर्थात् उन्नीसवीं शताब्दी की योरोपिय सभ्यता का मार्ग बना कर चिरावसर ग्रहण कर गया । संसारके वर्तमान और भावी इतिहास में अब इसका कोई स्थान नहीं ।

प्रती य है गतिशील, चञ्चल-यौवन, और प्राच्य है स्थावर स्थविर । इसके साथ ही साथ प्राच्य का एक और गुण रोशनी में आय, यह है तत्त्वान्वेषी, ध्यानमग्न, संसार-विमुख, वहिर्जात और वस्तु जगत् से एकान्त उदासीन । वैभव, ऐश्वर्य, समाज, राष्ट्र प्रासाच्छासन और ऐहिक कल्याण साधन ने विचित्र उपकार की अपेक्षा उसने कोपीन-कन्या को सहृदय दिया है । साधन में आत्मा नियोग किया है । यही बात दूसरे

तरह कही जा सकती है। यह है स्वप्न विलामी और स्वप्न का नाश ही उसे ले डूबा है !

इस तरह ऐतिहासिक गवेषणा की दृग्दीन से उन्नीसवीं शताब्दी भर प्रान्थ-प्रकृति के विभिन्न विशेषत्व आविष्कृत होते रहे। और साथ ही साथ बढ़ता रहा वाणिज्य एवं शासन विस्तार के सूत्र से वास्तविक प्रान्थ के साथ संसर्ग। फलस्वरूप जो चित्र बना, उसमें नाना असंगतियों का समावेश हो गया और उस चित्र से जो रस प्रकट हुआ वह भी था अद्भुत। सांप, शेर मिट्टी, कीचड़, मरु, जंगल, योगी, उम्मीदवार, दरवेश, पुंगी, मद्दारी, कुली, बाबू, ताजमहल, कांथा, कामखुवाब और रङ्ग विरङ्गे मनुष्य—सब मिलाकर बन गया एक किम्बूक किमाकार देश, एक ख्याली रान्थ !

इसका एक शब्द में 'परिचय दें तो वह था अप्रतीक्ष्य' योरोप का 'Not I'—'मैं नहीं'। किप्लिङ्ग जैसे प्रमुख हास्य-रस लेखक ने इसी दुनिया का पल्ला पकड़ कर योरोप के रसिक समाज के सामने अद्भुत रस की चटनी परोसी थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के शेष भाग और बीसवीं की सूचना के साथ ही साथ एक नवीन अनुभूति मिली। मृत एशिया के शुष्क अस्थि पञ्जर में न जाने कहाँ से नूतन प्राण की चञ्चलता आ गई। 'असंभ्य जापान' रात की गहरी नींद छोड़ कर योरोपीय राजचन्द्र के मध्यस्थान में जा डटा। चीन, फारस, अरब, अफगानिस्तान, यहां तक की चिरनिद्रित भारत भी—सब एक साथ आंखें मल कर उठ बैठे। एक दम भौतिक कांड ! योरोप के चित्त में एक नई शक्का उठ खड़ी हुई, जिस का प्रथम नामकरण है पीतातङ्क (The Yellow peril), बाद में व्यापक व्याख्या की गई,

‘The problem of the Coloured Races’ अर्थात् ‘रंगीन जातियों की समस्या ।’

यह हुआ प्रतीन्य के प्रान्य परिचय का इतिहास । योरोप के पण्डित और मनस्वी समाज में कितने ही ऐसे हैं, जिन्होंने गहरी अन्तर्दृष्टि से प्राच्य जगत् का निविडतर परिचय लाभ किया है, जिसका चित्रण आप को पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर मिलेगा ।

अब हमारे हृदय में प्राच्य जगत् सम्बन्धी क्या धारणा है, इसका भी विश्लेषण कर लेना चाहिए । पहले ही कहा जा चुका है कि अंग्रेजी शिक्षा के पूर्व कभी हमने प्राच्य शब्द से अपना परिचय नहीं दिया । यह शब्द वर्तमान काल में अंग्रेजी ‘Oriental’ का अनुवाद मात्र है । अंग्रेजों ने जब हमें पश्चात्य शिक्षा में दीक्षित किया, तब हमने भी शिष्योचित श्रद्धा के साथ, चित्त क्षेत्र से पूर्व संस्कारों का जञ्जाल हटा कर, योरोप के विज्ञान समुज्ज्वल जगच्चित्र को आत्मसात् कर लिया । योरोप ने जिस भाव से जिस वस्तु को देखा, हमने भी वही दृष्टिकोण अपना लिया । योरोप की आंखों में जो निकट और स्पष्ट था, वह हमें भी वैसा ही जंचने लगा । योरोप के लिए जो सुदूर और अस्पष्ट था, वह हमारे निकट, घर के पास होते हुए भी, दूराति-दूर और वाष्पाकार बन गया ।

प्राच्य जगत् के अन्तर्मुक्त होते हुए भी हमने उसका परिचय सीखा शिक्षा गुरु योरोप से । अतएव आदि काल से प्रतीच्य के चित्त पर प्राच्य जगत् के जो विभिन्न खण्डचित्र अङ्कित हो गये थे, उन्हीं का एक एकत्रित-कम्पोजिट फोटोग्राफ लेकर हमने अपना प्राच्य जगत् बना लिया । फलतः मानसिक प्रतिक्रिया भी एक रूप होगई प्राच्य जगत् योरोप के चित्त में जिन अद्भुत रसों (Bigarre, & exOtic) की सृष्टि करता है । हमारे मन में

भी वही रस जाग पड़े। इस 'किम्भूतकिमाकार' देश के अधिवासी होने के नाते हम लज्जा का अनुभव करने लगे। आधार-विहार पोषाक परिच्छद, आचार-व्यवहार, गति-नीति और चिन्ता-चेष्टा—मव विषयों में प्राच्यत्व का नाम निशान मिटा देने की चेष्टा हमारे लिए माधु प्रयत्न बन गई।

धीरे धीरे नूतनदीक्षा की मोह निद्रा टूटने लगी। हम ने पाश्चात्य ओरिएण्टलिस्ट पण्डितों के ग्रन्थ पढ़े, मेकाले के स्थान पर मैक्समूलर के शिष्य बने। नवीन गुरु एवं तत्प्रवर्तित सम्प्रदाय के ग्रन्थों में प्राच्य सभ्यता के बहुत से प्रशंसा पत्र मिले। सदा शिर अबनत करके नहीं रहा जा सकता। प्रशंसा पत्र जवान की नोक पर रख कर सभा समितियों में ग्रान्य गौरव का प्रचार करने लगे। हम प्राचीन जाति हैं, स्थिति ही हमारा आदर्श है, गति नहीं, हम जड़ विमुख हैं, तात्त्विक हैं, ऐहिक जीवन के तत्वों की हमने उपेक्षा की है, परमार्थ ही हमारे लिए एक मात्र अर्थ है—आदि अनेक सान्तवना वाक्यों में हमने अपने वर्तमान आधुनिक जीवन की जड़ता और आलस्य की सुन्दर आध्यात्मिक व्याख्या खोज निकाली। इस तरह जातीय आत्माभिमान को अक्षुण्ण रख कर सरकारी चाकरी के सहज स्वच्छन्द मार्ग पर भीड़ लगा कर खड़े होगये—दग्धोदरस्यार्थे !

इस क्षेत्र में भी अधिक समय तक खड़ा न रहा गया। आत्म परिचय की एक नूतनधारा निकली। प्राच्य आज पुकार कर कहना चाहता है, 'मैं मरा नहीं, जीवित हूँ मैं चलूंगा तो चरणपात की धमक से ही मेरा परिचय विश्व विदित हो, जायगा। मैं प्राचीन हूँ, मृत हूँ ? मैं जब नींद में अचेतन था तब मैं ने स्पन देखा था कि मैं प्राचीन हूँ, मर गया हूँ। आज जब मैं अन्तर में प्राणों का आवेगा अनुभव कर रहा हूँ, तब कैसे

कहूँ कि मैं प्राचीन हूँ, महास्थविर हूँ ? इतिहास कहता है मैं स्थावर हूँ ? कौन सा इतिहास ? इतिहास क्या अतीत के किसी अंधरे गहवर में पत्थर की भान्ति जमा बैठा है, जो ढूँढ़ लेते हा गवाही दे देगा ? इतिहास तो मन की सृष्टि है, प्रत्न-तत्त्व माल मसाला देता है, जड़ उपादान, ऐतिहासिक का मन उसे गति और गठन प्रदान करता है। जब मैं जड़ बना पड़ा था, आलसी बना पड़ा था, तब मैं भी समझता था कि मैं स्थावर हूँ, अचंचल हूँ। किन्तु आज अन्तर में जिस चाञ्चल्य का अनुभव हो रहा है, मेरे अतीत में उसी प्राण शक्ति की ही तो असंख्य लीलाएँ देख पड़ती हैं ! मैं विषय-विमुखी हूँ, तत्त्वान्वेपी हूँ ? मैं ऐश्वर्यविलासी हूँ, भोगपरायण हूँ ? मैं विध्वंशी हूँ, शान्तिनिष्ठ हूँ ? मैं सब कुछ हूँ, बहुरूपी हूँ—कारण, मैं जीवित हूँ, प्राणवान हूँ !

प्राची के अन्तर की यह उच्छ्वास क्या हम अपने अन्तर अनुभव नहीं करते ?—अवश्य करते हैं, किन्तु अभी तक उस अनुभूति ने एक विशिष्ट रूप धारण नहीं किया। एशिया के प्रत्येक देश में इस अनुभूतिके चिह्न पाये जाते हैं, किन्तु खण्ड-खण्ड रूप में। हम प्राच्य शब्द के उच्चारण को मुख्यतः भारतवर्ष समझते हैं और उसके चारों ओर रहता है अन्यान्य प्रा य देशों के अस्पष्ट खण्ड परिचय का एक वाष्पमण्डल। पहले ही कह चुका हूँ कि हमारी प्राच्य जगत् की कल्पना, अब तक योरोप की प्राच्य कल्पना की प्रति छाया मात्र थी ! वह केवल ज्ञान का विषय थी, उसके साथ हृदय का सम्बन्ध तो नितान्त सामान्य ही था। किन्तु अब प्राच्य शब्द के साथ हृदय का रंग लग चुका है। ३० वर्ष पूर्व जापानी मनीषी ओमाकुटा ने जब अपने 'Ideals of the East' में चीन और जापान के क्लिप के साथ भारतीय

सभ्यता का घनिष्ठ सम्बन्ध दिखाते हुए लिखा था—‘Asia the great Mother of one’—‘महिमा मयी एशिया ही मां है— तब उन शब्दों ने हमारे हृदय में एक अभूतपूर्व झटकार दी थी। एशिया निवासियों के मुंह से प्राच्य शब्द का यह उच्चारण, बहुकाल विस्मृत भाव का नूतन उद्बोधन प्रतीत हुआ। यह केवल कल्पना प्रभूत भानुकता है—यह मैं किसी तरह मान ही नहीं सकता।

मुझे मालूम होता है कि हम जो भारतीय नहीं प्राच्य कह कर अपना परिचय देते हैं, इसके पीछे एक यथार्थ प्रेरणा है। योगोपियन सभ्यता और शिक्षा-दीक्षा के बोझ में हम विचार, कर्म व्यवहार में अपनी निजस्व प्रवृत्ति का अनुसरण करते ही स्वाधीनता भी खो रहे हैं। सर जार्ज वर्ड के शब्दों में—‘इस शिक्षा प्रणाली (पाश्चात्य) ने भारतीयों के अपने साहित्य-प्रेम की भावना, उनकी विकासशील आत्मा, अपने कला कौशल का अनुराग, उनकी परम्परागत लोकोक्तियों और राष्ट्रीय धर्म का मत्स्यानाश कर डाला है। वे अपने घरों से, माता-पिता और वहन भाइयों से उकता गये। इसका जहां तक प्रभाव पहुंचा है, लोग अपने परिवारों से असन्तुष्ट ने रहते हैं।’

हां, तो इसके विरुद्ध खड़े होने के लिए हमें शक्ति चाहिये। बल-वृद्धि सदा आत्मीयों के सहयोग से होती है। हमारे आत्मीय कौन हैं? आपको याद होगा, समग्र एशिया अब भी भारत की प्राचीन साधना का अशभोगी है। क्या शताब्दियों से चलते आये इस भाव के व्यापार का कोई प्रभाव ही नहीं? है, और अवश्य है, चीन के भाग्य विधाता स्वर्गीय डा० सनयात सेन ने Bombay Chronicle के प्रतिनिधि से बातचीत करते हुए कहा था—‘संसार की सभ्यता का आदि जन्मदाता एशिया आज सब

के पैरों तले गीदा जा रहा है। एशिया के युवकों का प्रधान कर्तव्य है उसे उसके गत गौरव पर प्रतिष्ठित करना। चीन यह चेष्टा कर रहा है, आशा है समस्त एशिया हमें अपनी नैतिक सहानुभूति प्रदान करेगा।' प्रसिद्ध अफ्रेज लेखक मान कोर भी स्वाकार करते हैं—'समस्त मानव जाति का जन्म स्थान एवं संसार की सभ्यता व सर्व श्रेष्ठ धर्मों का केन्द्र स्थान एशिया समार का सब से बड़ा महादेश है। इसका क्षेत्रफल १७० लाख वर्ग मील है और आबादी है संसार के आधे से अधिक ८० करोड़।' योगोप से सब से पहले प्रकाश रश्मियां एशिया ही से पहुंची थीं और एशिया न ही उसका वीरता से उद्धार किया था।'

—मुल्का कमन्पागा

कहने का तात्पर्य यह है कि आज समस्त एशिया में फिर भावों का आदान-प्रदान आरम्भ हुआ है। पहले भी विभिन्न दिशाओं से प्रायः जगत् के विभिन्न खण्डों में भावों का कारवार चलता विचारों का समिश्रण हुआ था। किन्तु हमारी शिक्षा व्यवस्था के कारण दूर होगया निकट, और निकट पहुंच गया दूर। प्राचीन ग्रीस का साहित्य और सभ्यता का इतिहास तो हमारे नाखूनों में भरा है, किन्तु चीन या फारस की बात उठते ही हम असहाय बन जाते हैं, मानो सौर जगत् के किसी ग्रह उपग्रह की चर्चा चल रही है। अस्तु, जिस नूतन भाव के उद्बोधन की ओर ऊपर इशारा किया गया है, वह तभी यथार्थ शक्ति उत्पादक बन सकता है, जब यह आत्मीय परिचय सम्पूर्णता लाभ कर लेगा, जब एशिया की सभ्यता और साधना का इतिहास प्रत्येक प्राच्य देश वासी के लिए अवश्य ज्ञातव्य विषय बन जायगा।

॥ शुभ समाप्ति ॥

भारत पुस्तक भण्डार

कटड़ा आइलूवाला अमृतमर की

नवीन पुस्तकें

अनथक नेता—राठौर कुल प्रदीप महावीर दुर्गा-
दास को सभी इतिहास प्रेमी जानते हैं। यह खोज पूर्ण शुद्ध
जीवन चरित्र उसी वीर श्रेष्ठ का है जिस ने किशोरावस्था से
आरम्भ कर ८० वर्ष की आयु तक हाथ से तलवार न छोड़ी।
जिसका व्रत देश सेवा था, जिसकी प्रतिज्ञा अटल थी, जिसकी
तलवार का लोहा औरंगजेब ने भी माना, जो अकेला ही
महान शक्तिशाली मुगलशाही से टक्कर लेने के लिये मैदान में
कूदा, जिसने स्वामी भक्ति का महान आदर्श संसार के सम्मुख
रक्खा, जिसने देशोद्धार को अपना मूलमन्त्र बनाया जिस
त्यागी वीर ने राज प्राप्ति को भी ठोकर मार दी तथा जिसकी
निःस्वार्थ सेवा ने भारतवासियों के हृदय में घर कर लिया,
उसी अनथक नेता के इस प्रामाणिक चरित्र को पढ़कर सत्य
असत्य की परीक्षा कीजिये। सर्वग सुन्दर रंगीन चित्र से
सुशोभित सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)

नोट—इनके असली चित्र को फोटो लेकर उसी के
अनुसार बनाया गया।

मेवाड़ रत्न—मेवाड़ के वीर सूर्य्य महाराणा प्रताप
को कौन नहीं जानता? हिन्दी साहित्य में महाराणा प्रताप
के चरित्रों की कमी नहीं है परन्तु वे टाड़ राजस्थान एवं अंग्रेजी
इतिहासों के आधार पर हैं, जो इस खोज पूर्ण जीवन चरित्र
के सम्मुख गलत साबित होंगे। इस जीवन चरित्र को लिखने
के लिये सत्य की खोज करने में बहुत परिश्रम करना पड़ा है।

हमारा दावा है कि महाराणा प्रताप का ऐसा शुद्ध चरित्र अब तक नहीं छपा है। महाराणा की महानता, वीरता, देश-भक्ति, कुलाभिमान, उदारता, साहस, त्याग तथा बलिदान का अपूर्व वर्णन पढ़ कर आपका हृदय उज्जल पड़ेगा। स्थान २ पर उत्तमोत्तम कविताएं पढ़ कर आप फड़क उठेंगे। इस प्रमाणिक चरित्र को पढ़ कर हमारे परिश्रम को सफल कीजिये सर्वांग सुन्दर रंगीन चित्र सहित मजिल्द मून्थ २)

सुन्दर रामायण—पंजाबी कविता में सम्पूर्ण ४८ चित्रों से सुशोभित यह रामायण, पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि श्री चक्र-धारी जी वेजर की रंगीन लेखनी से लिखी गई है। भगवान श्री रामचन्द्र जी का पवित्र चरित्र चित्रण करने में लेखक महोदय ने घटनाओं का सजीव चित्र खींच दिया है २०० पृष्ठकी सचित्र तथा सर्वांग सुन्दर पुस्तक हिन्दी उर्दू तथा गुरुमुखी भाषा में कीमत ४) हिन्दी में बढ़िया कागज की ४॥)

दशमेश दर्शन—अर्थात् जीवन चरित्र गुरु गोविन्दसिंह जी का। गुरु गोविन्दसिंह जी का दरबार लगा है। लोगों ने बताया कि काश्मीर में यवन शासक ने हिन्दू जाति पर घोर जुल्म करना अपना दीनी कर्तव्य समझा हुआ है। गो रक्षा की जगह गो बध हो रहा है हिन्दू जाति के लाल तलवार के जोर पर धर्म से पदच्युत किये जा रहे हैं। अवलाओं पर दिन दिहाड़े बलात्कार-तथा उन्हें पतित किया जा रहा है, ऐसे घोर संकट में पड़ी हिन्दू जाति की रक्षा का बड़ा गुरु जी महाराज उठाते हैं। उन्होंने अपनी बाणी का शक्ति द्वारा लोगों को कायर से बहादुर बनाया, उन्हें अपने कर्तव्य का पालन करने शिक्षा दी। यही नहीं हिन्दू जाति के लिए अपने प्यारे दो लाल भी सरहिन्द में जीवित दीवारों में चुनवा दिए। ऐसे बार

पुरुष का जीवन तथा उनकी शिक्षा को पढ़ना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है ।

मूल्य केवल २)

गागर में गागर—यह नाम ही बता रहा कि अमृत्य रत्नों के भण्डार सागर को गागर में भर दिया गया है । इस पुस्तक में उन सभी अतमोल विषयों का संग्रह किया है जिसके द्वारा युवकों को सभी आवश्यक ज्ञान सहज में ही कराये जा सकते हैं जैसे, प्राचीन भारत की महानता, विश्व भूगोल, इतिहास, साहित्य, ज्ञान विज्ञान मानस समाज का विकास, प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति आदि का संक्षिप्त वर्णन, अप्रामाणिक रूप से वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त भारतीय महापुरुषों धार्मिक नेताओं, दशों गुरुओं, वीर पुरुषों एवं वीर रमणियों के पवित्र चरित्रों का भी यथेष्ट वर्णन है । इतना ही नहीं, इस पुस्तक रत्न में संसार के विकास सम्बन्धी बहुत से विद्वानों के लाभदायक लेखों का भी संग्रह है, जो ग्रन्थों में ढूँढने पर भी प्राप्त होने कठिन हैं । पुस्तक क्या है विश्व कोष है सैकड़ों ग्रन्थों को पढ़ कर जो लाभ होगा, वह ६ भागों में विभक्त इस एक ही पुस्तक से हो सकेगा । यह हमारा दावा है । इस की उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि हाथों हाथ विक रही है । बढ़िया कागज सुन्दर छपाई की सजिल्द का मूल्य २)

भारत पुस्तक भण्डार

कटड़ा आहलूवाला अमृतसर

